## सिद्धचक्र विधान के छन्दों की तर्ज/धुन

मंगलाचरण

1. अडिल्ल – सरब परब में बड़ो .....
2. अर्ध रोला – रोला के समान
3. इन्द्रवज्रा – नसे घातिया कर्म .....
4. उपेन्द्रवज्रा – नित्याप्रकम्पा .....
5. उल्लाला – दोहा के समान
6. कामिनी मोहन – नीर गन्ध अक्षतान् .....
7. गीता – कुन्दकुन्द शतक .....
   सुनिये जिन अरज हमारी .....
8. चाल – नन्दीश्वर श्री जिन धाम .....
   रे मन भज ले आतमराम .....
9. जोगिरासा – आतम को हित है सुख .....
10. चंचला – पार्श्वनाथ देव सेव .....
11. चकोर – इन्द्रिय के भोग मधुर विष .....
12. चुलीका – दोहा के समान
13. चौपई – दरष विशुद्धि धरैं जे कोई .....
14. चौबोला – आतम को हित है सुख .....
15. झुलना – मात तोई सेवते सुतप्तता .....
16. छप्पय – प्रिय चौतन्य कुमार सदा .....
17. डालर – इन्द्रिय के भोग मधुर विष .....
18. तोमर – तू जाग रे चेतन प्राणी .....
19. त्रोटक – केवल रवि किरणों से .....
   जब जन्म हुआ तीर्थंकर का .....
20. दोधक – चौपई के सामान
21. दोहा – इह विधि ठाड़ो होय के .....
22. धत्ता – वसु द्रव्य सँवारी .....
23. नागरूपिणी – पार्श्वनाथ देव सेव .....
24. नाराच – पार्श्वनाथ देव सेव .....
25. पद्धरि – ऐसे मिथ्या दृग–ज्ञान–चरण .....
26. पायत्ता – चाल के समान
27. बड़ी चौपई – चौपई के समान
28. बारहमासा – इन्द्रिय के भोग मधुर विश .....
29. भुजंगप्रयात – नसे घातिया कर्म .....
30. मरहठा – वीर/धत्ता के समान
31. माला – केसरिया चावल रंगवा लो .....
32. मालिनी – अयि कथमपि मृत्वा .....
33. मोतियादाम – अहो चौतन्य आनन्दमय .....
   तिहारे ध्यान की मूरत .....
34. मोदक – चौपई
35. रेखता – तिहारे ध्यान की मूरत .....
36. रोला – सम्यक् साथै ज्ञान होय पै .....
37. लक्ष्मीधरा – पार्श्वनाथ देव सेव .....
38. लावनी – हे सीमन्धर भगवान शरण ली तेरी .....
39. लोलतरंग – चौपई के समान
40. वसन्ततिलका – भक्तामर .....
41. षंखनारी – नरेन्द्रं फणेन्द्रं सुरेन्द्रं .....
42. सुन्दरी – पंचकल्याणक आगया .....

कविवर सन्तलालजी विरचित

# श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान

**कविवर सन्तलालजी के स्वनगर नकुड़ ( उत्तरप्रदेश ) से प्राप्त**

**प्राचीन शुद्ध हस्तलिखित प्रति के आधार से संशोधित**

प्रेरक :

**बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री,** देवलाली

सम्पादक :

**डॉ. राकेश जैन शास्त्री,** नागपुर

**इंजी. संयम जैन शास्त्री,** नागपुर

प्रकाशक :

**अजितप्रसाद वैभवकुमार जैन**

**श्री दिगम्बर जैन दिव्य देशना ट्रस्ट**

२२, ए/९, राजपुर रोड, सिविल लाइन, दिल्ली – ११००५४

# प्रकाशकीय

जैन

# सम्पादकीय

**जैन शास्त्रों में वर्णित अनेक पूजन-विधानों में 'सिद्धचक्र मंडल विधान' का विशेष महत्त्व है; क्योंकि इस विधान में हमारे चरम लक्ष्य 'सिद्धत्व की प्राप्ति' का ही विस्तृत गुणानुवाद किया गया है।**

जो संसार के बन्धनों से छूट गए हैं; जो द्रव्यकर्म-भावकर्म-नोकर्म से सर्वथा रहित हो गए हैं; जिनमें क्षायिक अनन्तदर्शन-क्षायिक अनन्तज्ञान-क्षायिक सम्यक्त्व (क्षायिक अनन्तसुख)-क्षायिक अनन्तवीर्य के अलावा अव्याबाधत्व, सूक्ष्मत्व, अवगाहनत्व और अगुरुलघुत्व गुण भी प्रगट हो गए हैं; उन्हें 'सिद्ध' कहते हैं - ऐसे अनन्त सिद्ध परमात्मा, लोक के अग्रभाग में विराजमान हैं।

सिद्धों का समुदाय ही 'सिद्धचक्र' कहलाता है और इस 'सिद्धचक्र विधान' में सभी सिद्धों का नामस्मरण-वन्दन-पूजन आदि के माध्यम से उनका गुणानुवाद करते हुए 'सिद्ध दशा प्रगट करने का विधान अर्थात् उपाय' भी बतलाया है।

ज्ञानी जीवों का चरम लक्ष्य पूर्ण सुख प्रकट करना है, अत: उसके हृदय में पूर्ण सुखी अरहन्त-सिद्ध परमेष्ठी तथा पूर्ण सुख के आराधक आचार्य-उपाध्याय-साधु परमेष्ठी तथा पूर्ण सुख का मार्ग बतानेवाली जिनवाणी के प्रति भक्तिभाव होना स्वाभाविक है। ज्ञानी जीव, विषय-कषायरूप अशुभभावों में तो रहना ही नहीं चाहते, परन्तु सिद्धों के समान पूर्ण शुद्धभाव प्रगट करने की उनकी वर्तमान में सामर्थ्य नहीं है, अत: सिद्ध भगवन्तों के गुणानुवाद के माध्यम से अपने लक्ष्य के प्रति सतर्क एवं रुचिवन्त रहते हुए वे अशुभभावों से तो सहज ही बच जाते हैं।

यह प्रकाशन, मुख्यरूप से जिस हस्तलिखित प्राचीन प्रति को आधार बना कर किया जा रहा है, उसका संक्षिप्त इतिहास जानना अत्यन्त आवश्यक है -

**'सिद्धचक्र विधान' के रचयिता कविवर सन्तलालजी के जीवनकाल में लिखित अत्यन्त प्राचीन प्रति का संक्षिप्त इतिहास एवं उसकी विशेषताएँ :**

'सिद्धचक्र विधान' का यह विशेष नवीन संस्करण **प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री** की खोजी वृत्ति का परिणाम है, जब वे आज से लगभग ३० वर्ष पूर्व सन् १९९० में **सिद्धचक्र विधान** के रचयिता **कविवर श्री सन्तलालजी** के जन्म-स्थान में गये थे, यह भारत के सबसे बड़े प्रदेश उत्तरप्रदेश के सहारनपुर जिले के निकट स्थित **नकुड़** गाँव है, वे दशलक्षण महापर्व में प्रवचनार्थ वहाँ गये थे, तब समाज ने आपके ही विधानाचार्यत्व में 'सिद्धचक्र विधान' भी रचाया था।

उससमय वहाँ उन्हें समाज के स्थानीय पण्डित श्री विजेन्द्रजी जैन, नकुड़ ने मन्दिरजी के हस्तलिखित ग्रन्थ भण्डार में विराजमान इस शुद्ध प्रति के दर्शन / अवलोकन कराए थे, वे विजेन्द्रजी आज भी हमारे बीच में विद्यमान हैं। जब उनसे इस प्रति की फोटोकॉपी देने के लिए निवेदन किया तो वे अत्यन्त प्रसन्न हुए; फिर उन्हें इसकी एक प्रति फोटोकॉपी अवलोकनार्थ प्रदान भी की। बाद में और अनेक महानुभावों को उन्होंने इस प्रति की फोटोकॉपी उपलब्ध कराई है।

यह प्रति वर्तमान विक्रम संवत् २०७७ से लगभग १३५ वर्ष पूर्व प्रति संवत् १९४२ में लिखी गई थी, उससमय कविवर सन्तलालजी भी जीवित थे।

इस हस्तलिखित प्रति के अन्त में निम्न प्रशस्ति एवं लिपिकर्ता का नाम प्राप्त होता है - **इति सिद्धचक्र सम्पूर्णम्। शुभम् सुखदायकम्। लिखतं पण्डित किरपालदत्त नुकड़ ग्राम-स्थिति** (निवासी)।

(दोहा)

**माघ शुक्ल तिथि सप्तमी, दिन है बेपतवार।**
**पुस्तग लिख पूरी करी, सबको हो सुखकार।।**
**संवत् विक्रम के कहे, यक-नव-चार अरु दोय।**
**सज्जनजन पूजा करें, भव-भव आनन्द होय।।**

[अर्थात् यह पुस्तक विक्रम संवत् १९४२, माघ शुक्ल सप्तमी तिथि, दिन बेपतवार अर्थात् बृहस्पतिवार (गुरुवार) के दिन लिखकर पूरा किया गया है, जो सबको सुखदायक हो; तथा जो सज्जनजन, इसके माध्यम से पूजन (सिद्धचक्र मंडल विधान पूजन) करेंगे, उन्हें भव-भव में आनन्द की प्राप्ति होगी अर्थात् शीघ्र मुक्ति की प्राप्ति होगी।]

**यह नकुड़ प्रति का पाठ अन्य हस्तलिखित प्रतियों के पाठ से अधिक शुद्ध, उचित एवं प्रामाणिक प्रतीत होता है; तथा नकुड निवासियों ने बताया कि यह प्रति कविवर सन्तलालजी के जीवनकाल में ही लिखी गई थी तथा**

**इसे कविवर ने देख भी लिया था और उसे शुद्ध भी कर लिया था; संवत् १९४२ ही कविवर की मृत्यु का भी संवत् है, तथा अनेक स्थानों पर हाशिये पर की गई शुद्धियाँ भी इसकी प्रमाण हैं; कि किसी विद्वान् व्यक्ति ने इस प्रति का शुद्धिकरण अवश्य किया है। अथवा यह भी सम्भव है कि स्वयं लेखक ने अपनी मूल प्रति को ही व्यावसायिक लेखक से अच्छीतरह साफ-सुथरी लेखनी में लिखवाया हो। इस कारण हम देखते हैं कि इस प्रति की लेखनी भी अत्यन्त स्पष्ट एवं सुन्दर है। इसके कुछ पृष्ठों की फोटो इस संस्करण के अन्तर्गत प्रकाशित भी किये गये हैं।**

एक युक्ति यह भी ज्ञात होती है कि जो भी मूल रचनाकार होते हैं, वे सामान्य बारम्बार उपयोग में आनेवाले मन्त्रों आदि को अपनी हस्तलिखित प्रति में नहीं लिखते हैं, वे प्रतिलिपिकारों को यह निर्देश दे देते हैं कि इन इन स्थानों पर इन सामान्य बारम्बार उपयोग में आनेवाले मन्त्रों आदि को लिख देवें। तथा यह पण्डितजी की स्वयं के उपयोग में आनेवाली प्रति थी, अत: इसमें सर्वत्र समान रहनेवाले स्थापना-अष्टक-जयमाला आदि के मन्त्रों को लिखा नहीं गया है, वहाँ मात्र 'अथ स्थापना' तथा अष्टकों के पूर्व 'अष्टक' या 'अथ पूजा' लिख दिया है, तथा जलादि के मन्त्र भी पूरे न लिखकर मात्र 'जलं' 'चन्दन' 'अक्षतं' आदि लिख दिया है। जयमाला के बाद के अर्घ्यों एवं 'पुष्पांजलिं क्षिपेत्' आदि मन्त्रों को भी नहीं लिखा गया है, क्योंकि इन सबका सर्वत्र समान प्रयोग होता है। हाँ, जब पूजनों के अन्तर्गत ८-१६-३२ आदि विशेष अर्घ्य आये हैं तो उनके मन्त्र भी यहाँ हस्तलिखित प्रति में अवश्य लिखे मिलते हैं।

इसप्रकार उक्त साक्ष्यों से यह सिद्ध होता है कि यह कविवर की मूल प्रति की ही प्रथम प्रतिलिपि होना चाहिए, जिसे कविवर ने अपनी प्रति की ही शुद्ध साफ प्रति अन्य विश्वस्त प्रतिलिपिकार से लिखवायी होगी। लेकिन इतना होने पर भी हमें ऐसा कोई स्पष्ट साक्षात् प्रमाण नहीं मिला, जिससे यह संकेत मिलता कि यह प्रति कविवर ने स्वयं शुद्ध कर ली थी, अत; हमने प्रस्तुत प्रकाशन में अनेक हस्तलिखित और प्रकाशित प्रतियों को सामने रखकर भी पाठ मिलाये हैं; यद्यपि हमें यह कहने में बिल्कुल भी संकोच नहीं है कि अन्य हस्तलिखित प्रतियों के सामने यह अत्यन्त शुद्ध प्रति है; अत: इस प्रकाशन में मुख्यरूप से तो इसी नकुड प्रति के पाठ को ही सर्वत्र रखा गया है, तथापि जहाँ इस प्रति के पाठ



में सन्तोष नहीं हुआ, अथवा अर्थ समझने में कठिनाई प्रतीत हुई, वहाँ अन्य हस्त-लिखित प्रतियों तथा प्रकाशित प्रतियों के पाठों को सामने रखकर अन्तिम निर्णय लिया गया है। इसप्रकार इस प्रकाशित पाठ को अन्तिम रूप दिया गया है।

## प्रस्तुत प्रकाशन के प्रमुख सम्पादन बिन्दु

१. प्रस्तुत हस्तलिखित प्रति के लेखन में उसके लेखक की बुद्धि के अनुसार अनेक शब्दों को वर्तमान वर्तनी के प्रकारों से भिन्न लिखा मिलता है, जिसे वर्तमान शैली के अनुसार इस संस्करण में सुधारा गया है। जैसे, 'सरूप' को स्वरूप, 'सभाव' को स्वभाव, 'त्रभवन या त्रिभवन' को त्रिभुवन, 'नमूं' को नमूँ आदि।

२. इस संस्करण में जगह-जगह प्रकरणानुसार शीर्षक-उपशीर्षक भी दिये गये हैं, जिससे विषय समझने में सरलता हो। जैसे, सप्तम पूजन में पंच परमेष्ठी के अर्घ्यों में प्रत्येक सौ-सौ छन्दों के बाद अरहन्त परमेष्ठी के अर्घ्य, सिद्ध परमेष्ठी के अर्घ्य आदि। इसीप्रकार छठी पूजन में १४८ कर्म-प्रकृतियों के भेदों में शीर्षक-उपशीर्षक लगाये हैं। इसीप्रकार अन्यत्र भी समझना चाहिए।

३. प्रस्तुत प्रकाशन में अनेक स्थानों पर संस्कृत विधान के आधार पर अर्घ्यावली के मन्त्रों का मिलान तथा संशोधन भी किया गया है। इस प्रति में कहीं-कहीं लिपिकार मन्त्र भी नहीं लिख पाये हैं, वहाँ संस्कृत विधान का सहारा लेकर उसकी पूर्ति कर ली गई है।

४. मूल प्रति के मन्त्रों में 'ऊँ ह्रीं' के बाद 'अर्हं' शब्द कहीं मिलता है, कहीं नहीं मिलता है; तो उसे एकरूपता की दृष्टि से सर्वत्र जोड़ा गया है।

५. 'जयमाला' के लिए 'आरती' शब्द का भी प्रयोग मिलता है, अत: एक जगह उसका संकेत किया गया है।

६. अनेक स्थानों पर कठिन शब्दों के अर्थ भी नीचे पाद-टिप्पण में दिये हैं; जैसे, सप्तम पूजन में मन्त्र ४३८ के छन्द में 'अटाला = ढेर, राशि या अंबार' और 'अझोला = आवरण, बाधा या आड़ रहित' इत्यादि पाद-टिप्पण दिये हैं।

इस सम्पादन-कार्य को सम्पन्न करने में **आदरणीय प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. श्री अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, खनियाधाना/देवलाली** का आग्रह तो था ही, उन्होंने स्वयं हमारे साथ नागपुर आकर, अनेकों बार में महिनों परिश्रम किया

है; वे हस्तलिखित प्रति से पढते थे और हम प्रकाशित प्रति में संशोधन करते थे; अत: मैं भाईसाहब श्री अभिनन्दनजी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

साथ ही मन्त्रों का मिलान करने में संस्कृत प्रकाशन – **'वृहद् श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान'**, सुमति साहित्य सदन, दिल्ली, सन् १९८९ को आधार बनाकर संशोधन कार्य किया गया है। यद्यपि इस प्रकाशन में कहीं भी इस ग्रन्थ के मूल रचयिता के नाम का उल्लेख नहीं मिलता है, परन्तु इन्दौर से सन् १९४१ में प्रकाशित प्राचीन प्रति में इसके रचयिता का नाम **श्री शुभचन्द्राचार्य** का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। इस प्रति की श्री अरुण जैन चेन्नई से प्राप्त पीडीएफ में भारतीय श्रुति-दर्शन केन्द्र, जयपुर की सील प्राप्त होती है।

संस्कृत मन्त्रों का मिलान करने में तथा भाईसाहब ब्र. अभिनन्दनजी की अनुपस्थिति में हस्तलिखित प्रति से भी पाठों का मिलान करने में **हमारे सुपुत्र इंजी. पण्डित संयम जैन शास्त्री एवं धर्मपत्नि श्रीमती डॉ. स्वर्णलता जैन** ने भी बहुत सहयोग प्रदान किया है, अत: हम इनके भी विशेष आभारी हैं।

## संस्कृत सिद्धचक्र विधानों के प्रकाशन का संक्षिप्त इतिहास

इसका प्रकाशन इन्दौर-निवासी श्रीमन्त सेठ सर हुकमचन्दजी के पौत्र एवं श्रीमन्त सेठ जैनरत्न राजकुमार सिंह के सुपुत्र स्वर्गीय वीरेन्द्रकुमार सिंह की पवित्र स्मृति (जन्मतिथि ३०.७.१९३४ एवं देहावसान २६.६.१९४१; कुल आयु लगभग सात वर्ष) में किया गया था।

इस विधान का प्रकाशन, इन्दौर के दिगम्बर जैन उदासीनाश्रम में स्थित अमर ग्रन्थालय से प्राप्त हस्तलिखित प्रति के आधार से पर्याप्त संशोधन करके किया गया है। इसके प्राक्कथन में पण्डित खूबचन्दजी जैन ने लिखा है –

'यद्यपि कुछ वर्ष पहले सूरत से स्व. कविवर सन्तलालजी कृत एक सिद्धचक्र मण्डल विधान छप कर प्रकाशित हो चुका है, परन्तु वह संस्कृत में नहीं, हिन्दी में है। संस्कृत का यह विधान जहाँ तक हम समझते हैं, यह अभी तक कहीं से प्रकाशित नहीं हुआ है। ..... पाठक महानुभाव, विधान को पढकर स्वयं समझ सकेंगे कि यह किसी एक विद्वान की सम्पूर्ण कृति न होकर एक संग्रहीत पाठ है, जिसके कि कर्ता **भट्टारक श्री शुभचन्द्रजी** हैं।

प्रस्तुत पाठ में एक ही जयमाला दो पूजनों में पाई जाती थी, परन्तु हमने



वैसा न करके दूसरे स्थान पर श्री १०८ आचार्यप्रवर पूज्यपादस्वामी कृत सिद्ध-स्तोत्र को उस जयमाला की जगह रख दिया है।'

इसी प्रकार आठवीं पूजन के १०२४ मन्त्रों की रचना के आधारभूत आगम के सम्बन्ध में वे लिखते हैं –

'आठवीं पूजा के जितने मन्त्र हैं, वे सब महापण्डित आशाधरजी कृत सहस्त्रनाम के आधार पर ही हैं – इन नामों का अर्थ समझने में प्राय: विद्वानों को भी कठिनता प्रतीत होती थी, अतएव बम्बई के श्री १०५ ऐलक पन्नालाल दिगम्बर जैन सरस्वती भवन से प्राप्त श्री श्रुतसागर सूरि कृत प्राचीन संस्कृत टीका के आधार पर हमने ऐसे शब्दों की निरुक्ति और अर्थ दे दिया है।

कुछ महानुभावों की इच्छा थी कि आठवीं पूजा के मन्त्रों को भगवत् जिनसेनाचार्य कृत सहस्त्रनाम के द्वारा परिवर्तित कर देना चाहिए, अत: उनके सन्तोष के लिए भगवत् जिनसेनाचार्य के सहस्त्रनाम गर्भित मन्त्र भी अन्त में (पृष्ठ १४९-१७५) दे दिये गये हैं। अतएव इस पाठ में आठवीं पूजा का मन्त्र भाग दुहरा हो गया है। पूजन करनेवाले सज्जनों को इनमें से यथारुचि किसी भी एक पाठ का उपयोग कर लेना चाहिए।'

अध्ययन करने पर दोनों संस्कृत विधानों में कुछ समानता एवं कुछ विशेषता भी ज्ञात होती है –

१. प्रत्येक में जयमालाओं के हिन्दी अर्थ भी दिये गये हैं; इससे प्रतीत होता है कि सिद्धचक्र विधानों के आयोजन के समय जयमालाओं का विशेषतया अर्थ करने की परम्परा भी बहुत प्राचीन समय से ही चली आ रही है।

२. उर्ध्वाधोरयुतं ..... आदि एवं निरस्तकर्मसम्बन्धं .... आदि स्थापना के दो छन्द, सभी पूजनों में एक ही है; जबकि अष्टक के छन्द अलग-अलग हैं।

३. प्रत्येक पूजन में अष्टक के अन्तर्गत जल के छन्द के बाद उस पूजन के ८-१६-३२ आदि अर्घ्यों के मन्त्रों को एकसाथ लिखा गया है, मानो वे उन-उन मन्त्रों में उल्लिखित गुणों के द्वारा आराध्य सिद्धभगवन्तों की पृथक्-पृथक् पूजन भी कर रहे हों। इसप्रकार प्रत्येक मन्त्र को याद करके उन गुणों के धारक सिद्ध भगवन्तों को पृथक्-पृथक् अष्टक एवं अर्घ्य समर्पित किया गया है। यह तो हम सबको ज्ञात ही है कि अष्टकों के बाद अर्घ्य में सभी अष्ट द्रव्यों

का समावेश किया जाता है। हम यह भी कह सकते हैं कि अर्घ्य के माध्यम से मानो संक्षिप्त पूजन ही की जाती है। तथा संस्कृत विधानों में प्रथम पूजन के जल के छन्द के बाद सामूहिकरूप से ८-१६-३२ आदि मन्त्रों को लिखने के बाद वहाँ पर यह नोट भी लिखा मिलता है कि - 'प्रत्येक मन्त्र को क्रमशः नौ बार बोलना चाहिए तथा क्रमशः अलग-अलग मन्त्रोच्चारण के साथ (मन्त्रों में जल के स्थान पर यथायोग्य चन्दन-अक्षत आदि परिवर्तन करके) जल-चन्दन-अक्षत-पुष्प-नैवेद्य-दीप-धूप-फल-अर्घ्य समर्पित करना चाहिए; इससे इस विधान को अत्यन्त विस्तार के साथ भी करने की सूचना मिलती है।

४. दिल्ली से प्रकाशित प्रति में तो अष्टकों के बाद उक्त मन्त्रों को अर्घ्यावली के अन्तर्गत श्लोक / छन्द के साथ लिखकर अलग से अर्घ्य भी समर्पित किये गये हैं, परन्तु इन्दौर से प्रकाशित प्रति में नहीं। इसप्रकार इन्दौर से प्रकाशित प्रति में तो मन्त्र एक बार ही लिखे गये हैं, जबकि दिल्ली से प्रकाशित प्रति में ८-१६-३२ आदि मन्त्रों का उल्लेख प्रत्येक पूजन में दो-दो बार आया है।

५. इसीप्रकार हिन्दी छन्द/पद्य के साथ मन्त्र लिखने का प्रयोग, हिन्दी 'सिद्धचक्र विधान' में भी कविवर श्री सन्तलालजी ने किया है। हाँ, इसमें मन्त्रों को पृथक् सामूहिकरूप से कहीं भी उल्लिखित नहीं किया गया है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि विधानों को अपनी परिस्थिति के अनुसार यत्किंचित् परिवर्तन के साथ भी किया जा सकता है। ऐसा इसलिए भी है कि बिल्कुल नहीं करने की अपेक्षा, समयानुसार अपनी भावनाओं का प्रगटीकरण अवश्य करना चाहिए।

५. यद्यपि अधिकांश स्थानों पर तो दोनों संस्कृत पाठों में मन्त्र समान ही हैं, परन्तु अनेक जगह मन्त्रों और उनके क्रम में अन्तर भी दृष्टिगोचर होता है।

६. इन्दौर से प्रकाशित प्रति में अनेक स्थानों पर मन्त्रों के निमित्त से नीचे पाद-टिप्पण भी मिलते हैं, जहाँ उनके सम्बन्ध में कुछ विशेष विवरण मिलता है। जैसे, अष्टम पूजन में क्रमांक ९८९ पर एक मन्त्र **'ॐ ह्रीं अत्यन्तनिर्दयाय नमः स्वाहा'** आया है; इससे पाठकों को भ्रम हो सकता है, इसके निराकरणार्थ पाद-टिप्पण में शंका उत्पन्न करके निम्नानुसार समाधान किया गया है -

**परमकारुणिकत्वाद्भागवतः कथं निर्दयत्वमिति चेत् ?**

**परिह्रियते - अतिगतो विनष्टोऽन्तो विनाशो यस्येत्यन्तः, निश्चिता दया (सगुणनिर्गुणप्राणिवर्गरक्षण-लक्षणा करुणा) यस्येति निर्दय अत्यन्तश्चासौ निर्दयश्चेत्यत्यन्तनिर्दयः।**

**अथवा अति-अतिशयेन अन्ते अन्तके यमे निर्दयः, यद्वा अतिशयेन अन्त-विनाश-प्राप्ता निर्दया यस्मात्।**

**अथवा अतिशयेन अन्ते मोक्षगमने निश्चिता दया यस्य।**

अर्थात् उक्त संस्कृत पाद-टिप्पण का हिन्दी में अर्थ इसप्रकार है -

**शंका** - परम कारुणिक होने से भगवन्तों को निर्दयपना कैसे सम्भव है?

**समाधान** - इसका परिहार करते हैं - अति को प्राप्त हुआ है अन्त या विनाश जिसका - ऐसा 'अत्यन्त' शब्द का अर्थ है तथा जिसकी निश्चित दया (अर्थात् सगुण एवं निर्गुण प्राणिवर्ग का रक्षण करनेरूप है लक्षण जिसका - ऐसी करुणा) है - ऐसा निर्दय का अर्थ है; इसप्रकार अति-अन्तता को प्राप्त निश्चित स्वरूपवाली दया - ऐसे अत्यन्त निर्दय (सिद्ध भगवन्तों)को हमारा नमस्कार है।

अथवा अति - अतिशयता से, अन्त - अन्त करनेवाले, निर्दय - यम; अर्थात् जिनके अतिशयतापूर्वक अन्त या विनाश को प्राप्त हो गये हैं निर्दय यम - ऐसे अत्यन्त-निर्दय (सिद्ध भगवन्तों) को हमारा नमस्कार है।

अथवा जिन्होंने अतिशयता से अन्ते मोक्ष-गमन करके निश्चितरूप से दया प्राप्त कर ली है - ऐसे सिद्ध भगवन्तों को हमारा नमस्कार है।

इसप्रकार पाद-टिप्पणों में श्री श्रुतसागर सूरि कृत प्राचीन संस्कृत टीका के आधार पर शब्दों के निरुक्तिपूर्वक अर्थ दिये गये हैं।

६. दोनों में प्रत्येक पूजन के अष्टकों के बाद और जयमाला के पूर्व **ॐ ह्रीं असिआउसा नमः** - इस मन्त्र की १०८ बार जाप देने का उल्लेख किया गया है।

इसप्रकार प्रस्तुत प्रकाशन को अनेक हस्तलिखित प्रतियों के अलावा अनेक प्रकाशित संस्कृत-हिन्दी के सिद्धचक्र विधानों के संस्करणों का अवलोकन करके / सहयोग लेकर प्रकाशित किया गया है, अतः हम इन सभी के प्रकाशन संस्थाओं के भी अत्यन्त आभारी हैं। इन सभी का संक्षिप्त विवरण इसप्रकार है -

## प्रस्तुत प्रकाशन में सहयोगी हस्तलिखित एवं प्रकाशित प्रतियाँ

### हस्तलिखित तीन प्रतियों का परिचय

१. हस्तलिखित प्रतियों में नकुड से प्राप्त प्रति (फोटोकॉपी) के लिए तो यह प्रकाशन समर्पित है ही, क्योंकि उसी को आधार बनाकर इस संस्करण को प्रकाशित करने की भावना बनी है – यह प्रति श्रीमान् पण्डित किरपालदत्त नकुड के द्वारा कविवर सन्तलालजी के मृत्यु संवत् १९४२ अर्थात् आज से १३५ वर्ष पूर्व सन् १८८५ में ही लिखी गई थी।

२. यह श्री विक्रान्तजी झालरापाटन से प्राप्त हुई, महलका (खास, मेरठ) की प्रति है, इस प्रति को भी श्रीमान् ताराचन्द जैन ने मिती कार्तिक शुक्ला १०, वि.सं. १९८८ में ही (आज से ८९ वर्ष पूर्व) लिखकर पूरा किया था।

३. यह भी श्री विक्रान्तजी झालरापाटन से प्राप्त हुई, महलका (खास, मेरठ) की ही प्रति है, इसे भी उक्त श्रीमान् ताराचन्द जैन ने पूर्व प्रति से लगभग दो माह बाद मिती पौष सुदी ७, दिन शुक्रवार, विक्रम संवत् १९८८ (आज से ८९ वर्ष पूर्व) लिखकर पूरा किया था।

### प्रकाशित चार संस्करणों का विवरण

५. श्री अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, जयपुर से प्रकाशित पंचम / अष्टम संस्करण, ई. सन् १९९६; न्यौछावर राशि – मात्र ११ / १८ रुपये।

४. श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट, सोनगढ़ से प्रकाशित तृतीय रंगीन आवृत्ति, ई. सन् २००९; न्यौछावर राशि – मात्र २० रुपये।

६. श्री वीर पुस्तक भण्डार, जयपुर से प्रकाशित नवीन संस्करण, ई. सन् २००१; न्यौछावर राशि – मात्र ५० रुपये।

७. श्री दिगम्बर जैन पुस्तकालय, सूरत से प्रकाशित संस्करण, प्रकाशन तिथि का प्रकाशन नहीं; न्यौछावर राशि – मात्र ५० रुपये।

### प्रकाशित दो अर्थसहित ( अनुवादित ) संस्करणों का विवरण

८. पण्डित सनतकुमार विनोदकुमार रजवांस द्वारा अनुवादित एवं सम्पादित संस्करण; प्रकाशक – श्री देवेन्द्रकुमार अभिषेककुमार जैन, शाहदारा, दिल्ली; ई. सन् २००५; न्यौछावर राशि – मात्र १०० रुपये।

९. ब्र. कल्पनाबेन सागर द्वारा अनुवादित एवं सम्पादित संस्करण; प्रकाशक – श्री अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, न्यू उस्मानपुर, दिल्ली; ई. सन् २०१०; न्यौछावर राशि – मात्र ५० रुपये।

नोट – एक बार हमारा भी 'श्री सिद्धचक्र विधान' को अर्थसहित प्रकाशित करने का भाव है; देखें, भवितव्य में क्या है?

### श्रीपाल-मैनासुन्दरी की घटना का 'सिद्धचक्र विधान' से क्या सम्बन्ध?

श्री सिद्धचक्र विधान कराने के साथ श्रीपाल और उनके साथियों का कुष्ठरोग दूर होने की घटना जुड़ गई है। सिद्ध भगवन्तों में अत्यधिक गुणानुरागरूप शुभ भाव, तदनुसार साता वेदनीय कर्म का उदय और बाह्य अनुकूल संयोग की प्राप्ति – इस निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध से किसी के रोगादि दूर हो जाना आश्चर्य की बात नहीं है; परन्तु सिद्धचक्र की महिमा मात्र कुष्ठ-निरोध तक सीमित करना, उसकी महानता को हीन प्रदर्शित करता है। कुष्ठ तो शरीर का रोग है, आत्मा का रोग तो मोह-राग-द्वेषादि विकारी भाव हैं; अरे! सिद्धों का स्वरूप जानकर, उन जैसी अपनी आत्मा को पहचानकर, उसमें ही लीन हो जाने पर मोह-राग-द्वेष और जन्म-मरण जैसे महान रोग भी नष्ट हो जाते हैं।

**एक और निवेदन** – पूजन करते समय एवं पूजनों को लिखते समय सर्वत्र पूजकों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि स्थापना के समय हम अपने पूज्य पुरुषों का आह्वान करते हैं, अतः उस समय उनके नाम का संस्कृत भाषा के अनुसार सम्बोधनवाची चिह्न ( ! ) के साथ प्रयोग करें तथा जब अष्टक या अर्घ्य समर्पित करें, उस समय हमें उनके नाम के साथ चतुर्थी का प्रयोग करें; क्योंकि नमः, अर्घ्यं आदि के योग में चतुर्थी का प्रयोग होता है।

### श्री सिद्धचक्र विधान की आठ पूजनों की विशेषता

सिद्धचक्र विधान की आठ पूजाओं में सर्वत्र **सिद्धचक्राधिपति सिद्ध-परमेष्ठियों** को 'यन्त्र-स्थापना' के माध्यम से स्थापित करके उनकी अष्टकों के माध्यम से पूजा की गई है, इसका कारण यह प्रतीत होता है कि यह सिद्धचक्र विधान है, इसमें किसी एक सिद्धभगवान् की पूजन नहीं की गई है, इसमें त्रिकालवर्ती अनन्तानन्त सिद्ध भगवन्तों की पूजन की गई है, अतः उनकी स्थापना किसी एक मूर्ति में नहीं की जा सकती है, अतः उसके लिए सिद्धचक्र का यन्त्र

स्थापित करके पूजन की जाती है; सिद्धयन्त्रों में उनके गुणों एवं गूढ़ रीति से सभी सिद्धों के नामों का भी उल्लेख होता है, क्योंकि सभी सिद्धों के नाम वर्णमाला के वर्णों के माध्यम से बनते हैं, अत: सिद्धयन्त्र में अनन्त सिद्धों की स्थापना करके उसकी पूजन की जाती है।

यही कारण है कि प्रत्येक पूजन के पूर्व स्थापना के छन्द में निम्न छन्द बोला जाता है –

**ऊरध अधो सु रेफ, सबिंदु हकार विराजे।**
**अकारादि स्वर-लिप्त, कर्णिका अन्त सु छाजे॥**
**वर्गन-पूरित वसु-दल-अम्बुज तत्त्व-संधि धर।**
**अग्र भाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर॥**
**पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत ही अरि-नाग[९] को।**
**ह्वै केहर सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो॥**

अर्थात् **सिद्ध-चक्र-यन्त्र** का वर्णन करते हुए इस छन्द में कहते हैं कि – जिसके ऊपर-नीचे रेफ है, मध्य में बिन्दु सहित हकार है, अकारादि स्वरों से जो लिप्त है, जिसके अन्त में कर्णिका है, जिसके चारों ओर आठ प्रकार के वर्गों से पूरित अष्ट-दल-कमल है, जिनकी सन्धियों में तत्त्व अर्थात् तत्त्वज्ञान-प्रदाता 'णमो अरहंताणं' शोभायमान है; इन कमलों पर अग्रभाग में अनाहत मन्त्र 'ऊँ' तथा अन्त में पुन: 'ह्रीं' सुशोभित होता है। इस सिद्धयन्त्र की देवता भी साधना-आराधना करते हैं तथा जैसे, हाथियों के समूह को सिंह वशीभूत कर लेता है, उसीप्रकार यह यन्त्र, कर्मरूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेता है; अत: मैं भी पूजन के लिए इस सिद्धयन्त्र की स्थापना करता हूँ।

आठ पूजनों की अर्घ्यावली में भी उन सिद्ध भगवन्तों के गुणों का स्मरण करके, सिद्धचक्र अर्थात् सिद्धों के समूह की क्रमश: ८-१६-३२-६४-१२८-२५६-५१२-१०२४ अर्घ्य समर्पित करके पूजन-विधि सम्पन्न की जाती है।

## एक सिद्धचक्र विधान में अनेक विधानों का अन्तर्भाव

इस एक सिद्धचक्र विधान को करने से अनेक विधानों को करने का लाभ प्राप्त होता है। जैसे, सिद्ध-गुण-विधान, चौंसठ-ऋद्धि-विधान, पाप-दहन-विधान, प्रायश्चित्त विधान, कर्म-दहन-विधान, पंच-परमेष्ठी-विधान, जिन-सहस्र-नाम-विधान आदि। उनका विवरण इसप्रकार है –

प्रारम्भिक तीन पूजनों में से **प्रथम पूजन** में सिद्धों के **आठ विशेष गुण** में से प्रत्येक गुण को अलग-अलग को याद करते हुए सिद्धचक्र को आठ अर्घ्य समर्पित किये गये हैं। **द्वितीय पूजन** में इन्हीं आठ गुणों में अनन्तचतुष्टय और अन्य गुणों को शामिल करके **सोलह गुण** के माध्यम से उन्हें सोलह अर्घ्य समर्पित किये गये हैं। **तृतीय पूजन** में सिद्धों के **शुद्ध बत्तीस गुण** का स्मरण करके उन्हें बत्तीस अर्घ्य समर्पित किये गये हैं। इस प्रकार इन तीन पूजनों के माध्यम से मानो **'सिद्ध-गुण-विधान'** किया गया है।

**चतुर्थ पूजन** में चौंसठ ऋद्धियों के माध्यम से सिद्ध भगवन्तों को प्राप्त हुई भूतपूर्व ऋद्धियों का स्मरण करके उन्हें चौंसठ अर्घ्य समर्पित किये गये हैं। इस प्रकार इस पूजन के माध्यम से मानो **'चौंसठ-ऋद्धि-विधान'** किया गया है।

**पंचम पूजन** में सिद्ध भगवन्तों के २० सामान्य-विशेष गुणों का स्मरण करके, पश्चात् उन सिद्ध भगवन्तों ने भूतपूर्व साधु अवस्था में जो मन-वचन-काय, कृत-कारित-अनुमोदना, संरम्भ-समारम्भ-आरम्भ तथा क्रोध-मान-माया-लोभ के परस्पर संयोग से होनेवाले १०८ पापों का जो परिहार या प्रायश्चित्त किया था, उनके स्मरणस्वरूप एक सौ अट्ठाईस अर्घ्य समर्पित किये गये हैं। इस प्रकार इस पूजन के माध्यम से मानो **'पाप-दहन-विधान'** एवं **'प्रायश्चित्त-विधान'** किया गया है।

**षष्ठ पूजन** में सिद्ध भगवन्तों ने जिन ८ कर्मों की १४८ प्रकृतियों का नाश किया है, उनके सामान्य-विशेष भेदों के अभाव में प्रगट होनेवाले स्वभावभावों एवं अन्य आनन्दभाव-साम्यभाव-अनन्तभाव-अनन्यभाव-समभाव-ब्रह्मभाव-शुद्धभाव-अव्ययभाव-चिन्मयभाव-चिद्रूपभाव-स्वानुभूतिभाव-परमभाव-एकत्वभाव-शाश्वतभाव-सूक्ष्मत्वभाव-निरवधिभाव-अतुलभाव-अचलभाव-निरालम्बभाव-आत्मभाव-स्वानन्दभाव-स्नातकभाव-सर्वावलोकभाव आदि से सम्बन्धित शताधिक सामान्य-विशेषभावों सहित सिद्ध भगवन्तों को कुल २५६ अर्घ्य समर्पित किये गये हैं। इस प्रकार इस पूजन के माध्यम से मानो **'कर्म-दहन-विधान'** किया गया है।

इस षष्ठ पूजन में १२३वें अर्घ्य में विहायोगति नामकर्म सम्बन्धी एक ही मन्त्र है, जबकि १४८ प्रकृतियों में विहायोगति के प्रशस्त और अप्रशस्त – ऐसे दो भेद मिलते हैं, दोहे में भी 'शुभ चाल .... आदि' प्रशस्त विहायोगति का ही

वर्णन किया गया है, अप्रशस्त विहायोगति का नहीं; अत: इस संस्करण में वहाँ दोहे के बिना केवल 'ॐ ह्रीं **अप्रशस्त-विहायोगतिनामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं'- यह अर्घ्य समाविष्ट किया गया है। इस सम्बन्ध में एक टिप्पणी भी वहाँ दी गई है, जो इसप्रकार है - 'नकुड़ या जयपुर की हस्तलिखित प्रतियों में विहायोगति नामकर्म सम्बन्धी एक ही छन्द है, वह भी प्रशस्त सम्बन्धी ही है, अत: अप्रशस्त विहायोगति सम्बन्धी केवल अर्घ्य बनाकर यहाँ दिया गया है।'

**सप्तम पूजन** में सिद्ध भगवन्तों ने भूतपूर्व मोक्षमार्ग और वर्तमान मोक्ष की अवस्था में जिन पंच परमेष्ठी पदों का धारण किया है, उनके क्रमश: ४६-८-३६-२५-२८ आदि विशेष गुणों से सम्बन्धित १००-१०० (साधु परमेष्ठी के ११२); इस प्रकार कुल ५१२ अर्घ्य समर्पित किये गये हैं। इस प्रकार इस पूजन के माध्यम से मानो '**पंच-परमेष्ठी-विधान**' किया गया है।

इस पूजन की अर्घ्यावली में अर्घ्य ४४ और ४५ के बाद एक एक अर्घ्य लोकोत्तम के प्रसंग में द्वादशांग और श्रुतज्ञान के लिए भी आवश्यक प्रतीत हुआ; क्योंकि द्वादशांग और श्रुतज्ञान को पूर्व में मंगल के प्रसंग में अर्घ्य २७ एवं २९ में तथा शरण के प्रसंग में ६३ एवं ६५ में अर्घ्य दिये ही गये हैं; इसीप्रकार दिल्ली से प्रकाशित संस्कृत सिद्धचक्र विधान में भी वे नहीं हैं, जबकि इन्दौर से प्रकाशित संस्कृत सिद्धचक्र विधान में अर्घ्य ४६ में 'ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-द्वादशांगाय** नमः स्वाहा' - यह अर्घ्य मिलता है। यह भी सम्भव है कि लिपिकार की गलती से वे छूट गये हों; अत; प्रकरण की सम्पूर्ति के लिए उनके मन्त्रों को इस संस्करण में समाविष्ट किया है। तद्विषयक टिप्पणी भी वहाँ लगाई है।

**अष्टम पूजन** में नाम रहित सिद्ध भगवन्तों के मानो एक हजार आठ नामों का स्मरण करके १०२४ अर्घ्य समर्पित किये गये हैं। इस प्रकार इस अष्टम और अन्तिम पूजन के माध्यम से मानो '**जिन-सहस्त्र-नाम-विधान**' किया गया है।

इसप्रकार हम एक 'सिद्धचक्र विधान' के माध्यम से अनेक विधानों का लाभ प्राप्त कर सकते हैं - यह भी इस विधान की सर्वोत्कृष्ट महिमा को सूचित करता है।

### छन्दों की तर्ज

इस विधान में हिन्दी/संस्कृत के कुल मिलाकर ४७ छन्दों का प्रयोग किया गया है, जिनकी तर्ज / धुनें हमने छन्द के नाम के साथ ही देने का प्रयास किया है। इन धुनों को तैयार करने में प्रमुखरूप से पण्डित समकितजी शास्त्री खनियाधाना, साथ में पण्डित रमेशजी इन्दौर, पण्डित मधुरजी शास्त्री सागर एवं पण्डित विकेशजी शास्त्री का भी सहयोग प्राप्त हुआ है, इसके लिए हम इन सभी विद्वानों के विशेष आभारी हैं।

### आध्यात्मिकता से भरपूर विधान

इस विधान के माध्यम से समयसार आदि अनेक आध्यात्मिक ग्रन्थों के स्वाध्याय का लाभ भी प्राप्त होता है। अनेक स्थलों पर लिपिकारों का अर्थ का भावभासन नहीं होने से वे उसमें कुछ परिवर्तन भी कर देते हैं। जैसे, उदाहरणार्थ, अष्टम पूजन का ४२वाँ छन्द देखें -

**निर्भय हो निर-आश्रयी, नि:संगी निर्बन्ध।**
**निज साधन, साधक सु निज[१], पर सों नहिं संबंध॥**

अर्थात् हे प्रभु! निश्चय से शुद्धात्मा और व्यवहार से सिद्ध भगवान निर्भय हैं, निराश्रय हैं, नि: संग हैं और निर्बन्ध हैं; यहाँ तक कि वह स्वयं ही साधन है और स्वयं ही साधक है, पर से उसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं है।

इसी पूजन के ७२वें छन्द में शुद्ध शब्द की व्याख्या में समयसार की ६, ७, ३८, ७३ आदि गाथाओं / टीकाओं की झलक दिखाई देती है -

**परकृत भाव न लेश है, भेद कह्यो नहिं जाय।**
**वचन-अगोचर 'शुद्ध' हैं, सिद्ध महा सुखदाय॥**

अर्थात् परकृत अर्थात् छठी गाथा में कथित प्रमत्त-अप्रमत्त भाव से रहित हूँ, भेद अर्थात् ज्ञानादि गुणों के अनन्त भेद हैं, जो कहे भी नहीं जा सकते अथवा आत्मा का गुप्त रहस्य कहा नहीं जा सकता, वह वचनों से अगोचर है; इसलिए

१. यहाँ पर अन्य हस्तलिखित प्रतियों में 'निज' को ही साधक न लिखते हुए 'सुगुण' को साधक लिखा है। २. यहाँ भी 'असिद्ध' को प्रतिलिपिकारों ने 'प्रसिद्ध' कर दिया है।

शुद्धात्मा या सिद्ध भगवान का स्वरूप 'शुद्ध' और 'महा-सुख-प्रदायक' है।

इसी प्रकार १५८वाँ छन्द देखें -

**जाकी शक्ति अपार है, हेतु-अहेतु असिद्ध[२]।**
**गणधरादि जानत नहीं, मैं वंदूँ नित सिद्ध॥**

अर्थात् हे प्रभु! निश्चय से शुद्धात्मा और व्यवहार से सिद्ध भगवान की शक्ति अपार है - वह हेतुवाद या अहेतुवाद से सिद्ध नहीं की जा सकती हैं, उसे पूर्णरूप से गणधरादि भी जानने में समर्थ नहीं हैं, उसे मैं नमस्कार करता हूँ।

**परकृत भाव न लेश है, भेद कह्यो नहिं जाय।**
**वचन-अगोचर 'शुद्ध' हैं, सिद्ध महा सुखदाय॥**

# प्रस्तावना

## श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान : उद्देश्य एवं महत्त्व

जैन शास्त्रों में वर्णित अनेक पूजन-विधानों में 'सिद्धचक्र मण्डल विधान' का विशेष महत्त्व है; क्योंकि इस विधान में हमारे चरम लक्ष्य सिद्धदशा की प्राप्ति का वर्णन है; उसका ही विस्तृत गुणानुवाद इसमें किया गया है।

जो संसार के बन्धनों से छूट गए हैं; जो द्रव्यकर्म-भावकर्म-नोकर्म से सर्वथा रहित हो गए हैं; जिनमें अष्ट कर्मों के अभाव से क्षायिक सम्यक्त्व आदि अष्ट गुण प्रगट हो गए हैं; उन्हें 'सिद्ध' कहते हैं - ऐसे अनन्त सिद्ध परमात्मा लोक के अग्रभाग में विराजमान हैं। सिद्धों का समुदाय ही 'सिद्धचक्र' कहलाता है और इस 'सिद्धचक्र विधान' में सिद्ध दशा प्रगट करने का विधान (उपाय) बतलाते हुए सिद्धों का गुणानुवाद किया गया है।

ज्ञानी का चरम लक्ष्य पूर्ण सुख प्रकट करना है, अतः उसके हृदय में पूर्ण सुखी अरहन्त और सिद्ध परमेष्ठी तथा पूर्ण सुख के आराधक आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी तथा पूर्ण सुख का मार्ग बतानेवाली जिनवाणी के प्रति भक्ति-भाव होना स्वाभाविक है। ज्ञानी जीव विषय-कषाय रूप अशुभ भावों में तो रहना नहीं चाहते और सिद्धों के समान पूर्ण शुद्ध भाव प्रगट करने की उनकी वर्तमान में सामर्थ्य नहीं है, अतः सिद्ध भगवन्तों के गुणानुवाद के माध्यम से अपने लक्ष्य के प्रति सतर्क रहते हुए वे अशुभ भावों से सहज ही बच जाते हैं।

सिद्धचक्र विधान के साथ श्रीपाल और उनके साथियों का कुष्ठरोग दूर होने की घटना जुड़ गई है। सिद्ध भगवन्तों में अत्यधिक गुणानुरागरूप शुभ भाव, तदनुसार सातावेदनीय कर्म का उदय और बाह्य अनुकूल संयोग की प्राप्ति - इस निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध से किसी के रोगादि दूर हो जाना आश्चर्य की बात नहीं है; परन्तु सिद्धचक्र की महिमा मात्र कुष्ठनिरोध तक सीमित करना, उसकी महानता में कमी करना है। कुष्ठ तो शरीर का रोग है, आत्मा का रोग तो मोह-राग द्वेषादि विकारी भाव हैं। सिद्धों का स्वरूप जानकर, उन जैसी अपनी आत्मा को पहचानकर, उसमें ही लीन हो जाने पर मोह-राग-द्वेष और जन्म-मरण जैसे महान रोग भी नष्ट हो जाते हैं।

सिद्धों की आराधना का सच्चा फल तो वीतराग भाव की वृद्धि होना है, क्योंकि वे स्वयं वीतराग है। सिद्धों का सच्चा भक्त उनसे लौकिक लाभ की चाह नहीं रखता, फिर भी पुण्यबन्ध होने से उसे लौकिक अनुकूलताएँ सहज ही प्राप्त होती है; परन्तु ज्ञानी की दृष्टि में उनका कोई महत्त्व नहीं है।

लौकिक अनुकूलताओं के लक्ष्य से चाहे वीतरागी देव-गुरु-धर्म की आराधना करे या कुदेव-कुगुरु-कुधर्म की आराधना करे, पापबन्ध ही होता है, अत: लौकिक अनुकूलताएँ भी उपलब्ध नहीं होती। इस सम्बन्ध में पण्डितप्रवर टोडरमलजी मोक्षमार्ग प्रकाशक में लिखते हैं :-

''इस प्रयोजन के हेतु अरहन्तादिक की भक्ति करने से भी तीव्र कषाय होने के कारण पापबन्ध ही होता है, इसलिए अपने को इस प्रयोजन का अर्थी होना योग्य नहीं है। अरहन्तादिक की भक्ति करने से ऐसे प्रयोजन तो स्वयमेव सिद्ध होते हैं।''[१]

अत: हमें वीतरागी देव-गुरु-शास्त्र का सही स्वरूप पहचान कर सिद्धचक्र विधान के माध्यम से वीतराग भावों का ही पोषण करना चाहिए।

### मण्डल-रचना ( माँडना )

जिस दिन से विधान करना हो, उसके एक दिन पूर्व वेदी के सामने ८ x ८ फुट अथवा छोटा-बड़ा चौकोर समतल तखतों पर स्थान के हिसाब से माँडना तैयार कर लेना चाहिये। मांडना के बीच में ॐ बनाना चाहिये तथा गोलाई में आठ वलयों में क्रम से ८, १६, ३२, ६४, १२८, २५६, ५१२, १०२४, श्री या फूल या साथिया या बिन्दु आदि बनाना चाहिये। यदि रंगोली से मांडना बनाना सम्भव न हो तो फ्लेक्स से बने हुए रंगीन मांडने का प्रयोग भी किया जा सकता है।

### मङ्गल-कलश-शोभायात्रा

जिस परिवार के द्वारा मङ्गल-कलश-स्थापना करना निश्चित हो गया हो तो मङ्गल-कलश-शोभायात्रा के पूर्व उनके घर जाकर स्थान का चयन करें, जहाँ कम से कम १००-५० भाई-बहन बैठ कर मङ्गलगान कर सकें। भक्ति के

१. मोक्षमार्ग प्रकाशक, पहला अधिकार, पृष्ठ ७



रस-परिपाक हेतु वाद्य-यन्त्र आदि की व्यवस्था हो तो उत्तम है। बैठने के लिए घर में चौक हो अथवा बड़ा हॉल; यदि मकान के अन्दर उचित स्थान न हो तो बाहर टेन्ट लगा कर बिछायत करा दें। समाज के सदस्यगण वहाँ मङ्गल-कलश लेने पहुँचे, उससे पूर्व कुछ सामग्री भेज दें - सामग्री में जो कलश, सबसे सुन्दर आये हों, उनमें से एक कलश, एक थाली में हल्दी-सुपारी, सरसों, पुष्प, पारा, पञ्च रत्न, सिक्के, कलावा, आदि तथा परिवार के सदस्यों को भी हार-मुकुट, खास तौर से छोटे बच्चों को हार-मुकुट अवश्य भेजें। साथ ही हाथ धोने के लिए छना हुआ जल, दो कटोरी में केसर, नेपकीन, एक छोटी कैंची आदि भी भेज दें तथा उन परिवार वालों को समझा दें कि सम्पूर्ण समाज आपके घर आनेवाली है, अत: उनके सम्मान में कुछ भेंट आदि की व्यवस्था करें।

दिशा सही देख कर, परिवार को बिठावें, उनके सामने एक छोटी टेबल रखें। दरी-फर्श बिछवा दें, टेबल पर सामग्री की थाली एवं मङ्गल-कलश रखें। परिवारवालों के हाथ धुला कर, मङ्गल-पञ्चक या मङ्गलाष्टक पढ़ते हुए कलश पर पुष्प-क्षेपण करें। रक्षा-सूत्र बाँधें, सभी के हाथों से मङ्गल-कलश में हल्दी, सुपारी आदि माङ्गलिक सामग्री डलवाएँ।

सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य, परिवारवालों को रक्षा-सूत्र बाँधें, उनका तिलक करें। कलश पर रक्षा-सूत्र बाँधे, स्वस्तिक करें, भक्ति-गीत भी साथ-साथ गाते रहें। पश्चात् फोटो खींचने हेतु सिर पर कलश रख कर, परिवार के जोड़े खड़े करें, छोटे बच्चों को आगे बिठा लें, बड़े सदस्य भी पीछे खड़े हो सकते हैं।

इसप्रकार सुन्दर सेंटिग करके फोटो निकलवायें, इससे उस परिवार की मधुर-स्मृति का चित्र, सदा के लिए सुरक्षित रहेगा। भेंट वितरण करके यह मङ्गल-कलश-शोभायात्रा विधान-स्थल हेतु रवाना करें।

### धर्मध्वजारोहण की विधि

मङ्गल-कलश-शोभायात्रा ध्वजारोहण स्थल पर पहुँचने के बाद सभी को ध्वजस्थल पर ले जाकर, ध्वजदण्ड पर ध्वजारोहण-कर्ता-परिवार के सदस्यों द्वारा रक्षासूत्र मन्त्र बोलकर रक्षासूत्र बाँधें। कपड़े की ध्वजा पर भी केशर से स्वस्तिक बनवावें, संगीतवालों की सहायता से भक्ति-गीत करते रहें। इस समय आमन्त्रित प्रमुख अतिथि, ब्र. भाई-बहिन, उपस्थित विद्वान्, समिति के अध्यक्ष,

मन्त्री, आदि प्रमुख व्यक्तियों द्वारा यह विधि करावें। पश्चात् ध्वजा को फहरावें एवं सावधान होकर ध्वजगीत प्रस्तुत किया जावे।

### मङ्गल कलश स्थापना

पश्चात् उद्घाटन-विधि करावें। उसके बाद मंगलकलश का स्थापन करावें। इस विधि के मन्त्र आदि आगे दिये गये हैं। विधि के समय जय जयकार के नाद एवं मंगल गीतों के साथ उपस्थित भाई-बहिन सहभागी हों।

इसके पश्चात् निम्न **अमृत-स्नान मन्त्र** बोलते हुए प्रासुक जल से अमृत-स्नान करावें -

***ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।***

तत्पश्चात् निम्न रक्षा-सूत्र-मन्त्र बोलते हुए रक्षा सूत्र बँधवावें -

*जिनेन्द्र-गुरु-पूजनं, श्रुत-वचः सदा धारणं,*
*स्वशील-यम-रक्षणं ददन् सत्तपो-बृंहणम्।*
*इति प्रथित-षट्क्रिया-निरतिचारमास्तां,*
*तवेत्यथ प्रथन-कर्मणे विहित-रक्षिकाबन्धनम्॥*

***ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं ह्रः अ-सि-आ-उ-सा सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु।***

***ॐ नमोऽर्हते भगवते तीर्थङ्कर-परमेश्वराय एतस्य करपल्लवे रक्षाबन्धनं करोमि समृद्धिरस्तु।***

***ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा।***

पश्चात् निम्न मन्त्र पढ़कर स्वस्तिक बनवाएँ एवं कलश स्थापित करावें -

***ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि-ब्रह्मणो मतेऽस्मिन्..... मासे .....पक्षे ..... तिथौ .....वासरे .....वर्षे ..... इह नगरे .....मन्दिरे .....कार्यस्य निर्विघ्न-समाप्त्यर्थं, मण्डप-भूमिशुद्ध्यर्थं, पात्र-शुद्ध्यर्थं, शान्त्यर्थं, पुण्याहवाचनार्थं, पञ्च-रत्न-गन्ध-पुष्पाक्षतादि -बीजपूर-शोभितं मङ्गल-कलश-स्थापनं करोम्यहं इवीं इवीं हं सः स्वाहा।***

इसके पश्चात् सभी पात्रों को समझा दें कि आज से आपको महोत्सव पर्यन्त सूतक-पातक नहीं लगेगा।



### जिनवाणी स्थापना

मण्डल पर जिनवाणी स्थापना मन्त्र बोलते हुए जिनवाणी की स्थापना करें। जिनके द्वारा जिनवाणी की स्थापना की जा रही हो, उनके परिवार की सौभाग्यशाली बहनों को रक्षा-सूत्र पहनावें, अमृत-स्नान करावें, फिर हाथ धुलवा कर उनसे जिनवाणी में तथा वेदी पर स्वस्तिक बनवावें तथा निम्न मन्त्र बोलकर जिनवाणी विराजमान करावें -

***ॐ ह्री श्री अर्हन्मुखकमलनिवासिनि पापात्मक्षयंकरि-श्रुत-ज्वाला-सहस्र प्रज्वलिते सरस्वति! अस्माकं पापं हन हन दह दह पच पच क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षीरवर-धवले अमृत-सम्भवे वं वं हूं हूं स्वाहा।***

इसके पश्चात् मंगलाष्टक स्तोत्र पढ़ते हुए विधान में बैठनेवाले सभी पात्रों की शुद्धि करावें।

### मङ्गलाष्टक स्तोत्र

**अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिताः, सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः;**
**आचार्याः जिन-शासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।**
**श्रीसिद्धान्त-सुपाठकाः मुनिवराः, रत्नत्रयाऽऽराधकाः;**
**पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मङ्गलम्॥ 1॥**

**श्रीमन्नम्र-सुराऽसुरेन्द्र-मुकुट-, प्रद्योत-रत्न-प्रभा -**
**भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाऽम्भोधीन्दवः स्थायिनः।**
**ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगताः, ते पाठकाः साधवः;**
**स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्च-गुरवः, कुर्वन्तु नो मङ्गलम्॥ 2॥**

**सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनम्;**
**मुक्ति-श्री नगराऽधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।**
**धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं, चैत्यालयं श्रयालयम्;**
**प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी, कुर्वन्तु नो मङ्गलम्॥ 3॥**

**नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रिभुवन-ख्याताश्चतुर्विंशतिः;**
**श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।**
**ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लाङ्गलधराः, सप्तोत्तरा विंशतिः;**
**त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः, कुर्वन्तु नो मङ्गलम्॥ 4॥**

**ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो, वृद्धिंगता पञ्च ये;**
**ये चाऽष्टाङ्गमहानिमित्तकुशला, येऽष्टाविधाश्चारणाः।**
**पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो, ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः;**
**सप्तैते सकलाऽर्चिता गणभृतः, कुर्वन्तु नो मङ्गलम्॥ 5॥**

**कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे;**
**चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः, सम्मेद-शैलेऽर्हताम्।**
**शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे, नेमीश्वरस्याऽर्हतो;**
**निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः, कुर्वन्तु नो मङ्गलम्॥ 6॥**

**ज्योतिर्व्यन्तरभावनाऽमरगृहे, मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः;**
**जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा, वक्षाररौप्याऽद्रिषु।**
**इष्वाकार-गिरौ च कुण्डल-नगे, द्वीपे च नन्दीश्वरे;**
**शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः, कुर्वन्तु नो मङ्गलम्॥ 7॥**

**यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां, जन्माऽभिषेकोत्सवो;**
**यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो, यः केवलज्ञानभाक्।**
**यः कैवल्यपुर-प्रवेश-महिमा, सम्भावितः स्वर्गिभिः;**
**कल्याणानि च तानि पञ्च सततं, कुर्वन्तु नो मङ्गलम्॥ 8॥**

**इत्थं श्री जिनमङ्गलाऽष्टकमिदं, सौभाग्यसम्पत्करम्;**
**कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियः, तीर्थङ्कराणामुषः।**
**ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैः, धर्मार्थकामान्विता;**
**लक्ष्मीराऽश्रियते व्यपायरहिता, निर्वाणलक्ष्मीरपि॥ 9॥**

मङ्गलाष्टक पढ़ते हुए प्रत्येक छन्द के अन्त में थाली में पुष्प-क्षेपण करावें।

### अमृत-स्नान

विधानाचार्य, विधान में सम्मिलित होनेवाले सभी व्यक्तियों के हाथ धुला कर, दाहिने हाथ में जल लेने का निर्देश देते हुए निम्न मन्त्र बोल कर, जल के छींटे मस्तक पर सिंचित करवाएँ -

***ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।***



### पात्र-शुद्धि एवं उनके नियम

(१) नियमित रूप से विधान में अन्त तक सम्मिलित रहें। (२) स्वस्थ हों। (३) विकलांग न हों। (४) हीन आचरण न हों। (५) विधान के अन्त तक संयम से ही रहें। (६) गृहस्थोचित शुद्ध भोजन करें। (७) विधान के समय व्यापार की चिन्ता से मुक्त रहें।

सर्वप्रथम निम्नलिखित मन्त्र द्वारा रक्षासूत्र बाँधें।

**'ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।'**

फिर निम्नलिखित मन्त्र द्वारा अमृत स्नान करावें।

**ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।**

### तिलक मन्त्र

**मङ्गलं भगवान् वीरो, मङ्गलं गौतमो गणी।**
**मङ्गलं कुन्दकुन्दार्यो, जैनधर्मोऽस्तु मङ्गलम्॥**

***ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वाङ्गशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।***

## ॥ अभिषेक पाठ॥

**श्रीमन्नताऽमर-शिरस्तट-रत्न-दीप्तिः,**
**तोयाऽवभासि चरणाम्बुजयुग्ममीशम्।**
**अर्हन्तमुन्नत-पद-प्रदमाभिनम्य,**
**त्वन्मूर्तिषूद्यदभिषेकविधिं करिष्ये॥ 1॥**

*अथ पौर्वाह्निक-देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजा -स्तव-वन्दना-समेतं श्री-पञ्च-महागुरु-भक्तिपूर्वकं कायोत्सर्गं करोम्यहम्।*

**याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमाः जिनस्य,**
**संस्नापयन्ति पुरुहूत-मुखादयस्ताः।**
**सद्भावलब्धि-समयादिनिमित्तयोगाः,**
**तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि॥ 2॥**

॥ इति अभिषेकप्रतिज्ञायै पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

*यहाँ निम्न छन्द एवं मन्त्र पढ़ते हुए पाषाणशिला अथवा चौकी पर केशर से 'श्री' लिखें –*

(उपजाति)

**श्री-पीठ-क्लृप्ते, विशदाक्षतौघैः,**
**श्री-प्रस्तरे पूर्ण,-शशाङ्क-कल्प।**
**श्री-वर्तके चन्द्र,-मसीति वार्ता,**
**सत्यापयन्तीं, श्रियमालिखामि॥ 3॥**

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीलेखनं करोमि।

यहाँ निम्न छन्द एवं मन्त्र पढ़ते हुए चौकी पर बड़ी व ऊँची किनार की थाली रख कर, उसमें 'सिंहासन' स्थापित करें –

*(अनुष्टुभ्)*

**कनकादिनिभं कम्रं, पावनं पुण्यकारणम्।**
**स्थापयामि परं पीठं, जिन-स्नपनाय भक्तितः॥ 4॥**

*ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थापनं करोमि।*

पश्चात् निम्न छन्द एवं मन्त्र पढ़ते हुए घण्टानाद पूर्वक जय-जय शब्द बोलते हुए वेदी में से धातु की प्रतिमाजी व यन्त्र को सिंहासन पर विराजमान करें –

*(वसन्ततिलका)*

**भृङ्गार-चामर-सुदर्पण-पीठ-कुम्भ-,**
**ताल-ध्वजा-तप-निवारक-भूषिताग्र।**
**वर्धस्व नन्द जय पीठ-पदावलीभिः,**
**सिंहासने जिन-भवन्तमहं श्रयामि॥ 5॥**

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्! इह सिंहासने तिष्ठ-तिष्ठ।

*यहाँ निम्न छन्द एवं मन्त्र पढ़ कर,* चौकी पर चार दिशाओं में जल से भरे चार कलश स्थापित करें –

**श्री तीर्थकृत्स्नपन-वर्य-विधौ सुरेन्द्रः,**
**क्षीराऽब्धि-वारिभिरपूरयदर्थ-कुम्भान्।**
**तांस्तादृशानिव विभाव्य यथाऽर्हणीयान्,**
**संस्थापये कुसुम-चन्दन-भूषिताग्रान्॥ 6॥**



*ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।*

**आनन्द-निर्भर-सुर-प्रमदादि-गानैः,**
**वादित्र-पूर-जय-शब्द-कल-प्रशस्तैः।**
**उद्गीयमान-जगतीपति-कीर्तिमेनां,**
**पीठ-स्थलीं वसु-विधाऽर्चनयोल्लसामि॥ 7॥**

*ॐ ह्रीं स्नपन-पीठ-स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

यहाँ निम्न छन्द एवं मन्त्र पढ़ते हुए चारों कलशों के जल से अभिषेक करें –

**कर्म-प्रबन्ध-निगडैरपि हीनताऽऽप्तं,**
**ज्ञात्वाऽपि भक्तिवशतः परमादिदेवम्।**
**त्वां स्वीय-कल्मष-गणोन्मथनाय देव!,**
**शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थतत्त्वम्॥ 8॥**

*ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ह्वीं ह्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय पवित्रतरजलेन नमोऽर्हते भगवते श्रीमते जिनेन्द्रमाभिषेचयामि स्वाहा।*

*निम्न छन्द एवं मन्त्र पढ़ते हुए पुनः अभिषेक करें –*

**दूराऽवनम्र-सुरनाथ-किरीट-कोटी,**
**संलग्न-रत्न-किरणच्छवि-धूसरांघ्रिम्।**
**प्रस्वेद-ताप-मल-मुक्तमपि प्रकृष्टैः,**
**भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाऽभिषिंचे॥ 9॥**

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि-महावीरपर्यन्तं चतुर्विंशति-तीर्थङ्कर-परमदेवं आद्यानामाद्ये मध्यलोके जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे .....देशे .....नाम्नि नगरेऽस्मिन् जिनालये मासानामुत्तमे .....मासे .....पक्षे .....शुभदिने मुनि-आर्यिका-श्रावक-श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेचयामः।

**पानीय-चन्दन-सदक्षत-पुष्पपुञ्ज,**
**-नैवेद्य-दीपक-सुधूप- लव्रजेन।**
**कर्माष्टक-क्रथन-वीर-मनन्त-शक्तिं,**
**संपूजयामि सहसा महसां निधानम्॥ 10॥**

*ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

**हे तीर्थपा! निजयशोधवलीकृताशा,**
**सिद्धौषधाश्च भवदुःखमहागदानाम्।**
**सद्भव्यहृज्जनितपङ्ककबन्धकल्पाः,**
**यूयं जिनाः सततशांतिकरा भवन्तु॥ 11॥**

*(इति शान्त्यर्थं पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)*

पश्चात् निम्न श्लोक व मन्त्र को पढ़ कर प्रतिमाजी का शुद्ध वस्त्र से मार्जन करें –

**नत्वा मुहुर्निजकरैरमृतोपमेयैः,**
**स्वच्छैर्जिनेन्द्र! तव चन्द्रकराऽवदातैः।**
**शुद्धांऽशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये,**
**देहे स्थितान्जलकणान्परिमार्जयामि॥ 12॥**

*ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोमि।*

पश्चात् निम्न श्लोक पढ़कर श्री जिनबिम्ब को वेदी में विराजमान करें –

**स्नानं विधाय भवतोऽष्टसहस्रनाम्ना,**
**-मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम्।**
**जिघृक्षुरिष्टिमिन! तेऽष्टतयीं विधातुं,**
**सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि॥ 13॥**

अब यहाँ निम्न श्लोक पढ़कर स्वयं जिनचरणोदक लेकर दूसरों को देवें –

**नत्वा परीत्य निज-नेत्र-ललाटयोश्च,**
**व्याप्तं क्षणेन हरतादघसञ्चयं मे॥**
**शुद्धोदकं जिनपते तव पादयोगाद्,**
**भूयाद् भवाऽतपहरं धृतमादरेण॥ 14॥**

**पुण्याहवाचन**

विधान समाप्ति होने पर अन्तिम दिन महार्घ्य-शान्तिपाठ के पूर्व निम्नलिखित पुण्याहवाचन करें –



**ॐ पुण्याहं पुण्याहं लोकोद्योतनकरा अतीतकालसंजाता निर्वाण-सागरप्रभृतयश्चतुर्विंशतिपरमदेवाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्। ( धारा )**

**ॐ सम्प्रतिकालसंभवा वृषभादिवीरान्ताश्चतुर्विंशतिपरमजिनेद्रा वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्। ( धारा )**

**ॐ भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवा महापद्मादिचतुविंशतिः भविष्यत्परमदेवाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्। ( धारा )**

**विंशतिः परमदेवाः व प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्। ( धारा )**

**ॐ वृषभसेनादिगणधरदेवा वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्। ( धारा )**

**ॐ सप्तर्द्धिविशोभिताः कुन्दकुन्दाद्यनेकदिगम्बरसाधुचरणा। वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्। ( धारा )**

**इह वान्यनगरग्रामदेवतामनुजाः सर्वे गुरुभक्ता जिनधर्मपरायणा भवन्तु। दानतपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु। सर्वजिनधर्मभक्तानां धनधान्यैश्वर्यबलद्युतियशः प्रमोदोत्सवाः प्रवर्तन्ताम्।**

**तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, वृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु, अविघ्नमस्तु, आरोग्यमस्तु, कर्मसिद्धिरस्तु, इष्टसम्पत्तिरस्तु, काममांगल्योत्सवाः सन्तु, पापानि शाम्यन्तु घोराणि शाम्यन्तु, पुण्यं वर्धताम्, धर्मो वर्धताम्, श्रीवर्धताम्, कुलं गोत्रं चाभिवर्धेताम्, स्वस्ति भद्रं चास्तु, आयुष्यमस्तु, क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा। श्रीमज्जिनेन्द्रचरणारविन्देष्वानन्दभक्तिः सदास्तु।**

तदनन्तर महार्घ्य, शान्तिपाठ और विसर्जनपाठ पढ़ें।

*****

## श्री सिद्धचक्र माहात्म्य

श्री सिद्धचक्र गुणगान करो मन आन भाव से प्राणी;
कर सिद्धों की अगवानी ।टेक॥
सिद्धों का सुमरन करने से, उनके अनुशीलन चिन्तन से;
प्रगटै शुद्धात्मप्रकाश, महा सुखदानी ऽ ऽ ऽ।
पाओगे शिव रजधानी॥ श्री सिद्ध.॥ १॥
श्रीपाल तत्त्वश्रद्धानी थे, वे स्व-पर भेदविज्ञानी थे;
निज देह-नेह को त्याग, भक्ति उर आनी ऽ ऽ ऽ।
हो गई पाप की हानी॥ श्री सिद्ध.॥ २॥
मैना भी आतमज्ञानी थी, जिनशासन की श्रद्धानी थी;
अशुभभाव से बचने को, जिनवर की पूजन ठानी ऽ ऽ ऽ।
कर जिनवर की अगवानी॥ श्री सिद्ध.॥ ३॥
भव-भोग छोड़ योगीश भये, श्रीपाल ध्यान धरि मोक्ष गये;
दूजे भव मैना पावे शिव रजधानी ऽ ऽ ऽ।
केवल रह गई कहानी॥ श्री सिद्ध.॥ ४॥
प्रभु दर्शन-अर्चन-वन्दन से, मिटता है मोह-तिमिर मन से;
निज शुद्ध-स्वरूप समझने का, अवसर मिलता भविप्राणी।
पाते निज निधि विसरानी॥ श्री सिद्ध.॥ ५॥
भक्ति से उर हर्षाया है, उत्सव युत पाठ रचाया है;
जब हरष हिये न समाया, तो फिर नृत्य करन की ठानी ऽऽऽ।
जिनवर भक्ति सुखदानी॥ श्री सिद्ध.॥ ६॥
सब सिद्धचक्र का जाप जपो, उनही का मन में ध्यान धरो;
नहिं रहे पाप की मन में नाम निशानी ऽऽऽ।
बन जाओ शिवपथ गामी॥ श्री सिद्ध.॥ ७॥
जो भक्ति करे मन-वच-तन से, वह छूट जाय भवबंधन से;
भविजन! भज लो भगवान, भगति उर आनी ऽऽऽ।
मिट जैहे दुःखद कहानी॥ श्री सिद्ध.॥ ८॥

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल, जयपुर



ॐ

*॥ ॐ स्वस्ति श्री जिनेन्द्राय नमः॥*

**आध्यात्मिक कविवर श्री सन्तलालजी द्वारा विरचित**

# श्री सिद्धचक्र विधान

**।। अथ मंगलाचरण।।**

(**दोहा** : तर्ज – इह विधि ठाड़ो होय के .....)

**जिनाधीस शिवईश नमि, सहस गुणित विस्तार।**
**'सिद्धचक्र पूजन' रचूँ, शुद्ध त्रियोग सम्हार॥ १॥**

पूजन करनेवाले यजमान का लक्षण[१]

**नीताश्रित धनपति सुधी, शीलादिक गुणखान।**
**जिनपद-अंबुज भ्रमर-मन, सो प्रशस्त 'यजमान'॥ २॥**

पूजन करानेवाले याजक का लक्षण[२]

**देश-काल-विधि निपुणमति, निर्मल भाव उदार।**
**मधुर वैन नयना सुघर, श्री 'याजक' निरधार॥ ३॥**

*विद्वान् / गुरु / आचार्य का लक्षण[३]*

**रत्नत्रय-मंडित महा, विषय-कषाय न लेश।**
**संशय-हरन सुहित-करन, करत सुगुरु उपदेश॥ ४॥**

*विधान-मण्डप / मांडना का लक्षण[४]*

(**छप्पय** : तर्ज – प्रिय चैतन्यकुमार सदा .....)

**निर्मल मंडप भूमि दरव मंगल कर सोहत।**
**सुरभि सरस सुभ पुष्पजाल-मंडित मन-मोहत॥**

१-४. उक्त सभी शीर्षक झालरापाटन से प्राप्त महलका प्रति के आधार पर दिये गये हैं।

**यथायोग सुन्दर मनोग चित्राम अनूपा।**
**दीरघ मोल सुडोल वसन झखझोल[१] सरूपा॥**

प्रासुक द्रव्य का प्रयोजन

**हो वित्तसारु प्रासुक दरव, सर्व अंग मन को हरै।**
**सो महाभाग आनंद सहित, जो जिनेन्द्र अर्चा करै॥ ५॥**

## ।। अथ सिद्ध-चक्र-यन्त्र स्थापना-विधि।।

(**दोहा :** तर्ज - आयो आयो रे हमारो बड़ो भाग .....)

**सुर-मुनि-मन आनन्दकर, ज्ञान-सुधारस धार।**
**सिद्धचक्र सो थापहूं, विधि-दव-जल उनहार॥ ६॥**

ॐ ह्रीं **णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्**! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं **णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्**! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं **णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्**! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

*( इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् )*

### ।। वर्णमाला के वर्णों को आठ वर्गों में विभाजित करके आठ दिशाओं से सिद्धि को प्राप्त सिद्ध भगवन्तों को अर्घ्य ।।

(**अडिल्ल :** तर्ज - सरब परव में बड़ों .....)

**अर्हं शब्द प्रसिद्ध अर्द्ध मात्रिक कहा,**
**'अकारादि-स्वर' मंडित अति शोभा लहा।**
**अति पवित्र अष्टांग अर्घ कर लाय कै,**
**पूरव-दिश पूजूँ अष्टांग नमाय कै॥ ७॥**

ॐ ह्रीं अर्हं **अ-आ-इ-ई-उ-ऊ-ऋ-ॠ-ऌ-ॡ-ए-ऐ-ओ-औ-अं-अः**! अनाहत-पराक्रमाय सकल-कर्म-विमुक्ताय **पूर्व-दिशये** सिद्धचक्राधिपतये नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(***सोरठा :*** *तर्ज - लिया प्रभु अवतार .....*)

**वर्ण 'कवर्ग' महान, अष्ट पूर्व-विध अर्घ ले।**
**भक्ति-भाव उर ठान, पूजूं हूं अग्नेय-दिश॥ ८॥**

ॐ ह्रीं अर्हं **क-ख-ग-घ-ङ**! अनाहत-पराक्रमाय सकल-कर्म-विमुक्ताय **आग्नेय-विदिशये** सिद्धचक्राधिपतये नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

१. झकझोर अर्थात् चमकदार





**वर्ण 'चवर्ग' प्रसिद्ध, वसुविधि अर्घ उतारि कै।**
**मिलि है वसु-विध ऋद्धि, दक्षिण-दिश पूजा करों॥ ९॥**

ॐ ह्रीं अर्हं **च-छ-ज-झ-ञ**! अनाहत-पराक्रमाय सकल-कर्म-विमुक्ताय **दक्षिण-दिशये** सिद्धचक्राधिपतये नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वर्ण 'टवर्ग' प्रशस्त, जल-फलादि शुभ अर्घ ले।**
**पाऊँ सब विधि स्वस्त, नैऋत-दिश अर्चा करों॥ १०॥**

ॐ ह्रीं अर्हं **ट-ठ-ड-ढ-ण**! अनाहत-पराक्रमाय सकल-कर्म-विमुक्ताय **नैऋत्य-विदिशये** सिद्धचक्राधिपतये नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वर्ण 'तवर्ग' मनोग, यथायोग कर अर्घ धर।**
**मिल है सब शुभ-योग, पूजन कर पश्चिम-दिशा॥ ११॥**

ॐ ह्री अर्हं **त-थ-द-ध-न**! अनाहत-पराक्रमाय सकल-कर्म-विमुक्ताय **पश्चिम-दिशये** सिद्धचक्राधिपतये नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वर्ण 'पवर्ग' सुभाग, करूँ आरती अर्घ ले।**
**सब विध आरत-त्याग, वायव-दिश पूजा करूँ॥ १२॥**

ॐ ह्री अर्हं **प-फ-ब-भ-म**! अनाहत-पराक्रमाय सकल-कर्म-विमुक्ताय **वायव्य-विदिशये** सिद्धचक्राधिपतये नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वर्ण यवर्गी सार, 'दरव-अर्घ' वसु द्रव्य कर।**
**'भाव-अर्घ' उर धार, उत्तर-दिश पूजा करूँ॥ १३॥**

ॐ ह्रीं अर्हं **य-र-ल-व**! अनाहत-पराक्रमाय सकल-कर्म-विमुक्ताय **उत्तर-दिशये** सिद्धचक्राधिपतये नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शेष वर्ण चव अंत, उत्तम अर्घ बनाय कै।**
**नशे कर्म वसु भन्त!, पूजूँ हूँ ईशान-दिशि॥ १४॥**

ॐ ह्रीं अर्हं **श-ष-स-ह**! अनाहत-पराक्रमाय सकल-कर्म-विमुक्ताय **ईशान-विदिशये** सिद्धचक्राधिपतये नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*( इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् )*

*****

# ।। अथ प्रथम पूजन ।।

(आठ गुण सहित)

## ।। स्थापना ।।

(**छप्पय** : तर्ज - प्रिय चैतन्य कुमार सदा .....)

**ऊरध अधो सु रेफ, सबिंदु हकार विराजे।**
**अकारादि स्वर-लिप्त, कर्णिका अन्त सु छाजे॥**
**वर्गन-पूरित वसु-दल-अम्बुज तत्त्व-संधि धर।**
**अग्र भाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर॥**
**पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत ही अरि-नाग[१] को।**
**ह्वै केहरि सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो॥[२]**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **अष्टगुण-संयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्** ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **अष्टगुण-संयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्** ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **अष्टगुण-संयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्** ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(**दोहा** : तर्ज - आयो आयो रे हमारो बड़ो भाग .....)

**सूक्ष्मादि गुण सहित हैं, कर्म रहित निरसोग।**
**सकल सिद्ध पूजूं सदा, मिटै उपद्रव योग॥**

*(**इति** पुष्पांजलिं क्षिपेत्)*

---

१. हाथी, २. **सिद्ध-चक्र-यन्त्र वर्णन** - जिसके ऊपर-नीचे रेफ है, मध्य में बिन्दु सहित हकार है, अकारादि स्वरों से जो लिप्त है, जिसके अन्त में कर्णिका है, जिसके चारों ओर आठ प्रकार के वर्गों से पूरित अष्ट-दल-कमल है, जिनकी सन्धियों में तत्त्व अर्थात् तत्त्वज्ञान-प्रदाता 'णमो अरहंताणं' शोभायमान है; इन कमलों पर अग्रभाग में अनाहत मन्त्र 'ऊँ' तथा अन्त में पुनः 'ह्रीं' सुशोभित होता है। इस सिद्धयन्त्र की देवता भी साधना-आराधना करते हैं तथा जैसे, हाथियों के समूह को सिंह वशीभूत कर लेता है, उसीप्रकार यह यन्त्र, कर्मरूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेता है; अतः मैं भी पूजन के लिए इस सिद्धयन्त्र की स्थापना करता हूँ।





## ।। अथाष्टकं ।।

(***चाल** : तर्ज - नन्दीश्वर श्री जिनधाम .....)*

**शीतल शुभ सुरभि सु नीर, कंचन कुंभ भरे।**
**पाऊँ भव-सागर तीर, आनन्द भेंट धरे॥**
**अन्तरगत अष्ट स्वरूप, गुणमई राजत हैं।**
**नमूँ सिद्धचक्र शिवभूप, अचल विराजत हैं॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **'सम्मत्त-णाण-दंसण-वीरज-सुहम-अवगाहण-अगुरुलघु-अव्वावाह-अट्ठगुणा हुंति सिद्धाणं' इति अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः, जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं** निर्वपामीति स्वाहा।

**चन्दन तुम वन्दन हेत, उत्तम मान्य गिना।**
**नातर सब काष्ठ समेत, ईंधन था ही बना॥ अन्तर.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **सम्यक्त्वादि-अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः, संसार-ताप-विनाशनाय चन्दनं** निर्वपामीति स्वाहा।

**दीरघ शशि-किरण समान, अक्षत लावत हूँ।**
**शशि-मंडल सम बहुमान, पुंज रचावत हूँ॥ अन्तर.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **सम्यक्त्वादि-अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः, अक्षय-पद-प्राप्तये** अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**तुम चन्द्र-चरण के पास, पुष्प धरे सोहै।**
**मनु नक्षत्रन की रास, सोहत मन मोहै॥ अन्तर.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **सम्यक्त्वादि-अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः, काम-बाण-विध्वंसनाय** पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**उत्तम नेवज बहु भाय, सरस सुधा साने।**
**अहमिन्द्रन मन ललचाय, भक्षण उमगाने॥ अन्तर.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **सम्यक्त्वादि-अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः, क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

**फैले दीपन की जोति, अति परकाश करै।**
**जिम स्याद्वाद उद्योत, संशय-तिमिर हरै॥ अन्तर.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **सम्यक्त्वादि-अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः, मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं** निर्वपामीति स्वाहा।

**धर अग्नि धूप के ढेर, गंध उड़ावत हूँ।**
**कर्मों का धूम बखेर, ठोक जरावत हूँ॥ अन्तर.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **सम्यक्त्वादि-अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः, अष्ट-कर्म-विध्वंसनाय धूपं** निर्वपामीति स्वाहा।

**जिम धर्म-वृक्ष की डाल, शिव-फल सोहत है।**
**इम सुर-फल कंचन-थाल, मनि-मन मोहत है॥**
**अन्तरगत अष्ट स्वरूप, गुणमई राजत हैं।**
**नमूँ सिद्धचक्र शिवभूप, अचल विराजत हैं॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **सम्यक्त्वादि-अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः, मोक्ष-फल-प्राप्तये फलं** निर्वपामीति स्वाहा।

**कर अर्घ दर्व वसु जात, यातैं ध्यावत हूँ।**
**अष्टांग सुगुण विख्यात, तुम ढिंग पावत हूँ॥ अन्तर.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **सम्यक्त्वादि-अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः, अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

*(**गीता/हरिगीत** : तर्ज - कुन्दकुन्द शतक .....)*

**निर्मल सलिल शुभवास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी।**
**शुभ पुष्प मधुकर नित रमें चरु, प्रचुर स्वाद सुविध घनी॥**
**वर दीपमाल उजाल धूपायन रसायन फल भले।**
**कर अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्म-दल सब दलमले॥ १॥**
**ते क्रम-वर्त नशाय युगपत्, ज्ञान निर्मलरूप है।**
**दुख जन्म टार अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप है॥**
**कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अदूज शिवकमलापती।**
**मुनि ध्येय-सेय-अभेय चहुँ गुण ज्ञेय द्यो हम शुभमती॥ २॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **सम्यक्त्वादि-अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः, सर्व-सुख-प्राप्तये महार्घ्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

## ।। अथ सिद्धों के अष्ट गुण सम्बन्धी अर्घ्य ।।

*(**चौपाई** : तर्ज - दरश विशुद्धि धरै जो कोई .....)*

**मिथ्या-त्रय चहुँ आदि कषाया, मोह नाशि क्षायक गुण पाया।**
**निज अनुभव प्रत्यक्षस्वरूपा, नमूँ सिद्ध समकित गुणभूपा॥ १॥**

ॐ ह्रीं **शुद्ध-सम्यक्त्वगुण-समन्विताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं नि.।

**सकल त्रिधा षट्द्रव्य अनन्ता, युगपत् जानत हैं सब भन्ता।**
**निर-आवरण विशद स्वाधीना, ज्ञानानन्द परम रसलीना॥ २॥**



ॐ ह्रीं **अनन्त-ज्ञानगुण-समन्विताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं नि.।

**चक्षु अचक्षु अवधि विधि नाशी, केवलदर्श जोति परकाशी।**
**सकल ज्ञेय युगपत् अवलोका, उत्तम दर्श नमूँ सिद्धों का॥ ३॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-दर्शनगुण-समन्विताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं नि.।

**अन्तराय विधि प्रकृति अपारा, जीव शक्ति घाते निरधारा।**
**ते सब घात अतुल बल स्वामी, लसत अखेद सिद्ध प्रणमामी॥ ४॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-वीर्यगुण-समन्विताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं नि.।

**रूपातीत मन-इन्द्रिय ताही, मनपर्यय हू जानत नाहीं।**
**अलख अनूप अमित अविकारी, नमूँ सिद्ध सूक्षम गुणधारी॥ ५॥**

ॐ ह्रीं **सूक्ष्मगुण-समन्विताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं नि.।

**एक-क्षेत्र-अवगाह स्वरूपा, भिन्न-भिन्न राजै चिद्रूपा।**
**निज-परघात विभाव विडारा, नमूँ सहित अवगाह अपारा॥ ६॥**

ॐ ह्रीं **परम-अवगाहनगुण-समन्विताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं नि.।

**परकृत ऊँच-नीच पद नाहीं, रमत निरंतर निजपद माहीं।**
**उत्तम अगुरुलघु गुण भोगी, सिद्धचक्र ध्यावैं नित योगी॥ ७॥**

ॐ ह्रीं **अगुरुलघुगुण-समन्विताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं नि.।

**नित्य निरामय भव-भय-भंजन, अचल निरंतर शुद्ध निरंजन।**
**अव्याबाध सोई गुण जानों, सिद्धचक्र पूजन मन मानो॥ ८॥**

ॐ ह्रीं **अव्याबाधगुण-समन्विताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं नि.।

## ।। अथ जयमाल ( आरती ) ।।

(**दोहा** : तर्ज - इह विधि ठाड़ो होय के .....)

**जग आरत भारत महा, गारत कर जय पाय।**
**विजय आरती तिन कहूँ, पुरुषारथ गुण गाय॥ १॥**

(**पद्धरि** : तर्ज - ऐसे मिथ्यादृग-ज्ञान-चरण .....)

**जय करण कृपाण सु प्रथम वार, मिथ्यात सुभट कीनो प्रहार।**
**दिढ़ कोट-विपर्यय मति उलंघ, पायो समकित थल थिर अभंग॥ १॥**
**स्व-पर विवेक मन्त्री पुनीत, स्वरुचि वरतायो राज-नीत।**
**जग विभव विभाव असार एह, स्वातम-सुखरस विपरीत देह॥ २॥**
**तिन नाशन लीनो दृढ़ संभार, शुद्धोपयोग-थित चरण सार।**
**निर्ग्रन्थ कठिन मारग अनूप, हिंसादिक टारन सुलभ रूप॥ ३॥**

द्वय-बीस परीषह-सहन वीर, बहिरन्तर संयम धरण धीर।
द्वादश भावन दश भेद धर्म, विधि-नाशन बारह तप सु पर्म॥ ४॥
शुभ दया हेत धर समिति सार, मन शुद्धि करण त्रय गुप्ति धार।
एकाकी निर्भय निरसहाय, विचरो प्रमत्त-नाशन उपाय॥ ५॥
लख मोहशत्रु परचंड जोर, तिस हनन शुकल दल ध्यान जोर।
आनन्द वीर रस हिये छाय, क्षायक श्रेणी आरम्भ थाय॥ ६॥
बारम गुणथानक ताह नाश, तेरम पायो निज पद प्रकाश।
नव केवललब्धि विराजमान, दैदीप्यमान सोहे सुभान॥ ७॥
तिस मोह दुष्ट आज्ञा एकांत, थी कुमति स्वरूप अनेक भांत।
निज-वाणी कर ताको विहंड, कर स्याद्वाद आज्ञा प्रचंड॥ ८॥
वरतायो जग में सुमति रूप, भविजन पायो आनन्द अनूप।
थे मोह-नृपति उपकरण शेष, चारों अघातिया विधि विशेष॥ ९॥
है नृपन सनातन रीति एह, अरि विमुख न राखे नाम तेह।
यों तिन नाशन उद्यम सु ठान, आरंभो परम शुकल सु ध्यान॥ १०॥
तिसबलकरितिनकीथितिविनाश, पायोनिर्भयसुखनिधिनिवास।
यह अक्षय जोत लई अबाध, पुनि अंश न व्यापो शत्रु व्याध॥ ११॥
शाश्वत स्वाश्रितसुख श्रेय स्वामि, हों शान्त सन्त तुम कर प्रणाम।
अन्तिम पुरुषारथ फल विशाल, तुम विलसौ सुखसों अमित काल॥ १२॥

ॐ ह्रीं **सम्मत्तणाणादि-अट्ठगुणसंजुत्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो महार्घ्यं** नि. स्वाहा।

(**धत्ता** : तर्ज - वसु द्रव्य संवारी .....)

परसमय-विदूरित, पूरित स्व-सुख, समयसार चेतनरूपा।
नाना प्रकार पर को विकार, सब टार लसैं सब गुणभूपा॥
ते निरावरण निर्देह अनूपम, सिद्धचक्र परसिद्ध जजूँ।
सुर-मुनि नित ध्यावें, आनन्द पावें, मैं पूजत भववास भजूँ॥

*( इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत् )*

***'ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा'***
*- इस शान्ति-मन्त्र की प्रतिदिन सामूहिक एक जाप करें।*

***।। इति प्रथम पूजा सम्पूर्णम् ।।***





# ।। अथ द्वितीय पूजन।।

(सोलह गुण सहित)

## ।। स्थापना।।

(**छप्पय** : तर्ज - प्रिय चैतन्यकुमार सदा .....)

ऊरध अधो सु रेफ, सबिंदु हकार विराजे।
अकारादि स्वर-लिप्त, कर्णिका अन्त सु छाजे॥
वर्गन-पूरित वसु-दल-अम्बुज तत्त्व-संधि धर।
अग्र भाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर॥
पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत ही अरि नाग को।
ह्वै केहर सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **षोडशगुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः श्रीसिद्धपरमेष्ठिनः**! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **षोडशगुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः श्रीसिद्धपरमेष्ठिनः**! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **षोडशगुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः श्रीसिद्धपरमेष्ठिनः**! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(दोहा : तर्ज - आयो आयो रे हमारो बड़ो भाग .....)

सूक्ष्मादि गुण सहित हैं, कर्म रहित निररोग।
सिद्धचक्र सो थापहुँ, मिटै उपद्रव योग॥

*( इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् )*

## ।। अथाष्टकं।।

(**हरिगीत** - तर्ज - प्रभु पतित पावन, मैं अपावन .....)

हिमशैल धवल महान कठिन, पाषाण तुम जस रास तें,
शरमाय अरु सकुचाय द्रव ह्वै, बही गंगा तास तें।
सम्बन्ध योग चितार चित, भेंटार्थ झारी में भरूँ,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र, चितार उर पूजा करूँ॥ १॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **षोडशगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः, जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं** निर्वपामीति स्वाहा।

**कश्मीर चंदन आदि अन्तर-बाह्य बहुविध तप हरै,**
**यह कार्य कारण लख नमित, मम भाव हू उद्यम करै।**
**मैं हूँ दुखी भवताप तैं, घसि मलय चरनन ढिंग धरूँ।। षोडश.।।**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **षोडशगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः,**
**संसार-ताप-विनाशनाय** चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

**सौरभ चमक जिस सह न सक, अंबुज बसै सरताल में,**
**शशि गगन वस नित होत कृश, अहनिश भ्रमे इस ख्याल में।**
**सो अक्षतौघ अखंड अनुपम, पुंज धर सन्मुख जुरूँ।। षोडश.।।**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **षोडशगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः,**
**अक्षय-पद-प्राप्तये अक्षतं** निर्वपामीति स्वाहा।

**जग प्रगट काम सुभट विकट कर, हट करत जिय घट जगा,**
**तुम शील कटक सु घट निकट, सरचाप पटक सुझट भगा।**
**इमि पुष्प राशि सुवास तुम ढ़िंग, कर सुयश बहु उच्चरूँ।। षोडश.।।**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **षोडशगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः,**
**काम-बाण-विध्वंसनाय पुष्पं** निर्वपामीति स्वाहा।

**जीवन सतावत नहिं अघावत, क्षुधा डायन-सी बनी,**
**सो तुम हनी तुम ढिंग न आवत, जान यह विधि हम ठनी।**
**नैवेद्य के संकेत कर निज, क्षुधा-नाशन विधि वरूँ।। षोडश.।।**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **षोडशगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः,**
**क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

**मैं मोह-अंध अशक्य अरु, ये विषम भववन है महा,**
**ऐसे रुले को ज्ञानदुति बिन, पार निवरन हो कहा।**
**सो ज्ञानचक्र उघार स्वामी, दीप ले पायनि परूँ।। षोडश.।।**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **षोडशगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः,**
**मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं** निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रासुक सुगंधित दिव्य सुन्दर, दिव्य घ्राण सुखावनो,**
**धर अगन दश दिश वास पूरित, ललित धूम्र सुहावनो।**
**तुम भक्ति-भाव उमंग करत, प्रसंग धूप सु विस्तरूँ।। षोडश.।।**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **षोडशगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः,**
**अष्ट-कर्मदहनाय धूपं** निर्वपामीति स्वाहा।



**चितहरण अचित सुरंग रस पूरित विविध फल सोहने,**
**रसना लुभावन कल्पतरु के, सुर-असुर मन मोहने।**
**भर थाल कंचन भेंट धर, संसार फल तृष्णा हरूँ,**
**षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र, चितार उर पूजा करूँ॥ ८॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **षोडशगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः,**
**मोक्ष-फल-प्राप्तये फलं** निर्वपामीति स्वाहा।

**शुभ नीर वर कश्मीर चन्दन, धवल अक्षत युत अनी,**
**वर पुष्पमाल विशाल चरु सु, रसाल दीपक दुति मनी।**
**वर धूप पक्व मधुर सुफल ले, अर्घ अठ विध संचरूँ।। षोडश.।।**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **षोडशगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः,**
**अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

(**गीता :** तर्ज - प्रभु पतित पावन मैं अपावन .....)

**निर्मल सलिल शुभवास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी।**
**शुभ पुष्प मधुकर नित रमें चरु, प्रचुर स्वाद सुविध घनी॥**
**वर दीपमाल उजाल धूपायन रसायन फल भले।**
**कर अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्म-दल सब दलमले॥ १॥**
**ते क्रमवर्त नशाय युगपत्, ज्ञान निर्मलरूप है।**
**दुख जन्म टार अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप है॥**
**कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अदूज शिवकमलापती।**
**मुनि ध्येय-सेय-अभेय चहुँ गुण गेह द्यो हम शुभमती॥ २॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **षोडशगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः,**
**सर्व-सुख-प्राप्तये महार्घ्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

## ।। अथ सिद्धों के सोलह गुण सम्बन्धी अर्घ्य।।

*(**त्रोटक :** तर्ज - जब जन्म हुआ तीर्थंकर का .....)*

**दर्शन आवरणी प्रकृति हनी, अथिता अवलोक सुभाव तनी।**
**इक साथ समान लखो सब ही, नमूँ सिद्ध अनन्त दृगनि अब ही॥ १॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तदर्शन-समन्वित-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**विधि ज्ञानावर्ण विनाश कियो, निज ज्ञान स्वभाव विकास लियो।**
**समयांतर स०र्व विशेष जनो, नमूँ ज्ञान अनन्त सुसिद्ध तनो॥ २॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तज्ञान-समन्वित-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुख अमृत पीवत स्वेद न हो, निज भाव विराजत खेद न हो।**
**असमान महाबल धारत हो, हम पूजत पाप विडारत हो॥ ३॥**

ॐ ह्रीं **अतुलवीर्य-समन्वित-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**विपरीत सभीत पराश्रितता, अतिरिक्त करे न धरे थिरता।**
**पर की अभिलाष न सेवत हैं, निज भाविक आनन्द बेवत हैं॥ ४॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तसुख-समन्वित-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**निज आत्मविकाशक बोध लह्या, भ्रम को परवेश न लेश कह्या।**
**निजरूप सुधारस मग्न भये, हम सिद्धन शुद्ध प्रतीति नये॥ ५॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तसम्यक्त्व-समन्वित-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**निजभाव विडार विभाव न हो, गमनादिक भेद विकार न हो।**
**निजथान निरूपम नित्य बसे, नमूँ सिद्ध अनाचल रूप लसे॥ ६॥**

ॐ ह्रीं **अचलगुण-समन्वित-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(**चौपाई :** तर्ज - रोम रोम से निकले प्रभुवर .....)

**गुण-पर्यय परणति के भेद, अति सूक्षम असमान अछेद।**
**ज्ञान गहै न कहै जड़ वैन, नमों सिद्ध सूक्षम गुण ऐन॥ ७॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तसूक्ष्मत्व-समन्वित-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**जन्म-मरण युत धरै न काय, रोगादिक संक्लेश न पाय।**
**नित्य निरंजन निर-अविकार, अव्याबाध नमों सुखकार॥ ८॥**

ॐ ह्रीं **अव्याबाधगुण-समन्वित-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**एक पुरुष अवगाह प्रयन्त, राजत सिद्ध समूह अनन्त।**
**एकमेक बाधा नहिं लहैं, भिन्न-भिन्न निजगुण में रहैं॥ ९॥**

ॐ ह्रीं **अवगाहनगुण-समन्वित-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**कायोग पर्यापति प्रान, अनवधि छिन-छिन होवे हान।**
**जरा कष्ट जग प्रानी लहै, नमों सिद्ध यह दोष न सहै॥ १०॥**

ॐ ह्रीं **अजरगुण-समन्वित-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।



**काल अकाल प्राण को नाश, पावे जीव मरण को त्रास।**
**तासौं रहित अमर अविकार, सिद्ध समूह नमूँ सुखकार॥ ११॥**

ॐ ह्रीं **अमरगुण-समन्वित-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**गुण-गुण प्रति है भेद अनन्त, यों अथाह गुणयुत भगवन्त।**
**है परमाण-अगोचर तेह, अप्रमेय गुण वंदूँ एह॥ १२॥**

ॐ ह्रीं **अप्रमेयगुण-समन्वित-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

(***भुजंगप्रयात :*** *तर्ज - नसे घातिया कर्म .....)*

**अनुक्रम तें फर्श-वर्णादि जानो, किसी एक विशेष को किं प्रमानो।**
**पराधीन आवर्ण अज्ञान त्यागी, नमूँ सिद्ध अत्यन्द्रिय ज्ञान भागी॥ १३॥**

ॐ ह्रीं **अक्षोत्सव-अतीन्द्रियज्ञानधारक-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**त्रिधा वेद भावित महा कष्ट कारे, रमणभाव सों आकुलित जीव सारे।**
**निजानन्द रमणीय शिवनार स्वामी, नमों पुरुष आकृत सबै सिद्धनामी॥ १४॥**

ॐ ह्रीं **अवेदगुण-समन्वित-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**विशेषं सकल चेतनाधार माहीं, भये लय भली विध रहो भेद नाहीं।**
**तथा हीन अधिकाय को भाव टारी, नमों सिद्ध पूरण कला ज्ञानधारी॥ १५॥**

ॐ ह्रीं **अभेदगुण-समन्वित-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**निजानन्द रस-स्वाद में लीन अन्ता, मगन हो रहै रागवर्जित निरन्ता।**
**कहाँ लों कहूँ आपको पार नाहीं, धरो आपको आप ही आप माहीं॥ १६॥**

ॐ ह्रीं **अविलीन-निजाधीन-जिन-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

## ।। अथ आरती ( जयमाल )।।[१]

(**दोहा :** आनन्द अपार है, भक्ति बेकरार है .....)

**पंच परम परमातमा, रहित करम के फन्द।**
**जगत-प्रपंच रहित सदा, नमों सिद्ध आनन्द॥**

(***त्रोटक :*** *केवल रवि किरणों से जिसका .....)*

**दुख-कारन द्वेष-विडारन हो, वश-डारन राग-निवारन हो।**
**भवितारन पूरण कारण हो, सब सिद्ध नमों सुखसारन हो॥ १॥**

१. यहाँ नकुड़ प्रति में 'अथ जयमाल' के स्थान पर 'अथ आरती' पद का प्रयोग है।

समयामृत पूरित देव सही, पर आकृति मूरत लेश नहीं।
विपरीत विभाव निवारन हो, सब सिद्ध नमों सुखसारन हो॥ २॥

अखिना अभिना अछिना सुपरा, अभिदा अखिदा अविनाशवरा।
यम-जाम-जरा दुखजारन हो, सब सिद्ध नमों सुखसारन हो॥ ३॥

निर-आश्रित स्वाश्रित वासित हो, परकाशित खेद विनाशित हो।
विधि धारन-हारन-पारन हो, सब सिद्ध नमों सुखसारन हो॥ ४॥

अमुधा अछुधा अद्विधा अविधं, अकुधा सुसुधा सुबुधा सुसिधं।
विधि पारन-जारन-हारन हो, सब सिद्ध नमों सुखसारन हो॥ ५॥

शरनं चरनं मरनं वरनं, करनं धरनं डरनं हरनं।
तरनं भव-वारिधि तारन हो, सब सिद्ध नमों सुखसारन हो॥ ६॥

भववास पराश विनाशन हो, दुखराश विनाश हुताशन हो।
निज-दासन त्रास-निवारन हो, सब सिद्ध नमों सुखसारन हो॥ ७॥

तुम ध्यावत शाश्वत व्याधि दहै, तुम पूजत ही पद पूज लहै।
शरणागत 'सन्त' उभारन हो, सब सिद्ध नमों सुखसारन हो॥ ८॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनज्ञानादिषोडशगुणयुक्ताय सिद्धपरमेष्ठिभ्यो महार्घ्यं नि.।

(दोहा : तर्ज - आओ जिनमन्दिर में आओ .....)

सिद्ध-वर्ग-गुण अगम हैं, शेष न पावैं पार।
हम किहविध कहें इम करौ, भक्तिभाव उर धार॥

*( इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत् )*

*'ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा'*
*- इस शान्ति-मन्त्र की प्रतिदिन सामूहिक एक जाप करें।*

*।। इति द्वितीय पूजा सम्पूर्णम् ।।*

*****



# ।। अथ तृतीय पूजन।।

(बत्तीस गुण सहित)

## ।। स्थापना।।

(छप्पय : तर्ज - प्रिय चैतन्यकुमार सदा .....)

ऊरध अधो सु रेफ, सबिंदु हकार विराजे।
अकारादि स्वर-लिप्त, कर्णिका अन्त सु छाजे॥
वर्गन-पूरित वसु-दल-अम्बुज तत्त्व-संधि धर।
अग्र भाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर॥
पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत ही अरि नाग को।
ह्वै केहर सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **द्वात्रिंशत्-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः**! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **द्वात्रिंशत्-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः**! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **द्वात्रिंशत्-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः**! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(दोहा : तर्ज - आयो आयो रे हमारो बड़ो भाग .....)

सूक्ष्मादि गुण सहित हैं, कर्म रहित निररोग।
सकल सिद्ध सो थापहुँ, मिटै उपद्रव योग॥

*( इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् )*

## ।। अथाष्टकं।।

(**चाल** : रे मन! भज ले आतमराम .....)

**तुम पूजो रे भाई !।**

**सिद्धचक्र बतीस गुण, तुम पूजो रे भाई!॥ आंचली.॥**
**भव-त्रासित आकुलित रहै भवि, कठिन मिटन दुखताई।**
**विमल चरण तुम सलिल धार दे, पायो सहज उपाई॥ तुम.॥ १॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः, जन्म- जरा-मृत्यु-रोग-विनाशनाय जलं** निर्वपामीति स्वाहा।

**जगवन्दन परसत पद चन्दन, महाभाग उपजाई।**
**हरि हर आदि लोकवर उत्तम, कर धर शीश चढ़ाई॥**
**तुम पूजो रे भाई! सिद्धचक्र बतीस गुण, तुम पूजो रे भाई!॥ २॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः, संसार-ताप-विनाशनाय चन्दनं** निर्वपामीति स्वाहा।

**शिव-नायक पूजन-लायक मैं, यह महिमा अधिकाई।**
**अक्षय-पद-दायक अक्षत यह, साँचो नाम धराई॥**
**तुम पूजो रे भाई! सिद्धचक्र बतीस गुण, तुम पूजो रे भाई!॥ ३॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः, अक्षय-पदप्राप्तये अक्षतं** निर्वपामीति स्वाहा।

**आप श्राप कर पुष्प-चाप-धर, मम उर सर न उठाई।**
**यह निश्चय कर पुष्प भेंट धरि, मांगूँ वर शिवराई॥**[१]
**तुम पूजो रे भाई! सिद्धचक्र बतीस गुण, तुम पूजो रे भाई!॥ ४॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः, काम-बाण-विध्वंसनाय पुष्पं** निर्वपामीति स्वाहा।

**चरु वर प्रचुर क्षुधा नहीं मेटे, पूरि परौ इन ताई।**
**भेंट करत तुम इनहूँ न भेटूँ, रहुँ चिरकाल अघाई॥**
**तुम पूजो रे भाई! सिद्धचक्र बतीस गुण, तुम पूजो रे भाई!॥ ५॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः, क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

**दिव्य रतन इस देश काल में, कहैं कौन है नाहीं?।**
**तुम पद भेंटे दीप प्रगट यह, चिंतामणि पद पाई॥**
**तुम पूजो रे भाई! सिद्धचक्र बतीस गुण, तुम पूजो रे भाई!॥ ६॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः, मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं** निर्वपामीति स्वाहा।

**धूप हुताशन वासन में धर, दस दिश वास वसाई।**
**तुम पद पूजत या विधि वसुविध, ईन्धन जर हो छाई॥**
**तुम पूजो रे भाई! सिद्धचक्र बतीस गुण, तुम पूजो रे भाई!॥ ७॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः, अष्ट-कर्म-दहनाय धूपं** निर्वपामीति स्वाहा।

१. आपके श्राप से कामदेव ने मेरे हृदय में स्थान प्राप्त नहीं किया है। (पाट - नकुड़प्रति)



**सर्वोत्तम फल द्रव्य ठान मन, पूजूँ हूँ तुम पाई।**
**जासौं जजैं मुक्तिपद पइये, सर्वोत्तम फलदाई॥**
**तुम पूजो रे भाई! सिद्धचक्र बतीस गुण, तुम पूजो रे भाई!॥ ८॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः, मोक्ष-फल-प्राप्तये फलं** निर्वपामीति स्वाहा।

**वसुविध अर्घ्य देहूँ तुम मम द्यो, वसुविध गुण सुखदाई।**
**जास पाय वसु त्रास न पाऊँ, 'सन्त' कहे हर्षाई॥**
**तुम पूजो रे भाई! सिद्धचक्र बतीस गुण, तुम पूजो रे भाई!॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः, अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

(**गीता** : तर्ज - प्रभु पतित पावन मैं अपावन .....)

**निर्मल सलिल शुभवास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी।**
**शुभ पुष्प मधुकर नित रमें चरु, प्रचुर स्वाद सुविध घनी॥**
**वर दीपमाल उजाल धूपायन रसायन फल भले।**
**कर अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्म-दल सब दलमले॥ १॥**
**ते क्रमवर्त नशाय युगपत्, ज्ञान निर्मलरूप है।**
**दुख जन्म टार अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप है॥**
**कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अदूज शिवकमलापती।**
**मुनि ध्येय-सेय-अभेय चहुँ गुण गेह द्यो हम शुभमती॥ २॥**

ॐ ह्रीं सिद्धाणं, **द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो सर्व-सुख-प्राप्तये महार्घ्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

## ।। अथ सिद्धों के बत्तीस गुण सम्बन्धी अर्घ्य।।

*(**पद्धरि** : तर्ज - जब जन्म हुआ तीर्थंकर का .....)*

**चेतन विभाव पुद्गल विकार, है शुद्ध बुद्ध तिस निमित टार।**
**दृग-बोध रूप स्वभाव एह, नमुँ शुद्ध चेतना सिद्ध देह॥ १॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धचेतनाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**मति आदि भेद विवछेद कीन, क्षायक विशुद्ध निजभाव लीन।**
**निरपेक्ष निरन्तर निर्विकार, नमुँ शुद्ध ज्ञानमय सिद्ध सार॥ २॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धज्ञानाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**सर्वांग चेतना व्याप्तरूप, तुम हो चेतन व्यापक स्वरूप।**
**पर लेश न निज परदेश मांह, नमुँ शुद्ध सिद्ध चिद्रूप ताह॥ ३॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धचिद्रूपाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**अन्तर विधि उदय विपाक टार, तुम जातिभेद बाहिज विडार।**
**निज परिणति में नहिं लेश शेष, नमुँ सिद्धस्वरूपी गुण-विशेष॥ ४॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धस्वरुपाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**रागादिक परिणति को विध्वंस, आकुलित भाव राखो न अंश।**
**पायो निज शुद्ध स्वरूप भाव, नमुँ सिद्ध-वर्ग-धर हिये चाव॥ ५॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धस्वरुपभावाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

(**दोहा** : तर्ज - आओ जिन-मन्दिर में आओ .....)

**तिहूँ काल में ना डिगें, रहैं निजानन्द थान।**
**नमूँ शुद्ध दृढ़ गुण सहित, सिद्धराज भगवान॥ ६॥**

ॐ ह्रीं **शुद्ध-दृढाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**निज आवर्तक में वसे, नित ज्यों जलधि कलोल।**
**नमूँ शुद्ध आवर्तकी, करि निज हिये अडोल॥ ७॥**

ॐ ह्रीं **शुद्ध-आवर्तकाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**परकृत करि उपजो नहीं, ज्ञानादिक निजभाव।**
**नमूँ सिद्ध निज अमलपद, पायो सहज सुभाव॥ ८॥**

ॐ ह्रीं **शुद्ध-स्वयंभुवे श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

(***पद्धरि** : तर्ज - ऐसे मिथ्या दृग-ज्ञान-चरण .....)*

**स्व-सिद्ध अनन्त-चतुष्ट पाय, स्व-शुद्ध-चेतना-पुंज काय।**
**स्व-शुद्ध सबै पायो संयोग, तुम सिद्धराज स्व-शुद्ध-योग॥ ९॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धयोगाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**एकेन्द्रिय आदिक जातिभेद, हीनाधिक नाम प्रकृति छेद।**
**संपूरण लब्धि विशुद्धि जात, हम पूजै हैं पद जोड़ हाथ॥ १०॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धजाताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

(**दोहा** : तर्ज - भूतकाल प्रभु आपका .....)

**महातेज आनन्दघन, महातेज परताप।**
**नमों सिद्ध निजगुण सहित, दिपै अनूपम आप॥ ११॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धतपसे श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।





(***पद्धरि** : तर्ज - जब जन्म हुआ तीर्थंकर का .....)*

**वर्णादिक को अधिकार नाहिं, संस्थान आदि आकार नाहिं।**
**अति-तेज-पिण्ड चेतन अखण्ड, नमूँ शुद्ध मूर्ती कर्मखण्ड॥ १२॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धमूर्तये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**बाहिज पदार्थ को इष्ट मान, नहिं रमत तास सों ममत ठान।**
**निज अनुभवरस में सदा लीन, तुम शुद्ध सुखी हम नमन कीन॥ १३॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धसुखाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

(**दोहा** : तर्ज - इह विधि ठाड़ो होय के .....)

**धर्म अर्थ अरु काम बिन, अन्तिम पौरुष साध।**
**भये शुद्ध पुरुषारथी, नमूँ सिद्ध निरबाध॥ १४॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धपौरुषाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

(***पद्धरि** : तर्ज - ऐसे मिथ्यादृग-ज्ञान-चरण .....)*

**पुद्गल निर्मापित वर्णयुक्त, विधि नामरचित तासों विमुक्त।**
**पुरुषाकृत चेतनमय प्रदेश, ते शुद्ध शरीर नमूँ हमेश॥ १५॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धशरीराय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

(**दोहा** : तर्ज - कर लो जिनवर का गुणगान .....)

**पूरण केवलज्ञान-गम, तुम स्वरूप निर्बाध।**
**और ज्ञान जाने नहीं, नमूँ सिद्ध तज आध॥ १६॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धप्रमेयाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**दरशन-ज्ञान सुभेद हैं, चेतन लक्षण योग।**
**पूरण भई विशुद्धता, नमूँ शुद्ध-उपयोग॥ १७॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धोपयोगाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

(***पद्धरि** : तर्ज - जब जन्म हुआ तीर्थंकर का .....)*

**परद्रव्य जनित भोगोपभोग, ते खेदरूप प्रत्यक्ष योग।**
**निजरस-स्वादन है भोग सार, सो भोगो तुम हम नमस्कार॥ १८॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धभोगाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

(**दोहा** : तर्ज - जिनवर दरबार तुम्हारा .....)

**निर्ममत्व युगपद लखो, तुम सब लोकालोक।**
**शुद्ध ज्ञान तुमको लखे, नमूँ शुद्ध अवलोक॥ १९॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धावलोकाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

*(**पद्धरि** : तर्ज - ऐसे मिथ्यादृग-ज्ञान-चरण .....)*

**निर-इच्छक मन वेदी महान, प्रज्वलित अग्नि है शुक्लध्यान।**
**निर्भेद अर्घ दे मुनि महान, तुम पूजत अर्हज्जात जान॥ २०॥**

ॐ ह्रीं **अर्हज्जाताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं..।

*(**दोहा** : तर्ज - म्हारे आंगणे में आये जिनराज .....)*

**आदि अन्त वर्जित महा, शुद्ध इष्ट की जात।**
**स्वयं सिद्ध परमात्मा, प्रणमूँ शुद्ध निपात॥ २१॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धनिपाताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**लोकालोक अनन्तवें - भाग वसो तुम आन।**
**पै तुमसों अति भिन्न है, शुद्ध गर्भ यह जान॥ २२॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धगर्भाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**लोकशिखर शुभ थान में, तथा निजातम वास।**
**शुद्ध वास परमात्मा, नमूँ सुगुण की रास॥ २३॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धवासाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**अति विशुद्ध निज धर्म में, वसत नशत सब खेद।**
**परम वास नम सिद्ध को, वासी वास अभेद॥ २४॥**

ॐ ह्रीं **विशुद्धपरमवासाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**बहिरंतर द्वै-विध रहित, परमातम पद पाय।**
**निर्विकार परमातमा, नमूँ नमूँ सुखदाय॥ २५॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धपरमात्मने श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**हीन-अधिक इक देश को, विकल विभाव उछेद।**
**शुद्ध अनन्त दशा लई, नमूँ सिद्ध निर्भेद॥ २६॥**

ॐ ह्रीं **शुद्ध-अनन्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

*(**त्रोटक** : आया कहाँ से कहाँ है जाना .....)*

**तुम राग-विरोध विनाश कियो, निज ज्ञान-सुधारस स्वाद लियो।**
**तुम पूरण शांत विशुद्ध धरो, हमको इकदेश विशुद्ध करो॥ २७॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धशान्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

---

१. ॐ ह्रीं **प्रज्वलित-शुक्लध्यानाग्नि-जिनार्हज्जाताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः,अर्घ्यं..।
- पूर्व मुद्रित प्रति पाठ

२. दृष्ट - नकुड़ प्रति / इष्ट - जयपुर प्रति





**विद पंडित नाम कहावत है, विद अन्त जु अन्त हि पावत है।**
**निजज्ञान प्रकाश सु अन्त लहो, कछु अंश न जानन माहिं रहो॥ २८॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धविदन्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**वरणादिक भेद-विडारन हो, परिणाम कषाय-निवारन हो।**
**मन इन्द्रिय ज्ञान न पावत ही, अति शुद्ध निरूपम ज्योति मयी॥ २९॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धनिरूपमाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**जन्मादिक व्याधि न फेर धरो, मरणादिक आपद नाहिं वरो।**
**निर्वाण महान विशुद्ध अहो! जिनशासन में परसिद्ध कहो॥ ३०॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धनिर्वाणाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**करि अन्त न गर्भ लियो फिरकै, जनमे शिववास जनम धरकै।**
**जिनको फिर गर्भ न हो कबहूँ, शिवराय कहाय नमूँ अबहूँ॥ ३१॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धसन्दर्भगर्भाय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

**जग-जीवन पाप-नशायक हो, तुम आप महा सुखनायक हो।**
**तुम मंगल मूरत शान्त सही, सब पाप नशें तुम पूजत ही॥ ३२॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धशान्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

## ।। अथ आरती ( जयमाल )।।

(**दोहा** : तर्ज - रोम रोम से निकले जिनवर .....)

**पंच परम पद ईश हैं, पंचमगति जग-शीश।**
**जगत-प्रपंच रहित बसैं, नमों सिद्ध जग-ईश॥ १॥**
**परम ब्रह्म परमातमा, परम ज्योति शिवथान।**
**परमातम पद पाइयो, नमूँ सिद्ध भगवान॥ २॥**[१]

(**कामिनी मोहन** : नीर-गन्ध-अक्षतान् .....)

**जय मरण कष्ट को टार अमरा भये,**
**जय जनम-व्याधि परिहार अजरा भये।**
**जय दुविध कर्ममल जार अमला भये,**
**जय दुविधि टार संसार अचला भये॥ १॥**
**जय जगत-वास तज जगत-स्वामी भये,**
**जय विनाश नाम थित परम नामी भये।**

---

१. यह दोहा नकुड़ प्रति में नहीं है, अन्यत्र हस्तलिखित एवं प्रकाशित प्रतियों में है।

**जय कुविध रूप तज सुविध रूपा भये,**
**जय निषध दोष तज सुगुण भूपा भये॥ २॥**
**कर्मरिपु नाश कर परम जय पाइयो,**
**लोक-त्रय-पूर तुम सुजस घन छाइयो।**
**इन्द्र-नागेन्द्र धर शीश तुम पद जजें,**
**महा वैराग रस पाग मुनिगण भजें॥ ३॥**
**विघन वन दहन दौ अघन घन पौन हो,**
**सघन गुण-रास के वास को भौन हो।**
**शिवतिय-वशिकरन मोहनी मंत्र हो,**
**काल-क्षयकार बैताल के यंत्र हो॥ ४॥**
**कोट थित क्लेश की पोट धर सिर बहौ,[१]**
**उपल की नकल हो अचल इक थल रहो।**
**स्वप्न में हू न निज अर्थ को पावहीं,**
**जे महा खल न तुम ध्यान धरि ध्यावहीं॥ ५॥**
**आपके जाप बिन पाप सब भेंटहीं,**
**पाप के ताप को पाप कब मेंटहीं।**
**'सन्त' निज दास की आस पूरी करो,**
**जगत से काढ निज चरण में ले धरो॥ ६॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **द्वा-त्रिंशत्गुण-युक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः**, **अनर्घ्य-पद-प्राप्तये जयमाला-पूर्णार्घ्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

*(**धत्ता** : तर्ज - वसु द्रव्य संवारी .....)*

**जय अमल अनूपं, शुद्ध स्वरूपं, निखिल निरूपं, धर्म धरा।**
**जय विघन-नशायक, मंगलदायक, तिहुँ जगनायक, परमपरा॥**

*( इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत् )*

***'ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा'***

*- इस शान्ति-मन्त्र की प्रतिदिन सामूहिक एक जाप करें।*

***।। इति तृतीय पूजा सम्पूर्णम् ।।***

१. अर्थात् संसारी जीव, संसाररूपी कोट में स्थित रहकर कष्टों की पोटली अपने सिर पर धारण करते हैं। (यह पाठ - नकुड़ प्रति के आधार पर प्रकाशित है)





# ।। अथ चतुर्थ पूजन ।।

(चौंसठ गुण सहित)

## ।। स्थापना ।।

(छप्पय : तर्ज - प्रिय चैतन्यकुमार सदा .....)

**ऊरध अधो सु रेफ, सबिंदु हकार विराजे।**
**अकारादि स्वर-लिप्त, कर्णिका अन्त सु छाजे॥**
**वर्गन-पूरित वसु-दल-अम्बुज तत्त्व-संधि धर।**
**अग्र भाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर॥**
**पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत ही अरि नाग को।**
**ह्वै केहर सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो।।**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **चतुःषष्ठि-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः** ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **चतुःषष्ठि-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः** ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **चतुःषष्ठि-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः** ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(दोहा : तर्ज - आयो आयो रे हमारो बड़ो भाग .....)

**सूक्ष्मादि गुण सहित हैं, कर्म रहित निररोग।**
**सकल सिद्ध सो थापहुँ, मिटै उपद्रव योग॥**

*( इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् )*

## ।। अथाष्टकं ।।

(**चाल/लावनी** : तर्ज - रे मन! भज ले आतमराम .....)

**सिद्धगण पूजो रे भाई!॥**
**त्रिभुवन उमा[१] वास लख, तुम पद-अम्बुज के माई।**
**निर्मल जल की धार देहु, अभिषेक करण ताई॥**
**सिद्धगण पूजो रे भाई!।**
**चौंसठि सुगुण नामविध माला सुमरो सुखदाई॥ आंचली॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **चतुःषष्ठिगुणसंयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः,**
**जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं** निर्वपामीति स्वाहा।

**तुम पद-अम्बुज वास लेन मनु, चन्दन मन भाई।**
**निज सो गुणाधिक्य-संगत, को लहै न हरषाई!॥**
**सिद्धगण पूजो रे भाई!।**
**चौंसठि सुगुण नामविध माला सुमरो सुखदाई॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः,**
**संसार-ताप-विनाशनाय** चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

**क्षीरज धान सुवासित नीरज, कर सों छरलाई।**
**अंगुल से तंदुल सों पूजत, अक्षय पद पाई॥ सिद्धगण.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः,**
**अक्षय-पद-प्राप्तये अक्षतं** निर्वपामीति स्वाहा।

**धूलिसाल छवि हरण विवर्जित, फूलमाल लाई।**
**काम-शूल निर्मूल-करण, पूजूँ हूँ तुम पाई॥ सिद्धगण.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः,**
**काम-बाण-विध्वंसनाय पुष्पं** निर्वपामीति स्वाहा।

**भूख-गार अक्षीण-रसी हू, पूरत है नांई।**
**चरु मात्र तुम पद पूजत हो, पूरन सिखराई॥ सिद्धगण.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः,**
**क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

**दीपन प्रति तुम पद पूजत, शिवमारग दरशाई।**
**घोर-अंध-संसार-हरण की, भली सूझ पाई॥ सिद्धगण.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः,**
**मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं** निर्वपामीति स्वाहा।

**कृष्णागर कर्पूर पूर-घट, अग्नि प्रजलाई।**
**उडै धूम यह उडै किधौं, जर करमन की छाई॥ सिद्धगण.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः,**
**अष्ट-कर्म-दहनाय धूपं** निर्वपामीति स्वाहा।

१. यश / ख्याति / शान्ति



**मधुर मनोग प्रासुक फल सों, पूजूँ शिवराई।**
**यथायोग विध फल को दे गुण, फल की अधिकाई॥**
**सिद्धगण पूजो रे भाई!।**
**चौंसठि सुगुण नामविध माला सुमरो सुखदाई॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः,**
**मोक्ष-फल-प्राप्तये फलं** निर्वपामीति स्वाहा।

**निरघ उपावन पावन वसुविध, अरघ हरष ठाई।**
**भेंट धरत तुम पद पाऊँ पद, निर-आकुलताई॥ सिद्धगण.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः,**
**अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

(**गीता :** तर्ज - प्रभु पतित पावन मैं अपावन .....)

**निर्मल सलिल शुभवास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी।**
**शुभ पुष्प मधुकर नित रमें चरु, प्रचुर स्वाद सुविध घनी॥**
**वर दीपमाल उजाल धूपायन रसायन फल भले।**
**कर अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्म-दल सब दलमले॥ १॥**
**ते क्रमवर्त नशाय युगपत्, ज्ञान निर्मलरूप है।**
**दुख जन्म टार अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप है॥**
**कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अदूज शिवकमलापती।**
**मुनि ध्येय-सेय-अभेय चहुँ गुण गेह द्यो हम शुभमती॥ २॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः,**
**सर्व-सुख-प्राप्तये महार्घ्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

## ।। अथ सिद्धों के चौंसठ गुण सम्बन्धी अर्घ्य।।

(**चाल :** सुनिये जिन अर्ज हमारी .....)

**चव घाती कर्म नशायो, अरहंत परम पद पायो।**
**द्वै धर्म कहो सुखकारा, नमूँ सिद्ध भए अविकारा॥ १॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्त-जिन-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**संक्लेश भाव परिहारी, भए अमल अवधि-बलधारी।**
**सो अतिशय केवलज्ञाना, उपजाय लयो शिवथाना॥ २॥**

ॐ ह्रीं **अवधि-जिन-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**निर्मल चारित्र संभारा, परमावधि पटल उघारा।**
**केवल पायो तिस कारण, नमूँ सिद्ध भये जग तारण॥ ३॥**

ॐ ह्रीं **परमावधि-जिन-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वर्द्धमान विशद परनामी, सर्वावधि के हो स्वामी।**
**अन्तम वसुकर्म नसाया, नमूँ सिद्ध भये सुखदाया॥ ४॥**

ॐ ह्रीं **सर्वावधि-जिन-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिस अन्त अवधि को नाहीं, तुम उपजायो पद ताही।**
**निरमल अवधी गुणधारी, सब सिद्ध नमूँ सुखकारी॥ ५॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तावधि-जिन-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सामान्य-विशेष चौंसठ ऋद्धियों सम्बन्धी अर्घ्य

**तप-बल-महिमा अधिकाई, धी कोष्ठ-ऋद्धि उपजाई।**
**श्रुतज्ञान-कोष्ठ-भंडारी, नमूँ सिद्ध भये हितकारी॥ ६॥**

ॐ ह्रीं **कोष्ठ-बुद्धि-ऋद्धि-जिन-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्यों बीज फले बहुरासी, त्यों छिन ही बहु अभ्यासी।**
**यह पावत ही योगीशा, भये सिद्ध नमूँ शिव-ईशा॥ ७॥**

ॐ ह्रीं **बीज-बुद्धि-ऋद्धि-जिन-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पद मात्र समस्त चितारै, है ऋद्धि यह पद-अनुसारै।**
**यह पाय यतीश्वर ज्ञानी, भये सिद्ध नमूँ शिवथानी॥ ८॥**

ॐ ह्रीं **पादानुसारिणी-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**जो भिन्न-भिन्न इक लारै, शब्दन सुन अर्थ विचारै।**
**यह ऋद्धि पाय सुखदाता, नमूँ सिद्ध भये जग-त्राता॥ ९॥**

ॐ ह्रीं **संभिन्न-श्रोतृ-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**मति श्रुत अरु अवधि अनूपा, बिन गुरु के सहज स्वरूपा।**
**भयो स्वयंबुध निजज्ञानी, नमूँ सिद्ध भये सुखदानी॥ १०॥**

ॐ ह्रीं **स्वयंबुद्धत्व-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो पाय न पर-उपदेशा, जाने तप-ज्ञान विशेषा।**
**प्रत्येकबुद्ध गुणधारी, भये सिद्ध नमूँ हितकारी॥ ११॥**

ॐ ह्रीं **प्रत्येकबुद्ध-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**गणधर से समकित धारी, तुम दिव्यध्वनि अनुसारी।**
**ज्ञानिन सिरताज कहाये, भये सिद्ध सुजस हम गाये॥ १२॥**

ॐ ह्रीं **बोधितबुद्ध-ऋद्धि-जिन-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**मन-योग सरलता धारे, तिस अन्तर भेद उघारे।**
**यों होय ऋजुमति ज्ञानी, नमूँ सिद्ध भये सुखदानी॥ १३॥**

ॐ ह्रीं **ऋजुमति-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बाँके मन की सब बाता, जानैं सो विपुल कहाता।**
**तुम पाय भये शिवधामी, नमूँ सिद्धराज अभिरामी॥ १४॥**

ॐ ह्रीं **विपुलमति-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुर विद्या को नहिं चाहैं, निज चारित्र विरद निवाहैं।**
**दस पूर्व ऋद्धि यह पायो, भये सिद्ध मुनिन गुण गायो॥ १५॥**

ॐ ह्रीं **दशपूर्वित्व-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चौदस पूरव श्रुतज्ञानी, जानैं परोक्ष परमाणी।**
**प्रत्यक्ष लखो तिस सारू, भये सिद्ध हरो अघ म्हारू॥ १६॥**

ॐ ह्रीं **चतुर्दशपूर्वित्व-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*(सुन्दरी : जय वीतराग विज्ञान पूर .....)*

**ज्योतिषादिक लक्षण जानकै, शुभ अशुभ फल कहत बखानिकै।**
**निमित ऋद्धि प्रभाव न अन्यथा, होय सिद्ध भये प्रणमूँ यथा॥ १७॥**

ॐ ह्रीं **अष्टांग-निमित्त-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**बहुविध अणिमादिक ऋद्ध जू, तप-प्रभाव भई तिन सिद्ध जू।**
**निष्प्रयोजन निजपद लीन हैं, नमूँ सिद्ध भये स्वाधीन हैं॥ १८॥**

ॐ ह्रीं **विक्रिया-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**भूम-जल-तंतु जिय ना हरैं, नमूँ ते मुनि शिवकामिनी वरैं।**
**नैक नहिं बाधा-परिहार हो, नमूँ सिद्ध सभी सुखकार हो॥ १९॥**

ॐ ह्रीं **विद्याधरत्व-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**जंघ पर दो हाथ लगाव ही, अन्तरीक्ष पवनवत् जाव ही।**
**पाय ऋद्धि महामुनि चारणी, यथायोग्य विशुद्ध विहारणी॥ २०॥**

ॐ ह्रीं **चारणऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**खग समान चलैं आकाश में, लीन नित निजधर्म प्रकाश में।**
**शुद्ध चारित कर निज सिद्धता, पाइयो हम नमन करैं यथा॥ २१॥**

ॐ ह्रीं **आकाशगामिनी-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**वाद विद्या फुरत प्रमाण में, वज्रसम परमत-गिर हान में।**
**सब कुपक्षी दोष प्रगट करैं, स्याद्वाद महा द्युति को धरैं॥ २२॥**

ॐ ह्रीं **परामर्श-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**विषम जहर मिला भोजन करैं, लेत ग्रास हि तिस शक्ति हरैं।**
**ते महा मुनि जग सुखदाय जू, हम नमें तिन शिवपद पाय जू॥ २३॥**

ॐ ह्रीं **आशीर्विष-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**जे महाविष अति परचण्ड हो, दृष्टि कर तिन कीने खण्ड हो।**
**सो यतीश्वर कर्म विडारकै, भये सिद्ध नमूँ उर धारकै॥ २४॥**

ॐ ह्रीं **दृष्टिविष-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**अनशनादिक नित प्रति साधना, मरणकाल तईं न विराधना।**
**उग्र तप करि वसुविधि नासतैं, हम नमैं शिवलोक प्रकाशतैं॥ २५॥**

ॐ ह्रीं **उग्र-तप-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**बढ़त नित प्रति सहज प्रभावना, उग्र तप कर क्लेश न पावना।**
**दिप्त तप करि कर्म जरायकैं, भये सिद्ध नमूँ सिर नायकैं॥ २६॥**

ॐ ह्रीं **दीप्त-तप-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**अन्तराय भये उत्सव बढ़ै, बाल चन्द्र समान कला चढ़ै।**
**वृद्ध तप की ऋद्धि लहै यती, भये सिद्ध नमत सुख हो अती॥ २७॥**

ॐ ह्रीं **तपवृद्धि-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**सिंहक्रीड़ित आदि विधान तें, नित बढ़ावत तप विधि मान तें।**
**महामुनीश्वर तप परकास तें, नमूँ मुक्त भए जगवास तें॥ २८॥**

ॐ ह्रीं **महातप-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**गिर शिखर ग्रीषम हिम सरतटै, तरु निकट पावस निजपद रटै।**
**घोर परिषह करि नाहीं हटै, भये सिद्ध नमत हम दुख कटै॥ २९॥**

ॐ ह्रीं **घोर-तप-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**महाभयंकर निमित मिलै जहाँ, निरविकार यती तिष्ठै तहाँ।**
**महापराक्रम गुण की खान हैं, नमो सिद्ध जगत् सुखदान हैं॥ ३०॥**

ॐ ह्रीं **घोर-पराक्रम-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**सघन गुण की राश महायती, रत्नराश समान दिपै अती।**
**शेष-जिन वर्णन करि थक रहे, नमूँ सिद्ध महापद को लहे॥ ३१॥**

ॐ ह्रीं **घोर-गुण-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**अतुल वीर्यधनी हन काम को, चलत मन न लखत सुरवाम को।**
**बालब्रह्मचारी योगीश्वरा, नमूँ सिद्ध भए वसु विधि हरा॥ ३२॥**

ॐ ह्रीं **ब्रह्मचर्य-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

१. हजार जिव्हा वाले शेष नाग



**सकल रोग मिटै संस्पर्श तें, महा यतीश्वर के आमर्श तें।**
**औषधी यह ऋद्धि प्रभावना, भये सिद्ध नमत सुख पावना॥ ३३॥**

ॐ ह्रीं **आमर्शौषधि-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**मूत्र में अमृत अतिशय वसै, जा परस तै सब व्याधी नसै।**
**औषधी यह ऋद्धि प्रभावना, भये सिद्ध नमत सुख पावना॥ ३४॥**

ॐ ह्रीं **मलौषधि-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**तन पसीजत जलकण लगत ही, रोग-व्याधि सर्वजन भगत ही।**
**औषधी यह ऋद्धि प्रभावना, भये सिद्ध नमत सुख पावना॥ ३५॥**

ॐ ह्रीं **जलौषधि-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**हस्त-पादादिक नख-केश में, सर्व औषध है सब देश में।**
**औषधी यह ऋद्धि प्रभावना, भये सिद्ध नमत सुख पावना॥ ३६॥**

ॐ ह्रीं **सर्वौषधि-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(**अडिल्ल :** आत्मा हूँ आत्मा हूँ आत्मा .....)

**मन-सम्बन्धी वीर्य बढ़ै अतिशय महा,**
**एक महूरत अन्तर श्रुत-चितवन लहा।**
**मनोबली यह ऋद्ध भई सुखदाय जू,**
**भये सिद्ध सुखदाय जजूं तिन पाय जूं॥ ३७॥**

ॐ ह्रीं **मनोबल-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**भिन्न-भिन्न अति शुद्ध उच्च स्वर उच्चरै,**
**एक महूरत अन्तर श्रुत-वर्णन करै।**
**वचनबली यह ऋद्धि भई सुखदाय जू॥ भये...॥ ३८॥**

ॐ ह्रीं **वचनबल-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**खड्गासन इक अंग मास छै मास लों,**
**अचल रूप थिर रहैं छिनक खेदित न हों।**
**कायबली यह ऋद्धि भई सुखदाय जू॥ भये...॥ ३९॥**

ॐ ह्रीं **कायबल-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**अति अरस चरु क्षीर होय कर धरत ही,**
**वचन-खिरत पर-श्रवण तुष्टता करत ही।**
**क्षीरस्त्रवी यह ऋद्ध भई सुखदाय जू॥ भये...॥ ४०॥**

ॐ ह्रीं **क्षीर-स्रावि-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रूखे भोजन सें कर में घृतरस स्त्रवे,
वचन-सुनत पर को घृत सम स्वादित हवे।
सप्पस्त्रवी यह ऋद्ध भई सुखदाय जू,
भये सिद्ध सुखदाय जजूं तिन पाय जूं॥ ४१॥

ॐ ह्रीं **सर्पि-स्त्रावी-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हस्त-कमल में अन्न मधुर रस देत है,
मधुकर सम जिय वचन गंध को लेत है।
मधुस्त्रवी यह ऋद्ध भई सुखदाय जू ॥ भये...४२॥

ॐ ह्रीं **मधुस्त्रावी-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अमृतसम आहार होय कर आय कै,
वचनामृत दे सुख श्रवण में जाय कै ।
अमियरस यह ऋद्धि भई सुखदाय जू ॥ भये...४३॥

ॐ ह्रीं **अमृतरस-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिस वासन जिस थान आहार करैं यती,
चक्री-सेना खाय अखै होवे अती।
यह अक्षीणरसी ऋद्धि भई सुखदाय जू॥ भये...४४॥

ॐ ह्रीं **अक्षीणरस-ऋद्धि-ऋषि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

## सिद्धों के अन्य सामान्य-विशेष गुणों सम्बन्धी अर्घ्य

(**सोरठा** : पावन हो गई आज ये धरती .....)

सिद्धराशि सुखदाय, वर्धमान नित प्रति लसै।
नमूँ ताहि सिर नाय, वृद्ध रूप गुण अगम है॥ ४५॥

ॐ ह्रीं **वर्द्धमान-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रागादिक परिणाम, अन्तर के अरि नाश कै।
लह अरहंत सु नाम, नमों सिद्धपद पाइया॥ ४६॥

ॐ ह्रीं **अर्हद्-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दो अन्तम गुणथान, भाव-सिद्ध इस लोक में।
तथा द्रव्य-शिव-थान, सर्व सिद्ध प्रणमूँ सदा॥ ४७॥

ॐ ह्रीं **णमो लोए सव्व सिद्धाणं** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शत्रु-व्याधि भय नाह, महावीर धीरज धनी।
नमूँ सिद्ध जिन ताह, संतन के भव-भय हरै॥ ४८॥

ॐ ह्रीं **भयवदो-महावीर-वड्ढमाणं** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।



क्षपकश्रेणि आरूढ़, निजभावी योगी तथा।
निश्चय दर्श अमूढ़, सिद्धयोग सब ही जजों॥ ४९॥

ॐ ह्रीं **योग-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वीतराग परधान, ध्यान करें तिनको सदा।
सोई ध्येय महान, नमों सिद्ध हम अघ हरो॥ ५०॥

ॐ ह्रीं **ध्येय-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

लोकशिखर शिवथान, अचल विराजित सिद्धजिन।
लोकवास सर्वान, भए सिद्ध प्रणमूँ सदा॥ ५१॥

ॐ ह्रीं **सर्व-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

औरन करत कल्यान, आप सर्व कल्यानमय।
सोई सिद्ध महान, मंगल-हेतु नमूँ सदा॥ ५२॥

ॐ ह्रीं **स्वस्ति-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तीन लोक के पूज, सर्वोत्तम सुखदाय हैं।
जिन-सम और न दूज, तिन पद पूजों भाव युत॥ ५३॥

ॐ ह्रीं **अर्हं सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

लोकोत्तम परधान, तिन पद पूजत हैं सदा।
तातैं सिद्ध महान, सर्व पूज्य के पूजनीय॥ ५४॥

ॐ ह्रीं **अर्हं सिद्ध-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

परम धरम निज साध, परमातम पद पाइयो।
सोई धर्म अबाध, पूजत हैं हम दीजियो॥ ५५॥

ॐ ह्रीं **परमात्म-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्व ऋद्ध नव निद्ध, सिद्ध भये नहिं सिद्ध हो।
निजपद साधन सिद्ध, होत सही तिनको नमों॥ ५६॥

ॐ ह्रीं **परम-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

परमागम की शाख, परम अगम गुणगण सहित।
सोई मन में राख, सरधा युत पूजा करों॥ ५७॥

ॐ ह्रीं **परमागम-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गुण अनंत परकाश, महा विभवमय लसत हैं।
आवर्णित पद नाश, ते पूजूँ प्रणमूँ सदा॥ ५८॥

ॐ ह्रीं **प्रकाशमान-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**स्वयं सिद्ध भगवान, ज्ञानभूत परकाशमय।**
**लसत नमूँ मन आन, मम उर चिंता दुख हरो॥ ५९॥**

ॐ ह्रीं **स्वयंभू-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**मन-इन्द्रिय सों भिन्न, मन-इन्द्रिय परकाश कर।**
**सोई ब्रह्म अखिन्न, साधित सिद्ध भए नमूँ॥ ६०॥**

ॐ ह्रीं **ब्रह्म-सिद्धभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**द्रव्य अनन्त-गुणात्म, परणामी परसिद्ध हैं।**
**सोई पद निज आत्म, साधत सिद्ध अनंत गुण॥ ६१॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-गुण-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**सर्व तत्त्वमय परम, गुण अनन्त परमातमा।**
**सो पायो निजधर्म, परम सिद्ध तिन को नमूँ॥ ६२॥**

ॐ ह्रीं **परम-अनन्त-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**लोक शिखर के वास, पायो अविचल थान निज।**
**सर्व लोक-परकाश, ज्ञानज्योति तिनको नमों॥ ६३॥**

ॐ ह्रीं **लोकाग्र-वास-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**काल विभाग अनादि, स्वासत रूप विराजते।**
**यातें नहिं सो आदि, नमि अनादि सिद्धान को॥ ६४॥**

ॐ ह्रीं **अनादि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(**दोहा :** तर्ज - आनन्द अपार है, भक्ति बेकरार है .....)

**सिद्धन के जु अनन्त गुण, कहि न सकैं गणराय।**
**तिन सिद्धन कौं मैं जजूँ, पूरण अर्घ चढ़ाय॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-गुणात्मक-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो** नमः, पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

## ।। अथ आरती ( जयमाल )।।

(**दोहा :** तर्ज - जिनवर दरबार तुम्हारा .....)

**तीर्थंकर त्रिभुवन धनी, जा पद करत प्रणाम।**
**हम किह मुख वर्णन करैं, तिन महिमा अभिराम॥**

(**चौपाई :** जिनवर दरबार तुम्हारा .....)

**जय भवि-कुमुदनि मोदन चंदा, जय दिनंद त्रिभुवन अरविंदा।**
**भव-तप-हर सर-निखर-स्वरूपा, मद-ज्वर-जरन-हरन घनरूपा॥**



**अकथित महिमा अमित अथाई, निर-उपमेय सरिसता नाई।**
**भावलिंग बिन कर्म खिपाई[१], द्रव्यलिंग बिन शिवपद पाई[२]॥**
**नय विभाग बिन वस्तु प्रमाणा, दयाभाव बिन निज-कल्याणा।**
**पंगु सुमेरु चूलिका परसै, गूंग गान आरंभै स्वर सै॥**
**यों अयोग कारज नहिं होई, तुम गुण-कथन कठिन है सोई।**
**सर्व जैनशासन निज माहीं, भाग अनन्त धरै तुम नाहीं॥**
**गोखुर में नहिं सिंधु समावै, वायस लोक अन्त नहिं पावै।**
**तातैं केवल भक्ति भाव तुम, पावन करो अपावन उर हम॥**
**जे तुम यश निज मुख उच्चारैं, ते तिहुँ लोक सुजस विस्तारैं॥**
**तुम गुण-गान मात्र कर प्रानी, पावै सुगुण महा सुखदानी॥**
**जा चित-ध्यान-सलिल तुम धारा, ते मुनि तीरथ हैं निरधारा।**
**तुम गुण-हंस तुम्हीं सर-वासी, वचन जाल में लेत न फाँसी॥**
**जगतबन्धु गुणसिंधु दयानिध, बीजभूत कल्याण सर्वसिध।**
**अक्षय शिवस्वरूप श्रिय स्वामी, पूरण निजानन्द विश्रामी॥**
**शरणागत सर्वस्व सुहितकर, जन्म मरण दुख आधि व्याधि हर।**
**'संत' भक्त रस तुम अनुपागी, निश्चै अजर अमर पद भागी॥**

ॐ ह्रीं **चतुःषष्ठी-दलोपरि-स्थित-सिद्धेभ्यो** नमः, पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*( धत्ता : तर्ज - वसु द्रव्य संवारी ..... )*

**सुखसागर, शुभ सुजस उजागर, गुण-आगर, भव-तारण हो।**
**संत उभारन, विपत-विडारन, सुख-विस्तारन, कारन हो॥**
**तुम गुण-गान, परम फलदान, सो मंत्र-प्रमान, विधान करूँ।**
**जहरी कर्मनि वैरी की कहरी, असहैरी[३] सब व्याधि हरूँ॥**

*( इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत् )*

***'ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा'***

*- इस शान्ति-मन्त्र की प्रतिदिन सामूहिक एक जाप करें।*

## *।। इति चतुर्थ पूजा सम्पूर्णम् ।।*

१. **खिपैये** - नकुड़ प्रति पाठ २. **पैये** - नकुड़ प्रति पाठ ३. असहनीय

# ।। अथ पंचम पूजन ।।

(एक सौ अट्ठाईस गुण सहित)

## ।। स्थापना ।।

(**छप्पय** : तर्ज - प्रिय चैतन्यकुमार सदा .....)

**ऊरध अधो सु रेफ, सबिंदु हकार विराजे।**
**अकारादि स्वर-लिप्त, कर्णिका अन्त सु छाजे॥**
**वर्गन-पूरित वसु-दल-अम्बुज तत्त्व-संधि धर।**
**अग्र भाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर॥**
**पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत ही अरि नाग को।**
**ह्वै केहर सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो।।**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **अष्टविंशत्यधिकश्-ात-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः**! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **अष्टविंशत्यधिक-शत-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः**! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **अष्टविंशत्यधिक-शत-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः**! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(**दोहा** : तर्ज - इह विधि ठाड़ो होय के .....)

**सूक्ष्मादि गुण सहित हैं, कर्म रहित निररोग।**
**सिद्धचक्र सो थापहुँ, मिटै उपद्रव योग॥**

*( इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् )*

## ।। अथाष्टकं ।।

(**बारहमासा/वीर** - इन्द्रिय के भोग मधुर विष सम .....)

**चंद-चर्ण लखि चन्द्रकान्तमणि, मन तें श्रवै हुलशधारा हो।**
**कंज सुवासित प्रासुक जल सों, पूजूँ अन्तर अनुसारा हो॥**
**लोकाधीश शीश चूड़ामणि, सिद्धचरण उरधार जजूँ हो।**
**चौंसठि दुगुण सुगुण मणि सुमरन, सुमरत ही भवभार तजूँ हो॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **अष्ट-विंशत्यधिक-शत-गुण-संयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः, जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं** निर्वपामीति स्वाहा।





**सुरमन मणिधर जास वास लहि, मद तजि गंध लुभावत है हो।**
**सो चंदन नंदनवन भूषण, तुम पद-कमल चढ़ावत है हो॥ लोका. ॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **अष्ट-विंशत्यधिक-शत-गुण-संयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः, संसार-ताप-विनाशनाय चन्दनं** निर्वपामीति स्वाहा।

**चंपक ही के भ्रम भ्रमरावलि, भ्रमत चकित चकराज भए हो।**
**शशि मण्डल जानो सो अक्षत, पुंजधार पदकंज नये हो॥ लोका. ॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **अष्ट-विंशत्यधिक-शत-गुण-संयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः, अक्षय-पद-प्राप्तये अक्षतं** निर्वपामीति स्वाहा।

**मदनवदन दुतिहरन वरन रति, लोचन अलिगण छाय रहे हो।**
**पुष्पमाल वासित विशाल सो, भेंट धरत उर काम दहे हो॥ लोका. ॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **अष्ट-विंशत्यधिक-शत-गुण-संयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः, काम-बाण-विध्वंसनाय पुष्पं** निर्वपामीति स्वाहा।

**चितवत मन वरणत रसना रस, स्वाद लेत ही तृप्त थये हो।**
**जन्मांतर हू क्षुधा निवारै, सो नेवज तुम भेंट दये हो॥ लोका. ॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **अष्ट-विंशत्यधिक-शत-गुण-संयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः, क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

**लवमणि प्रभा अनूपम सुर निज, शीश धरन की रीस करे हो।**
**या विन तुच्छ विभव निज जानें, सो दीपक तुम भेंट धरे हो॥ लोका. ॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **अष्ट-विंशत्यधिक-शत-गुण-संयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः, मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं** निर्वपामीति स्वाहा।

**नीलंजसा सुरी नभ में ज्यों, ऋषभभक्ति कर नृत्य कियो हो।**
**सो तुम सन्मुख धूम उड़ावत, तिस छब को तेह भाव लियो हो॥ लोका. ॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **अष्ट-विंशत्यधिक-शत-गुण-संयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः, अष्ट-कर्म-दहनाय धूपं** निर्वपामीति स्वाहा।

**सेव रंगीले, अनार रसीले, केला की लै डाल फली हो।**
**डाली दूं नृपमाली हूँ, नातुर प्रासुक की रीति भली हो॥ लोका. ॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **अष्ट-विंशत्यधिक-शत-गुण-संयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः, मोक्ष-फल-प्राप्तये फलं** निर्वपामीति स्वाहा।

**एक से एक अधिक सोहत वसु-जाति-अर्घकरि चरण नमूँ हो।**
**आनंद आरति आरत तजि कै, परमारथ हित कुमद वमूँ हो॥ लोका. ॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, **अष्ट-विंशत्यधिक-शत-गुण-संयुक्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो नमः, अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

(**गीता :** तर्ज - प्रभु पतित पावन मैं अपावन .....)

**निर्मल सलिल शुभवास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी।**
**शुभ पुष्प मधुकर नित रमें चरु, प्रचुर स्वाद सुविध घनी॥**
**वर दीपमाल उजाल धूपायन रसायन फल भले।**
**कर अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्म-दल सब दलमले॥ १॥**
**ते क्रमवर्त नशाय युगपत्, ज्ञान निर्मलरूप है।**
**दुख जन्म टार अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप है॥**
**कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अदूज शिवकमलापती।**
**मुनि ध्येय-सेय-अभेय चहुँ गुण गेह द्यो हम शुभमती॥ २॥**

ॐ ह्रीं **अष्ट-विंशत्यधिक-शत-गुण-संयुक्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो नमः, सर्व-सुख-प्राप्तये महार्घ्यं** नि. स्वाहा।

## ।। अथ सिद्धों के एक सौ अट्ठाईस गुण सम्बन्धी अर्घ्य ।।

सिद्धों के सामान्य-विशेष धर्मों सम्बन्धी अर्घ्य

(**त्रोटक :** केवल रवि किरणों से जिसका .....)

**निरबाध सु तत्त्व स्वरूप लखो, इक लेश विशेष न शेष रखो।**
**अति शुद्ध सुभाविक छायक है, नमूँ दर्श महा सुखदायक है॥**

ॐ ह्रीं **सम्यग्दर्शन-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १।।

**निरमोह अकोह अबाधित है, परभाव थकी न विराधित है।**
**निरशंस चराचर जानत हैं, हम सिद्ध सु ज्ञान-प्रमानत हैं॥**

ॐ ह्रीं **सम्यग्ज्ञान-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २।।

**सब राग-विरोध निवारन है, निजभाव थकी निज-धारन है।**
**पर में न कभू निजभाव वहै, अति क्षायकचारित नाम यहै॥**

ॐ ह्रीं **सम्यक्चारित्र-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।। ३।।

**उतपाद-विनाश न बाध धरै, परिणाम सुभाव यही निसरै।**
**तुम धारत हो यह धर्म महा, हम पूजत हैं पद शीश नमा॥**

ॐ ह्रीं **अस्तित्वधर्म-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४।।



**निज भावन तैं व्यतिरिक्त न हो, प्रणमों गुणरूप गुणातम हो।**
**यह वस्तु-स्वभाव सदा विलसो, हम पूजत हैं सब पाप नसो॥**

ॐ ह्रीं **वस्तुत्वधर्म-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ५।।

**परमाण न जानत है तिनको, छिन रोग न आवत है जिनको।**
**अप्रमेय महागुण धारत हैं, हम पूजत पाप-विडारत हैं॥**

ॐ ह्रीं **अप्रमेयधर्म-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६।।

**गुण-पर्य-प्रमाण दशा नित ही, निजरूप न छांड़त हैं कित ही।**
**जिन-बैन-प्रमाण सु धारत हैं, हम पूजत पाप-विडारत हैं॥**

ॐ ह्रीं **अगुरुलघुत्वधर्म-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।। ७।।

**जितने कछु हैं परिणाम विषैं, सब चित्त स्वरूप सुजान तिसैं।**
**मुख[१] चेतनता गुण धारत हैं, हम पूजत पाप-विडारत हैं॥**

ॐ ह्रीं **चेतनत्वधर्म-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ८।।

**जिन अंग-उपंग शरीर नहीं, जिन रंग प्रसंग सु तीर नहीं।**
**नभसार अमूरत धारत हैं, हम पूजत पाप-विडारत हैं॥**

ॐ ह्रीं **अमूर्तत्वधर्म-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९।।

**पर को न कदाचित् धर्म गहैं, निज-धर्म-स्वरूप न छांडत हैं।**
**अति उत्तम धर्म सु धारत हैं, हम पूजत पाप-विडारत हैं॥**

ॐ ह्रीं **सम्यक्त्वधर्म-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।। १०।।

**जितने कछु हैं परिणाम विषैं, सब ज्ञान स्वरूप सुजान तिसैं।**
**मुख[१] ज्ञानमई गुण धारत हैं, हम पूजत पाप-विडारत हैं॥**

ॐ ह्रीं **ज्ञानधर्म-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ११।।

**चिन्मय चिन्मूरत जीव सही, अति पूरणता बिन भेद कही।**
**निज जीव स्वभाव सु धारत हैं, हम पूजत पाप-विडारत हैं॥**

ॐ ह्रीं **जीवत्वधर्म-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १२।।

**मन को नहिं वेग लखावत हैं, जिस बैन नहीं बतलावत हैं।**
**अति सूक्षम भाव सु धारत हैं, हम पूजत पाप-विडारत हैं॥**

ॐ ह्रीं **सूक्ष्मत्वधर्म-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।। १३।।

**परघात न आप न घात करैं, इक खेत समूह अनन्त वरैं।**
**अवगाह स्वभाव सु धारत हैं, हम पूजत पाप-विडारत हैं॥**

ॐ ह्रीं **अवगाहनत्वधर्म-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।। १४।।

१-२. मुख्यरूप से / लाक्षणिकरूप से

**अविनाश स्वभाव विराजत हैं, बिन व्याधि स्वरूप सु छाजत हैं।**
**यह धर्म महागुण धारत हैं, हम पूजत पाप-विडारत हैं॥**

ॐ ह्रीं **अव्याबाधत्वधर्म-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।। १५।।

**निज सों निज की अनुभूति करैं, अपनो परसिद्ध[१] स्वभाव वरैं।**
**निज ज्ञान-प्रतीति सु धारत हैं, हम पूजत पाप-विडारत हैं॥**

ॐ ह्रीं **स्वधर्म-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।। १६।।

**निज ज्योति स्वरूप उदोतमई, तिस में परदीप्ति रहै नित ही।**
**यह ताप स्वरूप उघारत हैं, हम पूजत पाप-विडारत हैं॥**

ॐ ह्रीं **स्वरूपतापतपसे सिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।। १७।।

**नित-नंत[२] चतुष्टय राजत हो, दृग-ज्ञान-बल-सुख छाजत हो।**
**यह आप महागुण सारत हो, हम पूजत पाप-विडारत हो॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तचतुष्टय-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि.स्वाहा।। १८।।

**मुख समकित आदि महागुण को, तुम साधित सिद्ध भए अब हो।**
**यह उत्तमभाव सु धारत हैं, हम पूजत पाप-विडारत हैं॥**

ॐ ह्रीं **सम्यक्त्वादिगुणात्मक-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि.स्वाहा।। १९।।

(**दोहा** : पर का कुछ नहिं चाहता .....)

**निश्चय पंचाचार सब, भेद रहित तुम साध।**
**चेतन की अति शक्ति में, सब सूचै निरबाध॥**

ॐ ह्रीं **पंचाचाराचाराभेद-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।। २०।।

(**चौपाई** : दरश विशुद्धि धरै जो कोई .....)

**सब विकलप तज भेद स्वरूपी, निज-अनुभूति मग्न चिद्रूपी।**
**निश्चय रत्नत्रय परकासो, पूजूँ भाव भेद हम नासो॥**

ॐ ह्रीं **रत्नत्रयप्रकाश-सम्पन्न-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।। २१।।

**करण-भेद रत्नत्रय-धारी, कर्म-भेद निजभाव संवारी।**
**करता-भेद आप परिणामी, भेदाभेद रूप प्रणमामी॥**

ॐ ह्रीं **स्व-स्वरूप-साधक-सर्वसाधु-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।। २२।।

सिद्धों के क्रोधादि १०८ प्रकार के पापों के नाश-सम्बन्धी अर्घ्य

**मनोयोग कृत जिय संसारी, क्रोधारंभ करत दुखकारी।**
**तासों रहित सिद्ध भगवाना, अन्तर शुद्ध करूँ तिन ध्याना॥**

१. प्रसिद्ध अथवा उत्कृष्ट सिद्ध २. अनन्त





ॐ ह्रीं **अकृत-मनः-क्रोध-संरम्भ-मनोगुप्त-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.।। २३।।

**पर के मन क्रोधित संरम्भा, करत मूढ नाना आरंभा।**
**सिद्ध राज प्रणमूँ तिस त्यागी, निर्विकल्प निजगुण के भागी॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-मनः-क्रोध-संरम्भ-निर्विकल्प-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ २४ ॥

(**भुजंगप्रयात** : तुम्हीं मेरे मन्दिर, तुम्ही मेरी पूजा .....)

**मनोयोग रंभा प्रशंसी करोधा, निजास्वाद को मान ठाने अबोधा।**
**महानिंदनी भाव को त्याग दीना, निजानंद को स्वाद सो आप लीना॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदितमनःक्रोधसंरम्भसानंद-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ २५ ॥

**मनोयोग क्रोधी समारंभ धारी, सदा जीव भोगे महाखेद भारी।**
**महानंद आख्यात को भाव पायो, नमों सिद्ध सो दोष नांही उपायो॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-मनः-क्रोध-संरम्भ-परमानंद-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ २६ ॥

(**दोहा** : वन्दौं पाँचों परम गुरु .....)

**समारंभ क्रोधित सु मन, परकारित दुख नाह।**
**परमातम पद पाइयो, नमूँ सिद्ध गुण ताह॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-मनः-क्रोध-समारम्भ-परमानंद-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ २७ ॥

(**भुजंगप्रयात** : तुम्हीं मेरे मन्दिर, तुम्ही मेरी पूजा .....)

**समारंभ क्रोधी मनोयाग माही, धरे मोद ना भाव को जीव ताही।**
**भये आप संतुष्ट ये त्याग भावा, नमूँ सिद्ध सो दोष नाहीं उपावा॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-मनः-क्रोध-समारंभ-परमानंद-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ २८ ॥

(**पद्धरि** : ऐसे मिथ्या दृग-ज्ञान-चर्ण वश .....)

**निज क्रोधित मन आरंभ ठान, जग जिय दुख में सुख रहे मान।**
**सो आप त्याग संक्लेश भाव, भये सिद्ध नमूँ धर हिये चाव॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-मनः-क्रोधारंभ-स्वसंस्थान-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ २९ ॥

**क्रोधित मन सों आरंभ हेत, पर प्रेरित निज अपराध लेत।**
**जग जीवन की विपरीत रीत, तुम त्याग भये शिववर पुनीत॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-मनः-क्रोधारंभ-स्वसंस्थान-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३० ॥

**क्रोधित मन तैं आरंभ देख, जिय मानत है आनंद विशेष।**
**तुम सत्य सुखी इह भाव क्षार, भये सिद्ध नमूँ उर हर्ष धार॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-मनः-क्रोधारंभ-स्वसंस्थान-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३१ ॥

(दोहा : भव-समुद्र सीमित कियो .....)

**मान योग मन रंभ में, वरतत हैं जग जीव।**
**भये सिद्ध संक्लेश तज, तिन पद नमूँ सदीव॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-मनो-मान-संरंभ-साधर्म-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३२ ॥

**मान उदय मन योग तें, पर को रम्भ करान।**
**त्याग भये परमातमा, नमूँ सरन पर हान॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-मनो-मान-सरंभ-अनन्यशरण-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३३ ॥

**मान सहित मन रंभ में, जग जिय राखें चाव।**
**नमों सिद्ध परमातमा, जिन त्यागो इह भाव॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-मनो-मान-संरंभ-सुगतभाव-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३४ ॥

(अडिल्ल : हे प्रभु! चरणों में तेरे आ .....)

**समारम्भ परिवर्तमान युत मन धरे,**
**विकलपमई उपकरण विविध इकठे करे।**
**महाकष्ट को हेत भाव यह ना गहो,**
**प्रणमूँ सिद्ध अनन्त सुखातम गुण लहो॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-मनो-मान-समारंभ-सुखात्मगुण-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३५ ॥

**मान सहित मन-योग-द्वार चितवन करे,**
**समारम्भ परिवृत्त करावन विधि वरै।**
**तहाँ कष्ट को हेत भाव यह ना गहो,**
**प्रणमूँ सिद्ध अनन्य गुणातम पद लहो॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-मनो-मान-समारंभ-अनन्यगत-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३६ ॥

**जोड़े चित न समाज विविध जिस काज में,**
**समारम्भ तिस नाम सो मति जिनराज में।**
**माने मानी मन आनन्द सु निमित से,**
**नमूँ सिद्ध हैं अतुल वीर्य त्यागत तिसे॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-मनो-मान-समारंभ-अनन्तवीर्य-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३७ ॥

**अशुभ काज परिवर्त नाम आरम्भ को,**
**मान सहित मन-द्वार तास उद्यम गहो।**
**जगवासी जिय नित प्रति पाप उपाय हैं,**
**नमों सिद्ध या रहित अतुल सुखराय हैं॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-मनो-मानारंभ-अनन्तसुख-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३८ ॥





(दोहा : चिर विलास चिद्ब्रह्म में .....)

**मनो मान आरम्भ के, भये अकारित आप।**
**अतुल ज्ञानधारी भये, नमत नसै सब पाप॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-मनो-मानारंभ-अनन्तज्ञान-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३२ ॥

**मनो मान आरम्भ में, नानुमोदि भगवंत।**
**गुण अनंत युत सिद्धपद, पूजत हैं नित संत॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-मनो-मानारंभ-अनंतगुण-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४० ॥

(गीता : प्रभु पतित पावन मैं अपावन .....)

**जो अशुभ काज विकल्प हो, संरम्भ मनयुत कुटिलता।**
**कर-कर अनादित रंक जिय, बहु भांति पाप उपावता॥**
**सो त्याग सकल विभाव यह तुम, सिद्ध ब्रह्मस्वरूप हो।**
**हम पूजहैं नित भक्तियुत, तुम भक्ति वत्सलरूप हो॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-मनो-माया-संरंभ-ब्रह्मस्वरुप-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४१ ॥

(दोहा : चिन्मय हो चिद्रूप प्रभु! .....)

**मायावी मन तें नहीं, कबहूँ रम्भ कराय।**
**सिद्ध चेतना गुण सहित, नमूँ सदा मन लाय॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-मनो-माया-संरंभ-चैतन्यभाव-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४२ ॥

**मायावी मन तें कभी, रंभानन्द न होय।**
**सिद्ध अनन्य सुभाव युत, नमूँ सदा मद खोय॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-मनो-माया-संरंभ-अनन्यस्वभाव-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४३ ॥

(पद्धरि : मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ .....)

**मायावी मन तें समारंभ, नहिं करत सदा हो अचल खंभ।**
**तुम स्वानुभूति रमणीय संग, नित रमो नमो धर मन उमंग॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-मनो-माया-समारंभ-स्वानुभूतिरत-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४४ ॥

**मन वक्र द्वार उपकरण ठान, विधि समारंभ को नहिं करान।**
**निज साम्यधर्म में रहो लिप्त, तुम सिद्ध नमों पद धार चित्त॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-मनो-माया-समारंभ-साम्यधर्म-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४५ ॥

(दोहा : तर्ज - इह विधि ठाड़ो होय के .....)

**मायावी मन में नहीं, समारंभ आनन्द।**
**नमों सिद्धपद परम गुरु, पाऊँ पद सुखवृन्द॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-मनो-माया-समारंभ-गुरु-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४६ ॥

(पद्धरि - मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ .....)

**बहुविध कर जोड़ै अशुभ काज, आरम्भ नाम हिंसा समाज।**
**मायावी मन द्वारै करेय, तुम सिद्ध नमूँ यह विधि हरेय॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-मनो-मायारंभ-परमशांत-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४७ ॥

**पूर्वोक्त अकारित विधि स्वरूप, पायो निर-आकुल सुख-अनूप।**
**सर्वोत्तम पद पायो महान, हम पूजत हैं उर भक्ति ठान॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-मनो-मायारंभ-निराकुल-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४८ ॥

(दोहा : राजा राणा छत्रपति .....)

**मायावी आरम्भ करि, मन में आनन्द मान।**
**सो तुम त्यागो बान यह, भये परम सुखखान॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-मनो-मायारंभ-अनन्तसुख-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४९ ॥

**लोभी मन द्वारे नहीं, करै सदा समरंभ।**
**हम अनन्त दृग सिद्धपद, पूजत हैं मनथंभ॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-मनो-लोभ-संरंभ-अनंतदृगात्म-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५० ॥

**लोभी मन समरंभ को, परसों नहीं कराय।**
**दृगानन्द भावातमा, सिद्ध नमूँ मन लाय॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-मनो-लोभ-संरंभ-दृगानंदभाव-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५१ ॥

**लोभी मन समरंभ में, माने नहिं आनन्द।**
**नमूँ नमूँ परमातमा, भये सिद्ध जगवन्द॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-मनो-लोभ-संरंभसिद्धभाव-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५२ ॥

**समारम्भ नहिं करत हैं, लोभी मन के द्वार।**
**चिदानन्द चिद्देव तुम, नमूँ लहूँ पद सार॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-मनो-लोभ-समारंभ-चिद्देव-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५३ ॥

**पर सों भी पूर्वोक्त विधि, कबहूँ नहीं कराय।**
**निराकार परमात्मा, नमूँ सिद्ध हर्षाय॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-मनो-लोभ-समारंभ-निराकार-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५४ ॥



**ऐसे ही पूर्वोक्त विधि, हर्षित होवे नांह।**
**चित्स्वरूप साकारपद, धारत हूँ उर मांह॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-मनो-लोभ-समारंभ-साकार-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५५ ॥

**रचना हिंसा काज की, लोभी मन के द्वार।**
**नहीं करैं हैं ते नमूँ, चिदानन्द पद सार॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-मनो-लोभारंभ-चिदानंद-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५६ ॥

**लोभी मन प्रेरित नहीं, पर को आरंभ हेत।**
**चिन्मय रूपी पद धरैं, नमूँ लहूँ निज खेत॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-मनो-लोभारंभ-चिन्मयस्वरूप-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५७ ॥

**मन लोभी आरंभ में, आनन्द लहे न लेश।**
**निजपद में नित रमत हैं, ध्याऊँ भक्ति विशेष॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-मनो-लोभारंभ-स्वरूप-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५८ ॥

(अडिल्ल : हे प्रभु! चरणों में तेरे .....)

**क्रोधित जिय वच द्वार उपयोग को,**
**रचना विधि संकल्प नाम संरंभ सो।**
**तामें कर प्रवृत्त पाप उपजावते,**
**नमूँ सिद्ध या बिन वचगुप्ति उपावते॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-वचन-क्रोध-संरंभ-वाग्गुप्त-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५९ ॥

**क्रोध अग्नि करि निज उपयोग जरावहीं।**
**वचन योग कर विधि संरंभ करावहीं॥**
**सो तुम त्याग विभाव सुभाव स्वरूप हो।**
**नमूँ उरानन्द धार चिदानन्द रूप हो॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-वचन-क्रोध-संरंभ-स्वरूप-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६० ॥

(सोरठा : समयसार है सार .....)

**क्रोधित निज वच द्वार, मोदित हो संरंभ में।**
**सो तुम भाव विडार, नमूँ स्वानुभव-लब्धियुत॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-वचन-क्रोध-संरंभ-स्वानुभवलब्धि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६१ ॥

**क्रोध सहित वाणी नहीं, समारंभ परिवृत्त।**
**स्वानुभूति-रमणी-रमण, नमूँ सिद्ध कृतकृत्त॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-वचन-क्रोध-समारंभ-स्वानुभूतिरमण-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६२ ॥

**समारंभ क्रोधित जिये, प्रेरत पर वच-द्वार।**
**नमूँ सिद्ध इस कर्म बिन, धर्मधरा साधार॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-वचन-क्रोध-समारंभ-साधारधर्म-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६३ ॥

**समारंभ मय वचन कर, हर्षित हो युत क्रोध।**
**नमूँ सिद्ध या विन लहो, परम शांत सुख-बोध॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-वचन-क्रोध-समारंभ-परमशांत-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६४ ॥

(**मोतियादाम :** तिहारे ध्यान की मूरत .....)

**वरैं वचयोग धरैं जिय-रोष, करैं विध-भेद अरम्भ सदोष।**
**तजो यह सिद्ध भये सुखकार, नमूँ परमामृत तुष्ट अवार॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-वचन-क्रोधारंभ-परमामृततुष्ट-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६५ ॥

**अकारित वैन सदा युत क्रोध, महा दुखकार अरम्भ अबोध।**
**भये समरूप महारस धार, नमैं हम सिद्ध लहैं भवपार॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-वचन-क्रोधारंभ-समरस-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६६ ॥

(**दोहा :** देव-शास्त्र-गुरु नमन करि .....)

**नानुमोद आरम्भ मय, क्रोध सहित वच-द्वार।**
**परम प्रीति निज आत्मरत, नमूँ सिद्ध सुखकार॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-वचन-क्रोधारंभ-परमप्रीति-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६० ॥

(**अडिल्ल :** सरव परव में बड़ों .....)

**वचन द्वार संरम्भ मानयुत जे करैं,**
**जोड़-करण उपकरण मान सों उच्चरैं।**
**नानाविध दुख-भोग निजातम को हरैं,**
**नमूँ सिद्ध या बिन अविनश्वर पद धरैं॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-वचन-मान-संरंभ-अविनश्वरधर्म-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६८ ॥

**मान प्रकृति कर उदै करावें ना कदा,**
**वचनन कर संरम्भ भेद वरणूँ यदा।**
**मन-इन्द्रिय अव्यक्त स्वरूप अनूप हो,**
**नमूँ सिद्ध गुणसागर स्वातमरूप हो॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-वचन-मान-संरंभ-अव्यक्तस्वरूप-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६९ ॥



(**सोरठा :** समयसार है सार .....)

**नानुमोद वच-योग, मान सहित संरम्भ मय।**
**दुर्लभ इन्द्रिय-भोग, परम सिद्ध प्रणमूँ सदा॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-वचन-मान-संरंभ-दुर्लभ-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७० ॥

(**चौपइ :** दरश-विशुद्धि धरै जो कोई .....)

**समारंभ जिन-वैनन-द्वार, करत नहीं हैं मान संभार।**
**ज्ञान ग्रहीत विन्मूरति सार, परम गम्य है निर-आकार॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-वचन-मान-समारंभ-परमगम्यनिराकार-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७१ ॥

**वचन प्रवृत्ति मानयुत ठान, समारंभ विधि नांहि करान।**
**शुद्ध स्वभाव परम सुखकार, नमूँ सिद्ध उर आनंद धार॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-वचन-मान-समारंभ-परमस्वभाव-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७२ ॥

**वचन प्रवृत्ति मानयुत होय, समारंभ मय हर्षित सोय।**
**त्यागत एक रूप ठहराय, नमूँ एकत्व गती सुखदाय॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-वचन-मान-समारंभ-एकत्वगत-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७३ ॥

**मानी जिय निज वचन उचार, वरतत है आरंभ मझार।**
**परमातम हो तजि यह भाव, नमूँ धर्मपति धर्म स्वभाव॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-वचन-मानारंभ-परमात्मधर्म-राजधर्म-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७४ ॥

(**सोरठा :** लिया प्रभु अवतार .....)

**मानी बोले बैन, परप्रेरण आरम्भ मय।**
**सो त्यागो तुम ऐन, शाश्वत सुख आतम नमूँ॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-वचन-मानारंभ-शाश्वतानन्द-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७५ ॥

**हर्षित वचन उचार, मान सहित आरंभमय।**
**सो तुम भाव विडार, निजानन्द रस घन नमूँ॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-वचन-मानारंभ-अमृतपूरण-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७६ ॥

(**पद्धरि :** ऐसे मिथ्या दृग-ज्ञान-चरण .....)

**धरि कुटिल भाव जो कहत वैन, संरम्भ रूप पापिष्ट एन।**
**तुम धन्य धन्य यह रीत त्याग, हो बेहद धर्मस्वरूप भाग॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-वचन-माया-संरंभ-अनप्तधर्मैकरूप-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७७ ॥

**माया युत वचनन को प्रयोग, संरम्भ करावत अशुभ योग।**
**तुम यह कलंक नहीं धरो लेश, हो अमृत शशि पूजूँ हमेश॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-वचन-माया-संरंभ-अमृतचन्द्र-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७८ ॥

**वच माया युत संरंभ कीन, सो पापरूप भाषी मलीन।**
**तिस त्याग अनेक गुणात्म रूप, राजत अनेक मूरत अनूप॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-वचन-माया-संरम्भ-अनेकमूर्ति-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७९ ॥

**तुम समारंभ की विध-विधान, नहिं कहत कुटिलता भेद ठान।**
**हो नित्य निरंजन भाव युक्त, मैं नमूँ सदा संशय विमुक्त॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-वचन-माया-समारंभ-निरंजनस्वभाव-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८० ॥

(**दोहा :** करे लो जिनवर का गुणगान .....)

**माया युत निज बैन तैं, समारंभ के हेत।**
**नहिं प्रेरित पर को नमूँ, निज-गुण-धर्म समेत॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-वचन-माया-समारंभ-आत्मैकधर्म-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८१ ॥

**माया कर बोलत नहीं, समारंभ हर्षाय।**
**सूक्ष्म धर्म अतीन्द्रिय, नमूँ सिद्ध मन लाय॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-वचन-माया-समारंभ-परमसूक्ष्म-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८२ ॥

**माया युत आरंभ की, वचन-प्रवृत्ति नशाय।**
**नमि अनन्त अवकाश गुण, ज्ञानद्वार सुखदाय॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-वचन-मायारम्भ-अनन्तावकाश-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८३ ॥

**माया युत आरम्भ मय, मेट वचन-उपदेश।**
**भये अमल गुण ते नमूँ, राग-द्वेष नहिं लेश॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-वचन-मायारंभ-अमलगुण-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८४ ॥

**माया युत आरम्भ मय, मेट वचन-आनन्द।**
**भये अनन्त सुखी नमूँ, सिद्ध सदा सुखवृन्द॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-वचन-मायारंभ-निरवधिसुख-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८५ ॥

(**अडिल्ल :** जिनवाणी जिनवाणी ध्याना सभी .....)

**जो परिग्रह की चाह लोभ सो मानियो,**
**विध-विधान ठानन संरम्भ बखानियो।**



**वचन-द्वार नहीं करैं नमूँ परमातमा,**
**सब प्रत्यक्ष लखें व्यापक धर्मातमा॥**

ॐ ह्री **अकृत-वचन-लोभ-संरंभ-व्यापकधर्म-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८६ ॥

**वर्तावन सरम्भ हेत पर के तईं,**
**लोभ उदै करि वचन कहे हिंसामई।**
**नमूँ सिद्ध पद यह विपरीत सु जिन हरो,**
**सकल चराचर ज्ञानी व्यापक गुणवरो॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-वचन-लोभ-संरंभ-व्यापकगुण-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८७ ॥

**लोभी वच संरम्भ हर्ष परकाशनं,**
**नाना विध संचरै पाप दुख-राशनं।**
**सो तुम नाशत शाश्वत ध्रुवपद पाइयो,**
**नमूँ अचल गुण सहित सिद्ध मन भाइयो॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-वचन-लोभ-संरंभ-अचल-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८८ ॥

(**सोरठा :** पावन हो गई आज ये धरती .....)

**समारम्भ के वैन, लोभ सहित पर-आसरैं।**
**तज निरलम्बी ऐन, नमूँ सिद्ध उर धारिकैं॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-वचन-लोभ-समारंभ-निरालंब-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८९ ॥

**समारंभ उपदेश, लोभ उदै थिति मेटिक।**
**पायो अचल स्वदेश, नमूँ निराश्रय सिद्ध गुण॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-वचन-लोभ-समारंभ-निराश्रय-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९० ॥

**नानुमोद वच लोभ, समारंभ परिवृत्त मय।**
**नमूँ तिन्हैं तजि क्षोभ, नित्य अखण्ड विराजते॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-वचन-लोभ-समारंभ-अखण्ड-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९१ ॥

(**दोहा :** दर्शन दाता देव हैं .....)

**लोभ सहित आरंभ को, करत नहीं व्याख्यान।**
**नूतन पंचम गति लहो, नमूँ सिद्ध भगवान॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-वचन-लोभारंभ-परीतावस्थ-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९२ ॥

**लोभ वचन आरंभ को, कहत न पर के हेत।**
**समयसार परमातमा, नमत सदा सुख देत॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-वचन-लोभारंभ-समयसार-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९३ ॥

(**सोरठा** : लिया प्रभु अवतार .....)

**नानुमोद वच द्वार, लोभ सहित आरंभ मय।**
**अजर अमर सुखकार, नमूँ निरन्तक सिद्धपद॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-वचन-लोभारंभ-निरन्तक-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९४॥

(**अडिल्ल** : सरव परव में बड़ो .....)

**क्रोधित रूप भयंकर हस्तादिक तनी,**
**करत समस्या विध संरंभ प्रकाशनी।**
**सो तुम नाशो काय गुप्ति कर यह तथा,**
**दृष्टि-अगोचर काय गुप्ति प्रणमूँ सदा॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-काय-क्रोध-सरंभ-कायगुप्ति-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९५॥

(**सोरठा** : समयसार है सार .....)

**पर-प्रेरण निज काय, क्रोध सहित संरंभ तज।**
**चेतन मूरत पाय, शुद्ध काय प्रणमूँ सदा॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-काय-क्रोध-संरंभ-शुद्धकाय-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९६॥

**हर्षित शीश हिलाय, क्रोध उदय संरंभ मय।**
**त्यागत भये अकाय, नमूँ सिद्धपद भावयुत॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-काय-क्रोध-समरंभ-अकाय-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९७॥

**समारंभ विधि मेट, कायक चेष्टा क्रोध की।**
**स्वै गुण-पर्य समेट, भक्ति सहित प्रणमूँ सदा॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-काय-क्रोध-समारंभ-स्वान्वयगुण-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९८॥

(**दोहा** : समयसार जिनदेव है .....)

**समारंभ विध क्रोध युत, तन सों नहीं कराय।**
**नित प्रति रति निजभाव में, वंदूँ तिनके पाय॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-काय-क्रोध-समारंभ-भावरति-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९९॥

**समारंभ को काय सों, क्रोध सहित परसंस।**
**स्व-अभिन्न पद पाइयो, नमूँ त्याग सरवंस॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-काय-क्रोध-समारंभ-स्वान्वयधर्म-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १००॥

**क्रोधित कायारंभ तज, पर सों रहित स्वभाव।**
**शुद्ध द्रव्य में रत नमूँ, निज सुख सहज उपाव॥**



ॐ ह्रीं **अकृत-काय-क्रोधारंभ-शुद्धद्रव्यरत-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०१॥

**क्रोधित कायारभ नहिं, रंच प्रपंच कराय।**
**पंच रूप संसार हन, नमूँ पंचमगति राय॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-काय-क्रोधारंभ-संसारछेदक-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०२॥

**क्रोधित कायारम्भ में, हर्ष-विषाद विडार।**
**अनेकान्त वस्तुत्व गुण, धरैं नमों पद सार॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-काय-क्रोधारंभ-जैनधर्म-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०३॥

**मान सहित संरंभ की, तन सों रचना त्याग।**
**पर-प्रवेश बिन रूप-निज, लियो नमूँ बड़भाग॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-काय-मान-संरंभ-स्वरूपगुप्ति-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०४॥

**मान उदय संरंभ विधि, तन सों नहीं कराय।**
**निजकृत पर-उपकार बिन, लियो नमूँ तिन पाय॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-काय-मान-संरंभ-निजकृति-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०५॥

**मान सहित संरंभ में, तन सों हर्ष न लेश।**
**ध्यान योग निज ध्येय पद, भावित नमूँ अशेष॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-काय-मान-संरंभ-ध्येयभाव-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०६॥

**मदयुत तन सों रंच भी, समारंभ विधि नाह।**
**परमाराधन योग पद, पायो प्रणमूँ ताह॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-काय-मान-समारंभ-परमाराध्येय-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०७॥

**समारंभ निज काय सों, मद युत नहीं कराय।**
**ज्ञानानंद स्वभाव युत, प्रणमूँ शीश नवाय॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-काय-मान-समारंभ-आनंदगुण-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०८॥

**समारंभ मय विधि सहित, तन सों हर्ष न होय।**
**निजानन्द नंदित तिन्हैं, नमूँ सदा मद खोय॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-काय-मान-समारंभ-स्वानंदनंदित-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०९॥

(***अर्ध चौपइ*** *: आई आई अन्तर में चेतन की महिमा .....)*

**अकृत मानारम्भ शरीर, पर अनिच्छ वन्दूँ धर धीर।**

ॐ ह्रीं **अकृत-काय-मानारंभ-संतोष-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ११०॥

**कायारम्भ अकारित मान, स्व-स्वरूप रत वंदूँ तान।**

ॐ ह्रीं **अकारित-काय-मानारंभ-स्वस्वरूपरत-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १११ ॥

**मानारंभ अनिंदित काय, प्रणमूँ विमल शुद्ध पर्याय।**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-काय-मानारंभ-शुद्धपर्याय-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ११२ ॥

(**दोहा** : दर्शन दाता देव हैं .....)

**मायायुत संरम्भ विधि, तन सों करत न आप।**
**गुप्त निजामृत रस लहैं, नमूँ तिन्हैं तज पाप॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-काय-माया-संरंभ-अमृतगर्भ-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ११३ ॥

**मायायुत संरम्भ विधि, तन सों नहीं कराय।**
**मुख्य धर्म चैतन्यता, विलसैं प्रणमूँ पाय॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-काय-माया-संरंभ-चैतन्य-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ११४ ॥

**मायायुत संरम्भ मय, नानुमोद युत काय।**
**वीतराग आनन्द पद, समरस भावन भाय॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-काय-माया-संरंभ-समरसीभाव-सिद्धेभ्यो** नमः,अर्घ्यं.. ॥ ११५ ॥

**समारम्भ माया सहित, अकृत तन-विच्छेद।**
**बन्ध दशा स्व-पर द्विविध, नमत नसै भवखेद॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-काय-माया-समारंभ-बंधछेदक-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ११६ ॥

**समारम्भ तन कुटिल सों, भये अकारित स्वामि।**
**निजपरणति परकरण बिन, गुण स्वतंत्र नमामि॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-काय-माया-समारंभ-स्वतंत्रधर्म-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ११७ ॥

**नानुमोद तन कुटिलता, समारंभ विधि देव।**
**गुण अनंत युत परिणमूँ, धर्म समूही एव॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-काय-माया-समारंभ-धर्मसमूह-सिद्धेभ्यो** नमः,अर्घ्यं.. ॥ ११८ ॥

**मायायुत निज देह सों, नहिं आरम्भ करेह।**
**परमातम सुख अक्ष बिन, पायो वन्दूँ तेह॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-काय-माया-समारंभ-परमात्मसुख-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ११९ ॥

**मायारम्भ शरीर कर, पर सों नहीं करान।**
**निष्ठातम स्व-थित नमूँ, सिद्धराज गुणखान॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-काय-मायारंभ-निष्ठात्म-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १२० ॥



**मायारम्भ शरीर सों, नानुमोद भगवन्त।**
**दर्श-ज्ञानमय चेतना, सहित नमें नित सन्त॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-काय-मायारंभ-चेतन-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १२१ ॥

(**अर्ध पद्धरि** : ऐसे मिथ्या दृग-ज्ञान-चरण .....)

**संरम्भ चाह नहिं काययोग, चित परिणति नमि शुद्धोपयोग।**

ॐ ह्रीं **अकृत-काय-लोभ-संरंभ-परमचित्परिणत-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १२२ ॥

**संरम्भ अकारित लोभ देह, निज आतम रत स्वसमय तेह।**

ॐ ह्रीं **अकारित-काय-लोभ-संरंभ-स्वसमयरत-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १२३ ॥

**संरम्भ लोभ तन हर्ष नाश, नमि व्यक्त धर्म केवल प्रकाश।**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-काय-लोभ-संरंभ-व्यक्तधर्म-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १२४ ॥

(सोरठा : समयसार है सार .....)

**लोभी योग शरीर, समारम्भ विधि नाश कै।**
**ध्रुव आनन्द अतीर, पायो पूजूँ सिद्धपद॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-काय-लोभ-समारंभ-नित्यसुख-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १२५ ॥

**लोभ अकारित काय, समारम्भ निजकर्म हन।**
**पायो पद अकषाय, सिद्ध वर्ग पूजूँ सदा॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-काय-लोभ-समारंभ-अकषाय-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १२६ ॥

**पूर्व वर्तनानन्द, परिग्रह इच्छा मेटि कै।**
**पायो शौच सुछन्द, नमूँ सिद्धपद भक्तियुत॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-काय-लोभ-समारंभ-शौचगुण-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १२७ ॥

(**दोहा** : पर का कुछ नहिं चाहता .....)

**काय-द्वार आरम्भ की, लोभ उदय विधि नाश।**
**नमों चिदातम पद लियो, शुद्ध ज्ञान परकाश॥**

ॐ ह्रीं **अकृत-काय-लोभारंभ-चिदात्म-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १२८ ॥

**काय द्वार आरम्भ विधि, लोभ उदय न कराय।**
**निर अवलम्बित पद लियो, नमूँ सदा तिन पाय॥**

ॐ ह्रीं **अकारित-काय-लोभारंभ-निरावलंब-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १२९ ॥

**लोभी तन आरम्भ में, आनन्द रीति मेंट।**
**नमूँ सिद्ध पद पाइयो, निज आतम गुण श्रेष्ठ॥**

ॐ ह्रीं **नानुमोदित-काय-लोभारंभ-आत्म-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १३० ॥

## ।। अथ आरती ( जयमाल ) ।।

(**सवैया इकतीसा** : अरहंत सिद्ध सूरि उपाध्याय साधु सर्व .....)

**जेते कछु पुदगल परमाणु शब्दरूप,**
**भये हैं अतीत काल आगे होनहार हैं।**
**तिनको अनन्त गुण करत अनन्त बार,**
**ऐसे महाराशि रूप धरैं विसतार हैं॥**
**सब ही एकत्र होय सिद्ध परमातम के,**
**मानो गुणगण उचरन अर्थ धार हैं।**
**तौं भी इक समय के अनंत भाग आनंद को,**
**कहत न कहैं हम कौन परकार हैं॥**

ॐ ह्रीं **अष्टाविंशत्यधिक-शत-गुण-युक्त-सिद्धेभ्यो** नमः महार्घ्यं..... ॥

(**दोहा** : समयसार जिनदेव हैं .....)

**तातैं सरधा धार उर, भक्ति-भाव है सार।**
**केवल निज आनंद कर, करूँ सुजस उच्चार॥**

(**पद्धरि** : शुद्धात्मा का श्रद्धान होगा .....)

**जय मदन-कदन मन-करन नाश, जय शांतरूप निज सुख विलास।**
**जय कपट-सुभट पट-करन सूर, जय लोभ-क्षोभ मद-दम्भ चूर॥**
**पर परणति सों अत्यन्त भिन्न, निज परणति सों अति ही अभिन्न।**
**अत्यन्त विमल सब ही विशेष, मल लेश शोध राखो न शेष॥**
**मणि-दीप सार निर्विघ्न जोत, स्वाभाविक निज उद्योत होत।**
**त्रैलोक-शिखर राजत अखण्ड, सम्पूरण द्युति प्रगटी प्रचण्ड॥**
**मुनि-मन-मंदिर को अंधकार, तिस ही प्रकाश सौं नशत सार।**
**सो सुलभ रूप पायो निजार्थ, जिस कारण भव-वन भ्रमें व्यर्थ॥**
**जो कल्पकाल में होन सिद्ध, तुम छिन ध्यावत लहिये प्रसिद्ध।**
**भवि-पतितन को उद्धार हेत, हस्तावलम्ब तुम नाम देत॥**



**तुम गुण सुमिरण सागर अथाह, गणधर सरीस नहिं पार पाह।**
**जो भव-दधि-पार अभव्य रास, पावे न वृथा उद्यम प्रयास॥**
**जिनमुख-द्रह सों निकसी अभंग, अतिवेग रूप सिद्धांत-गंग।**
**नय सप्तभंग कल्लोल मान, तिहुँ लोक वही धारा प्रमान॥**
**सो द्वादशांग वाणी विशाल, ता सुनत-पढ़त आनन्द रसाल।**[१]
**यातैं जग में तीरथ सुधाम, कहिलायो है सत्यार्थ नाम॥**
**सो तुम ही सों है शोभनीक, नातर जल सम जड़ है सुठीक।**
**स्व-पर आतम-हित आत्मभूत, जबसे है जब उतपत्ति सूत॥**
**ज्यों महाशीत ही हिम-प्रवाह, है मेटन समरथ अग्नि-दाह।**
**त्यों आप महा मंगल स्वरूप, पर-विघन-विनाशन सहज रूप॥**
**हूँ 'सन्त' दीन तुम भक्ति-लीन, सो निश्चय पावै पद प्रवीण।**
**तातैं मन-वच-तन भाव धार, तुम सिद्धनकूं मम नमस्कार॥**[२]

ॐ ह्रीं अर्हं **अष्टाविंशत्यधिक-शत-दलोपरि-स्थित-सिद्धेभ्यो** नमः,
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(**दोहा** : दर्शन दाता देव हैं .....)

**जो तुम ध्यावें भावसों, ते पावें निज भाव।**
**अग्नि पाक संयोग करि, शुद्ध सुवर्ण उपाव॥**

*( इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत् )*

***'ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा'***

*- इस शान्ति-मन्त्र की प्रतिदिन सामूहिक एक जाप करें।*

## *।। इति पंचम पूजा सम्पूर्णम् ।।*

*****

१. यह पंक्ति नकुड़ एवं जयपुर की हस्तलिखित प्रतियों में नहीं हैं।
२. यह पंक्ति नकुड़ की हस्तलिखित प्रति में नहीं हैं, जबकि जयपुर की प्रति में है।

# ।। अथ षष्ठ पूजन।।

(दो सौ छप्पन गुण सहित)

## ।। स्थापना।।

(**छप्पय :** प्रिय चैतन्यकुमार सदा .....)

**ऊरध अधो सु रेफ, सबिंदु हकार विराजे।**
**अकारादि स्वर-लिप्त, कर्णिका अन्त सु छाजे॥**
**वर्गन-पूरित वसु-दल-अम्बुज तत्त्व-संधि धर।**
**अग्र भाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर॥**
**पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत ही अरि नाग को।**
**ह्वै केहर सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो।।**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **षड्पंचाशदधिक-द्विशत-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः** ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **षड्पंचाशदधिक-द्विशत-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः** ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **षड्पंचाशदधिक-द्विशत-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः** ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

*(दोहा)*

**सूक्ष्मादि गुण सहित हैं, कर्म रहित निररोग।**
**सकल सिद्ध पूजूं सदा, मिटै उपद्रव योग॥**

*( इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् )*

## अथाष्टकं

(**गीता :** सुर-असुर इन्द्र-नरेन्द्र वन्दित .....)

**अति नम्रता तिहुं योग में, जिन-भक्ति निर्मल भावहीं।**
**यह गुप्त जल प्रत्यक्ष निर्मल, सलिल तीरथ लावहीं॥**
**यह उभय द्रव्य-संयोग, त्रिभुवन-पूज्य पूज रचावहीं।**
**द्वै अर्द्धशत षट् अधिक नाम, उचार विरद सु गावहीं॥**

ॐ ह्रीं **षड्पंचाशदधिक-द्विशत-गुण-संयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने जन्म-जरा-रोग-विनाशनाय जलं** निर्वमामीति स्वाहा॥



**अति वास विषय न वासना युत, मलय शील सुभावहीं।**
**अरु चन्दनादि सुगन्ध द्रव्य, मनोज्ञ प्रासुक लावहीं॥ यह उभय.॥**

ॐ ह्रीं **षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने संसार-ताप-विनाशनाय** चन्दनं निर्वमामीति स्वाहा॥ चन्दनं ...॥

**परिणाम धवल सुवर्ण अक्षत, मलिन मन न लगावहीं।**
**तिस सार अक्षत अखय स्वच्छ, सुवास पुंज बनावहीं॥ यह उभय.॥**

ॐ ह्रीं **षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अक्षय-पद-प्राप्तये अक्षतं** निर्वमामीति स्वाहा॥ अक्षतं ...॥

**मन पाग भक्तिनुराग आनंद-ताग-माल पुरावहीं।**
**तिस भाग कुसुम सुहाग सुर अरु, नागबाग सु लावहीं॥ यह उभय.॥**

ॐ ह्रीं **षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने काम-बाण-विध्वंसनाय पुष्पं** निर्वमामीति स्वाहा॥ पुष्पं ...॥

**जिनभक्तिरस में तृप्तता मन, आन स्वाद न चावहीं।**
**अंतर चरू बाहिज मनोहर, रसिक नेवज लावहीं॥ यह उभय.॥**

ॐ ह्रीं **षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं** निर्वमामीति स्वाहा॥ नैवेद्यं ...॥

**सरधान-दीप-प्रदीप्त अंतर, मोह-तिमिर नशावहीं।**
**मणिदीप जगमग ज्योति तेज, सुभास भेंट धरावहीं॥ यह उभय.॥**

ॐ ह्रीं **षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं** निर्वमामीति स्वाहा॥ दीपं...॥

**आनन्द धर्म-प्रभावना मन-धूम्र-घटा सु छावहीं।**
**गंधित दरव शुध घ्राण-प्रिय अति, अग्नि संग जरावहीं॥ यह उभय.॥**

ॐ ह्रीं **षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अष्ट-कर्म-दहनाय धूपं** निर्वमामीति स्वाहा॥ धूपं ....॥

**शुभ चिंतवन फल विविध रसयुत, भक्तितरु उपजावहीं।**
**रसना-लुभावन कल्पतरु के, सुर-असुर मन मोहहीं॥ यह उभय.॥**

ॐ ह्रीं **षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोक्ष-फल-प्राप्तये फलं** निर्वमामीति स्वाहा॥ फलं ...॥

**समकित विमल वसु अंगयुत कर, अर्घ अन्तर भावहीं।**
**वसु दर्व अर्घ बनाय उत्तम, देहु हर्ष उपावहीं॥ यह उभय.॥**

ॐ ह्रीं **षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं** निर्वमामीति स्वाहा।

(**गीता** : प्रभु पतित पावन मैं अपावन .....)

**निर्मल सलिल शुभवास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी।**
**शुभ पुष्प मधुकर नित रमें चरु, प्रचुर स्वाद सुविध घनी॥**
**वर दीपमाल उजाल धूपायन रसायन फल भले।**
**कर अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्म-दल सब दलमले॥ १॥**
**ते क्रमवर्त नशाय युगपत्, ज्ञान निर्मलरूप है।**
**दुख जन्म टार अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप है॥**
**कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अदूज शिवकमलापती।**
**मुनि ध्येय-सेय-अभेय चहुँ गुण गेह द्यो हम शुभमती॥ २॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने** सर्व-सुख-प्राप्तये महार्घ्यं .....।

## ।। अथ सिद्धों के दो सौ छप्पन गुण सम्बन्धी अर्घ्य।।

ज्ञानावरणकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(**चौपाई** : दरश-विशुद्धि धरै जो कोई .....)

**मिथ्या मत कारण दुखकारा, नित्य निरंतर विधि संसारा।**
**तिस हनि समरथ अतिशय रूपा, केवल पाय नमूँ शिवभूपा॥**

ॐ ह्रीं **चिरतर-संसार-कारणा-ज्ञानावरण-निर्द्धूतोद्भूत-केवलज्ञानातिशय-सम्पन्न-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

**मन-इन्द्रिय-निमित मतिज्ञाना, योग देश तिष्ठत पद जाना।**
**क्षय-उपशम आवर्ण विनाशो, नमों सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो॥**

ॐ ह्रीं **आभिनिबोध-विनाशक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ २॥

**द्वादश अंगरूप अज्ञाना, श्रुत-आवरणी भेद बखाना।**
**क्षय-उपशम आवर्ण विनाशो, नमों सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो॥**

ॐ ह्रीं **श्रुतज्ञानावरण-विमुक्त-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३॥

**हैं असंख्य लोकावधि जेते, अवधिज्ञान भेद हैं तेते।**
**क्षय-उपशम आवर्ण विनाशो, नमों सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो॥**

ॐ ह्रीं **असंख्य-लोक-भेदभिन्नावधिज्ञानावरण-विमुक्त-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४॥

**हैं असंख्य परकार प्रमाना, मनपर्यय कौ भेद बखाना।**
**क्षय-उपशम आवर्ण विनाशो, नमों सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो॥**

ॐ ह्रीं **असंख्य-प्रकार-मनःपर्ययावरण-विमुक्त-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५॥





**निखिल रूप गुण-पर्यय ज्ञानं, सत्तरूप प्रत्यक्ष प्रमानं।**
**केवल आवर्णी विधि नाशो, नमों सिद्ध स्वज्ञान-प्रकाशो॥**

ॐ ह्रीं **निखिल-गुण-पर्यायावबोधक-केवलज्ञानावरण-विमुक्त-सिद्धाधिपतये** नमः अर्घ्यं. ॥ ६॥

दर्शनावरणकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

**द्वारपति भूपति के ताईं, रोक रहै देखन दे नाहीं।**
**सोई दर्शावरण विनाशो, नमों सिद्ध स्वज्ञान-प्रकाशो॥**

ॐ ह्रीं **सकल-दर्शनावरण-विमुक्त-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७॥

**मूर्तीक पद को प्रतिभासन, नेत्र द्वार होवे परकाशन।**
**चक्षु-दर्शनावरण विनाशो, नमों सिद्ध स्वज्ञान-प्रकाशो॥**

ॐ ह्रीं **चक्षु-दर्शनावरण-विमुक्त-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८॥

**दृग विन अन्य इन्द्री-मन द्वारे, वस्तुरूप सामान्य उघारे।**
**अदृग-दर्शावरण विनाशो, नमों सिद्ध स्वज्ञान-प्रकाशो॥**

ॐ ह्रीं **अचक्षु-दर्शनावरण-विमुक्त-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९॥

**देश-काल-द्रव-भाव प्रमानं, अवधिदर्श होवे सब ठानं।**
**अवधिदर्श आवरण विनाशो, नमों सिद्ध स्वज्ञान-प्रकाशो॥**

ॐ ह्रीं **अवधि-दर्शनावरण-विमुक्त-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०॥

**बिन मर्याद सकल तिहुं कालं, होय प्रगट षट्-पद प्रति हालं।**
**केवल-दर्शावरण विनाशो, नमों सिद्ध स्वज्ञान-प्रकाशो॥**

ॐ ह्रीं **केवल-दर्शनावरण-विमुक्त-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ११॥

**बैठे-खड़े-पड़े घुमरिया, देखे नहिं निद्रा की विरिया।**
**निद्रा-दर्शावरण विनाशो, नमों सिद्ध स्वज्ञान-प्रकाशो॥**

ॐ ह्रीं **निद्रा-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १२॥

**सावधानि कितनी की जावे, रंच नेत्र उघड़न नहीं पावे।**
**निद्रा-निद्रा कर्म विनाशो, नमों सिद्ध स्वज्ञान-प्रकाशो॥**

ॐ ह्रीं **निद्रानिद्रा-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १३॥

**मंदरूप निद्रा का आना, अवलोकै जागृत हि समाना।**
**प्रचला-दर्शावरण विनाशो, नमों सिद्ध स्वज्ञान-प्रकाशो॥**

ॐ ह्रीं **प्रचला-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १४॥

**मुख सों लार बहै अति भारी, हस्त-पाद कंपत दुखकारी।**
**प्रचला-प्रचला कर्म विनाशो, नमों सिद्ध स्वज्ञान-प्रकाशो॥**
ॐ ह्रीं **प्रचलाप्रचला-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १५ ॥

**सोता हुआ करै सब काजा, प्रगटावै प्राकर्म समाजा।**
**यह स्त्यानगृद्ध विधि नाशो, नमों सिद्ध स्वज्ञान-प्रकाशो॥**
ॐ ह्रीं **स्त्यानगृद्धि-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १६ ॥

वेदनीयकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

**जे पदार्थ हैं इन्द्रिय योग, ते सब वेदे जिय निज भोग।**
**सोई नाम वेदनी होय, नमूँ सिद्ध तुम नाशो सोय॥**
ॐ ह्रीं **वेदनीय-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १७ ॥

**रति के उदय भोग सुखकार, पावें जिय शुभ विविध प्रकार।**
**साता भेद वेदनी होय, नमूँ सिद्ध तुम नाशो सोय॥**
ॐ ह्रीं **साता-वेदनीय-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १८ ॥

**अरति उदय जिय इन्द्री द्वार, विषय-भोग वेदे दुखकार।**
**यही भेद असाता होय, नमूँ सिद्ध तुम नाशो सोय॥**
ॐ ह्रीं **असाता-वेदनीय-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १९ ॥

मोहनीयकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

**ज्यों असावधानी मदपान, करत मोह विधि तें सो जान।**
**ताविधि कर निज लाभ न होय, नमूँ सिद्ध तुम नाशो सोय॥**
ॐ ह्रीं **प्रबल-महा-मोह-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ २० ॥

दर्शनमोहनीयकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

**जाके उदय तत्त्व-परतीत, सत्य रूप नहिं हो विपरीत।**
**पंच भेद मिथ्यात निवार, भये सिद्ध प्रणमूँ सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **मिथ्यात्व-कर्म-विनाशक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ २१ ॥

**प्रथमोपशम समकित जब गलै, मिथ्या-समकित दोनों मिलै।**
**मिश्र भेद मिथ्यात निवार, भये सिद्ध प्रणमूँ सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **सम्यग्मिथ्यात्व-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ २२ ॥

**दर्शन में कछु मल उपजाय, करै समल नहिं मूल नसाय।**
**सम्यक्प्रकृति मिथ्यात निवार, भये सिद्ध प्रणमूँ सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **सम्यक्-प्रकृति-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ २३ ॥



अनन्तानुबन्धी-चारित्रमोहनीयकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

**धर्ममार्ग में उपजै रोष, उदय भये मिथ्यात सदोष।**
**यह अनन्त-अनुबंध निवार, भये सिद्ध प्रणमूँ सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **अनन्तानुबन्धी-क्रोध-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ २४ ॥

**देव-धर्म-गुरु सों अभिमान, उदय भये मिथ्या सरधान।**
**यह अनन्त-अनुबंध निवार, भये सिद्ध प्रणमूँ सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **अनन्तानुबन्धी-मान-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ २५ ॥

**छल सों धर्म-रीति दल-मलै, उदय होय मिथ्या जब चलै।**
**यह अनन्त-अनुबंध निवार, भये सिद्ध प्रणमूँ सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **अनन्तानुबन्धी-माया-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ २६ ॥

**लोभ उदय निर्माल्य दर्व, भक्षे महा निंद्य मति सर्व।**
**यह अनन्त-अनुबंध निवार, भये सिद्ध प्रणमूँ सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **अनन्तानुबन्धी-लोभ-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ २७ ॥

अप्रत्याख्यानावरण-चारित्रमोहनीयकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(**सुन्दरी** : जगाया तुमने कितनी बार .....)

**क्रोध कर अणुव्रत नहिं लीजिए, चरितमोह प्रकृति सु भनीजिए।**
**है अप्रत्याख्यानी कर्म सो, भये सिद्ध नमूँ तिस नासियो॥**
ॐ ह्रीं **अप्रत्याख्यानावरण-क्रोध-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ २८ ॥

**मान कर अणुव्रत न हो कदा, रहै अविरत युत दर्शन सदा।**
**है अप्रत्याख्यानी कर्म सो, भये सिद्ध नमूँ तिस नासियो॥**
ॐ ह्रीं **अप्रत्याख्यानावरण-मान-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ २९ ॥

**देशव्रति श्रावक नहीं होत है, वक्रता को जेह उद्योत है।**
**है अप्रत्याख्यानी कर्म सो, भये सिद्ध नमूँ तिस नासियो॥**
ॐ ह्रीं **अप्रत्याख्यानावरण-माया-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३० ॥

**लोभ मोह चरित जे जिय वसै, देशव्रत श्रावक नहीं ते लसै।**
**है अप्रत्याख्यानी कर्म सो, भये सिद्ध नमूँ तिस नासियो॥**
ॐ ह्रीं **अप्रत्याख्यानावरण-लोभ-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३१ ॥

प्रत्याख्यानावरण-चारित्रमोहनीयकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(**अडिल्ल** : हे प्रभु! चरणों में तेरे आ गये .....)

**प्रत्याख्यानी क्रोध सहित जे आचरै,**
**देशव्रती सो सकल व्रत नाहीं धरै।**

**चरितमोह की प्रकृति रूप तेह नाम है,**
**नाश कियो मैं नमूँ सिद्ध शिवधाम है॥**

ॐ ह्रीं **प्रत्याख्यानावरण-क्रोध-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३२ ॥

**प्रत्याख्यानभिमान महान न शक्त हैं,**
**जास उदय पूरण संयम अव्यक्त हैं॥ चरितमोह.॥**

ॐ ह्रीं **प्रत्याख्यानावरण-मान-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३३ ॥

**प्रत्याख्यानी माया मुनिपद को हतैं,**
**श्रावकव्रत पूरण नहिं खण्डै जास तैं॥ चरितमोह.॥**

ॐ ह्रीं **प्रत्याख्यानावरण-माया-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३४ ॥

**श्रावक पद में जास लोभ को वास है,**
**प्रत्याख्यानी श्रुति में संज्ञा तास है।**
**चरितमोह की प्रकृति रूप तेह नाम है,**
**नाश कियो मैं नमूँ सिद्ध शिवधाम है॥**

ॐ ह्रीं **प्रत्याख्यानावरण-लोभ-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३५ ॥

## संज्वलन-चारित्रमोहनीयकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(**भुजंगप्रयात** : जयवन्त वर्ते निर्ग्रन्थ शासन .....)

**यथाख्यात चारित्र को नाश कारा,**
**महाव्रत को जास में हो उजारा।**
**यही संज्वलन क्रोध सिद्धांत गाया,**
**नमूँ सिद्ध के चरण ताको नसाया॥**

ॐ ह्रीं **संज्वलन-क्रोध-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३६ ॥

**रहै संज्वलन रूप उद्योत जेते;**
**न हो सर्वथा शुद्धता भाव तेते।**
**यही संज्वलन क्रोध सिद्धांत गाया॥ नमूँ.॥**

ॐ ह्रीं **संज्वलन-मान-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३७ ॥

**वहै संज्वलन की जहां मंद धारा,**
**लहै है तहां शुक्लध्यानी उभारा।**
**यही संज्वलन व्रक सिद्धांत गाया॥ नमूँ.॥**

ॐ ह्रीं **संज्वलन-माया-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३८ ॥



**जहाँ संज्वलन लोभ को रंच नाही,**
**निजानन्द को वास होवे तहां ही।**
**यही संज्वलनलोभ सिद्धांत गाया।**
**नमूँ सिद्ध के चरण ताको नसाया॥**

ॐ ह्रीं **संज्वलन-लोभ-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ३९ ॥

## हास्यादि-नोकषाय-चारित्रमोहनीयकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(**मोदक** : हूँ स्वतन्त्र निश्चल निष्काम .....)

**जा करि हास्यभाव जो लहा तहिं, हास्य किये पर की यह पातहिं।**
**सो तुम नाश कियो जगनाथहिं, शीश नमूँ तुमको धर हाथहिं॥**

ॐ ह्रीं **हास्य-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४० ॥

**प्रीत करैं पर सो रति मानहिं, सो रतिभेद विधि तिस जानहिं।**
**सो तुम नाश कियो जगनाथहिं, शीश नमूँ तुमको धर हाथहिं॥**

ॐ ह्रीं **रति-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४१ ॥

**जो पर सों परसन्न न हो मन, आरत रूप रहै नित आनन।**
**सो तुम नाश कियो जगनाथहिं, शीश नमूँ तुमको धर हाथहिं॥**

ॐ ह्रीं **अरति-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४२ ॥

**जा कर पावत इष्ट-वियोगहिं, खेदमई परिणाम सु शोकहिं।**
**सो तुम नाश कियो जगनाथहिं, शीश नमूँ तुमको धर हाथहिं॥**

ॐ ह्रीं **शोक-शंका-निवारक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४३ ॥

**हो उद्वेग उचाटन रूपहिं, मन-तन कंपित होत अरूपहिं।**
**सो तुम नाश कियो जगनाथहिं, शीश नमूँ तुमको धर हाथहिं॥**

ॐ ह्रीं **भय-भंजक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४४ ॥

(**मत्तगयंद / सवैया तेईसा** : ऋषभदेव कल्याण कराय .....)

**जो पर को अपराध उघारत, जो अपनो कछु दोष न जाने,**
**जो पर के गुण औगुण जानत, जो अपने गुण को प्रगटाने।**
**सो जिनराज बखान जुगुप्सित, है जिय नोविधि के वश ऐसो,**
**हे भगवंत नमूँ तुमको, तुम जीत लियो छिन में अरि तैसो॥**

ॐ ह्रीं **जुगुप्सा-चिकित्सक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४५ ॥

**जो नर-नार रमावन की, निज सों अभिलाष धरै उर माहीं;**
**हो अति ही परकाश हिये नित, काम की दाह मिटै छिनमाहीं।**
**सो जिनराज बखान नपुंसक, वेद हनो विधि के वश ऐसो।**
**हे भगवंत नमूँ तुमको, तुम जीत लियो छिन में अरि तैसो॥**

ॐ ह्रीं **नपुंसक-वेद-विनाशक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४६ ॥

**जो तिय-संग रमें विधि-योग, न औरन से कछु आनन्द मानै;**
**किंचित् काम जगै उर में निज, शांत सुभावन की सुध ठाने॥**
**सो जिनराज बखान है नर-वेद हनो विधि के वश ऐसो।**
**हे भगवंत नमूँ तुमको, तुम जीत लियो छिन में अरि तैसो॥**

ॐ ह्रीं **पुं-वेद-निवारक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४७ ॥

**जो नर-संग रमें सुख मानत, अन्तर गूढ़ न जानत कोई।**
**हाव-विलास हि लाज धरै मन, आतुरता करि तृप्त न होई॥**
**सो जिनराज बखानत है तिय-वेद हनो विधि के वश ऐसो।**
**हे भगवंत नमूँ तुमको, तुम जीत लियो छिन में अरि तैसो॥**

ॐ ह्रीं **स्त्री-वेद-विध्वंसक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४८ ॥

## आयुकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(**वसन्ततिलका** : भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-.....)

**आयु-प्रमाण दृढ़ बन्धन और नाहीं,**
**गत्यानुसार थिति-पूरण-करण माहीं।**
**सोई विनाश तुम कीनो देवनाथा,**
**वन्दूँ तुम्हैं तरण-कारण जोर हाथा॥**

ॐ ह्रीं **आयुकर्म-विमुक्त-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ४९ ॥

**जो है कलेश अवधी सब होत तासो,**
**तेतीस सागर रहै थिति नर्क जासो॥ सोई.॥**

ॐ ह्रीं **नरकायु-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५० ॥

**याही प्रकार जितने दिन देव-देही,**
**नासै अकाल नहिं जे सुर-आयु से ही॥ सोई.॥**

ॐ ह्रीं **देवायु-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५१ ॥



**जासों करै त्रिजग की थिति आयु पूरी,**
**सोई कहो त्रिजग आयु महा लघूरी॥ सोई.॥**

ॐ ह्रीं **तिर्यंचायु-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५२ ॥

**जेते नरायु-विधि दे रस आप जाको,**
**तेते प्रजाय नर रूप भुगाय ताको॥ सोई.॥**

ॐ ह्रीं **मनुष्यायु-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५३ ॥

## नामकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(**पद्धरि** : शुद्धात्मा का श्रद्धान होगा .....)

**जो करे जीव को बहु प्रकार, ज्यों चित्रकार चित्राम सार।**
**सो नाम कर्म तुम नाश कीन, मैं नमूँ सदा उर भक्ति लीन॥**

ॐ ह्रीं **नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५४ ॥

## गति-नामकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

**जा उदय नारकी देह पाय, नाना दुख भोगे नर्क जाय।**
**सो नर्कगति तुम नाश कीन, मैं नमूँ सदा उर भक्ति लीन॥**

ॐ ह्रीं **नरकगति-निवारक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५५ ॥

**जासों उपजै तिर्यंच जीव, रहै ज्ञान-हीन निर्बल सदीव।**
**सो तिर्यग्गति तुम नाश कीन, मैं नमूँ सदा उर भक्ति लीन॥**

ॐ ह्रीं **तिर्यग्गति-छेदक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५६ ॥

**चउ विधि सुरपद जासों लहाय, विषयातुर नित भोगै उपाय।**
**सो देवगति तुम नाश कीन, मैं नमूँ सदा उर भक्ति लीन॥**

ॐ ह्रीं **देवगति-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५७ ॥

**जा उदय भये मानुष्य होत, लहै नीच-उच्च ताको उद्योत।**
**सो मनुष गति तुम नाश कीन, मैं नमूँ सदा उर भक्ति लीन॥**

ॐ ह्रीं **मनुष्यगति-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५८ ॥

## जातिनामकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(**कामिनीमोहन** : जिनधर्म जिनधम मुझको तेरी कसम .....)

**एक ही भाव सामान्य का पावना, जीव की जाति का भेद सो गावना।**
**होत जो थावरा एक-इन्द्री कहो, पूजहूँ सिद्ध के चरण ताको दहो॥**

ॐ ह्रीं **एकेन्द्रिय-जाति-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ५९ ॥

**फर्स के साथ में जीभ जो आ मिले, पांय सों आपने आप भूपर चले।**
**गामिनी कर्म सों दोय-इन्द्री कहो, पूजहूँ सिद्ध के चरण ताको दहो॥**

ॐ ह्रीं **द्वीन्द्रिय-जाति-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६० ॥

**नाक हो और दो आदि के जोड़ में, हो उदय चालना योग सों लोड़ में।**
**गामिनी कर्म सों तीन-इन्द्री कहो, पूजहूँ सिद्ध के चरण ताको दहो॥**

ॐ ह्रीं **त्रीन्द्रिय-जाति-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६१ ॥

**आंख हो नाक हो जीभ हो फर्श हो, कान के शब्द का ज्ञान जामें न हो।**
**गामिनी कर्म सों चार-इन्द्री कहो, पूजहूँ सिद्ध के चरण ताको दहो॥**

ॐ ह्रीं **चतुरिन्द्रिय-जाति-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६२ ॥

**कान भी आ मिलै जीव की जात में, हो असंज्ञी सुसंज्ञी यह दो भांति में।**
**गामिनी कर्म सों पाँच-इन्द्री कहो, पूजहूँ सिद्ध के चरण ताको दहो॥**

ॐ ह्रीं **पंचेन्द्रिय-जाति-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६३ ॥

## शरीर-नामकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(**लावनी** : तुम ज्ञायक चेतन हो .....)

**हो उदार जो प्रगट उदारक, नाम कर्म की प्रकृति भनी,**
**लहै उदारिक देह जीव तिस, कर्म प्रकृति के उदय तनी।**
**भये अकाय अमूरति आनन्द, पुंज चिदातम जोत धनी,**
**नमूँ तुम्हैं कर-जोर युगल तुम, सकल रोग-थल काय हनी॥**

ॐ ह्रीं **औदारिक-शरीर-विमुक्त-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६४ ॥

**निज शरीर को अणिमादिक कर, बहु प्रकार प्रणमाय वरै,**
**वैक्रियक तन कहलावे यह, देव-नारकी मूल धरै॥ भये.॥**

ॐ ह्रीं **वैक्रियिक-शरीर-विमुक्त-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६५ ॥

**धवल वर्ण शुभ योगी संशय-, हरण अहारक का पुतला,**
**जो प्रमत्त गुणथानक मुनि के, देह उदारक सों निकला॥ भये.॥**

ॐ ह्रीं **आहारक-शरीर-विमुक्त-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६६ ॥

**पुद्गलीक तन कर्म वर्गणा, कारमाण परदीप्त करन,**
**तेजस नाम शरीर शास्त्र में, गावत है नहिं तेज वरन॥ भये.॥**

ॐ ह्रीं **तैजस-शरीर-विमुक्त-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६७ ॥

**पुद्गलीक वरगणा जीव सों, एकक्षेत्र-अवगाही है,**
**नूतन कारण करण-मूल तन, कारमाण तिस नाम कहै॥**

ॐ ह्रीं **कार्मण-शरीर-छेदक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६८ ॥



## संघात-नामकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(**इन्द्रवज्रा** : तुम्ही हो माता, पिता तुम्ही हो .....)

**जेते प्रदेशा तन बीच आवैं, सारे मिलैं जोड़ न छिद्र पावैं।**
**संघात नामा जिम देह जानो, पूजूँ तुम्हैं सिद्ध यह कर्म भानो॥**

ॐ ह्रीं **औदारिक-संघात-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ६९ ॥

**ऐसे प्रकारा तन में अहारा, संधी मिलाया कर वेत सारा।**
**संघात नामा जिम देह जानो, पूजूँ तुम्हैं सिद्ध यह कर्म भानो॥**

ॐ ह्रीं **आहारक-संघात-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७० ॥

**वैक्रिय के जोड़ जो होत ताही, संघातनामा जिन बैन माही।**
**संघात नामा जिम देह जानो, पूजूँ तुम्हैं सिद्ध यह कर्म भानो॥**

ॐ ह्रीं **वैक्रियिक-संघात-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७१ ॥

**तैजस के अंग-उपंग सारे, संधी मिलाया तिस मांह धारे।**
**संघात नामा जिम देह जानो, पूजूँ तुम्हैं सिद्ध यह कर्म भानो॥**

ॐ ह्रीं **तैजस-संघात-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७२ ॥

**ज्ञानादि आवर्ण जो कर्म काया, ताको मिलाया श्रुत मांह गाया।**
**संघात नामा जिम देह जानो, पूजूँ तुम्हैं सिद्ध यह कर्म भानो॥**

ॐ ह्रीं **कार्मण-संघात-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७३ ॥

## बन्धन-नामकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(**चौबोला** : आतम को हित है सुख सो सुख .....)

**पुद्गलीक वर्गणा जोग तन, जब जिय करत अहारा।**
**प्रणमावे तिनको इकत्र कर, बंध उदय नुसारा॥**
**यही उदारक बन्धन तुमने, छेद कियो निर्धारा।**
**भए अबंध अकाय अनूपम, जजूँ भक्ति उर धारा॥**

ॐ ह्रीं **औदारिक-बन्धन-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७४ ॥

**वैक्रियक तन परमाणू मिल, परस्परा अनिवारा।**
**हो स्कन्ध रूप पर्याई, यह बन्धन परकारा॥**
**वैक्रियक तन बन्धन तुमनै, छेद कियो निरधारा॥ भए.॥**

ॐ ह्रीं **वैक्रियिक-बन्धन-छेदक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७५ ॥

**मुनि शरीर सों बाहिज निसरै, संशय नाशनहारा।**
**ताको मिलैं प्रदेश परस्पर, हो सम्बन्ध अवारा॥**

**यही अहारक बंधन तुमनै, छेद कियो निरधारा।**
**भए अबंध अकाय अनूपम, जजूँ भक्ति उर धारा॥**

ॐ ह्रीं आहारक-बन्धन-छेदक-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७६ ॥

**दीप्त जोति जो कारमाण की, रहै निरन्तर लारा।**
**जहाँ तहाँ नहिं बिखरैं कण ज्यों, वहै एक ही धारा॥**
**तैजस नामा बन्धन तुमनै, छेद कियो निरधारा।**
**भए अबंध अकाय अनूपम, जजूँ भक्ति उर धारा॥**

ॐ ह्रीं तैजस-बन्धन-शान्तक-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७७ ॥

**द्रव्यकर्म ज्ञानावरणादिक, पुद्गल जात पसारा।**
**एक-क्षेत्र-अवगाही जिय को, दुविध भाव कर्तारा॥**
**कारमाण यह बन्धन तुमनै, छेद किया निरधारा।**
**भए अबंध अकाय अनूपम, जजूँ भक्ति उर धारा॥**

ॐ ह्रीं कार्मण-बन्धन-शान्तक-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७८ ॥

## संस्थान-नामकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(**रोला :** सम्यक् साथै ज्ञान होय पै भिन्न अराधौ .....)

**तन आकृति संस्थान आदि समचतुर बखानो।**
**ऊपर-तलै समान यथाविधि सुन्दर जानो॥**
**यह विपरीत-स्वरूप-त्याग पायो निजात्म पद।**
**बीजभूत कल्याण नमूँ भव्यन प्रति सुखप्रद॥**

ॐ ह्रीं समचतुरस्र-संस्थान-विमुक्त-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ७९ ॥

**ऊपर से हो थूल तलै हो न्यून देह जिस।**
**परिमण्डलनिग्रोध नाम वरणो सिद्धांत तिस॥ यह.॥**

ॐ ह्रीं न्यग्रोध-परिमण्डल-संस्थान-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८० ॥

**नीचे से हो थूल न्यून होवे उपराही।**
**बमई सम वामीक देह जिन आज्ञा माही॥ यह.॥**

ॐ ह्रीं वाल्मीक-संस्थान-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८१ ॥

**जो कुबरै आकार रूप पावे तन प्रानी।**
**कुब्ज नाम संस्थान ताह वरणों जिनवानी॥ यह.॥**

ॐ ह्रीं कुब्जक-संस्थान-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८२ ॥



**लघु सों लघु ठेंगनारूप तन होवे जाको।**
**वामन है परसिद्ध लोक में कहिये ताको॥ यह.॥**

ॐ ह्रीं वामन-संस्थान-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८३ ॥

**जित तित बहु आकार कहीं नहिं हो यकसारू।**
**हुंडक अति असुहान पाप फल प्रगट उघारूँ॥ यह.॥**

ॐ ह्रीं हुण्डक-संस्थान-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८४ ॥

## अंगोपांग-नामकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(**लक्ष्मीधरा :** पार्श्वनाथ देव सेव .....)

**जीव आपभाव सों जु कर्म की क्रिया करेत।**
**अंग वा उपंग सो शरीर के उदय समेत॥**
**सो औदारिकी शरीर अंग वा उपंग नाश।**
**सिद्धरूप हो नमों सु पाइयो अबाध वास॥**

ॐ ह्रीं औदारिक-अंगोपांग-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८५ ॥

**देव नारकी शरीर मांस रक्त से न होत।**
**तासको अनेक भांति आप दे सके उद्योत॥**
**वैक्रियक सो शरीर अंग वा उपंग नाश॥ सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं वैक्रियिक-अंगोपांग-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८६ ॥

**साधु के शरीर मूल तें कढ़े प्रशंस योग।**
**संशय को विध्वंसकार केवली सु लेत भोग॥**
**आहारक सो शरीर अंग वा उपंग नाश॥ सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं आहारक-अंगोपांग-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८७ ॥

## संहनन-नामकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(**गीता :** सुर-असुर इन्द्र-नरेन्द्र वन्दित .....)

**संहनन बन्धन हाड होय अभेद वज्र सो नाम है।**
**नाराच कीली वृषभ डोरी बांधने की ठाम है॥**
**है आदि को संहनन जो जिस वज्र सब परकार हो।**
**यह त्याग बंध अबंध निवसो परम आनंद धार हो॥**

ॐ ह्रीं वज्रवृषभ-नाराच-संहनन-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८८ ॥

**जो वज्र की कीली ठुकी हो हाड संधी में जहाँ।**
**सामान्य वृषभ जु जेवरी ताकर बंधाई हो तहाँ॥**

**है दूसरा संहनन यह नाराच वज्र प्रकार हो।**
**यह त्याग बंध अबंध निवसो परम आनंद धार हो॥**

ॐ ह्रीं वज्रनाराच-संहनन-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ८९ ॥

**नहिं वज्र की हो वृषभ अरु नाराच भी नहिं वज्र हो।**
**सामान्य कीली कर ठुकी सब हाड संधी वज्र हो॥**
**है तीसरा संहनन जो नाराच ही परकार हो।**
**यह त्याग बंध अबंध निवसो परम आनंद धार हो॥**

ॐ ह्रीं नाराच-संहनन-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९० ॥

**हो जडित छोटी कीलिका सों संधि हाड़ों की जबैं।**
**कछु ना विशेषण वज्र के सामान्य ही होवे सबैं॥**
**है चौथवाँ संहनन जो नाराच अर्द्ध प्रकार हो।**
**यह त्याग बंध अबंध निवसो परम आनंद धार हो॥**

ॐ ह्रीं अर्द्धनाराच-संहनन-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९१ ॥

**जो परस्पर कर जडित होवें संधि हाडन की जहाँ।**
**नहिं कीलिका सों ठुकी होवें साल संधी के तहाँ॥**
**है पंचमों संहनन कीलक नाम यह परकार हो।**
**यह त्याग बंध अबंध निवसो परम आनंद धार हो॥**

ॐ ह्रीं कीलिक-संहनन-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९२ ॥

**कछु छिद्र कछुक मिलाप होवे संधि हाड़ों में सही।**
**केवल नसा सों होय वेढ़ी मास सों लतपत रही॥**
**अन्तम स्फाटिक संहनन यह हीन शक्ति असार हो।**
**यह त्याग बंध अबंध निवसो परम आनंद धार हो॥**

ॐ ह्रीं असंप्राप्तासृपाटिका-संहनन-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९३ ॥

वर्ण-नामकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(दोहा : जिनवर दरबार तुम्हारा .....)

**वर्ण-विशेष न श्वेत है, नामकर्म तन धार।**
**स्वच्छ स्वरूपी हो नमूँ, ताहि कर्मरज टार॥**

ॐ ह्रीं श्वेत-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९४ ॥

**वर्ण-विशेष न पीत है, नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ.॥**

ॐ ह्रीं पीत-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९५ ॥

**वर्ण-विशेष न रक्त है, नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ.॥**



ॐ ह्रीं रक्त-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९६ ॥

**वर्ण-विशेष न हरित है, नामकर्म तन धार।**
**स्वच्छ स्वरूपी हो नमूँ, ताहि कर्मरज टार॥**

ॐ ह्रीं हरित-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९७ ॥

**वर्ण-विशेष न कृष्ण है, नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ.॥**

ॐ ह्रीं कृष्ण-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९८ ॥

गन्ध-नामकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

**गंध-विशेष न शुभ कहो, नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ.॥**

ॐ ह्रीं सुगन्ध-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ ९९ ॥

**गंध-विशेष न अशुभ है, नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ.॥**

ॐ ह्रीं दुर्गन्ध-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०० ॥

रस-नामकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

**स्वाद-विशेष न तिक्त है, नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ.॥**

ॐ ह्री तिक्त-रस-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०० ॥

**स्वाद-विशेष न कटुक है, नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ.॥**

ॐ ह्रीं कटुक-रस-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०२ ॥

**स्वाद-विशेष न आम्ल है, नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ.॥**

ॐ ह्रीं आम्ल-रस-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०३ ॥

**स्वाद-विशेष न मधुर है, नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ.॥**

ॐ ह्रीं मधुर-रस-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०४ ॥

**स्वाद-विशेष न कषाय है, नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ.॥**

ॐ ह्रीं कषाय-रस-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०५ ॥

स्पर्श-नामकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

**फर्स-विशेष न नरम है, नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ.॥**

ॐ ह्रीं मृदुत्व-स्पर्श-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०६ ॥

**फर्स-विशेष न कठिन है, नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ.॥**

ॐ ह्रीं कठिन-स्पर्श-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०७ ॥

**फर्स-विशेष न भार है, नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ.॥**

ॐ ह्रीं गुरु-स्पर्श-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०८ ॥

**फर्स-विशेष न अगुरु है, नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ.॥**

ॐ ह्रीं लघु-स्पर्श-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं.. ॥ १०९ ॥

**फर्स-विशेष न शीत है, नामकर्म तन धार।**
**स्वच्छ स्वरूपी हो नमूँ, ताहि कर्मरज टार॥**

ॐ ह्रीं **शीत-स्पर्श-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ११० ॥

**फर्स-विशेष न उष्ण है, नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ.॥**

ॐ ह्रीं **उष्ण-स्पर्श-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १११ ॥

**फर्स-विशेष न चिकण है, नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ.॥**

ॐ ह्रीं **स्निग्ध-स्पर्श-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ११२ ॥

**फर्स-विशेष न रूक्ष है, नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ.॥**

ॐ ह्रीं **रूक्ष-स्पर्श-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ११३ ॥

## आनुपूर्वी-नामकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(**मरहठा** : सिद्धों की श्रेणी में आनेवाला .....)

**हो जो प्रजाप्त वर, पण-इन्द्रीधर, जाय नर्क निरधार।**
**विग्रह सु चाल में, अन्तराल में, धरै पूर्व आकार॥**
**सो नर्क नाम कर, गावत गणधर, आनपूरवी सार।**
**तुम ताह नशायो, शिवगति पायो, नमत लहूँ भव-पार॥**

ॐ ह्रीं **नरकगत्यानुपूर्वि-दाहक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ११४ ॥

**निजकाय छांड कर, अंत समय मर, होय पशु अवतार।**
**विग्रह सु चाल में, अन्तराल में, धरै पूर्व आकार॥**
**सो पशू नाम कर, गावत गणधर, आनपूरवी सार।**
**तुम ताह नशायो, शिवगति पायो, नमत लहूँ भव-पार॥**

ॐ ह्रीं **तिर्यंचगत्यानुपूर्वि-दाहक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ११५ ॥

**समकित सों अतिवर, वा कलेश कर, धरै देवगति चार।**
**विग्रह सु चाल में, अन्तराल में, धरै पूर्व आकार॥**
**सो देव नाम कर, गावत गणधर, आनपूरवी सार।**
**तुम ताह नशायो, शिवगति पायो, नमत लहूँ भव-पार॥**

ॐ ह्रीं **देवगत्यानुपूर्वि-दाहक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ११६ ॥

**हो मिश्र परणामी, वा शिवगामी, वरै मनुषगति सार।**
**विग्रह सु चाल में, अन्तराल में, धरै पूर्व आकार॥**
**सो मनुष नाम कर, गावत गणधर, आनपूरवी सार।**
**तुम ताह नशायो, शिवगति पायो, नमत लहूँ भव-पार॥**

ॐ ह्रीं **मनुष्यगत्यानुपूर्वि-दाहक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ११७ ॥



## शेष नामकर्म के भेदों से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(**त्रोटक** : केवल रवि किरणों से जिसका .....)

**तन भार भए निज घात ठने, तिस की कछु आकृति ऐसी बने।**
**अपघात जु कर्म सिद्धांत भनो, जग-पूज भए तसु मूल हनो॥**

ॐ ह्रीं **उपघात-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ११८ ॥

**विष आदि अनेक उपाधि धरै, पर-प्राणनि को निर्मूल करै।**
**परघात जु कर्म सिद्धांत भनो, जग-पूज भए तसु मूल हनो॥**

ॐ ह्रीं **परघात-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ ११९ ॥

**अति तेजमई तन-दीप्त महा, रवि-बिंब विषैं जिय भूमि लहा।**
**यह आतप कर्म सिद्धांत भनो, जग-पूज भए तसु मूल हनो॥**

ॐ ह्रीं **आतप-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १२० ॥

**परकासमई जिम बिंब शशी, पृथिवी जिय पावत देह असी।**
**द्युति नाम जु कर्म सिद्धांत भनो, जग-पूज भए तसु मूल हनो॥**

ॐ ह्रीं **उद्योत-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १२१ ॥

**तन की थिति कारण श्वास गहै, सुर अंतर बाहर भेद वहै।**
**यह श्वास जु कर्म सिद्धांत भनो, जग-पूज भए तसु मूल हनो॥**

ॐ ह्रीं **श्वासोच्छ्वास-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं.. ॥ १२२ ॥

**शुभ चाल चलैं अपनी जिस तैं, शशि ज्यों नभ सोहत हैं तिस तैं।**
**नभ में गति कर्म सिद्धांत भनो, जग-पूज भए तसु मूल हनो॥**

ॐ ह्रीं **प्रशस्त-विहायोगति-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः,अर्घ्यं.. ॥ १२३ ॥

ॐ ह्रीं **अप्रशस्त-विहायोगति-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥[1]

**इक-इन्द्रिय जात विरोध मई, चतुरांति सुभावक प्राप्त भई।**
**त्रस नाम जु कर्म सिद्धांत भनो, जग-पूज भए तसु मूल हनो॥**

ॐ ह्रीं **त्रस-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १२४ ॥

**इक-इन्द्रिय जात हि पावत है, अरु शेष न ताह धरावत है।**
**यह थावर कर्म सिद्धांत भनो, जग-पूज भए तसु मूल हनो॥**

ॐ ह्रीं **स्थावर-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १२५ ॥

१. यहाँ नकुड़ या जयपुर की हस्तलिखित प्रतियों में विहायोगति नामकर्म सम्बन्धी एक ही छन्द है, वह भी प्रशस्त सम्बन्धी ही है, अतः अप्रशस्त विहायोगति सम्बन्धी केवल अर्घ्य बनाकर दिया गया है।

**पर में परवेश न आप करै, पर को निज में नहिं थाप धरै।**
**यह बादर कर्म सिद्धांत भनो, जग-पूज भए तसु मूल हनो॥**
ॐ ह्रीं **बादर-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १२६॥
**जल सों दव[२] सों नहिं आप मरै, सब ठौर रहै पर को न हरै।**
**यह सूक्षम कर्म सिद्धांत भनो, जग-पूज भए तसु मूल हनो॥**
ॐ ह्रीं **सूक्ष्म-नामकर्म-शोषक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १२७॥
**जिस तें परिपूरणता करहै, निज शक्ति-समाज उदै धरहै।**
**पर्याप्त सु कर्म सिद्धांत भनो, जग-पूज भए तसु मूल हनो॥**
ॐ ह्रीं **पर्याप्त-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १२८॥
**परिपूरणता नहिं धार सके, यह होत सभी साधारण के।**
**अप्रजाप्त कर्म सिद्धांत भनो, जग-पूज भए तसु मूल हनो॥**
ॐ ह्रीं **अपर्याप्त-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १२९॥
**जिम लोह न भार धरै तन में, जिम आकन फूल उडै वन में।**
**अगुरु-अलघु यह भेद भनो, जग-पूज भए तसु मूल हनो॥**
ॐ ह्रीं **अगुरुलघुत्व-नामकर्म-ध्वंसक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १३०॥
**इक देह विषैं इक जीव रहै, इकलो तिस को सब भोग लहै।**
**परतेक जु कर्म सिद्धांत भनो, जग-पूज भए तसु मूल हनो॥**
ॐ ह्रीं **प्रत्येक-नामकर्म-हिंसक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १३१॥
**इक देह विषै बहु जीव रहै, इक साथ सभी तिस भोग लहै।**
**यह भेद निगोद सिद्धांत भनो, जग-पूज भए तसु मूल हनो॥**
ॐ ह्रीं **साधारण-निगोद-नामकर्म-निर्वासक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १३२॥

(**उपेन्द्रवज्रा** : नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः .....)

**चले न जो धातु तजै न वासा, यथाविधी आप धरै निवासा।**
**यही प्रकारा थिर नाम भासो, नमामि देवं तिस दैव नासो॥**
ॐ ह्रीं **स्थिर-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १३३॥
**अनेक थानं मुख-गौण घातं, चलंति धारं निजवास घातं।**
**यही प्रकारा अथिर नाम भासो, नमामि देवं तिस दैव नासो॥**
ॐ ह्रीं **अस्थिर-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १३४॥

२. दावाग्नि।



**यथाविधी देह विशाल सोहै, मुखारविंदादिक सर्व मोहै।**
**यही प्रकारा शुभ नाम भासो, नमामि देवं तिस दैव नासो॥**
ॐ ह्रीं **शुभ-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १३५॥
**असुन्दराकार शरीर माहीं, लखो जहाँ सों विड रूप ताहीं।**
**यही प्रकारा अशुभ नाम भासो, नमामि देवं तिस दैव नासो॥**
ॐ ह्रीं **अशुभ-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १३६॥
**अनेक लोकोत्तम भावधारी, करैं सभी ता पर प्रीति भारी।**
**सुभाग ताको यह भेद भासो, नमामि देवं तिस दैव नासो॥**
ॐ ह्रीं **सुभग-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १३७॥
**धरै अनेका गुण तो न जासों, करै कभू प्रीति न कोइ तासों।**
**दुर्भाग ताको यह भेद भासो, नमामि देवं तिस देह नासो॥**
ॐ ह्रीं **दुर्भग-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १३८॥

(**पद्धरि** : ऐसे मिथ्या दृग-ज्ञान-चरण वश .....)

**ध्वनि हीन भांति ज्यों मधुर बैन, निसरै पिक आदिक रीस दैन।**
**यह सुस्वर नाम प्रकृति कहाय, तुम हनो नमूँ निज शीश नाय॥**
ॐ ह्रीं **सुस्वर-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १३९॥
**अस्पष्टभूत वानी समान, असुहान भयंकर शब्द जान।[१]**
**यह दुःस्वर नाम प्रकृति कहाय, तुम हनों नमूँ निज शीश नाय॥**
ॐ ह्रीं **दुःस्वर-नामकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १४०॥

(**अडिल्ल** : जिनवाणी जिनवाणी ध्याना सभी .....)

**होत प्रभामई कांति महारमणीक जू।**
**जग-जन-मन-भावन माने यह ठीक जू॥**
**यह आदेय जु प्रकृति नाश निजपद लहो।**
**ध्यावत हैं जगनाथ! तुम्हैं हम अघ दहो॥**
ॐ ह्री **आदेय-नामकर्म-विध्वंसक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १४१॥
**रूखो मुख को वरण लेश नहिं कांति को।**
**रूखे केश नखाकृति तन विट भ्रान्त हो॥**
**अनादेय यह प्रकृति नाश निजपद लहो॥ ध्यावत.॥**
ॐ ह्रीं **अनादेय-नामकर्म-विध्वंसक-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं॥ १४२॥

१. नकुड़ प्रति

**होत गुप्त गुण तौ भी जग में विस्तरै।**
**जग-जन सुजस उचारत ताकी थुति करै॥**
**यह जस-प्रकृति विनाश सुभावी यश लहो।**
**ध्यावत हैं जगनाथ! तुम्हैं हम अघ दहो॥**

ॐ ह्रीं यशस्कीर्ति-नामकर्म-घातक-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं॥ १४३॥

**जासु गुणन को औगुण कर सब ही ग्रहैं।**
**करै काज परशंसित पण निंदित कहैं॥**
**अयश-प्रकृति को नाश सुभाविक यश लहो॥ ध्यावत.॥**

ॐ ह्रीं अयशस्कीर्ति-नामकर्म-घातक-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं॥ १४४॥

**योग-थान नेत्रादिक ज्यों के त्यों बनो।**
**रचित चतुर कारीगर करते हैं जनो॥**
**यह निर्माण विनाश सुभावी पद लहो॥ ध्यावत.॥**

ॐ ह्रीं निर्माण-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं॥ १४५॥

**पंचकल्याणक चौंतिस अतिशय राजहीं।**
**प्रातिहार्य अठ समोसरण युत छाजहीं॥**
**तीर्थंकर विधि विभव नाश स्वपद लहो॥ ध्यावत.॥**

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक-चतुस्त्रिंशदतिशयाष्ट-प्रातिहार्य-समवसरणादि-विभूति-युक्तार्हन्त्य-लक्ष्मी-हेतु-तीर्थंकर-नामकर्मोज्ञासक-सिद्धाधि. नमः अर्घ्यं॥ १४६॥

## गोत्रकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

(चाल : रे मन! भज ले आतमराम .....)

**जो कुम्भकार की नाई, छिन घट छिन करत सराई।**
**सो गोत कर्म परिजारा, हम पूज रचो सुखकारा॥**

ॐ ह्रीं गोत्रकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं॥ १४७॥

**लोकन में पूज्य प्रधाना, सब करत विनय मन ठाना।**
**यह उच्च गोत्र परिजारा, हम पूज रचो सुखकारा॥**

ॐ ह्रीं उच्च-गोत्रकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं॥ १४८॥

**जिसको सब कहत कमीना, आचरण धरे अति हीना।**
**यह नीच गोत्र परिजारा, हम पूज रचो सुखकारा॥**

ॐ ह्रीं नीच-गोत्रकर्म-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं॥ १४९॥



## अन्तरायकर्म से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

**ज्यों दे न सकै भण्डारी, परधन को हो रखवारी।**
**यह अन्तराय परिजारा, हम पूज रचो सुखकारा॥**

ॐ ह्रीं अन्तराय-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं॥ १५०॥

**हो दान देन के भावा, दे सकै न कोटि उपावा।**
**दानांतराय परिजारा, हम पूज रचो सुखकारा॥**

ॐ ह्रीं दानान्तराय-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं॥ १५१॥

**मनो दान लेन मन भावै, दातार प्रसंग न पावै।**
**लाभांतराय परिजारा, हम पूज रचो सुखकारा॥**

ॐ ह्रीं लाभान्तराय-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं॥ १५२॥

**पुष्पादिक चाहे भोगा, पर पाये न अवसर योगा।**
**भोगांतराय परिजारा, हम पूज रचो सुखकारा॥**

ॐ ह्रीं भोगान्तराय-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं॥ १५३॥

**तिय आदिक बारंबारा, नहिं भोग सकै हितकारा।**
**उपभोगांतर परिजारा, हम पूज रचो सुखकारा॥**

ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं॥ १५४॥

**चेतन निज बल प्रगटावै, यह योग कभू नहिं पावै।**
**वीर्यांतराय परिजारा, हम पूज रचो सुखकारा॥**

ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं॥ १५५॥

## कर्मों के अनेक प्रकारों से मुक्ति-सम्बन्धी अर्घ्य

**ज्ञानावरणादिक नामी, निज काज उदय परिणामी।**
**अठ भेद कर्म परिजारा, हम पूज रचो सुखकारा॥**

ॐ ह्रीं कर्माष्टक-रहित-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥ १५६॥

**इक सौ अठताल प्रकारी, उत्तर विध सत्ता धारी।**
**सब प्रकृति कर्म परिजारा, हम पूज रचो सुखकारा॥**

ॐ ह्रीं शताष्टचत्वारिंशत्-कर्मप्रकृति-मुक्त-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं॥ १५७॥

**परिणाम भेद संख्याता, जो वचन योग में आता।**
**संख्यात कर्म परिजारा, हम पूज रचो सुखकारा॥**

ॐ ह्रीं संख्यात-कर्म-छेदक-सिद्धाधिपतये नमः, अर्घ्यं॥ १५८॥

**है वचनन सों अधिकाई, परिणाम भेद दुखदाई।**
**विध असंख्यात परिजारा, हम पूज रचो सुखकारा॥**

ॐ ह्रीं **असंख्यात-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं ॥ १५९ ॥

**अविभाग प्रछेद अनन्ता, जो केवलज्ञान लहन्ता।**
**यह कर्म अनंत परिजारा, हम पूज रचो सुखकारा॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं ॥ १६० ॥

**सब भाग अनन्तानन्ता, यह सूक्षम भाव धरंता।**
**विध नन्तानन्त परिजारा, हम पूज रचो सुखकारा॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तानन्त-कर्म-रहित-सिद्धाधिपतये** नमः, अर्घ्यं ॥ १६१ ॥

## सिद्धों के आनन्दादि गुण सम्बन्धी अर्घ्य

(**मोतियादाम** : अहो! चैतन्य आनन्दमय .....)

**न हो परिणाम विषैं कछु खेद, सदा इकसा प्रणमै बिन भेद।**
**निजाश्रित भाव रमैं सुखधाम, करूँ तिस आनन्द को परणाम॥**

ॐ ह्रीं **नित्यानन्द-धर्म-स्वभाव-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं ॥ १६२ ॥

**धरैं जितने परिणामन भेद, विशेषण ते सब ही बिन खेद।**
**पराश्रितता बिन आनन्द धर्म, नमूँ तिन पाय लहूँ पद पर्म॥**

ॐ ह्रीं **आनन्द-धर्म-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं ॥ १६३ ॥

**न हो परयोग निमित्त विभाव, सदा निवसै निज आनंद भाव।**
**यही वरणो परमानंद धर्म, नमूँ तिन पाय लहूँ पद पर्म॥**

ॐ ह्रीं **परमानन्द-धर्म-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं ॥ १६४ ॥

**कभूँ पर सों कछु द्वेष न होत, कभूँ पुन हर्ष-विशेष न होत।**
**रहै नित ही निज भावन लीन, नमूँ पद साम्य सुभाव सुलीन॥**

ॐ ह्रीं **साम्य-स्वभाव-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं ॥ १६५ ॥

**निजाकृति में नहिं लेश कषाय, अमूरत शांतिमई सुखदाय।**
**अनाकुलता वित[१] साम्य स्वरूप, नमूँ तिनकों नित आनंदरूप॥**

ॐ ह्रीं **साम्य-स्वरूप-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं ॥ १६६ ॥

**अनन्त गुणातम द्रव्य-पर्याय, यही विधि आप धरै बहु भाय।**
**सभी कुमती कर हो अलखाय, नमूँ जिनवैन भली विध गाय॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-गुण-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं ॥ १६७ ॥

**अनन्त गुणातम रूप कहाय, गुणी-गुण-भेद सदा प्रणमाय।**
**महागुण स्वच्छ सदा तुम रूप, नमूँ तुमको पद पाय अनूप॥**

१. नकुड़ व जयपुर की हस्तलिखित प्रतियों में अनाकुलता शब्द के साथ 'विन' शब्द आया है, परन्तु अर्थ नहीं बैठता, अतः 'वित' शब्द उचित है। 'वित' अर्थात् ज्ञाता पुरुष।



ॐ ह्रीं **अनन्त-गुण-स्वरूप-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं ॥ १६८ ॥

**अभेद सुभेद अनेक सु एक, धरो इन आदिक धर्म अनेक।**
**विरोधित भावन सों अविरुद्ध, नमूँ जिन आगम की विधि शुद्ध॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-धर्म-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं ॥ १६९ ॥

**रहै धर्मी नित धर्मस्वरूप, न हो परदेशन सों अनरूप।**
**चिदातम धर्म सभी निज रूप, धरो प्रणमूँ मन भक्ति-स्वरूप॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-धर्म-स्वरूप-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं ॥ १७० ॥

(**चौपइ** : हूँ स्वतन्त्र निश्चल निष्काम .....)

**हीनाधिक नहिं भाव विशेष, आतमीक आनन्द हमेश।**
**सम स्वभाव सोई सुखरास, प्रणमूँ सिद्ध मिटै भव-वास॥**

ॐ ह्रीं **सम-स्वभाव-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं ॥ १७१ ॥

**इष्टानिष्ट मिटो भ्रम जाल, पायो निज आनन्द विशाल।**
**साम्य सुधारस को नित भोग, नमूँ सिद्ध सन्तुष्ट मनोग॥**

ॐ ह्रीं **सन्तुष्ट-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं ॥ १७२ ॥

**पर-पदार्थ को इच्छुक नांह, सदा सुखी स्वातम पद मांह।**
**मेटो सकल राग-रुष दोष, प्रणमूँ राजत सम संतोष॥**

ॐ ह्रीं **सम-सन्तोष-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं ॥ १७३ ॥

**मोह-उदय सब भाव नसाय, मेटो पुद्गलीक पर्याय।**
**शुद्ध निरंजन समगुण लहो, नमूँ सिद्ध परकृत दुख दहो॥**

ॐ ह्रीं **साम्य-गुण-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं ॥ १७४ ॥

**निजपद सों थिरता नहिं तजै, स्वानुभूत अनुभव नित भजै।**
**निराबाध तिष्टै अविकार, सम-स्थाई गुण भण्डार॥**

ॐ ह्रीं **साम्य-स्थान-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं ॥ १७५ ॥

**भव-संबंधी काज निवार, अचल रूप तिष्टै सम धार।**
**कृत्याकृत्य सम गुण पाइयो, भक्ति सहित हम सिर नाइयो॥**

ॐ ह्रीं **साम्य-कृतकृत्य-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं ॥ १७६ ॥

(**झूलना** : मात तोहि सेवते सुतृप्तता हमें भई .....)

**मूल नहीं भय धरैं, छोभ नाहीं करैं, गैर की आस को त्रास नाहीं।**
**शरण काकी चहैं, सबन को शरण है, अन्य की शरण विन नमूँ ताही॥**

ॐ ह्रीं **अनन्य-शरण-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं ॥ १७७ ॥

**द्रव्य षट् में नहीं, आप गुण आप ही, आप में राजते सहज नीको।**
**स्वगुण अस्तित्वता, वस्तु की वस्तुता, धरत हो मैं नमूँ आप ही को॥**

ॐ ह्रीं **अनन्य-गुण-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १७८॥

**गैर से गैर हो, आप में लय रहो, स्व-चतुर खेत में वास पायो।**
**धर्म समुदाय हो, परम पद पाय हो, मैं तुम्हें भक्तियुत शीश नायो॥**

ॐ ह्रीं **अनन्य-धर्म-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १७९॥

**साधना जब तईं, होत है तब तईं, दोऊ परमान का काज जामें।**
**आप स्वपद लयो, तिन जलांजलि दयो, अन्य नहिं चहत निजशुद्धता में॥**

ॐ ह्रीं **प्रमाण-विमुक्त-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १८०॥

(**तोमर :** तू जाग रे चेतन प्राणी .....)

**दृग-ज्ञान पूरण चन्द, अकलंक ज्योत अमन्द।**
**निरद्वंद ब्रह्मस्वरूप, नित पूजहूँ चिद्रूप॥**

ॐ ह्रीं **ब्रह्म-स्वरूप-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १८१॥

**सब ज्ञानमय परिणाम, वर्णादि को नहिं काम।**
**निरद्वंद ब्रह्मस्वरूप, नित पूजहूँ चिद्रूप॥**

ॐ ह्रीं **ब्रह्म-गुण-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १८२॥

**निज चेतना गुणधार, बिन-रूप हो अविकार।**
**निरद्वंद ब्रह्मस्वरूप, नित पूजहूँ चिद्रूप॥**

ॐ ह्रीं **ब्रह्म-चैतन्य-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १८३॥

(**सुन्दरी :** जय ज्ञान मात्र ज्ञायक स्वरूप .....)

**अन्य रूप सु अन्य रहै सदा, पर-निमित्त विभाव न हो कदा।**
**कहत हैं मुनि शुद्ध सुभाव येह, नमूँ सिद्ध सदा तिन पाय तेह॥**

ॐ ह्रीं **शुद्ध-स्वभाव-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १८४॥

**पर परिणामन सों नहिं मिलत हैं, निज परिणामन सों नहिं चलत हैं।**
**पारिणामी शुद्धस्वरूप येह, नमूँ सिद्ध सदा तिन पाय तेह॥**[१]

ॐ ह्रीं **शुद्ध-परिणामिक-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १८५॥

**वस्तुता व्यवहार नहीं ग्रहै, उपस्वरूप असत्यारथ कहै।**
**शुद्धरूप न ताकरि साध्य हो, निर्विकल्प समाधि अराध्य हो॥**

ॐ ह्रीं **अशुद्ध-रहित-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १८६॥

१. **शुद्ध परिणामी तुम पद नमूं, नमत तुम पद सब अघ दमूं** - जयपुर हस्तलिखित प्रति



**द्रव्य-पर्यायार्थिक नय दोऊ, स्वानुभव में विकलप नहिं कोऊ।**
**सिद्ध शुद्धाशुद्ध अतीत हो, नमत तुम निज पद परतीत हो॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धाशुद्ध-रहित-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १८७॥

(**चौपाई / बेसरी :** पंच परम परमेष्ठी भगवन् .....)

**क्षय-उपशम अवलोकन टारो, निज गुण क्षायक रूप उघारो।**
**युगपत सकल चराचर देखा, ध्यावत हूँ मन हर्ष विशेखा॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-दृक्-स्वरूप-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १८८॥

**जब पूरण अवलोकन पायो, तब पूरा आनन्द उपायो।**
**अविनाभाव स्वयं पद देखा, ध्यावत हूँ मन हर्ष विशेखा॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-दृगानन्द-स्वभाव-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १८९॥

**नाशपूर्वक हो उतपादा, सत् लक्षण परिणति मरजादा।**
**क्षय-उपशम तन क्षायक पेखा, ध्यावत हूँ मन हर्ष विशेखा॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-दृगुत्पादक-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १९०॥

**नित्य रूप निज चित पद माहीं, अन्य रूप पलटन को नाहीं।**
**द्रव्यदृष्टि में यह गुण देखा, ध्यावत हूँ मन हर्ष विशेखा॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-ध्रुव-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १९१॥

**कर्म नाश जो स्व पद पावै, रंच मात्र फिर अन्त न आवै।**
**यह द्रव्य-गुण तुममें देखा, ध्यावत हूँ मन हर्ष विशेखा॥**

ॐ ह्रीं **अव्यय-भाव-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १९२॥

**पर नहिं व्यापै तुम पद माहीं, पर में रमण भाव तुम नाहीं।**
**निज कर निज में निजगुण देखा, ध्यावत हूँ मन हर्ष विशेखा॥**

ॐ ही **अनन्त-निलय-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १९३॥

(**शंखनारी :** नरेन्द्रं फणेन्द्रं सुरेन्द्रं अधीसं .....)

**अनन्ताभिधानो, गुणाकार जानो।**
**धरो आप सोई, नमूँ मान खोई॥**

ॐ ह्रीं **अनन्ताकार-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १९४॥

**अनन्ता स्वभावा, विशेषन उपावा।**
**धरो आप सोई, नमूँ मान खोई॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-स्वभाव-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ १९५॥

**बिनाकार रूपा, यह चिन्मयस्वरूपा।**
**धरो आप सोई, नमूँ मान खोई॥**
ॐ ह्रीं चिन्मय-स्वरूप-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ १९६॥

**सदा चेतना मैं, न हो अन्य तामैं।**
**धरो आप सोई, नमूँ मान खोई॥**
ॐ ह्रीं चिद्रूप-स्वरूप-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ १९७॥

(**दोहा :** चिदानन्द स्वातम रसी .....)

**जे कछु भाव विशेष हैं, सम चिद्रूपी धर्म।**
**असाधारण पूरण भरो, नमत नशें सब कर्म॥**
ॐ ह्रीं चिद्रूप-धर्म-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ १९८॥

**परकृत व्याधि विनाशि कै, स्व अनुभव की प्राप्ति।**
**भई, नमूँ तिनको लहूँ, यह जगवास समाप्ति॥**
ॐ ह्रीं स्वात्मोपलब्धि-रत-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ १९९॥

**निरावरण निज ज्ञान कर, निज अनुभव की डोर।**
**गहो लहो थिरता रहो, रमण ठौर नहिं और॥**
ॐ ह्रीं स्वानुभूति-रत-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २००॥

**सर्वोत्तम लौकीक रस, सुधा-कुरस लख त्याग।**
**निज पद परमामृत रसिक, नमूँ चरण बड़भाग॥**
ॐ ह्रीं परमामृत-रत-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २०१॥

**विषयामृत विषसम अरुच, अरस अशुभ असुहान।**
**जान निजानन्द परम रस, तुष्ट सिद्ध भगवान॥**
ॐ ह्रीं परमामृत-तुष्ट-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २०२॥

**शंकातीत अतीत सों, धरै प्रीति निज मांह।**
**अमल हिये संतन प्रिये, परम प्रीत नमि ताह॥**
ॐ ह्रीं परम-प्रीति-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २०३॥

**अक्षय आनन्द भाव युत, निज हितकार मनोग।**
**'सज्जन-चित-वल्लभ' परम, दुर्जन दुर्लभ योग॥**
ॐ ह्रीं परम-वल्लभ-भाव-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २०४॥



**शब्द-गन्ध-रस-फरस नहिं, नहीं वरण आकार।**
**बुद्ध गहै नहिं पार तुम, गुप्त भाव निरधार॥**
ॐ ह्रीं अव्यक्त-भाव-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २०५॥

**सर्व दर्व सों भिन्न है, नहिं अभिन्न तिहुँ काल।**
**नमूँ सदा परकाश धर, एक हि रूप विशाल॥**
ॐ ह्रीं एकत्व-स्वरूप-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २०६॥

**सर्व दर्व सों भिन्नता, निज गुण निज में वास।**
**नमूँ अखण्ड परमातमा, सदा सुगुण की रास॥**
ॐ ह्रीं एकत्व-गुण-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २०७॥

**सर्व दर्व-परिणाम सों, मिलें न निज परिणाम।**
**नमूँ निजानन्द ज्योत-घन, नित्य उदय अभिराम॥**
ॐ ह्रीं एकत्व-भाव-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २०८॥

(**चौपइ :** दरश-विशुद्धि धरै जो कोई .....)

**पर-संयोग तथा समवाय, यह संवाद नहीं द्वय भाय।**
**नित्य अभेद एकता धरो, प्रणमूँ द्वैत भाव हम हरो॥**
ॐ ह्रीं द्वैत-भाव-विनाशक-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २०९॥

**पूरब पर्याय नासियो सोय, जाको फिर उतपाद न होय।**
**अव्यय अविनाशी अभिराम, शाश्वत रूप नमूँ सुखधाम॥**
ॐ ह्रीं शाश्वत-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २१०॥

**निर्विकार निर्मल निजभाव, नित्य प्रकाश अमन्द प्रभाव।**
**अव्यय अविनाशी अभिराम, शाश्वत रूप नमूँ सुखधाम॥**
ॐ ह्रीं शाश्वत-प्रकाश-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २११॥

**निरावरण रवि बिम्ब समान, नित्य उद्योत धरो निज ज्ञान।**
**अव्यय अविनाशी अभिराम, शाश्वत रूप नमूँ सुखधाम॥**
ॐ ह्रीं शाश्वतोद्योत-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २१२॥

**ज्ञानानन्द सुधाकर चन्द, सोहत पूरण ज्योत अमन्द।**
**अव्यय अविनाशी अभिराम, शाश्वत रूप नमूँ सुखधाम॥**
ॐ ह्रीं शाश्वतामृतचन्द्र-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २१३॥

**ज्ञानानन्द सुधारस धार, निरविच्छेद अभेद अपार।**
**अव्यय अविनाशी अभिराम, शाश्वत रूप नमूँ सुखधाम॥**
ॐ ह्रीं शाश्वतामृत-मूर्ति-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २१४॥

(**पद्धरि :** मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ .....)
**मन-इन्द्रिय ज्ञान न पाय जेह, है सूक्षम नाम स्वरूप तेह।**
**मनपर्यय हूँ जाकूं न पाय, सो सूक्षम परम सुगुण नमाय॥**
ॐ ह्रीं परम-सूक्ष्म-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २१५॥
**बहु राशि नभोदर में समाय, प्रत्यक्ष स्थूल ताको न पाय।**
**इक सों इक को बाधा न होय, सूक्षम अविनाशी नमूँ सोय॥**
ॐ ह्रीं सूक्ष्मावकाश-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २१६॥
**नभ गुणध्वनि हो यह जोग नाह, हो जिसो गुणी गुण तिसो ताह।**
**सो राजत हो सूक्षम स्वरूप, नमूँ हूँ तुम सूक्षम गुण अनूप॥**
ॐ ह्रीं सूक्ष्म-गुण-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २१७॥
**तुम त्याग द्वैतता को प्रसंग, पायो एकाकी छबि अभंग।**
**जाको कबहूँ अनुभव न होय, नमूँ परम रूप है गुप्त सोय॥**
ॐ ह्रीं परम-स्वरूप-गुप्त-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २१८॥

(**त्रोटक :** इन्द्रिय के भोग मधुर विष सम .....)
**सर्वार्थ विमानिक देव तथा, मन-इन्द्रिय भोगन शक्त यथा।**
**इनके सुख को इक सीम सही, तुम आनन्द को पर अन्त नहीं॥**
ॐ ह्रीं निरवधि-सुख-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २१९॥
**जगजीवनि को नहिं भाग्य यहै, निजशक्ति उदय कर व्यक्ति लहै।**
**तुम पूरण क्षायक भाव लहो, इम अन्त बिना गुण-राश गहो॥**
ॐ ह्रीं निरवधि-गुण-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २२०॥
**भवि जीव सदा यह रीत धरै, नित नूतन पर्य-विभाव वरै।**
**तिस कारण को सब व्याधि दहो, तुम पाइ सुरूप जु अन्त न हो॥**
ॐ ह्रीं निरवधि-स्वरूप-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २२१॥
**अवधि-मनपर्य सुज्ञान महा, दर्वादि विषैं मरजाद लहा।**
**तुम ताहि उलंघ स्वभावमई, निज बोध लहो जिस अन्त नहीं॥**
ॐ ह्रीं अतुल-ज्ञान-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २२२॥



**तिहुँ काल तिहूँ जग के सुख को, कर बार अनंत जो पावत को।**
**तुम एक समय सुख की समता, नहिं पाय नमूँ मन आनंदता॥**
ॐ ह्रीं अतुल-सुख-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २२३॥

(**नाराच:** पार्श्वनाथ देव सेव .....)
**सर्व जीव राशि के सुभाव आप जान हो।**
**आपके सुभाव अंश और कौ ज्ञान हो॥**
**सो विशुद्ध भाव पाय जास कौ न अन्त है।**
**राज हो सदीव देव चरणदास 'सन्त' है॥**
ॐ ह्रीं अतुल-भाव-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २२४॥
**आपकी गुणौघ-वेलि फैलि है अलोक लों।**
**शेष से भ्रमाय पत्र की न पाय नोक लों॥**
**सो विशुद्ध भाव पाय जास कौ न अन्त है।**
**राज हो सदीव देव चरणदास 'सन्त' है॥**
ॐ ह्रीं अतुल-गुण-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २२५॥
**सूर्य को प्रकाश एक देश वस्तु भास ही।**
**आपको सुज्ञान-भान सर्वथा प्रकाश ही॥**
**सो विशुद्ध भाव पाय जास कौ न अन्त है।**
**राज हो सदीव देव चरणदास 'सन्त' है॥**
ॐ ह्रीं अतुल-प्रकाश-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २२६॥
**तास रूप को गहो न फेरि जास नाश हो।**
**स्वात्म-वास में विलास, आस-त्रास नाश हो॥**
**सो विशुद्ध भाव पाय जास कौ न अन्त है।**
**राज हो सदीव देव चरणदास 'सन्त' है॥**
ॐ ह्रीं स्वात्म-वास-जिन-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २२७॥

(**सोरठा :** समयसार है सार .....)
**मोहादिक रिपु जीत, निज-गुण-निधि सहजे लहो।**
**विलसो सदा पुनीत, अचल रूप वंदूँ सदा॥**
ॐ ह्रीं अचल-गुण-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २२८॥

**उत्तम क्षायक भाव, क्षय-उपशम नश्वर विनश।**
**पायो सहज सुभाव, अचल रूप वन्दों सदा॥**
ॐ ह्रीं अचल-स्वभाव-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २२९॥
**अथिर रूप संसार, त्याग सुथिर निज रूप गहै।**
**रहो सदा अविकार, अचल रूप वन्दों सदा॥**
ॐ ह्रीं अचल-स्वरुप-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं।। २३०।।

(**मोतियादाम :** अहो! चैतन्य आनन्दमय, सहज जीवन .....)

**निराश्रित स्वाश्रित आनन्दधाम, परै पर सों न परै कछु काम।**
**अबिंदु अबंधु अबंध अमंद, करूँ पद-वंदु रहूँ सुख-वृंद॥**
ॐ ह्रीं निरालम्ब-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २३१॥
**अराग अदोष अशोक अभोग, अनिष्ट वियोग न इष्ट संयोग[१]।**
**अबिंदु अबंधु अबंध अमंद, करूँ पद-वंदु रहूँ सुख-वृंद॥**
ॐ ह्रीं आलम्ब-रहित-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २३२॥
**अजीव न जीव[२] न धर्म अधर्म, न काल अकाश लहै तिस धर्म।**
**अबिंदु अबंधु अबंध अमंद, करूँ पद-वंदु रहूँ सुख-वृंद॥**
ॐ ह्रीं निर्लेप-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २३३॥
**अवर्ण अकर्ण अरूप अकाय, अयोग असंयमता अकषाय।**
**अबिंदु अबंधु अबंध अमंद, करूँ पद-वंदु रहूँ सुख-वृंद॥**
ॐ ह्रीं निष्कषाय-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २३४॥
**न हो पर सों रुष-राग विभाव, निजातम में अब लीन स्वभाव।**
**अबिंदु अबंधु अबंध अमंद, करूँ पद-वंदु रहूँ सुख-वृंद॥**
ॐ ह्रीं आत्म-रत-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २३५॥

(**दोहा :** चिन्मय हो चिद्रूप प्रभु .....)

**निज स्वरूप में लीनता, ज्यों जल पुतली खार।**
**गुप्त स्वरूप नमूँ सदा, लहूँ भवार्णव पार॥**
ॐ ह्रीं स्वरुप-गुप्त-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २३६॥
**जो है सो है और नहीं, कछु निश्चय-व्यवहार।**
**शुद्ध द्रव्य परमात्मा, नमूँ शुद्धता धार॥**

१. नकुड़ प्रति २. अन्य जीव



ॐ ह्रीं शुद्ध-द्रव्य-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २३७॥
**पूर्वोत्तर सन्तति तनी, भव-व्यवछेद कराय।**
**असंसार पद को नमूँ, यह भव-वास नशाय॥**
ॐ ह्री असंसार-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २३८॥

(**नागरूपिणी / अर्धनाराच :** जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र ....)

**हरो सहाय कर्ण को, सुभोगता विवर्ण[१] को।**
**निजातमीक एक ही, लहो अनंद तास ही॥**
ॐ ह्रीं स्वानन्द-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २३९॥
**न हो विभावता कदा, स्वभाव में सुखी सदा।**
**निजातमीक एक ही, लहो अनंद तास ही॥**
ॐ ह्रीं स्वानन्द-स्वभाव-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २४०॥
**अछेद रूप सर्वथा, उपाधि की नहीं व्यथा।**
**निजातमीक एक ही, लहो अनंद तास ही॥**
ॐ ह्रीं स्वानन्द-स्वरुप-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २४१॥
**दुभेदता न वेदहीं, स्वचेतना अवेद ही।**
**निजातमीक एक ही, लहो अनंद तास ही॥**
ॐ ह्रीं स्वानन्द-गुण-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २४२॥
**न अन्य की प्रवाह है, अचाह है न चाह है।**
**निजातमीक एक ही, लहो अनंद तास ही॥**
ॐ ह्रीं स्वानन्द-सन्तोष-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २४३॥

(**सोरठा :** भुक्ति मुक्ति दातार .....)

**रागादिक परिणाम, हैं कारण संसार के।**
**नाश लियो सुखधाम, नमत सदा भव भय हरूँ॥**
ॐ ह्रीं शुद्धभाव-पर्याय-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २४४॥
**उदइक भाव विनाश, प्रगट कियो निज अर्थ[२] को।**
**स्वातम गुण परकाश, नमत सदा भव भय हरूँ॥**
ॐ ह्रीं स्वतन्त्र-धर्म-सिद्धेभ्यः नमः, अर्घ्यं॥ २४५॥

१. वर्ण रहित २. नकुड़ प्रति

**निजगुण पर्ययरूप, स्वयं-सिद्ध परमात्मा।**
**राजत हैं शिवभूप, नमत सदा भव भय हरूँ॥**
ॐ ह्रीं **आत्म-स्वभाव-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ २४६॥

**विमल विशद निज ज्ञान, है स्वभाव परिणति मई।**
**राजत है सुख-खान, नमत सदा भव भय हरूँ॥**
ॐ ह्रीं **परमचित्-परिणाम-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ २४७॥

**दर्श-ज्ञानमय धर्म, चेतन धर्मी प्रगट हो।**
**भेदाभेद सुपरम, नमत सदा भव भय हरूँ॥**
ॐ ह्रीं **चिद्रूप-धर्म-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ २४८॥

**दर्श-ज्ञान गुण सार, जीवभूत परमातमा।**
**राजत सब परकार, नमत सदा भव भय हरूँ॥**
ॐ ह्रीं **चिद्रूप-गुण-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ २४९॥

**अष्ट कर्म-मल जार, दीप्त रूप निज पद लहो।**
**स्वच्छ हेम उनहार, नमत सदा भव भय हरूँ॥**
ॐ ह्रीं **परम-स्नातक-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ २५०॥

**रागादिक मल सोध, दोऊ विधि विवधान[१] बिन।**
**लहो शुद्ध प्रतिबोध, नमत सदा भव भय हरूँ॥**
ॐ ह्रीं **स्नातक-धर्म-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ २५१॥

**विधि-आवरण विनाश, दर्श-ज्ञान परिपूर्ण लह।**
**लोकालोक प्रकाश, नमत सदा भव भय हरूँ॥**
ॐ ह्रीं **सर्व-विलोकन-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ २५२॥

**निज कर निज में वास, सर्व लोक सों भिन्नता।**
**पायो शिव-सुख रास, नमत सदा भव भय हरूँ॥**
ॐ ह्रीं **लोकाग्र-स्थित-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ २५३॥

**ज्ञान-भान की जोत, व्यापक लोकालोक में।**
**देशन बिन उद्योत[२], नमत सदा भव भय हरूँ॥**
ॐ ह्रीं **लोकालोक-व्यापक-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ २५४॥

१. व्यवधान / बाधा २. नकुड़ प्रति



**जे कछु धरत विशेष, सब ही सब आनंदमय।**
**लेश न भाव कलेश, नमूँ सदा भव भय हरूँ॥**
ॐ ह्रीं **आनन्द-निधान-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ २५५॥

**जिस आनंद को पार, पावत नहीं यह जगत जन।**
**सो पायो हितकार, नमत सदा भव भय हरूँ॥**
ॐ ह्रीं **आनन्द-पूर्ण-सिद्धेभ्यः** नमः, अर्घ्यं॥ २५६॥

*(दोहा : आओ रे! आओ रे! ज्ञानानन्द की .....)*

**इत्यादिक आनंद गुण, धारत सिद्ध अनंत।**
**तिन पद आठों दरब सों, पूजत हैं नित 'संत'॥**[१]
ॐ ह्रीं **षट्पंचाशदधिक-द्विशत-गुण-युक्त-सिद्धेभ्यः** महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ।। अथ जयमाला ।।

(दोहा : आयो आयो रे हमारो बड़ो भाग .....)

**थावर[२] शब्द विषय धरै, त्रस-थावर पर्याय।**
**यों न होय तो तुम सुगुण, हम किह विध वर्णाय॥**
**तिस पर जो कछु कहत हैं, केवल भक्ति उमगान।**
**बालक जल शशि बिंब को, चहत ग्रहण निज वान॥**

(**पद्धरि** : शुद्धात्मा का श्रद्धान होगा .....)

**जय पर-निमित्त व्यवहार त्याग, पायो निज शुद्ध स्वरूप भाग।**
**जय जग-पालन बिन जगतदेव, जय दयाभाव बिन शांत भेव[३]॥**
**पर सुख-दुख करण कुरीत टार, पर सुख-दुख कारण शक्ति धार।**
**पुनि पुनि नव नव नित जन्म रीत, बिन सर्व लोक व्यापी पुनीत॥**
**जय लीला रास विलास नाश, स्वाभाविक निजपद रमन वास।**
**शयनासन आदि क्रिया-कलाप, तज सुखी सदा शिवरूप आप॥**
**बिन काम-दाह नहीं नार-भोग, निरद्वन्द निजानंद रमन योग।**
**वरमाल आदि शृंगार रूप, बिन शुद्ध निरंजन पद अनूप॥**

१. यह दोहा नकुड़ प्रति में नहीं २. स्थूल / स्कन्धरूप शब्द ३. भेद / गुप्त / रहस्य

**जय धर्म भर्म-वन हन-कुठार, परकाश पुंज चिद्रूप सार।**
**उपकरण हरण दव सलिल धार, स्वशक्ति प्रभाव उदय अपार॥**

**नभ-सीम नहीं अरु होत होउ, नहिं काल अंत लहो अंत सोउ।**
**पर तुम गुणरास अनंत भाग, अक्षय विध राजत अवधि त्याग॥**

**आनंद जलधि धारा प्रवाह, विज्ञान-सुरी-मुख-द्रह अथाह।**
**निज शांति सुधारस परम खान, समभाव बीज उत्पत्ति थान॥**

**निज आत्मलीन विकलप विनाश, शुद्धोपयोग परिणत प्रकाश।**
**दृग-ज्ञान असाधारण स्वभाव, स्पर्श आदि पर-गुण अभाव॥**

**निज गुण-पर्यय समुदाय स्वामि, पायो अखण्ड पद परम धाम।**
**अव्यय अबाध पद स्वयंसिद्ध, उपलब्धि रूप धर्मी प्रसिद्ध॥**

**एकाग्ररूप चिन्ता-निरोध, जे ध्यावें पावें स्वयं बोध।**
**गुण मात्र 'संत' अनुराग रूप, यह भाव देहु तुम पद अनूप॥**

(दोहा)

**सिद्ध सुगुण सुमरण महा, मन्त्रराज है सार।**
**सर्व सिद्ध दातार है, सर्व विघ्न हरतार॥**

ॐ ह्रीं अर्हं **षड्पंचाशदधिक-द्विशत-दलोपरि-स्थित-सिद्धेभ्यो** नमः पूर्णार्घ्यं नि.।

**तीन लोक चूड़ामणी, सदा रहो जयवन्त।**
**विघनहरण मंगलकरण, तुम्हें नमें नित 'संत'॥**

*( इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत् )*

***'ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा'***

*- इस शान्ति-मन्त्र की प्रतिदिन सामूहिक एक जाप करें।*

***।। इति षष्ठ पूजा सम्पूर्णम् ।।***

*****



# ।। अथ सप्तम पूजन ।।

(पाँच सौ बारह गुण सहित)

**।। स्थापना ।।**

(छप्पय : तर्ज - प्रिय चैतन्यकुमार सदा .....)

**ऊरध अधो सु रेफ, सबिंदु हकार विराजे।**
**अकारादि स्वर-लिप्त, कर्णिका अन्त सु छाजे॥**
**वर्गन-पूरित वसु-दल-अम्बुज तत्त्व-संधि धर।**
**अग्र भाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर॥**
**पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत ही अरि नाग को।**
**ह्वै केहर सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो।।**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **द्वादशाधिकपंचशत-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः** ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **द्वादशाधिकपंचशत-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः** ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **द्वादशाधिकपंचशत-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः** ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(**दोहा :** इह विधि ठाड़ों होय के .....)

**सूक्ष्मादि गुण सहित हैं, कर्म रहित निररोग।**
**सिद्धचक्र सो थापहुँ, मिटै उपद्रव योग॥**

*( इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् )*

## अथाष्टकं

(**बारह मासा :** इन्द्रिय के भोग मधुर विष सम .....)

**सुर मणि-कुम्भ क्षीर भर धारत, मुनिजन शुद्ध प्रवाह बहावहिं।**
**हम दोऊ विध लायक नाहीं, तदपि करहु कृपा पावें तेह भावहिं॥**
**शक्ति सार सामान्य नीर सों, पूजूँ हूँ हे शिवतिय-स्वामी!।**
**द्वादश अधिक पंचशत संखित, नाम उचारत हूँ सुख-धामी॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **द्वादशाधिक-पंचशत-गुण-संयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं** निर्वपामीति स्वाहा।

**न तु कोउ चंदन न तु कोउ केशर, भेंट किये भव-पार भयो है।**
**केवल आप कृपा-दृग ही सों, यह अथाह दधि-पार लयो है॥**
**मैं इक रीत सनातन भक्तन, की लख चंदन भेंट धरामी।**
**द्वादश अधिक पंचशत संखित, नाम उचारत हूँ सुख-धामी॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **द्वादशाधिक-पंचशत-गुण-संयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो संसार-ताप-विनाशनाय चन्दनं** निर्वपामीति स्वाहा।

**इन्द्रादिक पद हू अनवस्थित, दीखत अन्तर रुचि न करै हैं।**
**केवल एक हि स्वच्छ अखण्डित, अक्षय पद की चाह धरै हैं॥**
**तातें अक्षत सों अनुरागी, हूँ सो तुम पद पूज करामी॥ द्वादश.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **द्वादशाधिक-पंचशत-गुण-संयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अक्षय-पद-प्राप्तये अक्षतं** निर्वपामीति स्वाहा।

**पुष्प-बाण ही सों मन्मथ जग-विजयी जग में नाम धरावै।**
**देखहु अद्भुत रीत भक्त की, तिस हि भेंट धर काम हनावै॥**
**शरणागत की चूक न देखी, तातैं पूज्य भए सिरनामी॥ द्वादश.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **द्वादशाधिक-पंचशत-गुण-संयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो काम-बाण-विध्वंसनाय पुष्पं** निर्वपामीति स्वाहा।

**हनत असाता पीर नहीं यह, भीर परै चरु भेंटन लायो।**
**भक्त अभिमान मेट हो स्वामी, यह भव-कारण भाव सतायो॥**
**मम उद्यम कर कहा आप ही, सौं एकाकी अर्थ लहामी॥ द्वादश.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **द्वादशाधिक-पंचशत-गुण-संयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

**पूरण ज्ञानानन्द ज्योति घन, विमल गुणातम शुद्ध स्वरूपी।**
**हो तुम पूज्य भये हम पूजक, पाय विवेक प्रकाश अनूपी॥**
**मोह अन्ध विनसो तिह कारण, दीपन सों अर्चन अभिरामी॥ द्वादश.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **द्वादशाधिक-पंचशत-गुण-संयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं** निर्वपामीति स्वाहा।



**धूप भरे उघरे प्रजरे मणि, हेम धरे तुम पद पर वारूँ।**
**बार-बार आवर्त जोर कर, धार-धार निज शीश न हारूँ॥**
**धूम्र धार सम तन रोमांचित, हर्ष सहित अष्टांग नमामी।**
**द्वादश अधिक पंचशत संखित, नाम उचारत हूँ सुख-धामी॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **द्वादशाधिक-पंचशत-गुण-संयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अष्ट-कर्म-दहनाय धूपं** निर्वपामीति स्वाहा।

**तुम हो वीतराग निज-पूजन-, वंदन-थुति परवाह नहीं है।**
**अरु अपने समभाव वहै कछु, पूजा-फल की चाह नहीं है॥**
**तौ भी यह फल पूजि फलद, अनिवार निजानन्द कर इच्छामी।**
**द्वादश अधिक पंचशत संखित, नाम उचारत हूँ सुख-धामी॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **द्वादशाधिक-पंचशत-गुण-संयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोक्ष-फल-प्राप्तये फलं** निर्वपामीति स्वाहा।

**तुमसे स्वामी के पद सेवत, यह विधि-दुष्ट-रंक कहा करहै।**
**ज्यों मयूरध्वनि सुनि अहि निजबिल, विलय जाय छिन विलम न धरहै॥**
**तातें तुम पद अर्घ उतारण, विरद उचारण करहुँ मुदामी॥ द्वादश.॥**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **द्वादशाधिक-पंचशत-गुण-संयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

(**गीता :** तर्ज - प्रभु पतित पावन मैं अपावन .....)

**निर्मल सलिल शुभवास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी।**
**शुभ पुष्प मधुकर नित रमें चरु, प्रचुर स्वाद सुविध घनी॥**
**वर दीपमाल उजाल धूपायन रसायन फल भले।**
**कर अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्म-दल सब दलमले॥ १॥**

**ते क्रमवर्त नशाय युगपत्, ज्ञान निर्मलरूप है।**
**दुख जन्म टार अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप है॥**
**कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अदूज शिवकमलापती।**
**मुनि ध्येय-सेय-अभेय चहुँ गुण गेह द्यो हम शुभमती॥ २॥**

ॐ ह्रीं **द्वादशाधिक-पंचशत-गुण-संयुक्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो सर्व-सुख-प्राप्तये महार्घ्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

## ।। अथ सिद्धों के पाँच सौ बारह गुण सम्बन्धी अर्घ्य ।।

अरहन्त परमेष्ठी के १०० अर्घ्य

(**अर्द्ध जोगीरासा :** बोलो ! जय हो जय हो जय .....)

**लोक-त्रय कर पूज्य प्रधाना, केवल ज्योत प्रकाशी।**
**भव्यन मन-तम-मोह-विनाशक, वंदूँ शिव-थल वासी॥**

ॐ ह्रीं **अर्हद्-द्योताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

**सुर-नर-मुनि-मन-कुमुदनि मोदन, पूरण चंद्र समाना।**
**हो अरिहंत जात जन्मोत्तम, वंदूँ श्री भगवाना॥**

ॐ ह्रीं **अर्हज्ञाताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

**केवल-दर्श-ज्ञान किरणावलि, मंडित तिहुँ जग-चंदा।**
**मिथ्यातप-हर जग आदिक कर, वंदूँ पद-अरविंदा॥**

ॐ ह्रीं **अर्हच्चिद्रूपाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

**घातिकर्म-रिपु-जार छार कर, स्व-चतुष्ट पद पायो।**
**निज स्वरूप चिद्रूप गुणातम, हम तिन पद शिर नायो॥**

ॐ ह्रीं **अर्हच्चिद्रूप-गुणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

**ज्ञानावरणी पटल उघारत, केवल भानु उगायो।**
**भव्यन को प्रतिबोध उघारे, बहुरि मुक्त पद पायो॥**

ॐ ह्रीं **अर्हज्ज्ञानाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

**धर्म अधर्म तास फल दोनों, देखो जिम कर-रेखा।**
**बतलायो परतीत विषय कर, यह गुण जिनमें देखा॥**

ॐ ह्रीं **अर्हद्-दर्शनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥

**मोह-महा-दृढ़-बंध उघारो, कर भिस[१]-तंतु समाना।**
**अतुल बली अरिहंत कहायो, पाय नमूँ शिवथाना॥**

ॐ ह्रीं **अर्हद्वीर्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ७॥

**युगपत् लोकालोक-विलोकन, हैं अनन्त दृगधारी।**
**गुप्तरूप शिव-मग दरसायो, तिन पद धोक हमारी॥**

ॐ ह्रीं **अर्हद्-दर्शन-गुणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ८॥

**घट-पटादि सब परकाशत जद, हो रवि-किरण प्रसारा।**
**तैसो ज्ञान-भान अर्हत् को, ज्ञेय अनंत उघारा॥**

१. नकुड़ प्रति - भिस = विष





ॐ ह्रीं **अर्हज्ज्ञान-गुणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९॥

**आसन-शयन पान-भोजन बिन, दीप्त देह अरिहंता।**
**ध्यानवान कर-तान हान-विधि, भए सिद्ध भगवंता॥**

ॐ ह्रीं **अर्हद्वीर्य-गुणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १०॥

**सप्त तत्त्व षट् द्रव्य भेद सब, जानत संशय खोई।**
**ता करि भव्य जीव संबोधे, नमूँ भये सिद्ध सोई॥**

ॐ ह्रीं **अर्हत्सम्यक्त्व-गुणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ११॥

**ध्यान-सलिल सों धोय लोभ-मल, शुद्ध निजातम कीनो।**
**परम शौच अरहंत स्वरूपी, पाय नमूँ शिव लीनो॥**

ॐ ह्रीं **अर्हत्-शौच-गुणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १२॥

**नय-प्रमाण श्रुतज्ञान-प्रकारा, द्वादशांग जिनवानी।**
**प्रगटायो प्रत्यक्ष ज्ञान तें, नमूँ भये शिव-थानी॥**

ॐ ह्रीं **अर्हद्-द्वादशांगाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १३॥

**मन-इन्द्रिय बिन सकल चराचर, जगपद कर प्रगटायो।**
**यह अरहंत-मती कहलायो, वंदूँ तिन शिव पायो॥**

ॐ ह्रीं **अर्हदाभिनिबोधकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १४॥

**अनुभव सम नहिं होत दिव्यध्वनि, ताको भाग अनंता।**
**जानो गणधर यह श्रुत-अवधी, पाय नमूँ अरहंता॥**

ॐ ह्रीं **अर्हत्-श्रुतावधि-गुणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १५॥

**सर्वावधि-निधि वृद्धि-प्रवाही, केवल-सागर मांही।**
**एक भयो अरहंत-अवधि यह, मुक्त भए नम ताही॥**

ॐ ह्रीं **अर्हदवधि-गुणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १६॥

**अति विशुद्धमय विपुलमती लह, हो पूर्वोक्त प्रकारा।**
**यह अरहंत पाय मनपर्यय, नमूँ भयो भव-पारा॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मनःपर्यय-भावाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १७॥

**मोह-मलिनता जग-जिय नाशै, केवलता गुण पावैं।**
**सर्व शुद्धता पाय नमत हैं, हम अरहंत कहावैं॥**

ॐ ह्रीं **अर्हत्-केवल-गुणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १८॥

**मोह-जनित तस रूप-विरूपी, तिस बिन केवलरूपा।**
**श्री अरहंत रूप सर्वोत्तम, वंदूँ हो शिव-भूपा॥**

ॐ ह्रीं **अर्हत्-केवल-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १९॥

**तास विरोधित कर्म जीत कै, केवल-दरशन पायो।**
**इस गुणसहित नमत तुम पद प्रति, भावसहित शिर नायो॥**

ॐ ह्रीं **अर्हत्केवल-दर्शनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २०॥

**निर आवरण करण बिन जाको, शरण हरण नहिं कोई।**
**केवलज्ञान पाय शिव पायो, पूजत हैं हम सोई॥**

ॐ ह्रीं **अर्हत्केवल-ज्ञानाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २१॥

**अगम अतीर भवोदधि उतरे, सहजहिं गोखुर मानो।**
**केवल-बलि अरहंत नमें हम, शिव-थल वास करानो॥**

ॐ ह्रीं **अर्हत्-केवल-वीर्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २२॥

**सब विधि अपने विघन-निवारण, औरन विघन-विडारी।**
**मंगलमय अरिहंत सर्वदा, नमूँ मुक्त पद धारी॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगलाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २३॥

**चक्षु आदि सब विघन-विदूरित, छायक मंगलकारी।**
**यह अरिहंत दर्श पायो मैं, नमूँ भये शिवधारी॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-दर्शनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २४॥

**निज-पर संशय आदि पाय बिन, निरावर्ण विकसानो।**
**मंगलमय अरिहंत ज्ञान है, वंदूँ शिव-सुख-सानो॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-ज्ञानाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २५॥

**परकृत जरा आदि संकट बिन, अतुल बली अरिहंता।**
**नमूँ सदा शिवनारी के संग, सुख सों केलि करंता॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-वीर्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २६॥

**पापरूप एकांत पक्ष बिन, सर्व तत्त्व प्रकाशी।**
**द्वादशांग अरिहंत कहो मैं, नमूँ भये शिववासी॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-द्वादशांगाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २७॥

**बिन प्रत्यक्ष अनुमान सबाधित, सुमतिरूप परमाणा।**
**मंगलमय अरिहन्त मती मैं, नमूँ देहु शिव थाना॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगलाभिनिबोधकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २८॥

**नय-विकल्प श्रुत-अंग पक्ष के, त्यागी हैं भगवन्ता।**
**ज्ञाता-दृष्टा-वीतराग, निष्पाप नमूँ अरिहन्ता॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-श्रुताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २९॥



**मंगलमय सर्वावधि जा कर, पावैं पद अरिहन्ता।**
**वंदूँ ज्ञान-प्रकाश नाश भव, शिव-थल वास करन्ता॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगलावधिज्ञानाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३०॥

**वर्धमान मनपर्य-ज्ञान कर, केवल-भानु उगायो।**
**भव्यन प्रति शुभ मार्ग बतायो, नमूँ सिद्ध पद पायो॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-मनःपर्यय-सिद्धाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३१॥

**जा बिन और अज्ञान सकल जग-कारण बंध-प्रधाना।**
**नमूँ पाय अरिहन्त मुक्त पद, मंगल केवलज्ञाना॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-केवलज्ञानाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३२॥

**निरावर्ण निरखेद निरन्तर, निराबाध मइ राजै।**
**केवलरूप नमूँ सब अघ-हर, श्री अरहन्त विराजै॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-केवल-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३३॥

**चक्षु आदि सब भेद-विघन-हर, क्षायक दर्शन पाया।**
**श्री अरहन्त नमूँ शिववासी, यह जग-पाप नशाया॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-केवलदर्शनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३४॥

**जग-मंगल सब विघन रूप हैं, इक केवल अरिहन्ता।**
**मंगलमय सब मंगलदायक, नमूँ कियो जग-अन्ता॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-केवलाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३५॥

**केवलरूप महा मंगलमय, परम शत्रु छयकारा।**
**सो अरहन्त सिद्धपद पायो, नमूँ पाय भव-पारा॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-केवलरूपाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३६॥

**शुद्धातम निजधर्म प्रकाशी, परमानन्द विराजै।**
**सो अरिहन्त परम मंगलमय, नमूँ शिवालय राजै॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-धर्माय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३७॥

**सब विभावमय विघन नाश कर, मंगल धर्म स्वरूपा।**
**सो अरिहन्त भये परमातम, नमूँ त्रिजोगन रूपा॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-धर्म-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३८॥

**सर्व जगत्-सम्बन्ध विघन नहिं, उत्तम मंगल सोई।**
**सो अरिहन्त भये शिववासी, पूजत शिव-सुख होई॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगलोत्तमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३९॥

**लोकातीत त्रिलोक-पूज्य जिन, लोकोत्तम गुण धारी।**
**लोक-शिखर सुखरूप विराजैं, तिन पद धोक हमारी॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४०॥

**लोकाश्रित गुण सब विभाव हैं, श्री जिनपद सों न्यारे।**
**तिनको त्याग भये शिव वंदूँ, काटो बंध हमारे॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-गुणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४१॥

**मिथ्या मति कर सहित ज्ञान, अज्ञान जगत् में सारा।**
**ता बिन ज्ञान अरहन्त कहो, लोकोत्तम पूज हमारा॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-ज्ञानाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४२॥

**छायक दरशन है अरहन्ता, और लोक में नाहीं।**
**सो अरहन्त भये शिव-वासी, लोकोत्तम सुखदायी॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-दर्शनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४३॥

**करम-बली ने सब जग बाँधो, ताहि हनो अरहन्ता।**
**यह अरहन्त वीर्य लोकोत्तम, पायो सिद्ध अनन्ता॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-वीर्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४४॥

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-द्वादशांगाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥[१]

**अक्षातीत ज्ञान लोकोत्तम, परमातम पद मूला।**
**सो अरहन्त नमूँ शिव-नायक, पाऊँ भवदधि-कूला॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तमाभिनिबोधकाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४५॥

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-श्रुत-ज्ञानाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥[२]

**परमावधि ज्ञान सौं छानी, केवलज्ञान प्रकाशी।**
**यह अवधि-अरहन्त नमूँ मैं, संशय-तम को नाशी॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तमावधि-ज्ञानाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४६॥

**जो अरहन्त धरै मनपर्यय, सो केवल के माहीं।**
**साक्षात् शिवरूप नमूँ मैं, और लोक में नाहीं॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-मनःपर्यय-ज्ञानाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४७॥

**तीन लोक में सार श्री अरिहन्त स्वयंभू ज्ञानी।**
**नमूँ सदा शिवरूप आप हैं, भविजन प्रति सुखदानी॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-केवलज्ञानाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४८॥

१-२. यहाँ प्रकरणानुसार अर्घ्य ४३ एवं ४५ के बाद द्वादशांग एवं श्रुतज्ञान-सम्बन्धी ऐसे दो अर्घ्य भी होना चाहिए। विशेष स्पष्टीकरण सम्पादकीय में किया गया है।



**सर्वोत्तम तिहुँ लोक-प्रकाशित, केवलज्ञान-सरूपी।**
**सो अरहन्त नमूँ शिव-नायक, सुखप्रद सार अनूपी॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-केवलज्ञान-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४९॥

**ज्ञान-तरंग अभंग वहै, लोकोत्तर धार अरूपी।**
**सो अरहन्त नमूँ शिव-नायक, सुखप्रद सार अनूपी॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-केवल-पर्यायाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ५०॥

**असाधारण गुण-पर्य सहित, केवलज्ञान-स्वरूपी।**
**सो अरहन्त नमूँ शिव-नायक, सुखप्रद सार अनूपी॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तमकेवल-द्रव्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ५१॥

**जग-जिय सर्व अशुद्ध कहो इक, केवल शुद्धस्वरूपी।**
**सो अरहन्त नमूँ शिव-नायक, सुखप्रद सार अनूपी॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-केवलाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५२॥

**विविध कुरूप सर्व जगवासी, केवल स्वयं सरूपी।**
**सो अरहन्त नमूँ शिव-नायक, सुखप्रद सार अनूपी॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-केवल-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ५३॥

**हीनाधिक धिक-धिक जग प्राणी, धन्य एक ध्रुवरूपी।**
**सो अरहन्त नमूँ शिव-नायक, सुखप्रद सार अनूपी॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-ध्रौव्य-भावाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५४॥

(**दोहा :** समयसार जिनदेव हैं .....)

**संसारिन के भाव सब, बन्ध हेत वरनाय।**
**मुक्तरूप अरहन्त के, भाव नमूँ सुखदाय॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-भावाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५५॥

**कबहुँ न होय विभावमय, सो थिरभाव जिनेश।**
**मुक्तरूप प्रणमूँ सदा, नाशे विघन विशेष॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-स्थिर-भावाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ५६॥

**जा सेवत बेवत सुसुख, सो सर्वोत्तम देव।**
**शिव-वासी नाशी त्रिजग-फासी नमहूँ एव॥**

ॐ ह्रीं **अर्हच्छरणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५७॥

**जिन ध्यायो तिन पाइयो, निश्चय सो सुखरास।**
**शरण-स्वरूपी जिन नमूँ, करैं सदा शिववास॥**

ॐ ह्रीं **अर्हच्छरण-रूपाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५८॥

(**पद्धरि** : मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ .....)

**स्वाभाविक गुण अरहंत गाय, जासों पूरण शिवसुख लहाय।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हद्गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५९॥

**बिन केवलज्ञान न मुक्त होय, पायो है श्री अरहन्त सोय।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हज्ज्ञान-शरणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६०॥

**प्रत्यक्ष देख सर्वज्ञदेव, भाख्यो है शिव-मारग असेस।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हद्दर्शन-शरणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६१॥

**संसार विषम बंधन उछेद, अरहन्त-वीर्य पायो अखेद।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हद्वीर्य-शरणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६२॥

**सब कुमत विगत मत जिन प्रतीत, हो जिसतें दे शिवसुख अभीत।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हद्-द्वादशांग-शरणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६३॥

**अनुमानादिक साधत विज्ञान, अरहन्त-मती प्रत्यक्ष जान।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हदभिनिबोध-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ६४॥

**जिनभाषित श्रुत सुन भव्यजीव, पायो शिव अविनाशी सदीव।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हत्-श्रुत-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ६५॥

**प्रतिपक्षी सब जीते कषाय, पायो अवधि शिवसुख कराय।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हदवधि-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ६६॥

**मुनि लहैं गहैं परिणाम श्वेत, जिन मनपर्यय शिववास देत।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हन्मनःपर्यय-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ६७॥



**आवरण रहित प्रत्यक्ष ज्ञान, शिवरूप केवली जिन सुजान।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हत्केवल-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ६८॥

**मुनि केवलज्ञानी जिन अराध, पावैं निश्चय शिवसुख अबाध।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हत्केवल-धर्म-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ६९॥

**शिवसुखदायक निज आत्मज्ञान, सो केवल पावैं जिन महान।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हत्केवल-शरण-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ७०॥

**यह केवल गुण आतम स्वभाव,अरहंतन प्रति शिवसुख उपाव।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हत्केवल-गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ७१॥

**संसार रूप सब विघन टार, मंगल गुण श्री जिन मुक्त कार।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ७२॥

**क्षय-उपशम ज्ञानी विघनरूप, ता बिन जिनज्ञानी शिव-स्वरूप।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-ज्ञान-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ७३॥

**अरहंत दर्श मंगल स्वरूप, तासों दरसै शिवसुख अनूप।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-दर्शन-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ७४॥

**अरहंत बोध है मंगलीक, शिव-मारग प्रति वरते सुलीक।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-बोध-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ७५॥

**निज ज्ञानानंद प्रवाह धार, वरते अखण्ड अव्यय अपार।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हन्मंगल-केवल-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ७६॥

**जा बिन तिहुँ लोक न और ठाम, भवसिंधु तरण तारण प्रणाम।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**
ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ७७॥

**स्वाभाविक भव्यन प्रति दयाल, विभछेद करण संसार-जाल।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ७८॥

**तुम बिन समरथ तिहुँ लोक मांह, भवसिंधु उतारन और नांह।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-वीर्य-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ७९॥

**बिन परिश्रम तारण-तरण होय, लोकोत्तम अद्भुत शक्ति सोय।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-वीर्यगुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ८०॥

**अप्रसिद्ध कुनय अल्पज्ञ भास, ताको विनाश शिवमग-प्रकाश।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-द्वादशांग-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ८१॥

**सब कुनय कुपक्ष कुसाध्य नाश, सत्यारथ मत कारण प्रकाश।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तमाभिनिबोध-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ८२॥

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-श्रुत-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥[१]

**मिथ्यात प्रकृति अवधि विनाश, लोकोत्तम अवधी को प्रकाश।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तमावधि-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ८३॥

**जा मनपर्यय शिवमग लहाय, लोकोत्तम श्री गुरु सो कहाय।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-मनःपर्यय-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ८४॥

**आवर्णातीत प्रत्यक्ष ज्ञान, है सेवनीक जग में प्रधान।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-केवल-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ८५॥

**हो बाह्य विभव सुरकृत अनूप, अन्तर लोकोत्तम ज्ञानरूप।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**

ॐ ह्रीं **अर्हल्लोकोत्तम-विभूति-प्रधान-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ८६॥

१. यहाँ प्रकरणानुसार अर्घ्य ८२ के बाद श्रुतज्ञान-सम्बन्धी अर्घ्य रखा गया है।



**रत्नत्रय निमित मिलो अबाध, पायो निज आनंद धर्म साध।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**

ॐ ह्रीं **अर्हद्-विभूति-धर्म-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ८७॥

**सुख-ज्ञान-वीर्य-दर्शन सुभाव, पायो कर सब परकृत अभाव।**
**हम शरण गही मन-वचन-काय, नित नमैं संत आनंद पाय॥**

ॐ ह्रीं **अर्हदनन्त-चतुष्टयाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ८८॥

(**अडिल्ल :** आत्मा हूँ आत्मा हूँ आत्मा .....)

**दर्श ज्ञान सुख बल निज गुण ये चार हैं,**
**आतमीक परधान विशेष अपार हैं।**
**इनही सों हैं पूज्य सिद्ध परमेश्वरा,**
**हम हू यह गुण पांय नमन यातैं करा॥**

ॐ ह्रीं **अर्हदनन्त-गुण-चतुष्टयाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ८९॥

**क्षयोपशम सम्बाधित ज्ञानकला हरी,**
**पूरण छायक स्वयंबुध श्री जिनवरी।**
**इनही सों हैं पूज्य सिद्ध परमेश्वरा,**
**हम हू यह गुण पांय नमन यातैं करा॥**

ॐ ह्रीं **अर्हन्निज-ज्ञान-स्वयंभुवे** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ९०॥

**जनमत ही दश अतिशय शासन में कही,**
**स्वयं शक्ति भगवान आप तिनको लही।**
**इनही सों हैं पूज्य सिद्ध परमेश्वरा,**
**हम हू यह गुण पांय नमन यातैं करा॥**

ॐ ह्रीं **अर्हद्दशातिशय-स्वयंभुवे** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ९१॥

**दश अतिशय ह्वै घातिकर्म को क्षय करैं,**
**महा विभव को पाय मोक्ष-नारी वरैं।**
**इनही सों हैं पूज्य सिद्ध परमेश्वरा,**
**हम हू यह गुण पांय नमन यातैं करा॥**

ॐ ह्रीं **अर्हद्-घातिक्षय-दशातिशयाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ९२॥

**केवल विभव उपाय प्रभु जिनपद लियो,**
**चौदह अतिशय देवन कर सेवन कियो।**

**इनही सों हैं पूज्य सिद्ध परमेश्वरा,**
**हम हू यह गुण पांय नमन यातैं करा॥**

ॐ ह्रीं **अर्हद्देवकृत-चतुर्दशातिशयाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ९३॥

**चौंतिस अतिशय जे पुराण वरणी महा,**
**मुक्त समाज अनूपम श्रीगुरु ने कहा।**
**इनही सों हैं पूज्य सिद्ध परमेश्वरा,**
**हम हू यह गुण पांय नमन यातैं करा॥**

ॐ ह्रीं **अर्हद्यतुस्त्रिंशदतिशय-विराजमानाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ९४॥

(**डालर/बेसरी :** प्रथम सुदर्शन मेरु विराजे .....)

**लोकालोक अणु सम जानो, ज्ञानानंत सुगुण यह मानो।**
**सो अर्हंत सिद्धपद पाया, भाव सहित हम शीश नवाया॥**

ॐ ह्रीं **अर्हज्ज्ञानानन्द-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ९५॥

**समरस सुस्थिर भाव उघारा, युगपत् लोकालोक निहारा॥ सो.॥**

ॐ ह्रीं **अर्हद्-ध्यानानन्त-ध्येयाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ९६॥

**इक इक गुण का भाव अनंता, पर्यरूप सोहै अरहंता॥ सो.॥**

ॐ ह्रीं **अर्हदनन्त-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ९७॥

**उत्तर गुण सब लख चौरासी, पूरण चारित भेद परकासी॥ सो.॥**

ॐ ह्रीं **अर्हत्तपोऽनन्त-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ९८॥

**आतम शक्ति जास कर छीनी, तास नाश प्रभुताई लीनी॥ सो.॥**

ॐ ह्रीं **अर्हत्परमात्मने** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ९९॥

**निज गुण निज ही माहिं समाये, गणधरादि वरनन न कराये॥ सो.॥**

ॐ ह्रीं **अर्हद्-स्वरूप-गुप्तये** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १००॥

## सिद्ध परमेष्ठी के १०० अर्घ्य

(**दोधक :** निरखी निरखी मनहर मूरत .....)

**जो निज आतम साधु सुखाई, सो जगतेश्वर सिद्ध कहाई।**
**लोक-शिरोमणि हैं शिवस्वामी, भाव सहित तुमको प्रणमामी॥**

ॐ ह्रीं **सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १०१॥



**सर्व विरूप-विरुद्ध सरूपी, स्वातम रूप विशुद्ध अनूपी।**
**लोक-शिरोमणि हैं शिवस्वामी, भाव सहित तुमको प्रणमामी॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-स्वरूपेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १०२॥

**पराश्रित सर्व विभाव निवारा, स्वाश्रित सर्व अबाध अपारा।**
**लोक-शिरोमणि हैं शिवस्वामी, भाव सहित तुमको प्रणमामी॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-गुणेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १०३॥

**आकुलता सब ही विधि नाशी, ज्ञायक लोकालोक प्रकाशी।**
**लोक-शिरोमणि हैं शिवस्वामी, भाव सहित तुमको प्रणमामी॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-ज्ञानेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १०४॥

**जीव अजीव लखे अविचारा, हो नहिं अन्तर एक प्रकारा।**
**लोक-शिरोमणि हैं शिवस्वामी, भाव सहित तुमको प्रणमामी॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-दर्शनेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १०५॥

**अन्तर-बाहिर भेद उघारी, दर्श-विशुद्ध सदा सुखकारी।**
**लोक-शिरोमणि हैं शिवस्वामी, भाव सहित तुमको प्रणमामी॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-सम्यक्त्वेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १०६॥

**एक अणु-मल-कर्म लजावै, सो निर-अंजनता नहिं पावै।**
**लोक-शिरोमणि हैं शिवस्वामी, भाव सहित तुमको प्रणमामी॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-निरंजनेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १०७॥

(**अर्ध रोला :** प्रिय चैतन्य कुमार सदा परिणति में .....)

**चारों गति को भ्रमण, नाश कर थिरता पाई।**
**निज सरूप में लीन, अन्य सों मोह नशाई॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-अचलपद-प्राप्त-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १०८॥

**रत्नत्रय आराध साध, निज शिवपद पायो।**
**संख्या भेद उलंघि, शिवालय वास करायो॥**

ॐ ह्रीं **संख्यात-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १०९॥

**असंख्यात मरजाद, एक ताहू सो बीते।**
**विजय लक्ष्मीनाथ, महाबलि सब विध जीते॥**

ॐ ह्रीं **असंख्यात-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ११०॥

**काल-मर्याद अनादि-आदि, सोई विधि जारी।**
**भए अनन्त दिगम्बर, साधु जे शिवपद धारी॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ११११॥

**पुष्करार्द्ध सागर लों, जे जल-थान बखानो।**
**देव सहाय उपाय, उर्ध्वगति गमन करानो॥**

ॐ ह्रीं **जल-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १११२॥

**वन गिर नगर गुफादि, सर्व थल सों शिव पाई।**
**सिद्धक्षेत्र सब ठौर, बखानत श्री जिनराई॥**

ॐ ह्रीं **स्थल-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ११३॥

**नभ ही में जिन शुक्लध्यान-बल कर्म नाश किय।**
**आयु पूर्णवश ततछिन ही, शिववास जाय लिय॥**

ॐ ह्रीं **गगन-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ११४॥

**आयु-स्थिति सम अन्य, कर्म कारण परदेशा।**
**परसै पूरण लोक, आत्म केवली जिनेशा॥**

ॐ ह्रीं **समुद्घात-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ११५॥

**केवलि जिन बिन समुद्घात, शिववास लियो है।**
**स्वतः स्वभाव समान, अघाती कर्म कियो है॥**

ॐ ह्रीं **असमुद्घात-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ११६॥

(**उल्लाला :** जिस देश जिस वेश में .....)

**बिन विशेष अतिशय सहित, सामान्य केवली नाम है।**
**सिद्ध भये तिहुँ योग तैं, तिनके पद परणाम है॥**

ॐ ह्रीं **साधारण-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ११७॥

**त्रिभुवन में नहिं पावतो, जो जिन-गुण-अभिराम हैं।**
**सिद्ध भये तिहुँ योग तैं, तिनके पद परणाम है॥**

ॐ ह्रीं **असाधारण-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ११८॥

**गर्भ कल्याणक आदि युत, तीर्थंकर सुखधाम हैं।**
**सिद्ध भये तिहुँ योग तैं, तिनके पद परणाम है॥**

ॐ ह्रीं **तीर्थंकर-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ११९॥

**तीर्थंकर के समय में, केवलि-जिन-अभिराम हैं।**
**सिद्ध भये तिहुँ योग तैं, तिनके पद परणाम है॥**



ॐ ह्रीं **तीर्थंकरेतर-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १२०॥

**पंच शतक पच्चीस पुनि, धनुष काय अभिराम हैं।**
**सिद्ध भये तिहुँ योग तैं, तिनके पद परणाम है॥**

ॐ ह्रीं **उत्कृष्टावगाहन-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १२१॥

**आदि-अन्त अन्तर विषैं, मध्यवगाहन नाम हैं।**
**सिद्ध भये तिहुँ योग तैं, तिनके पद परणाम है॥**

ॐ ह्रीं **मध्यमावगाहन-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १२२॥

**तीन अर्ध तन केवली, हस्त-प्रमाण कहाय हैं।**
**सिद्ध भये तिहुँ योग तैं, तिनके पद परणाम है॥**

ॐ ह्रीं **जघन्यावगाहन-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १२३॥

**देव निमित्त मिलो जहाँ, तिर्यक लोक सु धाम है।**
**सिद्ध भये तिहुँ योग तैं, तिनके पद परणाम है॥**

ॐ ह्रीं **तिर्यक्-लोक-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १२४॥

**षट्विध परिणति काल की, तिस अपेक्ष यह नाम है।**
**सिद्ध भये तिहुँ योग तैं, तिनके पद परणाम है॥**

ॐ ह्रीं **षड्विध-काल-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १२५॥

**अंत समय उपसर्ग तैं, शुकलध्यान अभिराम है।**
**सिद्ध भये तिहुँ योग तैं, तिनके पद परणाम है॥**

ॐ ह्रीं **उपसर्ग-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १२६॥

**पर उपसर्ग मिलै नहीं, स्वतः शुक्ल सुखधाम है।**
**सिद्ध भये तिहुँ योग तैं, तिनके पद परणाम है॥**

ॐ ह्रीं **निरुपसर्ग-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १२७॥

**अन्तर द्वीप मही जहाँ, देवन के आराम[१] है।**
**सिद्ध भये तिहुँ योग तैं, तिनके पद परणाम है॥**

ॐ ह्रीं **द्वीप-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १२८॥

**देव गये ले सिंधु जब, कर्म छयो तिह ठाम है।**
**सिद्ध भये तिहुँ योग तैं, तिनके पद परणाम है॥**

ॐ ह्रीं **उदधि-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १२९॥

१. आराम = देवताओं के निवास या भवन

(**भुजंगप्रयात** : नसें घातिया कर्म .....)

**धरैं जोग आसन गहैं सुस्थताई,**
**न हो खेद ध्यानाग सों कर्म छाई।**
**भये सिद्ध राजा निजानंद साजा,**
**यही मोक्ष नाजा नमः सिद्ध काजा॥**

ॐ ह्रीं **स्थित्यासन-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १३०॥

**महा शांत मुद्रा पलौथी लगाये,**
**कियो कर्म को नाश ज्ञानी कहाये।**
**भये सिद्ध राजा निजानंद साजा,**
**यही मोक्ष नाजा नमः सिद्ध काजा॥**

ॐ ह्रीं **पर्यंकासन-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १३१॥

**लहै आदि को संहनन पुरुष देही,**
**तथा हो परारंभ में भाव ते ही।**
**भये सिद्ध राजा निजानंद साजा,**
**यही मोक्ष नाजा नमः सिद्ध काजा॥**

ॐ ह्रीं **पुंवेद-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १३२॥

**खपायो प्रथम सात प्रकृति विमोहा,**
**गहै शुद्ध श्रेणी क्षयो कर्म लोहा।**
**भये सिद्ध राजा निजानंद साजा,**
**यही मोक्ष नाजा नमः सिद्ध काजा॥**

ॐ ह्रीं **क्षपक-श्रेणी-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १३३॥

**समय एक में एक वा सौ भनंता,**
**धरो आठ तापे यही भेद अन्ता।**
**भये सिद्ध राजा निजानंद साजा,**
**यही मोक्ष नाजा नमः सिद्ध काजा॥**

ॐ ह्रीं **एकसमय-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १३४॥

**किसी देश में वा किसी काल माहीं,**
**गिने दो समय में तथा अन्तराई।**
**भये सिद्ध राजा निजानंद साजा,**
**यही मोक्ष नाजा नमः सिद्ध काजा॥**

ॐ ह्रीं **द्विसमय-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १३५॥



**समय एक दो तीन धाराप्रवाही,**
**कियो कर्म क्षय अन्तराय होय नाहीं।**
**भये सिद्ध राजा निजानंद साजा,**
**यही मोक्ष नाजा नमः सिद्ध काजा॥**

ॐ ह्रीं **त्रिसमय-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १३६॥

**हुए हैं सु होंगे सु हो हैं अबारी,**
**त्रिकालं सदा मोक्षपन्था विहारी।**
**भये सिद्ध राजा निजानंद साजा,**
**यही मोक्ष नाजा नमः सिद्ध काजा॥**

ॐ ह्रीं **त्रिकाल-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १३७॥

**तिहुँ लोक के शुद्ध सम्मत्त धारी,**
**महा भार संजम धरै हैं अबारी।**
**भये सिद्ध राजा निजानंद साजा,**
**यही मोक्ष नाजा नमः सिद्ध काजा॥**

ॐ ह्रीं **त्रिलोक-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १३८॥

(**मरहठा** : सिद्धों की श्रेणी में आनेवाला जिनका .....)

**तिहुँ लोक निहारा, सब दुखकारा, पापरूप संसार।**
**ताको परिहारा, सुलभ सुखारा, भये सिद्ध अविकार॥**
**हे जगत्रय-नायक! मंगलदायक!! मंगलमय सुखकार।**
**मैं नमूँ त्रिकाला, हो अघ टाला, तप हर शशि उनहार॥**

ॐ ह्री **सिद्ध-मंगलेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १३९॥

**तिहुँ कर्मकालिमा, लगी जालिमा, करै रूप दुखदाय।**
**तुम ताको नाशो, स्वयं प्रकाशो, स्वातमरूप सुभाय॥ हे जगत्रय.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-मंगल-स्वरूपेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १४०॥

**तिहुँ जग के प्राणी, सब अज्ञानी, फंसे मोह जंजाल।**
**हो तिहुँ जगत्राता, पूरण ज्ञाता, तुम ही इक खुशहाल॥ हे जगत्रय.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-मंगल-ज्ञानेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १४१॥

**यह मोह-अन्धेरी, छई घनेरी, प्रबल पटल रह्यो छाय।**
**तुम ताहि उघारो, सकल निहारो, युगपत् आनंददाय॥**
**हे जगत्रय नायक! मंगलदायक!! मंगलमय सुखकार।**
**मैं नमूँ त्रिकाला हो अघ टाला, तप हर शशि उनहार॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-मंगल-दर्शनेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १४२॥

**निजबंधन डोरी, छिन में तोरी, स्वयं शक्ति परकाश।**
**निरभय निरमोही, परम अछोही, अन्तराय विधि नाश॥ हे जगत्रय.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-मंगल-वीर्येभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १४३॥

**जाके प्रसादकर, सकल चराचर, निज सों भिन्न लखाय।**
**रुष-राग निवारा, सुख विस्तारा, आकुलता विनशाय॥ हे जगत्रय.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-मंगल-सम्यक्त्वेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १४४॥

**अस्पर्श अमूरत, चिन्मय सूरत, अरस अलिंग अनूप।**
**मन-अक्ष-अलक्षं, ज्ञान-प्रतक्षं, शुभ अवगाह स्वरूप॥ हे जगत्रय.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-मंगल-अवगाहनेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १४५॥

**अव्यक्त स्वरूपं, अमल अनूपं, अलख अगम असमान।**
**अवगाह उदर धर, वास परस्पर, भिन्न भिन्न परमान॥ हे जगत्रय.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-मंगल-सूक्ष्मत्वेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १४६॥

**अनुभूति विलासी, समरस रासी, हीनाधिक विधि नाश।**
**विधि गोत्र नाश कर, पूरण पदधर, असंबाध परकाश॥ हे जगत्रय.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-मंगल-अगुरुलघुभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १४७॥

**पुद्गल कृत सारी, विविध प्रकारी, द्वैतभाव अधिकार।**
**सब भांति निवारी, निज सुखकारी, पायो पद अविकार॥ हे जगत्रय.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-मंगल-अव्याबाधेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १४८॥

**अवगाढ़ प्रणामी, ज्ञानारामी, दर्शन-वीर्य अपार।**
**सूक्षम अवकाशं, अज अविनाशं, अगुरुलघू सुखकार॥ हे जगत्रय.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-मंगल-अष्ट-गुणेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १४९॥

**सु ध्या तपसारं, अष्ट प्रकारं, शिव स्वरूप अनिवार।**
**निज गुण परधानं, सम्यग्ज्ञानं, आदि-अन्त अविकार॥ हे जगत्रय.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-मंगल-अष्ट-स्वरूपेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १५०॥



**मंगल अरहंतं, अष्टम भंतं, सिद्ध अष्ट गुण भास।**
**ये ही विलसावैं, अन्य न पावैं, असाधार्ण परकाश॥ हे जगत्रय.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-मंगल-अष्ट-प्रकाशकेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १५१॥

**निर आकुलताई, सुख अधिकाई, परम शुद्ध परणाम।**
**संसार-निवारण, बन्ध-विडारन, यही धर्म सुखधाम॥ हे जगत्रय.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-मंगल-धर्मेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १५२॥

(**चूलिका :** प्रभूजी! अब न भटकेंगे संसार में .....)

**तीन काल तिहुँ लोक में, तुम गुण और न माहिं लखाने।**
**लोकोत्तम परसिद्ध हो, सिद्धराज सुख-साज बयाने॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-लोकोत्तम-गुणेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १५३॥

**लोकत्रय शिर छत्र मणि, लोकत्रय वर पूज्य प्रधाने॥ लोकोत्तम.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-लोकोत्तमाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १५४॥

**अमल अनूपम तेज घन, निरावर्ण निजरूप प्रमाणे॥ लोकोत्तम.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-लोकोत्तम-स्वरुपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १५५॥

**लोकालोक प्रकाश कर, लोकातीत प्रत्यक्ष प्रमाणे॥ लोकोत्तम.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-लोकोत्तम-ज्ञानाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १५६॥

**सकल दर्शनावरण बिन, पूरन-दरशन जोति उगाने॥ लोकोत्तम.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-लोकोत्तम-दर्शनाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १५७॥

**अतुल अतीन्द्रिय वीर्यकर, भोगे नित शिवनार अघाने॥ लोकोत्तम.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-लोकोत्तम-वीर्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १५८॥

(**त्रोटक :** केवल रवि किरणों से जिसका .....)

**बिन कारण ही सबके मितु हो, सर्वोत्तम लोक विषै हितु हो।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-लोकोत्तम-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १५९॥

**तुम रूप अनूपम ध्यान किये, निज रूप दिखावत स्वच्छ हिये।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-स्वरुप-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १६०॥

**निरभेद अछेद विकासित हैं, सब लोक-अलोक विभाषित हैं।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-दर्शन-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १६१॥

**निरबाध अगाध प्रकाशमई, निरद्वंद अबंध अभय अजई।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-ज्ञान-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १६२॥

**हित कारण तारण तरण कहै, अप्रमाद प्रमाद-प्रयास न है।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-वीर्य-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १६३॥

**अविरुद्ध विशुद्ध प्रसिद्ध महा, निज आतमतत्त्व प्रबोध लहा।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-सम्यक्त्व-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १६४॥

**जिनकौ पूर्वापर अन्त नहीं, नित धार प्रवाह बहै अति ही।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-अनन्तकाल-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १६५॥

**कबहूँ नहिं अन्त समावत है, सु अनन्त-अनन्त कहावत है।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-अनन्तानन्त-काल-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १६६॥

**तिहुँ काल सु सिद्ध महा सुखदा, निजरूप विषैं थिर भाव सदा।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-त्रिकाल-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १६७॥

**तिहुँ लोक शिरोमणि पूज्य महा, तिहुँ लोक प्रकाशक तेज कहा।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-त्रिलोक-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १६८॥

**गिनती परिमाण जु लोक धरै, परदेश सुहू हम भाव बरै।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-संख्यात-लोक-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १६९॥

**पूर्वापर एकहि रूप लसे, नित लोक सिंहासन वास वसे।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-ध्रौव्य-गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १७०॥



**जगवास प्रजाय विनाश कियो, अविनश्वर रूप विशुद्ध भयो।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-उत्पाद-गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १७१॥

**परद्रव्य थकी रुष-राग नहीं, निजभाव बिना कहुँ लाग नहीं।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-साम्य-गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १७२॥

**बिन कर्म-कलंक विराजत हैं, अति स्वच्छ महागुण राजत हैं।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-स्वच्छ-गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १७३॥

**मन-इन्द्रिय आदि न व्याधि तहाँ, रुष-राग-कलेश प्रवेश न व्हाँ।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-स्वस्थ-गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १७४॥

**निज रूप विषैं नित मगन रहैं, पर-जोग-वियोग न दाह लहैं।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-समाधि-गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १७५॥

**श्रुतज्ञान तथा मतिज्ञान दऊ, परकाशत हैं यह व्यक्त सऊ।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-व्यक्त-गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १७६॥

**परतक्ष अतीन्द्रिय भाव महा, मन-इन्द्रिय बोध न गुह्य कहा।**
**इन ही गुण में मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-अव्यक्त-गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १७७॥

(**मालिनी** : अध्यात्म की डगर पर, बच्चों दिखाओ चल कर .....)

**निज गुणवर-स्वामी, शुद्ध-संबोध-नामी,**
**परगुण नहिं लेशा, एक ही भाव शेषा।**
**मन-वच-तन लाई, पूज हों भक्ति भाई,**
**भवि भव भय चूरं, शाश्वतं सुक्ख पूरं॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-गुण-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १७८॥

**सब विधि-मल जारा, बन्ध संसार टारा,**
**जग जिय हितकारी, उच्चता पाय सारी।**

**मन-वच-तन लाई, पूज हों भक्ति भाई,**
**भवि भव भय चूरं, शाश्वतं सुक्ख पूरं॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध'परमात्म-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १७९॥

**पर-परिणति-खण्डं, भेद-बाधा-विहण्डं,**
**शिवसदन-निवासी, नित्य स्वानन्दरासी।**
**मन-वच-तन लाई, पूज हों भक्ति भाई,**
**भवि भव भय चूरं, शाश्वतं सुक्ख पूरं॥**

ॐ ह्री **सिद्ध-अखण्ड-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १८०॥

**चित-सुख-विलसानं, आकुलं भाव-हानं,**
**निज-अनुभव-सारं, द्वैत-संकल्प-टारं।**
**मन-वच-तन लाई, पूज हों भक्ति भाई,**
**भवि भव भय चूरं, शाश्वतं सुक्ख पूरं॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-चिदानन्द-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १८१॥

**पर-करण-निवारं, भाव-समभाव-धारं,**
**निज-अनुपम-ज्ञानं, सुक्खरूपा निधानं।**
**मन-वच-तन लाई, पूज हों भक्ति भाई,**
**भवि भव भय चूरं, शाश्वतं सुक्ख पूरं॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-सहजानन्दाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १८२॥

**विधिवश सब प्रानी, हीन-आधिक्य ठानी,**
**तिस कर निर्मूला, पाय रूपा-धरूला[१]।**
**मन-वच तन लाई पूजहों भक्ति भाई,**
**भवि भव भय चूरं शाश्वतं सुक्ख पूरं॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-अच्छेद्य-रूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १८३॥

**जब लग परजाया, भेद नाना धराया,**
**इक शिवपद माहीं, भेद-आभास नाहीं।**
**मन-वच-तन लाई, पूज हों भक्ति भाई,**
**भवि भव भय चूरं, शाश्वतं सुक्ख पूरं॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-अभेद्य-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १८४॥

१. रूपा-धरूला = स्वरूप को धारण किया



**अनुपम गुण धारी, लोक-संभाव टारी,**
**सुर-नर-पशु ध्यावैं, सो नहीं पार पावैं।**
**मन-वच-तन लाई, पूज हों भक्ति भाई,**
**भवि भव भय चूरं, शाश्वतं सुक्ख पूरं॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-अनौपम्य-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १८५॥

**जिस अनुभव सरसै, धार आनन्द बरसै,**
**अनुपम रस सोई, स्वाद जासों न कोई।**
**मन-वच-तन लाई, पूज हों भक्ति भाई,**
**भवि भव भय चूरं, शाश्वतं सुक्ख पूरं॥**

ॐ ह्री **सिद्ध-अमृत-तत्त्वाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १८६॥

**सब श्रुत-विस्तारा, जास माहीं उजारा,**
**यह निजपद जानो, आत्म-संभाव मानो।**
**मन-वच-तन लाई, पूज हों भक्ति भाई,**
**भवि भव भय चूरं, शाश्वतं सुक्ख पूरं॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-श्रुत-प्राप्ताय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १८७॥

(**दोधक :** इन्द्रिय के भोग मधुर सम .....)

**जीव-अजीव सबै प्रतिभासी, केवलजोति लहो तम-नाशी।**
**सिद्ध समूह नमूँ शिरनाई, पाप-कलाप सबै खिर जाई॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-केवल-प्राप्ताय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १८८॥

**चेतनरूप सदेश[१] विराजै, आकृतरूप अलिंग सु छाजै।**
**सिद्ध समूह नमूँ शिरनाई, पाप-कलाप सबै खिर जाई॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-साकार-निराकाराय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १८९॥

**नाहिं गहें पर-आश्रय जानो, सो अवलम्ब बिना पद मानो।**
**सिद्ध समूह नमूँ शिरनाई, पाप-कलाप सबै खिर जाई॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-निरालंबाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १९०॥

**राग विषाद बसै नहिं जामें, योग वियोग न भोग न तामें।**
**सिद्ध समूह नमूँ शिरनाई, पाप-कलाप सबै खिर जाई॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-निष्कलंकाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १९१॥

१. सदेश = प्रदेशों से सहित

**ज्ञान प्रभाव प्रकाश भयो है, कर्म समूह विनाश भयो है।**
**सिद्ध समूह नमूँ शिरनाई, पाप-कलाप सबै खिर जाई॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-तैजसाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १९२॥

**आतम लाभ निजाश्रित पाया, द्वैत विभाव समूल नसाया।**
**सिद्ध समूह नमूँ शिरनाई, पाप-कलाप सबै खिर जाई॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-आत्म-सम्पन्नाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १९३॥

(**मोतियादाम :** तिहारे ध्यान की मूरत, अजब छवि .....)

**चहुँ गति काय स्वरूप प्रत्यक्ष, शिवालय वास अरूप अलक्ष।**
**भजो मन आनंद सों शिवनाथ, धरों चरणांबुज को निज माथ॥**
ॐ ह्री **सिद्ध-गर्भवासाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १९४॥

**निजानंद श्रीयुत ज्ञान अथाह, सुशोभित तृप्त भयो सुख पाय।**
**भजो मन आनंद सों शिवनाथ, धरों चरणांबुज को निज माथ॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-लक्ष्मी-सन्तर्पकाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १९५॥

**सुभाव निजातम अन्तर लीन, विभाव परातम आपद हीन।**
**भजो मन आनंद सों शिवनाथ, धरों चरणांबुज को निज माथ॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-अन्तरंगाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १९६॥

**जहां लग द्वेष-प्रवेश न होय, तहां लग सार रसायन सोय।**
**भजो मन आनंद सों शिवनाथ, धरों चरणांबुज को निज माथ॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-सार-रसाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १९७॥

**जिसो निरलेप उभै विष-तुंब्य[१], तिसो जग अग्र निराश्रय लुंब्य[२]।**
**भजो मन आनंद सों शिवनाथ, धरों चरणांबुज को निज माथ॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-शिखर-मण्डिताय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १९८॥

**तिहूं जग शीस विराजित नित्य, शिरोमणि सर्व समाज अचिंत्य।**
**भजो मन आनंद सों शिवनाथ, धरों चरणांबुज को निज माथ॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-त्रिलोकाग्र-स्थिताय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ १९९॥

**अकाय अरूप अलक्ष अवेद, निजातम लीन सदा अविछेद।**
**भजो मन आनंद सों शिवनाथ, धरों चरणांबुज को निज माथ॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-स्वरूप-गुप्तये** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २००॥

१. जहरीला तुम्बी फल २. प्राप्त किया



## आचार्य परमेष्ठी के १०० अर्घ्य

(**अडिल्ल :** हे प्रभु! चरणों में तेरे आ गये .....)

**ऋषभ आदि चित धार प्रथम दीक्षा धरी।**
**केवलज्ञान उपाय धर्म-विधि उच्चारी॥**
**निजस्वरूप थितिकरण हरण विधि चार है।**
**परमारथ आचार्य सिद्ध सुखकार है॥**
ॐ ह्रीं **सूरिभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २०१॥

**निज ही निज उर धार हेत सामर्थ्य है।**
**आत्मशक्ति कर व्यक्त करण-विधि व्यर्थ है॥ निज.॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-गुणेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २०२॥

**साधन-साधक-साध्य भाव सब विध गयो।**
**भेद अगोचर रूप महासुख संभयो॥ निज.॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-स्वरूप-गुप्तेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २०३॥

**तत्त्व-प्रतीत निजातम-रुचि अनुभव-कला।**
**पायो सत्यानंद कुमारग दलमला॥ निज.॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-सम्यक्त्व-गुणेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २०४॥

**वस्तु अनंत धर्म प्रकाशक ज्ञान है।**
**एक पक्ष हठ गृहीत[१] निपट असुहान है॥ निज.॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-ज्ञान-गुणेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २०५॥

**वस्तु धर्म सामान्य[२] ताहि अवलोकना।**
**शुद्ध निजातम धर्म ताहि नहिं लोपना॥ निज.॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-दर्शन-गुणेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २०६॥

**अतुल अकम्प अखेद शुद्ध परणति धरैं।**
**जगत् रूप व्यापार न इक छिन आदरैं॥ निज.॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-वीर्य-गुणेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २०७॥

**षट् त्रिंशत् गुण सूर मोक्ष-फल पाइयो।**
**तातैं हम इन गुण कर ही जश गाइयो॥ निज.॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-षट्त्रिंशद्-गुणेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २०८॥

१. गृहीत मिथ्यात्व २. सामान्य अवलोकन

**पंचाचार आचर्य साधि शिवपद लियो।**
**वास्तव में ये गुण निज में परगट कियो।**
**निजस्वरूप थितिकरण हरण विधि चार है।**
**परमारथ आचार्य सिद्ध सुखकार है॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-पंचाचार-गुणेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २०९॥

**गुण-समुदाय स्वरूप द्रव्य आतम महा।**
**पर सों भिन्न अभेद निजातम पद लहा॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-द्रव्य-गुणेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २१०॥

**वीतराग परणति ही स्व-हितकार जू।**
**परम शुद्ध स्व-सिद्ध भये अनिवार जू॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-पर्याय-गुणेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २११॥

(**चंचला** : पार्श्वनाथ देव सेव .....)

**आप सुक्खरूप हो सु और सौख्यकार होत।**
**ज्यूँ घटादि को प्रकाशकार है सुदीप जोत॥**
**सूरि-धर्म को प्रकाश सिद्ध-धर्म रूप जान।**
**मैं नमूँ त्रिकाल एक ही अभेद पक्ष मान॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-मंगलेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २१२॥

**संस-अंश भान वस्तु भाव को प्रकाशमान।**
**ज्ञान इन्द्रियाऽनिन्द्रिया कहे उभै प्रमाण॥**
**सूरि-धर्म को प्रकाश सिद्ध-धर्म रूप जान।**
**मैं नमूँ त्रिकाल एक ही अभेद पक्ष मान॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-ज्ञान-मंगलेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २१३॥

**लोक-उत्तमा सुइ[1] जु कर्म को प्रसंग टार।**
**शुद्ध बुद्ध ऋद्धि पाय लोक वेदना निवार॥**
**सूरि-धर्म को प्रकाश सिद्ध-धर्म रूप जान।**
**मैं नमूँ त्रिकाल एक ही अभेद पक्ष मान॥**

१. सूरि = आचार्य



ॐ ह्रीं **सूरि-लोकोत्तमेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २१४॥

**लोक-भीत सों अतीत आदि-अन्त एक रूप।**
**लोक में प्रसिद्ध सर्व भाव को अनूप भूप॥**
**सूरि-धर्म को प्रकाश सिद्ध-धर्म रूप जान।**
**मैं नमूँ त्रिकाल एक ही अभेद पक्ष मान॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-ज्ञान-लोकोत्तमेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २१५॥

**बीच में न अन्तराय, आप ही सुखाय धाय।**
**या अबाध धर्म के प्रकाश में करै सहाय॥**
**सूरि-धर्म को प्रकाश सिद्ध-धर्म रूप जान।**
**मैं नमूँ त्रिकाल एक ही अभेद पक्ष मान॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-दर्शन-लोकोत्तमेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २१६॥

**मोह-भार को निवार शुद्ध चेतना सुधार।**
**ये हि वीर्यता अपार, लोक में प्रशंसकार॥**
**सूरि-धर्म को प्रकाश सिद्ध-धर्म रूप जान।**
**मैं नमूँ त्रिकाल एक ही अभेद पक्ष मान॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-वीर्य-लोकोत्तमेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २१७॥

**धर्म केवली महान, मोह अन्ध तेज भान।**
**सप्त तत्त्व को बखान, मोक्षमार्ग को निधान॥**
**सूरि-धर्म को प्रकाश सिद्ध-धर्म रूप जान।**
**मैं नमूँ त्रिकाल एक ही अभेद पक्ष मान॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-केवल-धर्मेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २१८॥

**शील आदि पूर भेद, कर्म के कलाप छेद।**
**आत्म-शक्ति को प्रकाश, शुद्ध चेतना विलास॥**
**सूरि-धर्म को प्रकाश सिद्ध-धर्म रूप जान।**
**मैं नमूँ त्रिकाल एक ही अभेद पक्ष मान॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-तप्त-तपेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २१९॥

**लोक-चाह की न दाह, द्वेष को प्रवेश नाह।**
**शुद्ध चेतना प्रवाह, वृद्धता धरै अथाह॥**

**सूरि-धर्म को प्रकाश सिद्ध-धर्म रूप जान।**
**मैं नमूँ त्रिकाल एक ही अभेद पक्ष मान॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-परम-तपेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २२०॥

**मोह को न जोर जाय, घोर आपदा नसाय।**
**घोरते तपो सु लोक, शीश जाय मुक्ति पाय॥**
**सूरि-धर्म को प्रकाश सिद्ध-धर्म रूप जान।**
**मैं नमूँ त्रिकाल एक ही अभेद पक्ष मान॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-तपोघोर-गुणेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २२१॥

(**कामिनी-मोहन** : जिनधरम जिनधरम मुझको तेरी कसम .....)

**वृद्ध पर वृद्ध गुण गहन नित हो जहां,**
**शाश्वतं पूर्णता सातिशय गुण तहां।**
**सूर सिद्धांत के पारगामी भये,**
**मैं नमूँ जोर कर मोक्षधामी भये॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-घोर-गुण-पराक्रमेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २२२॥

**एक समभाव सम और नहिं ऋद्धि है,**
**सर्व ही ऋद्धि जाके भये सिद्ध है॥**
**सूर सिद्धांत के पारगामी भये,**
**मैं नमूँ जोर कर मोक्षधामी भये॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-ऋद्धि-ऋषिभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २२३॥

**योग के रोक से कर्म का रोक हो,**
**गुप्त साधन किये साध्य शिवलोक हो॥**
**सूर सिद्धांत के पारगामी भये,**
**मैं नमूँ जोर कर मोक्षधामी भये॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-सुयोगेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २२४॥

**ध्यान बल कर्म के नाश को हेतु है,**
**कर्म को नाश शिववास ही देतु है॥**



**सूर सिद्धांत के पारगामी भये,**
**मैं नमूँ जोर कर मोक्षधामी भये॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-ध्यानेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २२५॥

**पंच आचार में आत्म अधिकार है,**
**बाह्य आधार आधेय सुविकार है॥**
**सूर सिद्धांत के पारगामी भये,**
**मैं नमूँ जोर कर मोक्षधामी भये॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-धातृभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २२६॥

**सूर सम आप पर तेज करतार हैं,**
**सूर ही मोक्षनिधि पात्र सुखकार हैं॥**
**सूर सिद्धांत के पारगामी भये,**
**मैं नमूँ जोर कर मोक्षधामी भये॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-पात्रेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २२७॥

**बाह्य छत्तीस अन्तर अभेदात्मा,**
**आप थिर रूप है सूर परमात्मा॥**
**सूर सिद्धांत के पारगामी भये,**
**मैं नमूँ जोर कर मोक्षधामी भये॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २२८॥

**ज्ञान उपयोग में स्वस्थिता शुद्धता,**
**पूर्ण चारित्रता पूर्ण ही बुद्धता॥**
**सूर सिद्धांत के पारगामी भये,**
**मैं नमूँ जोर कर मोक्षधामी भये॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-धर्म-गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २२९॥

**शरण दुखहर्ण पर आप स्वशर्ण हैं,**
**आपने कार्य में आप ही कर्ण हैं॥**
**सूर सिद्धांत के पारगामी भये,**
**मैं नमूँ जोर कर मोक्षधामी भये॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २३०॥

(दोहा : भूतकाल प्रभु आपका .....)

**ज्यों कंचन बिन कालिमा, उज्ज्वल रूप सुहाय।**
**त्यों ही कर्म-कलंक बिन, निज स्वरूप दरशाय॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-स्वरूप-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २३१॥

**भेदाभेद सु नय थकी, एक हि धर्म विचार।**
**पायो सूर सुबोध करि, भवदधि करि उद्धार॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-धर्म-स्वरूप-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २३२॥

**अन्य समस्त विकल्प तज, केवल निजपद लीन।**
**पूरण ज्ञान स्वरूप यह, पायो सूर सुधीन॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-ज्ञान-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २३३॥

**सुखाभास इन्द्रिय-जनित, त्यागी सूर महन्त।**
**पूरण सुख स्वाधीन निज, साध्य भये सुखवन्त॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-सुख-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २३४॥

**अनेकान्त तत्त्वार्थ के, ज्ञाता सूर महान।**
**निरावर्ण निजरूप लख, पायो पद निरवान॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-दर्शन-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २३५॥

**मोहादिक रिपु नाश को, सूर महा सामर्थ।**
**शिव-भामनि भरतार नित, रमै साध निज अर्थ॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-वीर्य-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २३६॥

(**पद्धरि** : शुद्धात्मा का श्रद्धान होगा .....)

**जिन निज आतम निष्पाप कीन, ते सन्त करैं पर-पाप छीन।**
**शिवमग-प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-मंगल-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २३७॥

**रत्नत्रय जीव स्वभाव भाय, भव-पतित उधारण हो सहाय।**
**शिवमग-प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-धर्म-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २३८॥

**तपकर ज्यों कंचन अग्नि जोग, ह्वै शुद्ध निजातम पद मनोग।**
**शिवमग-प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-तपस्-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २३९॥



**एकाग्र हि चिंता कर निरोध, पावै अबाध शिव आत्मशोध।**
**शिवमग-प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-ध्यान-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २४०॥

**केवलज्ञानादि विभूति पाय, ह्वै शुद्ध निरंजन पद सुखाय।**
**शिवमग-प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-ऋद्धि-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २४१॥

**तिहुं लोकनाथ तिहुं लोक माहिं, यासम दूजो सुखदाय नाहिं।**
**शिवमग-प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-त्रिलोक-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २४२॥

**आगत अतीत अरु वर्तमान, तिहुं काल भव्य पावैं निर्वान।**
**शिवमग-प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-त्रिकाल-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २४३॥

**अध-अधो-ऊर्द्ध तिहुं जगतमाहिं, सब जीवन सुखकर और नाहिं।**
**शिवमग-प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-त्रिजगन्मंगलाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २४४॥

**तिहुं लोक माहिं सुखकार आप, सत्यारथ मंगल हरण पाप।**
**शिवमग-प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-त्रिलोक-मंगल-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २४५॥

**उत्तम मंगल परमार्थ रूप, जग दुखनाशन शिवसुख सरूप।**
**शिवमग-प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-त्रिजगन्मङ्गलोत्तम-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २४६॥

**शरणागत दुखनाशन महान, तिहुं जगहित कारन सुखनिधान।**
**शिवमग-प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-त्रिजगन्मङ्गल-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २४७॥

**तिहुं लोकनाथ तिहुं लोकपूज, शरणागत प्रतिपालन अदूज।**
**शिवमग-प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-त्रिलोक-मंडन-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २४८॥

**अव्यय अपूर्व सामर्थ युक्त, संसारातीत विमोह मुक्त।**
**शिवमग-प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-ऋद्धि-मण्डल-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २४९॥

(**त्रोटक:** केवल रवि किरणों से जिसका .....)

**जिनरूप अनूप लखें सुख हो, जग में यह मंत्र महान कहो।**
**धर भक्ति हिये गणराज सदा, प्रणमूँ शिववास करै सुखदा॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-मंत्र-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २५०॥

**जिम नागदेव वशमंत्र विधी, भववास हरण तुम नामनिधी॥ धर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-मंत्र-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २५१॥

**जगमोहित जीव न पावत है, यह मंत्र सु धर्म कहावत है॥ धर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-धर्म-मंत्र-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २५२॥

**चितरूप चिदातम रूप धरे, गुण सार यही अविरुद्ध वरे॥ धर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-चैतन्य-गुण-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २५३॥

**अविकार चिदातम आनंद हो, परमातम हो परमानंद हो॥ धर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-चिदानंदाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २५४॥

**निजज्ञान प्रमाण प्रकाश करै, सुखरूप निराकुलता सु धरै॥ धर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-ज्ञानानन्दाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २५५॥

**धरि योग महा समभाव गहै, सुखराशि महा शिववास लहै॥ धर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-समभावाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २५६॥

**समभाव महा गुण धारत हो, निज-आनंद भाव निहारत हो॥ धर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-तपोगुणानन्दाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २५७॥

**शिवसाधन का विधिनाश कहा, विधिनाशन को तपकर्ण महा॥ धर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-तपोगुण-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २५८॥

**निज आत्मविषैं नित मग्न रहैं, जग के सुख मूल न भूलि चहैं॥ धर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-हंसाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २५९॥

**वनवास उदास सदा जगतैं, पर आस न खास विलास रतैं॥ धर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-हंस-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २६०॥

**निज नाम महागुण मंत्र धरैं, छिन मात्र जपे भवि आश वरै॥ धर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-मंत्र-गुणानन्दाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २६१॥

**परमोत्तम सिद्धपर्याय कही, अति शुद्ध प्रसिद्ध सुखात्म मही॥ धर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-सिद्धानन्दाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २६२॥



(**माला :** केसरिया चाँवल रंगवा लो .....)

**सूर! निज भेद कियो पर सैं।**
**भये मुक्त मैं नमूँ शीश नित, जोर युगल कर सैं॥ टेक॥**
**शशि सन्ताप कलाप निवारण, ज्ञान कला सरसै।**
**मिथ्यातम हरि भवि आनन्द करि, अनुभव भाव दरसै॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-अमृतचन्द्राय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २६३॥

**पूरणचन्द्र सरूप कलाधर, ज्ञान-सुधा बरसैं।**
**भवि चकोर चित चाहत नित मनु, चरण जोति परसैं॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-सुधाचन्द्र-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २६४॥

**जग जिय ताप निवारन कारन, विलसे अन्तर सै।**
**देव सुधा सम गुण निवाह कर, सकल चराचर सै॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-सुधा-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २६५॥

**जा धुनि सुनि संशय विनसे जिम, ताप मेघ बरसै,**
**मनहुं कमल मकरन्द वृन्द अलि, पाय सुधा सरसै॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-सुधा-घनाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २६६॥

**अजर अमर सुखदाय भाय मन, ज्यों मयूर हरसै।**
**गाजत घन बाजत ध्वनि सुनि मनु, भाजत भय डरसै॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-अमृत-घन-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २६७॥

(**चकोर :** आओ भाई! तुम्हें सुनायें गाथा आतमराम की .....)

**जो अपने गुण वा पर्याय, वरै निज-धर्म न होत विनास।**
**द्रव्य कहावत है सु अनंत, स्वभाव धरै निज आत्म-विलास॥**
**सूर कहाय सु कर्म खिपाइ, निजातम पाय गये शिवधाम।**
**सु आतमराम सदा अभिराम, भए सुख काम नमूँ वसु जाम॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-द्रव्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २६८॥

**ज्यों शशि-जोत रहै सियरा, नित ज्यों रवि-जोत रहै नितताप।**
**त्यों निज ज्ञानकला परिपूरण, राजत हो निजकरण सु आप॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-गुण-द्रव्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २६९॥

**हो अविनाश अनूपम रूप सु, ज्ञानमई नित केलि करान।**
**पै न तजै मरजाद रहै जिम, सिन्धु कलोल सदा परमान॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-गुण-पर्यायाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २७०॥

**जे कछु द्रव्य तनी गुण हैं, सु समस्त मिलें गुण आतम माहि।**
**ता करि द्रव्य सरूप कहावत, है अविनाश नमैं हम ताहि॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-द्रव्य-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २७१॥

**जा गुण में गुण और न हो, निज द्रव्य रहै नित और न ठौर।**
**सो गुण रूप सदा निवसै, हम पूजत हैं करके कर जोर॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-गुण-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २७२॥

**जे परिणाम धरै तिनसों, तिनमें कर है वरतैं तिस रूप।**
**सो पर्याय उपाय बिना नित, आप विराजत हैं सु अनूप॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-पर्याय-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २७३॥

**हो नित ही परिणाम समय प्रति, सो उत्पाद कहो भगवान।**
**सो तुम भाव प्रकाश कियो निज, यह गुण का उत्पाद महान॥ सूरि.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-गुणोत्पादाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २७४॥

**ज्यों मृतिका निज रूप न छांडत, हो घट-माट[१] अनेक प्रकार।**
**सो तुम जीव सुभाव धरो नित, मुक्त भए जगवास निवार॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-ध्रौव्य-गुणोत्पादाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २७५॥

**थे जग में सब भाव विभाव, पराश्रित रूप अनेक प्रकार।**
**ते सब त्याग भए शिवरूप, अबंध अमंद महा सुखकार॥ सूरि.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-व्यय-गुणोत्पादाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २७६॥

**जे जग में षट् द्रव्य कहे, तिनमें इक जीव सुज्ञान स्वरूप।**
**और सभी बिन ज्ञान कहे, तुम राजत हो नित ज्ञान अनूप॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-जीवतत्त्वाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २७७॥

**ज्ञान-सुभाव धरो नित ही, नहिं छाड़त हो कबहूँ निज-वान[२]।**
**ये हि विशेष भयो सबसों, नहिं औरन में गुण ये परधान॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-जीवतत्त्व-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २७८॥

१. माटला अर्थात् बड़ी मटकी या मिट्टी का बड़ा पात्र २. निज-स्वरूप



**हो कर्तादि अनेक सुभाव, निजातम में पर में अनिवार।**
**सो पर को अलगाव रहो, निज ही करतूत रही सुखकार॥**
**सूर कहाय सु कर्म खिपाइ, निजातम पाय गये शिवधाम।**
**सु आतमराम सदा अभिराम, भये सुख काम नमूँ वसु जाम॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-जीवतत्त्व-विदे** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २७९॥

**द्रव्य तथापि विभाव दऊ विधि, कर्म प्रवाह वहै बिन आद।**
**ते सब रोक भये थिररूप, निजातम शुद्ध सुभाव प्रसाद॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-आस्रव-विनाशाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २८०॥

(**मोदक :** रोम रोम पुलकित हो जाय .....)

**बंध दऊ विधि के दुख कारण, नाश कियो भव-पार उतारण।**
**सूर महा निज ज्ञान-कला कर, सिद्ध भये प्रणमूँ मन में धर॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-बंध-विनाशाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २८१॥

**संवर तत्त्व महासुख देत हि, आस्रव-रोकन को यह हेत हि॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-संवर-तत्त्व-सहिताय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २८२॥

**ज्यूं मणि दीप अडोल अनूप हि, संवर तत्त्व निराकुल रूप हि॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-संवर-तत्त्व-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २८३॥

**संवर के गुण ते मुनि पावत, जो मुनि शुद्ध सुभाव सुधावत॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-संवर-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २८४॥

**संवर धर्मतनी शिव पावहि, संवर धरम तहाँ दरशावहि॥ सूर.॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-संवर-धर्माय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २८५॥

(**दोहा :** पावन हो गई आज ये धरती .....)

**एकदेश वा सर्व विधि, दोनों मुक्ति स्वरूप।**
**नमूँ निरजरा तत्त्व सो, पायो सिद्ध अनूप॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-निर्जरा-तत्त्वाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २८६॥

**शुद्ध सुभाव जहाँ - तहाँ कहो कर्म को नाश।**
**एम निरजरा तत्त्व का, रूप कियो परकाश॥**

ॐ ह्रीं **सूरि-निर्जरा-तत्त्व-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २८७॥

**कोटि जन्म के विधि सकल, सूखे तृण सम जान।**
**दहे निरजरा-अगन सों, यह गुण है परधान॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-निर्जरा-गुण-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २८८॥

**निज-बल कर्म खपाइये, कहो निर्जरा धर्म।**
**धर्मी सोई आत्मा, एक हि रूप सुपर्म॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-निर्जरा-धर्म-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २८९॥

**समय-समय गुणश्रेणिका, खिरै कर्म बल-ध्यान।**
**यह संबंध अनिवार कर, करै मुक्त-सुख-पान॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-निर्जरानुबंधाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २९०॥

**अतुल शक्ति थिर भाव की, सो प्रगटी तुम माहिं।**
**यही निर्जरा रूप है, नमूँ भक्ति कर ताहिं॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-निर्जरा-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २९१॥

**सर्व कर्म के नाश बिन, लहै न शिव-सुखरास।**
**निश्चय तुम ही निर्जरा, कियो प्रतीत प्रकाश॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-निर्जरोत्पादाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २९२॥

**सकल कर्म-मल नाश तें, शुद्ध निरंजन रूप।**
**ज्यों कंचन बिन कालिमा, राजै मोक्ष अनूप॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-मोक्षाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २९३॥

**द्रव्य-भाव दोनों सुविधि, करे जगत् में वास।**
**दऊ विध बन्ध उघार के, भये मुक्त सुखरास॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-बन्ध-मोक्षाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २९४॥

**परविकल्प सुखदुःख नहीं, अनुभव निज आनंद।**
**जन्म मरण विधि नाशकर, राजत शिवसुखकंद॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-मोक्ष-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २९५॥

**जहाँ न दुख को लेश है, उदय कर्म अनुसार।**
**सो शिवपद पायो महा, नमूँ भक्ति उर धार॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-मोक्ष-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २९६॥

**जे शिव सुगुण प्रसिद्ध हैं, तिन सों नित्त प्रबंध।**
**जे जगवास विलास दुख, तिन कूं नमूँ अबंध॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-मोक्षानुबंधाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २९७॥



**जैसी निज तन आकृति, तज कीनो शिववास।**
**ते तैसें नित अचल हैं, ज्ञानानन्द-प्रकाश॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-मोक्षानुप्रकाशाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २९८॥

**क्षयोपशम परिणाम कर, सधै न जिन का रूप।**
**वा निजपद में लीनता - ये ही गुप्त स्वरूप॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-स्वरूप-गुप्तये** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ २९९॥

**इन्द्रिय-जन्य न दुख जहाँ, सदा निजानन्द रूप।**
**निर-आकुल स्वाधीनता, वरतै शुद्ध सरूप॥**
ॐ ह्रीं **सूरि-परमात्म-स्वरूप-रतये** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३००॥

## उपाध्याय परमेष्ठी के १०० अर्घ्य

(**रोला :** सम्यक् साथै ज्ञान होय पै भिन्न .....)

**संपूरण श्रुत-सार, निजातम बोध लहानो।**
**निज-अनुभव शिवमूल, मनु उपदेश करानो॥**
**शिष्यन के अज्ञान हरै, ज्यों रवि अंधियारा।**
**पाठक गुण संभवे, सिद्ध प्रति नमन हमारा॥**
ॐ ह्रीं **पाठकेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३०१॥

**मुक्तिमूल है आत्मज्ञान, सोई श्रुतज्ञानी।**
**तत्त्वज्ञान सों लहै, निजातम पद सुखदानी॥ शिष्यन.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-मोक्ष-मण्डनेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३०२॥

**भवसागर तें भव्य, जीव तारन अनिवारा।**
**तुममें यह गुण अधिक, आय पायो तिस पारा॥ शिष्यन.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-गुणेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३०३॥

**दर्शन-ज्ञान स्वभाव, धरो तद्रूप अनूपी।**
**हीनाधिक बिन अचल, विराजत शुद्ध सरूपी॥ शिष्यन.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-गुण-स्वरूपेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३०४॥

**निज गुण वा परयाय, अखण्डित नित्य धरें हैं।**
**तिहुँ काल प्रति अन्य भाव, नहिं ग्रहण करे हैं॥ शिष्यन.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-गुण-पर्यायेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३०५॥

**सहभावी गुण-सार, जहाँ परभाव न लेसा।**
**अगुरुलघु परणाम, वस्तु सद्भाव विशेषा॥**
**शिष्यन के अज्ञान हरै, ज्यों रवि अंधियारा।**
**पाठक गुण संभवे, सिद्ध प्रति नमन हमारा॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-द्रव्य-रूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३०६॥

**गुण-समुदायो द्रव्य, याहि तें निरगुण नाहीं।**
**सो अनन्त गुण सदा, विराजत तुम पद माहीं॥ शिष्यन.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-गुण-द्रव्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३०७॥

**सत् सरूप सब द्रव्य, सधैं नीके अबाध कर।**
**सो तुम सत्य सरूप, विराजो द्रव्य-भाव धर॥ शिष्यन.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-द्रव्य-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३०८॥

**जे जे हैं परिणाम, बिना परिणामी नाहीं।**
**परिणामी-परिणाम, एक ही हैं तुम माहीं॥ शिष्यन.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-द्रव्य-पर्यायाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३०९॥

**अगुरुलघु परयाय, शुद्ध परिणाम बखानी।**
**निज सरूप में अंतरगत, श्रुतज्ञान-प्रमानी॥ शिष्यन.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-पर्याय-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३१०॥

**जगत्वास सब पाप-मूल, जिय को दुखदाई।**
**ताको नाशन हेतु कहो, शिवमूल उपाई॥ शिष्यन.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-मंगलाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३११॥

**जहाँ न दुख को लेश, सर्वथा सुख ही जानो।**
**सोई मंगल गुण तुममें, प्रत्यक्ष लखानो॥ शिष्यन.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-मंगल-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३१२॥

**औरन मंगलकरन, आप मंगलमय राजै।**
**दर्शन कर सुखसार मिलै, सब ही अघ भाजै॥ शिष्यन.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-मंगल-गुण-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३१३॥

**आदि-अन्त अविरुद्ध, शुद्ध मंगलमय मूरत।**
**निज सरूप में बसै सदा, परभाव विदूरत॥ शिष्यन.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-द्रव्य-मंगलाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३१४॥

**जितनी परणति धरो, सबहि मंगलमयरूपी।**
**अन्य अवस्थित टार, धार तद्रूप अनूपी॥ शिष्यन.॥**



ॐ ह्रीं **पाठक-पर्याय-मंगलाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३१५॥

**निश्चय वा व्यवहार, सर्वथा मंगलकारी।**
**जग-जीवन के विघन-विनाशन सर्व प्रकारी॥ शिष्यन.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-द्रव्य-पर्याय-मंगलाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३१६॥

**भेदाभेद प्रमाण, वस्तु-सर्वस्व बखानो।**
**वचन-अगोचर कहो, तथा निर्देश कहानो॥ शिष्यन.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-द्रव्य-गुण-पर्याय-मंगलाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३१७॥

**सब विशेष प्रतिभासमान, मंगलमय भासे।**
**निर्विकल्प आनंदरूप, अनुभूत प्रकाशे॥ शिष्यन.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-स्वरूप-मंगलाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३१८॥

(**पायत्ता** : तू जाग रे चेतन प्राणी .....)

**निर्विघ्न निराश्रय होई, लोकोत्तम मंगल सोई।**
**तुम गुण अनन्त श्रुति गाया, हम सरधत शीश निवाया॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-मंगलोत्तमाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३१९॥

**जग-जीवन को हम देखा, तुम ही गुण सार विशेखा॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-गुण-लोकोत्तमाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३२०॥

**षट्द्रव्य रचित जग सारा, तुम उत्तम रूप निहारा॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-द्रव्य-लोकोत्तमाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३२१॥

**निज-ज्ञान-शुद्धता पाई, जिस कर पाई प्रभुताई॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-ज्ञानाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३२२॥

**जग-जीव अपूरण ज्ञानी, तुम ही लोकोत्तम मानी॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-ज्ञान-लोकोत्तमाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३२३॥

**युगपद् निरभेद निहारा, तुम दर्शन-भेद उघारा॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-दर्शनाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३२४॥

**हम सोवत हैं नित मोही, देखे देखत तुमको ही॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-दर्शन-लोकोत्तमाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३२५॥

**दृगवंत महा सुखकारा, तुम भाव महा अविकारा॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-दर्शन-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३२६॥

**निरशंस अनंत अबाधा, निज बोधन भाव अराधा॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-सम्यक्त्वाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३२७॥

**सम्यक्त्व महा सुखकारी, निज गुण सरूप अविकारी।**
**तुम गुण अनन्त श्रुति गाया, हम सरधत शीश निवाया॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-सम्यक्त्व-गुण-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३२८॥

**निरखेद अछेद अभेदा, सुखरूप सु वीर्य अवेदा॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-वीर्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३२९॥

**निज भोग कलेश न लेसा, यह वीर्य अनन्त अनेसा॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-वीर्य-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३३०॥

**परिणाम सुथिर निज माहीं, उपजै न कलेश कदा ही॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-वीर्य-पर्यायाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३३१॥

**ध्रुव भाव नहिं तुम कैसो, पावे जगवासी न ऐसो॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-वीर्य-द्रव्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३३२॥

**निज ज्ञान-सुधारस पीवत, आनन्द सुभाव सु जीवत॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-वीर्य-गुण-पर्यायाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३३३॥

**अविशेष अनन्त सुभावा, तुम दर्शन माहिं लखावा॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-दर्शन-पर्यायाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३३४॥

**इक बार लखे सब ही को, तद्रूप निजातम ही को॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-दर्शन-पर्याय-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३३५॥

**सपरस आदिक गुण नाहीं, तद्रूप निजातम माहीं॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-ज्ञान-द्रव्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३३६॥

**शरणागत दीनदयाला, हम पूजत भाव विशाला॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३३७॥

**जिन शरण गही शिव पायो, इम शरण महागुण गायो॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३३८॥

**अनुभव निज बोध करावै, यह ज्ञान-शरण कहलावै॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-ज्ञान-गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३३९॥

**दृग मात्र तथा सरधाना, निश्चय शिववास कराना॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-दर्शन-गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३४०॥



**निरभेद सरूप अनूपा, ह्वै शरण तनी शिवभूपा।**
**तुम गुण अनन्त श्रुति गाया, हम सरधत शीश निवाया॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-दर्शन-स्वरूप-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३४१॥

**निज आत्म-सरूप लखाया, इम कारण शिवपद पाया॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-सम्यक्त्व-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३४२॥

**ह्वै आत्म रूप सरधाना, तुम शरण गहे प्रगटाना॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-सम्यक्त्व-स्वरूप-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३४३॥

**निज आतम साधन माहीं, निज पुरुषारथ छुटै नाहीं॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-वीर्य-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३४४॥

**जब आत्मशक्ति प्रगटावै, तब निज स्वरूप जिय पावै॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-वीर्य-स्वरूप-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३४५॥

**परमातम वीर्य महा है, पर निमित्त न लेश जहाँ है॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-वीर्य-परमात्म-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३४६॥

**श्रुत द्वादशांग जिनवानी, निश्चय शिववास करानी॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-द्वादशांग-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३४७॥

**दश पूर्व महा जिनवानी, निश्चय शिववास करानी॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-दशपूर्वांग-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३४८॥

**दश-चार पूर्व जिनवानी, निश्चय शिववास करानी॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-चतुर्दश-पूर्वांग-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३४९॥

**निज आत्म-चरण प्रगटावै, आचार-अंग कहलावै॥ तुम गुण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-आचारांग-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३५०॥

(**रेखता :** तिहारे ध्यान की मूरत, अजब छबि .....)

**विविध संश्यादि तम टारी, निरंतर ज्ञान आचारी।**
**पूर्ण श्रुतज्ञान फल पाया, नमूँ सत्यार्थ उवझाया॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-ज्ञानाचाराय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३५१॥

**पराश्रित भाव विनशाया, सुथिर निजरूप दर्शाया॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-दर्शनाचाराय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३५२॥

**मुक्तिपद दैन अनिवारी, सर्व बुध चरण आचारी॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-चारित्राचाराय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३५३॥

**शुद्ध रत्न त्रय धारी, निजातम रूप अविकारी।**
**पूर्ण श्रुतज्ञान फल पाया, नमूँ सत्यार्थ उवझाया॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-रत्नत्रय-सहिताय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३५४॥

**वो ध्रुव पंचम गती पाई, जन्म फुनि मरण छुटकाई॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-ध्रुव-संसाराय**[१] नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३५५॥

**अनूपम रूप अधिकाई, असाधारण स्वपद पाई॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-एकत्व-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३५६॥

**आन तुम सम न गुण होई, कहो एकत्व गुण सोई॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-एकत्व-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३५७॥

**निजानन्द पूर्ण पद पाया, सोय परमात्म कहलाया॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-एकत्व-परमात्मने** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३५८॥

**उच्चगत मोक्ष का दाता, एक निजधर्म विख्याता॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-एकत्व-धर्माय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३५९॥

**जो तुम चेतनता परकाशी, न पावै ऐसी जगवासी॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-एकत्व-चेतनाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३६०॥

**ज्ञान-दर्शन सरूपी हो, असाधारण अनूपी हो॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-एकत्व-चैतन्य-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३६१॥

**गहै नित निज-चतुष्टय को, मिलै कबहूँ नहीं पर सों॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-एकत्व-द्रव्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३६२॥

**स्वपद अनुभूति सुखरासी, चिदानंद भाव परकासी॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-चिदानन्दाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३६३॥

**अन्त पुरुषार्थ साधक हो, जन्म-मरणादि बाधकहो॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-सिद्धि-साधकाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३६४॥

**स्व-आतमज्ञान दरशाया, ये पूरण ऋद्धि पद पाया॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-ऋद्धि-पूर्णाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३६५॥

**सकल विध मूर्छा त्यागी, तुम्ही निर्ग्रन्थ बड़भागी॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-निर्ग्रन्थाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३६६॥

१. **ध्रुव-संसाराय नमः** अर्थात् सिद्ध भगवाना की ध्रुव गति के लिए नमस्कार



**निजाश्रित अर्थ जग नाहीं, अबाधित अर्थ तुम माहीं॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-अर्थ-निधानाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३६७॥

**न फिर संसार पद पाया, अपूरव बंध विनसाया॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-संसार-निधनाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३६८॥

**आपकल्याणमयराजो,सकलजगवासदुखत्याजो॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-कल्याणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३६९॥

**स्वपर हितकार गुणधारी, परम कल्याण अविकारी॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-कल्याण-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३७०॥

**अहित परिहार पद जो है, परम कल्याण तासो है॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-कल्याण-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३७१॥

**स्वसुख द्रव्याश्रय माहीं, जहाँ कछु पर निमित नाहीं॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-कल्याण-द्रव्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३७२॥

**'जो है सो है' अमित-काला**[१]**, अन्यथा भाव विधि टाला।**

ॐ ह्रीं **पाठक-तत्त्व-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३७३॥

**रहैं निज चेतना माहीं, कहैं चिद्रूप मुनि ताहीं॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-चिद्रूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३७४॥

**सर्वथा ज्ञान परिणामी, प्रगट है चेतना नामी॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-चैतन्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३७५॥

**नहीं अन्यत्व-भेदा है, गुणी-गुण निरविछेदा है॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-चैतन्य-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३७६॥

**घटाघट वस्तु परकासी, धरे है जोत प्रतिभासी॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-ज्योति-प्रकाशाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३७७॥

**वस्तु सामान्य अवलोका, है जुगपद् दर्श सिद्धों का॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-दर्शन-चैतन्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३७८॥

**विशेषण युक्त साकारा, ज्ञान द्युत में प्रगट सारा॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-ज्ञान-चैतन्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३७९॥

**ज्ञान सों जीव नामी है, भेद-समवाय स्वामी है॥ पूर्ण.॥**

ॐ ह्रीं **पाठक-जीव-विदे** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३८०॥

१. **अमित-काला** अर्थात् असीमित काल

**चराचर वस्तु स्वाधीना, एक ही समय लख लीना।**
**पूर्ण श्रुतज्ञान फल पाया, नमूँ सत्यार्थ उवझाया॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-वीर्य-चैतन्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३८१॥

**सकलजीवों के सुखकारन, शरण तुम ही हो अनिवारन॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-सकल-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३८२॥

**तुम हि त्रय लोक हितकारी, अदुत्ये शरण[1] बलिहारी॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-त्रिलोक-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३८३॥

**तुम्हारी शरण तिहुँ काला, करन जगजीव प्रतिपाला॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-त्रिकाल-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३८४॥

**शरण अनिवार सुखदाई, प्रगट सिद्धांत में गाई॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-मंगल-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३८५॥

**लोक में धर्म विख्याता, सो तुम ही में है सुखदाता॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-लोक-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३८६॥

**जोग बिन आस्रव नाहीं, भये निर-आस्रव ताहीं॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-आस्रव-विदे** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३८७॥

**आस्रव कर्म का होना, कार्य था आपका खोना[2]॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-आस्रव-विनाशाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३८८॥

**तत्त्व निर्बाध उपदेशा, विनाशे कर्म परवेशा[3]॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-आस्रवोपदेश-छेदकाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३८९॥

**प्रकृति सब कर्म की चूरी, भावमल नाश दुख पूरी॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-बंध-मुक्ताय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३९०॥

**न फिर संसार अवतारा, बंध-विधि अन्त कर डारा॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-बन्धान्तकाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३९१॥

**आसरव कर्म दुखदाई, रुके संवर यह सुखदाई॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-संवराय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३९२॥

**सर्वथा जोग विनशाया, स्व-संवर रूप दरशाया॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-संवर-रूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३९३॥

**भाव में कलुषता नाहीं, भये संवर-करण ताहीं॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-संवर-करणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३९४॥

१. अद्वितीय शरण २. रोकना ३. प्रवेशा



**कुपरणति राग-रुस नासन, निर्जरा रूप प्रतिभासन॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-निर्जरा-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३९५॥

**काम-दव-दाह जग सारा, आप तिस भस्म कर डारा॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-कन्दर्प-छेदकाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३९६॥

**चहुँ विध बंध-विधि चूरा, यह विस्फोटक कहो पूरा॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-कर्म-विस्फोटकाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३९७॥

**दऊ विधि कर्म का खोना, सोइ है मोक्ष का होना॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-मोक्षाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३९८॥

**द्रव्य वा भाव मल टारा, नमूँ शिवरूप सुखकारा॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-मोक्ष-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ३९९॥

**अरति-रति पर निमित खोई, आत्मरति है प्रगट सोई॥ पूर्ण.॥**
ॐ ह्रीं **पाठक-आत्म-रताय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४००॥

## साधु परमेष्ठी के ११२ अर्घ्य

(**लोलतरङ्ग / बड़ी चौपाई :** घर घर आनन्द छायो .....)

**ठाईस मूल सदा गुणधारी, सो सब साधु वरें शिवनारी।**
**साधु भये शिव-साधनहारे, सो तुम साधु हरो अघ म्हारे॥**
ॐ ह्रीं **सर्व-साधुभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४०१॥

**मूल तथा सब उत्तर गाये, ये गुण पालत साधु कहाये॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **सर्व-साधु-गुणेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४०२॥

**साधुन ही गुण साधु हि जानो, होत गुणी गुण ही परमानो॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **सर्व-साधु-गुण-स्वरूपेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४०३॥

**नेम थकी शिववास करे जो, द्रव्य थकी शिवरूप कहेसो॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **सर्व-साधु-द्रव्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४०४॥

**जीवसदाचिद्भाव विलासी, आप हि आप सधै शिवरासी॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-गुण-द्रव्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४०५॥

**ज्ञानमई निज ज्योत प्रकासी, भेद विशेष सर्व प्रतिभासी॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-ज्ञानाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४०६॥

**एक हि बार लखाय अभेदा, दर्शन को सब रोक विछेदा॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-दर्शनाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४०७॥

**आप हि साधन-साध्य तुम्ही हो, एक-अनेक अभेद तुम्ही हो।**
**साधु भये शिव-साधनहारे, सो तुम साधु हरो अघ म्हारे॥**
ॐ ह्रीं **साधु-द्रव्य-भावाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४०८॥

**चेतनता निज-वान न छारे, रूप-सपर्शन ओगुण[१] धारे॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-द्रव्य-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४०९॥

**जो उत्त पद[२] भयो इकबारा, सो निरबाध रहै अविकारा॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-वीर्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४१०॥

**है परिणाम अभिन्न परिणामी, सो तुम साधु भये शिवगामी॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-द्रव्य-पर्यायाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४११॥

**जो गुण वा पर्याय धरो हो, सो निज माहिं अभिन्न वरो हो॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-द्रव्य-गुण-पर्यायाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४१२॥

**मंगलमय तुम नाम कहावै, लेत हि नाम सु पाप नशावै॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-मंगलाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४१३॥

**मंगल रूप अनूपम सोहै, ध्यान किये निज आनंद होहै॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-मंगल-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४१४॥

**पाप मिटै तुम शरण गहे ते, मंगल शरण कहायत हेते[१]॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-मंगल-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४१५॥

**देखत ही सब पाप नसे हैं, आनन्द मंगलरूप लसे हैं॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-दर्शन-मंगलाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४१६॥

**जानत हैं तुमको मुनि नीके, पाप कलाप मिटें उन ही के॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-ज्ञान-मंगलाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४१७॥

**ज्ञानमई तुम है गुण ऐसा, मंगल जोत धरै रवि जैसा॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-ज्ञानगुण-मंगलाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४१८॥

**मंगल वीर्य तुम्हीं दर्शाया, काल अनंत न पाप लगाया॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-वीर्य-मंगलाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४१९॥

१. हे प्रभु! यद्यपि प्रत्येक आत्मा अपने चेतनस्वरूप (निजवान) को नहीं छोड़ता, तथापि संसार अवस्था में कर्मजनित शरीर आदि के संयोग में दिखाई देना (रूप), स्पर्शित होना (स्पर्शन) आदि अवगुणों (औगुण / दोषों) को धारण करता है।
२. उत्तम / उच्च पद



**वीर्य महा सुखरूप निहारा, पाप बिना नित ही अविकारा॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-वीर्य-मंगल-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४२०॥

**मंगल वीर्य महा गुणधामी, निज पुरुषार्थ हि मोक्ष लहामी॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-वीर्य-गुण-मंगलाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४२१॥

**वीर्य स्वभाविक पूर्ण तिहारा, कर्म नशाय भये भव पारा॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-वीर्य-द्रव्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४२२॥

**तीन हि लोक लखे सब जोई, आप समान न उत्तम कोई॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तमाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४२३॥

**लोक सभी विधि-बन्धन माहीं, उत्तम रूप धरो तुम नाहीं[१]॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४२४॥

**लोकन के गुण पाप-कलेशा, उत्तम रूप नहीं तुम जैसा॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-गुण-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४२५॥

**लोक-अलोक-निहारक नामी, उत्तम द्रव्य तुम्हीं अभिरामी॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-द्रव्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४२६॥

**लोक सभी षट् द्रव्य रचाया, उत्तम द्रव्य तुम्हीं हम पाया॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-द्रव्य-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४२७॥

**ज्ञानमई चित उत्तम सोहै, रासुन[१] लोक विषैं अरु कोहै॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-ज्ञानाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४२८॥

**ज्ञान स्वरूप सुभाव तिहारा, उत्तम लोक कहै इम सारा।**
ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-ज्ञान-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४२९॥

**देखन में कछु आड़ न आवे, लोक तनी सब उत्तम गावे॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-दर्शनाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४३०॥

**देखन-जानन भाव धरो हो, उत्तम लोक कहे सगरो[२] हो॥ साधु.॥**
ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-ध्यानाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४३१॥

१. हे प्रभु! आपने भी पूर्व में लोक के कर्मजनित बन्धनों की अवस्था में उत्तम रूप धारण किया है अर्थात् साधु बनने के पश्चात् एवं मोक्षमार्ग की साधना करने के पश्चात् सभी बन्धनों से छूटने के बाद ही आपको उत्तम रूप प्राप्त हुआ है।
२. सगरो हो अर्थात् हे प्रभु! आप सम्पूर्ण हो, सर्वज्ञ-सर्वदर्शी हो।

**जाकर लोक-शिखा पद धारा, उत्तम धर्म कहो जग सारा॥ साधु. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-धर्माय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४३२ ॥

**धर्म स्वरूप निजातम माई, उत्तम लोक विषैं ठहराई॥ साधु. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-धर्म-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४३३ ॥

**अन्य सहाय न चाहत जाको, उत्तम लोक कहैं बल ताको॥ साधु. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-वीर्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४३४ ॥

**उत्तम वीर्य सरूप निहारा, साधन मोक्ष कियो अनिवारा॥ साधु. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-वीर्य-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४३५ ॥

**पूरण आत्मकला परकासी, लोकविषैं अतिशय अविनासी॥ साधु. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तमातिशय-सम्पन्नाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४३६ ॥

**राग-विरोध न चेतन माहीं, ब्रह्म कहो जग उत्तम ताहीं॥ साधु. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-ब्रह्म-ज्ञानाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४३७ ॥

**ज्ञान-स्वरूप अकम्प अटाला[१], पूरण ब्रह्म-प्रकाश अझोला[२]॥ साधु. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-ब्रह्म-ज्ञान-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि.स्वा.॥ ४३८ ॥

**राग-विरोध जयो शिवगामी, आत्म-अनातम अन्तरयामी॥ साधु. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-जिनाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४३९ ॥

**भेद बिना गुणभेद धरो हो, सांख्य कुवादिक पक्ष हरो हो॥ साधु. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-गुण-सम्पन्नाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४४० ॥

**साधत अन्तिम पौर्ष-सखाई[३], उत्तम पुरुष कहो जगताई॥ साधु. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-पुरुषाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४४१ ॥

**साधु समान न दीन-दयाला, शरण गहै सुख होत विशाला॥ साधु. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४४२ ॥

**जे जन साधु सुशरण गही है, ते शिव आनन्द लक्ष लही है॥ साधु. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-लोकोत्तम-गुण-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४४३ ॥

**साधुन के गुण-द्रव्य चितारे, होत महासुख शरण उभारे॥ साधु. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-गुण-द्रव्य-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४४४ ॥

१. राशि / ढ़ेर २. आड़-आवरण-बाधा रहित ३. पुरुषार्थरूपी साथी



(**लावनी** : हे सीमन्धर भगवान! शरण ली तेरी .....)

**तुम चितवत वा अवलोकत वा सरधानी।**
**इम शरण गहै पावै निश्चय शिवरानी॥**
**निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजे।**
**मैं नमूँ साधु सम सिद्ध अकम्प विराजे॥**

ॐ ह्रीं **साधु-दर्शन-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४४५ ॥

**तुम अनुभव कर शुद्धोपयोग मन धारा।**
**यह ज्ञान-शरण पायो निश्चय भव-पारा ॥ निज. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-ज्ञान-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४४६ ॥

**निज आत्मरूप में दृढ़ सरधा तुम पाई।**
**थिर रूप सदा निवसो शिववास कराई॥ निज. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-आत्म-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४४७ ॥

**तुम निराकार निरभेद अछेद अनूपा।**
**तुम निरावरण निरद्वंद स्वदर्श सरूपा॥ निज. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-दर्शन-स्वरूप-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४४८ ॥

**तुम परम पूज्य परमेश परम पद पाया।**
**हम शरण गही पूजैं नित मन-वच-काया॥ निज. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-परमात्म-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४४९ ॥

**तुम मन-इन्द्रिय व्यापार जीत सु अभीता।**
**हम शरण गही मनु आज कर्मरिपु जीता॥ निज. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-जितात्म-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४५० ॥

**भववास दुखी जे शरण गहैं तुम मन में।**
**तिनको अवलम्ब उभारो भयहर! छिन में॥ निज. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-वीर्य-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४५१ ॥

**दृग-बोध अनन्तानन्त धरो निरखेदा।**
**तुम बल अपार शरणागत विघ्न-विछेदा॥ निज. ॥**

ॐ ह्रीं **साधु-वीर्यात्म-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४५२ ॥

**निज ज्ञानानन्दी महालक्ष्मी सोहै।**
**सुर-असुर नमें नित परम मुनी मन मोहै[१]॥ निज. ॥**

१. हे परम मुनि! आपको सुर-असुर नमस्कार करते हैं और आप सबका मन मोहते हैं।

ॐ ह्रीं **साधु-लक्ष्मी-अलंकृताय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४५३॥

**भववास महा दुखरास ताहि विनशाया।**
**अविछीन-लीन स्वाधीन महासुख पाया॥**
**निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजे।**
**मैं नमूँ साधु सम सिद्ध अकम्प विराजे॥**

ॐ ह्रीं **साधु-लक्ष्मी-परिणताय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४५४॥

**त्रिभुवन का ईश्वरपना तुम्हीं में पाया।**
**त्रिभुवन के पातक हरौ मनू रवि-छाया[१]॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-लक्ष्मी-रूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४५५॥

**तुम काल अनन्तानन्त अबाध विराजो।**
**पर निमित विकार निवार सुनित्य सु छाजो॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-ध्रुवाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४५६॥

**तुम क्षायक लब्धि-उपाय परम गुणधारी।**
**निवसो निज आनंद मांहि अचल अविकारी॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-गुण-ध्रुवाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४५७॥

**तेरम-चौदम गुणथान द्रव्य है जैसो।**
**रहै काल अनन्तानन्त शुद्धता तैसो॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-द्रव्य-ध्रुवाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४५८॥

**फिर जन्म-मरण नहिं होय जन्म वो पाया।**
**संसार-विलक्षण स्व-अपूर्व पद पाया॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-द्रव्योत्पादाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४५९॥

**सूक्षम अलब्ध अपर्याप्त निगोद शरीरा।**
**ते तुच्छ द्रव्य कर नाशि भये भवतीरा॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-द्रव्य-व्ययाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४६०॥

**रागादिक परिग्रह टार तत्त्व सरधानी।**
**इम साधु जीव निज साधत शिवसुखदानी॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-जीवाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४६१॥

१. हे प्रभु! जैसे, रवि, छाया अर्थात् अन्धकार का हरण करता है, उसीप्रकार आप त्रिभुवन के पातक हरण करो।



**स्वसंवेदन विज्ञान परम अमलाना।**
**अरु इष्ट-अनिष्ट विकल्प-जाल दुखसाना॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-जीव-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४६२॥

**देखन-जानन चेतन-सरूप अविकारी।**
**गुण-गुणी भेद महि अन्य भेद विभचारी[१]॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-चैतन्य-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४६३॥

**चेतन की परिणति रहै सदा चित माहीं।**
**ज्यों सिंधु लहर हो सिंधु और कछु नाहीं॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-चैतन्य-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४६४॥

**चेतन-विलास सुखरास नित्य परकासी।**
**सो साधु दिगम्बर साध भये अविनासी॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-चैतन्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४६५॥

**तुम असाधारण परमातम पद परकासा।**
**नहिं अन्य जीव यह लहै गहै भववासा॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-परमात्म-प्रकाशाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४६६॥

**तुम मोह-तिमिर बिन स्वयं सूर्य परकासा।**
**गुण-द्रव्य-पर्य सब भिन्न-भिन्न प्रतिभासा॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-ज्योति-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४६७॥

**ज्यों घट-पटादि दीपक की ज्योत दिखावै।**
**त्यों ज्ञानज्योत सब भिन्न-भिन्न दरसावै॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-ज्योति-प्रदीपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४६८॥

**सामान्य रूप अवलोकन युगपत् सारा।**
**तुम दर्श-जोति प्रदीप हरै अंधयारा॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-दर्शन-ज्योति-प्रदीपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४६९॥

**साकार रूप सु विशेष ज्ञान-द्युति माहीं।**
**युगपत् कर प्रतिबिंब वस्तु प्रगटाई॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-ज्ञान-ज्योति-प्रदीपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४७०॥

१. हे प्रभु! गुण-गुणी भेद के अलावा अन्य भेद व्यभिचार नामक दोष से दूषित हैं।

**जे अर्थजन्य कहै ज्ञान वो झूठे वादी।**
**है स्व-परप्रकाशक आतम-ज्योत अनादी॥**
**निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजे।**
**मैं नमूँ साधु सम सिद्ध अकम्प विराजे॥**

ॐ ह्रीं **साधु-आत्म-ज्योतिषे** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४७१॥

**हैं तारन-तरन जहाज अथित[१] भवसागर।**
**हम शरन गाहि पावें शिववास उजागर॥**

ॐ ह्रीं **साधु-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४७२॥

**सामान्य रूप सब साधु मुक्तिमग साधैं।**
**हम पावें निज पद नेम रूप आराधैं॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-सर्व-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४७३॥

**त्रसनाड़ी ही में तत्त्वज्ञान सरधानी।**
**कर साधे सो निश्चय पावै शिवरानी॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-लोक-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४७४॥

**तिहुँ लोक करन हित वरते तिन उपदेशा।**
**हम शरण गही मेटो भववास कलेशा॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-त्रिलोक-शरणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४७५॥

**संसार विषम दुखकार असार अपारा,**
**तिस छेदक वेदक स्वपद सुखद हितकारा॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-संसार-छेदकाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४७६॥

**यद्यपि इक क्षेत्र अवगाह अभिन्न विराजे।**
**तद्यपि निज सत्ता माहिं भिन्नता साजे॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-एकत्वाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४७७॥

**यद्यपि सब ही सामान्य सु पूरण ज्ञानी।**
**तद्यपि निज आश्रय भाव-भिन्न परनामी॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-एकत्व-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४७८॥

**है असाधारण एकत्व द्रव्य तुम माहीं।**
**तुम सम संसार मंझार और कोउ नाहीं॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-एकत्व-द्रव्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४७९॥

१. अस्थिर / अशान्त / डाँवाडोल





**यद्यपि सब ही हो असंख्यात परदेसी।**
**तद्यपि निज में निजरूप स्वद्रव्य स्वदेसी॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-एकत्व-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४८०॥

**सामान्यरूप सब ब्रह्म कहावे ज्ञानी।**
**तिनमें तुम वृषभ सु परम ब्रह्म परमानी॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-परम-ब्रह्मणे** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४८१॥

**सापेक्ष एक ही कहै सु नय-विस्तारा।**
**तुम भाव प्रगट कर कहै सु निश्चयकारा॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-स्याद्वादाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४८२॥

**है ज्ञान-निमित इम वचन-जाल परमाना।**
**है वाचक-वाच्य संयोग ब्रह्म कहलाना॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-शब्द-ब्रह्मणे** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४८३॥

**षट् द्रव्य निरूपण करे सोई आगम हो।**
**तिसके तुम मूल निधान सु परमागम हो॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-परमागमाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४८४॥

**तीर्थेश कहे सर्वज्ञ दिव्यधुनि माहीं।**
**तुम गुण अपार इम कहो जिनागम ताहीं॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-जिनागमाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४८५॥

**तुम नाम प्रसिद्ध अनेक अर्थ का वाची।**
**ताके प्रबोध सों हो प्रतीत मन सांची॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-अनेकार्थाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४८६॥

**लोभादिक मेटे बिन न शौचता होई।**
**है वृथा तीर्थ-स्नान करो व्हां काई॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-शुचित्वाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४८७॥

**है मिथ्या मोह प्रबल मल इनका खोना।**
**सो शुद्ध शौच गुण यही न तन का धोना॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-शुचि-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४८८॥

**इकदेश कर्ममल-नाश पवित्र कहायो।**
**तुम सर्व कर्ममल-नाशि परमपद पायो॥ निज.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-परम-पवित्राय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ ४८९॥

**तुम रहो बन्ध सों दूरि एकांत सुखाई।**
**ज्यों नभ अलिप्त सब लाख रहो तिस माहीं॥**
**निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजे।**
**मैं नमूँ साधु सम सिद्ध अकम्प विराजे॥**

ॐ ह्रीं **साधु-पवित्राय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४९०॥

**सब द्रव्य-भाव-नोकर्म बंध छुटकाया।**
**तुम शुद्ध निरंजन निज-सरूप थिर पाया॥**

ॐ ह्रीं **साधु-बन्ध-विविक्ताय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४९१॥

(**अडिल्ल :** जिनवाणी जिनवाणी ध्याना सभी .....)

**भावास्त्रव बिन अतिशय सहित अबंध हो।**
**मेघ-पटल बिन ज्यों रवि-किरण अमंद हो॥**
**मोक्षमार्ग वा मोक्ष-श्रेय सब साधु हैं।**
**नमत निरंतर हमहुँ कर्म-रिपु को दहैं॥**

ॐ ह्रीं **साधु-बन्ध-प्रतिबन्धकाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४९२॥

**तुम स्वरूप में लीन परम संवर करैं।**
**यह कारण अनिवार कर्म-आवन हरैं॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-संवर-कारणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४९३॥

**पुद्गलीक परिणाम आठ विध कर्म हैं।**
**तिनकी करत निर्जरा शुद्ध सु परम हैं॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-निर्जरा-द्रव्याय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४९४॥

**परम शुद्ध उपयोगरूप वरते जहाँ।**
**छिन में नन्तानन्त कर्म खिरहैं तहाँ॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-निर्जरा-निमित्ताय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४९५॥

**सकल विभाव अभाव निर्जरा करत है।**
**ज्यों रवि-तेज प्रचण्ड सकल तम हरत है॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-निर्जरा-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४९६॥

**जे संसार-निमित ते सब दुखरूप हैं।**
**तुम निमित्त शिवकारण शुद्ध अनूप हैं॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-संसार-निमित्त-मुक्ताय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४९७॥



**संशय रहित सुनिश्चित सन्मतदाय हो।**
**मिथ्या भ्रम-तम नाशन सहज उपाय हो॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-बुद्ध-धर्माय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४९८॥

**अतिविशुद्ध निज ज्ञानस्वभाव सुधरत हो।**
**भव्यन के संशय आदिक तम हरत हो॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-बोध-गुणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४९९॥

**अविनाशी अविकार परम शिवधाम हो।**
**पायो सो तुम सुगत महा अभिराम हो॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-सुगत-भावाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥५००॥

**जासों परे न और जन्म वा मरण हो।**
**सो उत्तम उत्कृष्ट परम गति को लहो॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-परगत-भावाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥५०१॥

**पर-निमित्त सों रागादिक परिनाम है।**
**इनसों रहित विभाव इसी से नाम है॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-विभाव-रहिताय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥५०२॥

**निज सुभाव सामर्थ सु प्रभुता पाइयो।**
**इन्द्र-फनेन्द्र-नरेन्द्र शीश निज नाइयो॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-स्वभाव-सहिताय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥५०३॥

**कर्मबन्ध सों रहित सोई शिवरूप हैं।**
**निवसें सदा अबंध स्वशुद्ध अनूप हैं॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-मोक्ष-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥५०४॥

**सकल द्रव्य-पर्याय विषैं स्वज्ञान हो।**
**सत्यारथ निश्चल निश्चय परमाण हो॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-प्रमाणाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥५०५॥

**तीन लोक के पूज्य यतीजन ध्यावहीं।**
**कर्म-शत्रु को जीत अर्ह पद पावहीं॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-अर्हत्-स्वरूपाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥५०६॥

**परम इष्ट शिव साधत सिद्ध कहाइयो,**
**तीन लोक परमेष्ठि परमपद पाइयो॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-सिद्ध-परमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥५०७॥

**शिवमारग प्रगटावन कारण हो तुम्हीं।**
**भविजन पतित-उभारन तारन हो तुम्हीं॥**
**निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजे।**
**मैं नमूँ साधु सम सिद्ध अकम्प विराजे॥**

ॐ ह्रीं **साधु-सूरि-प्रकाशिने** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥५०८॥

**स्व-पर सुहित कर परम बुद्धि भरतार हो।**
**ध्यान धरत आनंद-बोध दातार हो॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-उपाध्यायाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥५०९॥

**पंच परम गुरु प्रगट तुम्हारो नाम है।**
**भेदाभेद सुभाव सु आतमराम है॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व-साधुभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि.॥५१०॥

**लोकालोक सु व्यापक ज्ञानस्वभाव तें।**
**तद्यपि निजपद लीन विहीन विभाव तें॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-आत्मरताय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥५११॥

**रतनत्रय निजभाव विशेष अनन्त हैं।**
**पंच परम गुरु भये नमें नित 'सन्त' हैं॥ मोक्षमार्ग.॥**

ॐ ह्रीं **साधु-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व-साधु-रत्नत्रयात्मकमनन्तगुणेभ्यो** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा॥५१२॥

## पूर्णार्घ्य

**पंच परम गुरु नाम विशेषण को धरैं,**
**तीन लोक में मंगलमय आनन्द करैं।**
**पूरण कर थुति नाम अन्त सुख-कारणं,**
**पूजूँ हूँ युतभाव सुअर्घ उतारणं॥**

ॐ ह्रीं अर्हं **द्वादशाधिकपंचशतदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो** नमः, पूर्णार्घ्यं नि.स्वा.।

## ।।अथ आरती ( जयमाल )।।

(**दोहा** : देव-शास्त्र-गुरु रतन शुभ .....)

**रत्नत्रयभूषित महा, पंच सुगुरु शिवकार।**
**सकल सुरेन्द्र नमें नमूँ, पाऊँ सो गुणसार॥**



*(**पद्धरि** : हे मोह महादल-दलन वीर .....)*

**जय महा-मोह-दल दलन सूर, जय निर्विकल्प आनंद पूर।**
**जय दउ विधि कर्म-विमुक्त देव, जय निजानंद स्वाधीन एव॥**
**जय संशयादि भ्रम-तम-निवार, जय स्वात्मशक्ति-द्युतियुति अपार।**
**जय युगपद् सकल प्रत्यक्ष लक्ष, जय निरावर्ण निर्मल अनक्ष॥**
**जय जय जय सुखसागर अगाध, निरद्वंद निरामय निर-उपाध।**
**जय मनस-वचस व्यापार नाश, जय थिर-सरूप निजपद प्रकाश॥**
**जय पर-निमित्त सुख-दुख निवार, निरलेप निराश्रय निर्विकार।**
**निज में पर को, पर में न आप, परवेश न होत नित निर-मिलाप॥**
**तुम धरम परम आराध्य सार, निज सम कर कारण दुर्निवार।**
**तुम पंच परम आचार युक्त, नित भक्त वर्ग दातार मुक्त॥**
**एकादशांग सर्वांग पूर्व, स्व-अनुभव पायो फल अपूर्व।**
**अन्तर-बाहर परिग्रह नसाय, परमारथ साधू पद लहाय॥**
**हम पूजत नित्य उर भक्ति ठान, पावें निश्चय शिवपद महान।**
**ज्यों शशि-किरणावलि सियर पाय, मणि चंद्रकांति द्रवता लहाय॥**

(**धत्ता** : हे परम दिगम्बर मुद्रा जिनकी .....)

**जय भव-भयहारं बंध-विडारं, सुखसारं शिव-करतारं।**
**नित सन्त सु ध्यावत, पाप-नसावत, पावत निज पद अविकारं॥**

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशाधिकपंचशतदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं.।

(**सोरठा** : निर्ग्रन्थों का मार्ग हमको .....)

**तुम गुण अमल अपार, अनुभव तें भव-भय नशै।**
**'सन्त' सदा चित धार, शांति करो भव-तप हरो॥**

*( इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत् )*

***'ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा'***

*- इस शान्ति-मन्त्र की प्रतिदिन सामूहिक एक जाप करें।*

***।। इति सप्तम पूजा सम्पूर्णम् ।।***

# ।। अथ अष्टम पूजन।।

(एक हजार चौबीस गुण सहित)

## ।। स्थापना।।

(छप्पय : तर्ज - प्रिय चैतन्यकुमार सदा .....)

**ऊरध अधो सु रेफ, सबिंदु हकार विराजे।**
**अकारादि स्वर-लिप्त, कर्णिका अन्त सु छाजे॥**
**वर्गन-पूरित वसु-दल-अम्बुज तत्त्व-संधि धर।**
**अग्र भाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर॥**
**पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत ही अरि नाग को।**
**ह्वै केहर सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो।।**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्र-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः** ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्र-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः** ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं **चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्र-गुणसंयुक्त-सिद्धचक्राधिपतयः सिद्धपरमेष्ठिनः** ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

*(दोहा)*

**सूक्ष्मादि गुण सहित हैं, कर्म रहित निररोग।**
**सिद्धचक्र सो थापहूँ, मिटै उपद्रव योग॥**

*( इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् )*

## अथाष्टकं

(**गीता** : साधना के रास्ते, आत्मा के वास्ते .....)

**निज आत्मरूप सु तीर्थ-मग नित, सरस आनंदधार हो।**
**नाशे त्रिविध मल सकल दुखमय, भव-जलधि के पार हो॥**
**यातैं उचित ही है जु तुम-पद, नीर सों पूजा करूँ।**
**इक सहस अरु चौबीस गुण गण, भावयुत मन में धरूँ॥**

ॐ ह्रीं **चतुर्विंशत्यधिकैक-सहस्र-गुण-संयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं** निर्वपामीति स्वाहा।



**शीतल-सरूप सुगन्ध चन्दन, एक भव-तप-नास ही।**
**सो भव्य मधु-कर प्रिय यह नहिं, और ठौर सुवास ही॥**
**यातैं उचित ही है जु तुम पद, मलय सों पूजा करूँ।॥ इक.॥**

ॐ ह्रीं **चतुर्विंशत्यधिकैक-सहस्र-गुण-संयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने संसार-ताप-विनाशनाय चन्दनं** निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षय अबाधित आदि-अन्त, समान स्वच्छ सुभाव हो।**
**ज्यों तुष बिना तंदुल दिपै, त्यों निखिल अमल प्रभाव हो॥**
**यातैं उचित ही है जु तुम पद, अक्षतं पूजा करूँ।॥ इक.॥**

ॐ ह्रीं **चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्र-गुणसंयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अक्षय-पद-प्राप्तये अक्षतं** निर्वपामीति स्वाहा।

**गुण पुष्पमाल विशाल तुम, भवि कंठ पहिरैं भाव सों।**
**जिनके मधुप-मन-रसिक लुब्धित, रमत नित प्रति चाव सों॥**
**यातैं उचित ही है जु तुम पद, पुष्प सों पूजा करूँ।॥ इक.॥**

ॐ ह्रीं **चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्र-गुणसंयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने काम-बाण-विनाशनाय पुष्पं** निर्वपामीति स्वाहा।

**शुद्धात्म सुरस सुपाक मधुर, समान और न रस कहीं।**
**ताके हो आस्वादी सो तुम सम, और संतुष्टित नहीं॥**
**यातैं उचित ही है जु तुम पद, चरुन सों पूजा करूँ।॥ इक.॥**

ॐ ह्रीं **चतुर्विंशत्यधिकैक-सहस्र-गुण-संयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

**स्व-पर प्रकाश स्वभाव धर ज्यों, निज-स्वरूप संभारते।**
**त्यूँ ही त्रिकाल अनन्त द्रव-पर्याय प्रगट निहारते॥**
**यातैं उचित ही है जु तुम पद, दीप सों पूजा करूँ।॥ इक.॥**

ॐ ह्रीं **चतुर्विंशत्यधिकैक-सहस्र-गुण-संयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं** निर्वपामीति स्वाहा।

**वर ध्यान-अग्नि जराय वसु विधि, ऊर्ध्वगमन स्वभाव तैं।**
**राजैं अचल शिव-थान नित तिह, धर्मद्रव्य अभाव तें॥**
**यातैं उचित ही है जु तुम पद, धूप सों पूजा करूँ।॥ इक.॥**

ॐ ह्रीं **चतुर्विंशत्यधिकैक-सहस्र-गुण-संयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अष्ट-कर्म-दहनाय धूपं** निर्वपामीति स्वाहा।

**सर्वोत्कृष्ट सु पुण्य-फल, तीर्थेश पद पायो महा।**
**तीर्थेश पद को स्वरुचि वर, अव्यय अमर शिव-फल लहा॥**
**यातैं उचित ही है जु तुम-पद, फलन सों पूजा करूँ।**
**इक सहस अरु चौबीस गुण गण, भावयुत मन में धरूँ॥**

ॐ ह्रीं **चतुर्विंशत्यधिकैक-सहस्र-गुण-संयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोक्ष-फल-प्राप्तये फलं** निर्वपामीति स्वाहा।

**अष्टांग मूल सु विधि हरो, निज अष्ट गुण पायो सही।**
**अष्टार्द्ध गति संसार मेटि, सु अचल ह्वै अष्टम मही॥**
**यातैं उचित ही है जु अठविध, अर्घ्य सों पूजा करूँ।॥ इक.॥**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्र-गुणसंयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने **अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

(**गीता/रेखता :** तर्ज - प्रभु पतित पावन मैं अपावन .....)

**निर्मल सलिल शुभवास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी।**
**शुभ पुष्प मधुकर नित रमें चरु, प्रचुर स्वाद सुविध घनी॥**
**वर दीपमाल उजाल धूपायन रसायन फल भले।**
**कर अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्म-दल सब दलमले॥ १॥**
**ते क्रमवर्त नशाय युगपत्, ज्ञान निर्मलरूप है।**
**दुख जन्म टार अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप है॥**
**कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अदूज शिवकमलापती।**
**मुनि ध्येय-सेय-अभेय चहुँ गुण गेह द्यो हम शुभमती॥ २॥**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकैकसहस्र-गुणसंयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने **सर्व-सुख-प्राप्तये महार्घ्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

## ।। अथ सिद्धों के एक हजार चौबीस गुण सम्बन्धी अर्घ्य।।

सिद्ध भगवान के 'जिन' विशेषण सम्बन्धी अर्घ्य

(**दोहा :** चिदानन्द स्वातमरसी .....)

**इन्द्रिय-विषय-कषाय हैं, अन्तर शत्रु महान।**
**तिनको जीतत 'जिन' भये, नमूँ सिद्ध भगवान॥**

ॐ ह्रीं **जिनाय सिद्धपरमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

**रागादिक जीते सु 'जिन', तिनमें तुम परधान।**
**तातैं नाम 'जिनेन्द्र' है, नमूँ सदा धरि ध्यान॥**

ॐ ह्रीं **जिनेन्द्राय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।





**रागादिक लवलेश बिन, शुद्ध निरंजन देव।**
**'पूरण जिन' पद तुम विषैं, राजत हो स्वयमेव॥**

ॐ ह्रीं **जिनराजपूर्णाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

**बाह्य शत्रु उपचरित को, जीतत जिन नहिं होय।**
**अन्तर शत्रु प्रबल जये, 'उत्तम जिन' है सोय॥**

ॐ ह्रीं **जिनोत्तमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

**इन्द्रादिक पूजत चरन, सेवत हैं तिहुँ काल।**
**गणधरादि श्रुतकेवली, 'जिन' आज्ञा निज भाल॥**

ॐ ह्रीं **जिनराज्ञे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

**गणधरादि सत्पुरुष जे, वीतराग निरग्रंथ।**
**तुमको सेवत 'जिन' भये, साधत हैं शिवपंथ॥**

ॐ ह्रीं **जिनाधिपाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

**एकदेश 'जिन' सर्व मुनि, सर्व भाव अरहंत।**
**द्रव्य-भाव सर्वातमा, नमूँ सिद्ध भगवंत॥**

ॐ ह्रीं **जिनाधीशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

**गणधरादि सेवत चरन, शुद्धातम लवलाय।**
**तीन लोक 'स्वामी' भये, नमूँ सिद्ध अधिकाय॥**

ॐ ह्रीं **जिनस्वामिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

**नमत सुरासुर जिन चरन, तीन काल धरि ध्यान।**
**सिद्ध 'जिनेश्वर' मैं नमूँ, पाऊँ शिवसुख-थान॥**

ॐ ह्रीं **जिनेश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

**तीन लोक तारण-तरण, तीन लोक विख्यात।**
**सिद्ध महा 'जिन-नाथ' हैं, सेवत पाप नशात॥**

ॐ ह्रीं **जिननाथाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

**एकदेश श्रावक तथा, सर्वदेश मुनिराज।**
**तिन प्रति रक्षक हो महा, सिद्ध सु पुण्य समाज॥**

ॐ ह्रीं **जिनपतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।११।।

**त्रिभुवन शिखा-शिरोमणी, 'राजत' सिद्ध अनंत।**
**शिवमारग प्रसिद्ध कर, नमत भवोदधि अंत॥**

ॐ ह्रीं **जिनराजाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२।।

**'जिन-आज्ञा' त्रिभुवन विषैं, वरते सदा अखण्ड।**
**मिथ्यामति दुरपक्ष को, देत नीति सों दण्ड॥**

ॐ ह्रीं **जिनाधिराजे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १३।।

**तीन लोक परिपूर्ण है, लोकालोक प्रकाश।**
**राजत हैं 'विस्तीर्ण-जिन', नमूँ हरो भववास॥**

ॐ ह्रीं **जिनविभवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १४।।

**आत्मज्ञ 'जिन' नमत हैं, शुद्धातम के हेत।**
**'स्वामी' हो तिहुँ लोक के, नमूँ वसे शिव-खेत॥**

ॐ ह्रीं **जिनभर्त्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १५।।

**मिथ्या मति को नाश करि, 'तत्त्वज्ञान-परकास'।**
**दीप्ति रूप रवि सम सदा, करो सदा उर-वास॥**

ॐ ह्रीं **जिनतत्त्वप्रकाशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १६।।

**कर्मशत्रु जीते सु 'जिन', तिनके स्वामी सार।**
**'धर्ममार्ग-प्रगटात' हैं, शुद्ध सुलभ सुखकार॥**

ॐ ह्रीं **जिननेत्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १७।।

**अव्रत सम्यग्दृष्टि सों, यथाख्यात आचार।**
**तिन सबके 'स्वामी' नमूँ, पायो शिवपद सार॥**

ॐ ह्रीं **जिनेशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १८।।

**समोसरण आदिक विभव, तिसके तुम 'परधान'।**
**शुद्धातम शिवपद लहो, नमूँ कर्म की हान॥**

ॐ ह्रीं **जिननायकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १९।।

**'सूरज-सम' तिहुँ लोक में, मिथ्या तिमिर निवार।**
**सहज दिखायो मुक्तिमग, मैं वंदूँ हित धार॥**

ॐ ह्रीं **जिनेनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २०।।

**जन्म-मरण दुःख 'जीतकर', जिन 'जिन' नाम धराय।**
**नमूँ सिद्ध परमातमा, भव-दुख सहज नसाय॥**

ॐ ह्रीं **जिनजेत्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २१।।

**अचल अबाधित पद लहो, निज स्वभाव 'दिढ' भाय।**
**नमूँ सिद्ध कर-जोर कर, भाव सहित उर लाय॥**

ॐ ह्रीं **जिनपरिदृढाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २२।।

**सर्व-व्यापि परमातमा, सर्व पूज्य विख्यात।**
**श्री 'जिनदेव' नमूँ त्रिविध, सर्व पाप नशि जात॥**

ॐ ह्रीं **जिनदेवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २३।।





**श्री 'जिनेश' जिनराज हो, निज स्वभाव अनिवार।**
**पर निमित्त विनशे सकल, वन्दूँ शिवसुख कार॥**

ॐ ह्रीं **जिनेशित्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २४।।

**परम धर्म दातार हो, तीन लोक सुखदाय।**
**तीन लोक 'पालक' महा, मैं वंदूँ शिवराय॥**

ॐ ह्रीं **जिनपालकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २५।।

**गणधरादि सेवत महा, तुम आज्ञा शिर धार।**
**अधिक अधिक 'जिन' पद लहो, नमूँ करो भवपार॥**

ॐ ह्रीं **जिनाधिराजाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २६।।

**'परम-धर्म-उपदेश' करि, प्रगटायो शिव-राह।**
**श्री 'जिन' निज आनन्द विषैं, वरतैं वंदूँ ताह॥**

ॐ ह्रीं **जिनशासित्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २७।।

**पूरण पद पावन निपुण, 'सब देवन के देव'।**
**मैं पूजूँ नित भाव सों, पाऊँ शिव स्वयमेव॥**

ॐ ह्रीं **जिनदेवाधिदेवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २८।।

**तीन लोक विख्यात हैं, तारण-तरण जहाज।**
**तुम सम और न देव हैं, तुम सबके 'सरताज'॥**

ॐ ह्रीं **जिनाधिपतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २९।।

**'तीन लोक पूजत' चरन, भाव सहित सिरनाय।**
**इन्द्रादिक थुति कर थकित, वंदूँ मैं तिन पाय॥**

ॐ ह्रीं **जिनाधिनाथाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३०।।

**तुम समान नहिं देव है, 'भविजन-तारन' हेत।**
**चरणाम्बुज-सेवत सुभग, पावें शिवसुख खेत॥**

ॐ ह्रीं **जिनपाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३१।।

**भवि भवतप कर तप्त हैं, तिनकी विपत निवार।**
**धर्मामृत कर पोषियो, वरते 'शशि-उनहार'॥**

ॐ ह्रीं **जिनचन्द्राय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३२।।

**मिथ्यातम करि अंध थे, तीन लोक के जीव।**
**तत्त्व-मार्ग प्रगटाइयो, 'रवि-सम' दीप्त सदीव॥**

ॐ ह्रीं **जिनादित्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३३।।

**बिन कारण तारण-तरण, 'दीप्त रूप' भगवान।**
**इन्द्रादिक पूजत चरण, करें कर्म की हान॥**
ॐ ह्रीं **जिनेन्द्रवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३४।।
**जैसे 'कुंजर-चक्र' के, जाने दल को साज।**
**चार संघ नायक प्रभु, वंदूँ सिद्ध समाज॥**
ॐ ह्रीं **जिन-कुञ्जराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३५।।
**दीप्त रूप तिहुँ लोक में, है 'प्रचण्ड-परताप'।**
**भक्तन को नित देत हैं, भोगे शिव-सुख आप॥**
ॐ ह्रीं **जिनार्काय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३६।।
**रत्नत्रय-मग साध कर, सिद्ध भये भगवान।**
**पूरण 'निज-सुख-धरत' हैं, निज में निज परमान॥**
ॐ ह्रीं **जिन-धौर्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३७।।
**तीन लोक के नाथ हो, ज्यों तारागण सूर्य।**
**शिव-सुख पायो परम पद, वंदौ श्री 'जिन-धूर्य'॥**
ॐ ह्रीं **जिन-धूर्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३८।।
**पराधीन बिन परम पद, तुम बिन लहै न और।**
**'उत्तमातमा' मैं नमूँ, तीन लोक सिरमौर॥**
ॐ ह्रीं **जिनोत्तमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३९।।
**जहाँ न दुख को लेश है, जहाँ न पर सों काम।**
**तुम बिन कहूँ न 'श्रेष्ठता', तीन लोक दुख-ठाम[१]॥**
ॐ ह्रीं **जिनवर्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४०।।
**पूरण-पर-निज-लक्ष्मी, पायो श्री 'जिनराज'।**
**परम श्रेय परमातमा, वंदूँ शिवसुख काज॥**
ॐ ह्रीं **जिनवराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४१।।
**'निर्भय' हो 'निर-आश्रयी', 'निःसंगी' 'निर्बन्ध'।**
**निज साधन साधक सु निज, पर सों नहिं संबंध॥**
ॐ ह्रीं **जिन-सिंहाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४२।।
**'अंतराय-विधि-नाश' कै, निजानंद भयो प्राप्त।**
**'संत' नमें कर जोर युग, भवि-दुख करो समाप्त॥**
ॐ ह्रीं **जिनोद्वहाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४३।।

१. हे प्रभु! आपके बिना कहीं भी क्षेष्ठता नहीं, तीन लोक दुःख का स्थान (ठाम) है।





**शिव-मारग में धरत हो, जग-मारग तें काढ़।**
**'धर्म-धुरंधर' मैं नमूँ, पाऊँ भव-वन-घाट॥**
ॐ ह्रीं **जिन-वृषभाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४४।।
**'धर्मनाथ' 'धर्मेश' हो, 'धर्म-तीर्थ-करतार'।**
**रहो सुथिर निज धर्म में, मैं वंदूँ सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **जिन-वृषाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४५।।
**जगत् जीव विधि-धूलि सों, लिप्त न लहै प्रभाव।**
**'रत्न-राशि-सम' तुम दिपौ, निर्मल सहज सुभाव॥**
ॐ ह्रीं **जिन-रत्नाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४६।।
**तीन लोक के शिखर पर, 'राजत हो विख्यात'।**
**तुम सम और न जगत् में, बड़ा कोई दिखलात॥**
ॐ ह्रीं **जिनोरसे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४७।।
**इन्दिय-मन-व्यापार और, मोह-शत्रु को जीत।**
**लहो 'जिनेश्वर' सिद्धपद, तीन लोक के मीत॥**
ॐ ह्रीं **जिनेशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४८।।
**चार घातिया कर्म को, नाश भए जिनराय।**
**घात-अघात विनाश 'जिन, अग्र' भये सुखदाय॥**
ॐ ह्रीं **जिनाग्राय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४९।।
**'निज-पौरुष' कर साधियो, निज-पुरुषारथ सार।**
**अन्य सहाय नहीं चहैं, सिद्ध 'सुवीर्य' अपार॥**
ॐ ह्रीं **जिन-शार्दूलाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ५०।।
**इन्द्रादिक नित ध्यावते, तुम सम और न कोय।**
**'तीन लोक चूड़ामणी', नमूँ सिद्ध सुख होय॥**
ॐ ह्रीं **जिन-पुंगवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ५१।।
**निजानंद पद को लहो, 'अविरोधी मल-नास'[१]।**
**समकित बिन तिहुँ लोक में, और नहीं सुखरास॥**
ॐ ह्रीं **जिन-प्रवेकाय**[२] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ५२।।
**जगत् शत्रु को जीत के, कल्पित जिन कहलाय।**
**मोह-शत्रु जीते सु 'जिन, उत्तम' सिद्ध सुखाय॥**

१. क्षयोपशम सम्यक्त्व के समय होनेवाले चल-मल-अगाढ़ आदि दोषों को सम्यक्त्व का नाशक नहीं होने से 'अविरोधी मल' कहा गया है, परन्तु क्षायिक सम्यक्त्व की प्राप्ति उन्हें नाश करके ही होती है।
२. प्रवेक = श्रेष्ठ / उत्तम / उत्कृष्ट

ॐ ह्रीं **जिन-हंसाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५३।।

**द्रव्य-भाव दोनों नहीं, 'उत्तम शिवसुख' लीन।**
**मन वच तन कर मैं नमूँ, निज सम भवि जिन कीन॥**

ॐ ह्रीं **जिनोत्तमीकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५४।।

**'चार संघ नायक' प्रभू, शिवमग सुलभ कराय।**
**तारण-तरण जहान के, मैं वंदूँ शिवराय॥**

ॐ ह्रीं **जिन-नायकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५५।।

**स्वयं बुद्ध शिवमार्ग को, आप चलैं अनिवार।**
**भविजन 'अग्रेश्वर' भये, वंदूँ भक्ति विचार॥**

ॐ ह्रीं **जिनाग्रये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५६।।

**शिवमारग के चिन्ह हो, सुखसागर की पाल।**
**शिवपुर के तुम हो धनी, 'धर्म-नगर-प्रतिपाल'॥**

ॐ ह्रीं **जिन-ग्रामण्ये**[1] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५७।।

**तुम सम और न जगत् में, 'उत्तम श्रेष्ठ' कहाय।**
**आप तरै भवि तारते, वंदूँ तिनके पाय॥**

ॐ ह्रीं **जिन-सत्तमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५८।।

**स्व-पर कल्याणक हो प्रभू, पंचकल्याणक ईश।**
**'श्रीपति' शिव-शंकर नमूँ, चरणाम्बुज धर शीश॥**

ॐ ह्रीं **जिन-प्रवर्हाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५९।।

**मोह-महाबलि दलमलो, 'विजय-लक्ष्मी-नाथ'।**
**परम जोत शिवपद लहो, चरण नमूँ धर माथ॥**

ॐ ह्रीं **परम-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६०।।

**चहुँ गति दुःख 'पूरा' किया, 'पूरा' निज पुरुषार्थ।**
**नमूँ सिद्ध कर जोरि कैं, पाऊँ मैं सर्वार्थ॥**

ॐ ह्रीं **जिन-पुरोगमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६१।।

**जीते कर्मनि कष्ट को, 'श्रेष्ठ भये जिनदेव'।**
**तुम सम और न जगत् में, वंदूँ मैं तिन भेव॥**

ॐ ह्रीं **जिन-श्रेष्ठाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६२।।

**आप मोक्षमग साधियो, औरन सुलभ कराय।**
**'आदि पुरुष' तुम जगत् में, धर्म-रीति वरताय॥**

ॐ ह्रीं **जिन-ज्येष्ठाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६३।।

१. ग्रामण्ये = प्रतिपालक २. भेव = गुप्त रहस्य



**'मुख पुरुषारथ मोक्ष' है, साधत सुखिया होय।**
**मैं वंदूँ तिन भक्ति कर, सिद्ध कहावे सोय॥**

ॐ ह्रीं **जिन-मुख्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६४।।

**सूर्य सम 'अग्रेश' हो, निज-पर-भासनहार।**
**आप तिरे भवि तारियो, वंदूँ योग सँभार॥**

ॐ ह्रीं **जिनाग्रिमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६५।।

**रागादिक रिपु जीत तुम, 'श्री जिन' नाम धराय।**
**सिद्ध भये कर जोर कै, वंदूँ तिनके पाय॥**

ॐ ह्रीं **श्रीजिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६६।।

**विषय-कषाय न लेश है, दृष्टि-ज्ञान परिपूर्ण।**
**'उत्तम जिन' शिवपद लियो, नमत कर्म को चूर्ण॥**

ॐ ह्रीं **जिनोत्तमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६७।।

**चहुँ प्रकार के देवता, नित्य निमावत शीश।**
**तुम 'देवन के देव' हो, नमूँ सिद्ध जगदीश॥**

ॐ ह्रीं **जिन-वृन्दारकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६८।।

सिद्ध भगवान के विकार एवं कर्म नाश-सम्बन्धी अर्घ्य

**जो निज-सुख होने न दे, साचा रिपु है सोय।**
**ऐसे 'रिपु को जीत' के, नमूँ सिद्ध जो होय॥**

ॐ ह्रीं **अरि-जिते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६९।।

**'अविनाशी' 'अविकार' हो, अचलरूप विख्यात।**
**जामें 'विघ्न न लेश' है, नमूँ सिद्ध कहलात॥**

ॐ ह्रीं **निर्विघ्नाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७०।।

**राग-द्वेष-मद-मोह अरु, 'ज्ञानावर्ण नशाय'।**
**'शुद्ध निरंजन' सिद्ध हैं, वंदूँ तिनके पाय॥**

ॐ ह्रीं **विरजसे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७१।।

**'मत्सर भाव' दुखी करे, निजानंद को घात।**
**सो तुम 'नाशो' छिनक में, 'सम-सुख्या' कहलात॥**

ॐ ह्रीं **निरस्त-मत्सराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७२।।

**परकृत भाव न लेश है, भेद कह्यो नहिं जाय।**
**वचन-अगोचर 'शुद्ध' हैं, सिद्ध महा सुखदाय॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७३।।

**रागादिक मल बिन दिपे, शुद्ध सुवर्ण समान।**
**सिद्ध 'निरंजन' पद लियो, नमूँ चरण धर ध्यान॥**
ॐ ह्रीं **निरंजनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७४।।

**द्रव्य-भाव दउ-विध 'करम-नाश' भये शिवराय।**
**वंदूँ मन-वच-काय कर, भविजन को सुखदाय॥**
ॐ ह्रीं **कर्मघ्ने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७५।।

**ज्ञानावरणी आदि ले, चार 'घातिया कर्म'।**
**तिनको 'अंत' खपायके, लियो मोक्षपद पर्म॥**
ॐ ह्रीं **घातिकर्मान्तकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७६।।

**ज्ञानावरणी पटल बिन, 'ज्ञान-दीप्ति-परकास'।**
**शुद्ध सिद्ध परमातमा, वंदत भव-दुख नास॥**
ॐ ह्रीं **जिन-दीप्तये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७७।।

**'कर्म' रुलावै आत्मा, रागादिक उपजाय।**
**तिनको 'मर्म-विनाश' कै, सिद्ध भये सुखदाय॥**
ॐ ह्रीं **कर्म-मर्म-भिदे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७८।।

**'पाप-कलाप न लेश' है, 'शुद्ध-शुद्ध'[1] विख्यात।**
**मुनि-मन-मोहन रूप है, नमूँ जोर जुग-हाथ॥**
ॐ ह्रीं **अनघाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७९।।

**राग नहीं थुतकर्ण[2] सों, निंदक सों नहिं द्वेष।**
**'सम-सुखिया' आनन्दघन, वंदूँ सिद्ध हमेश॥**
ॐ ह्रीं **वीतरागाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८०।।

**'क्षुधा-वेदनी नाश' कर, स्व-सुख-भक्षणहार।**
**निजानंद संतुष्ट हैं, वंदूँ भाव विचार॥**
ॐ ह्रीं **अक्षुधे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८१।।

**एक दृष्टि सबको लखें, इष्ट-अनिष्ट न कोय।**
**'द्वेष-अंश व्यापै नही', सिद्ध कहावत सोय॥**
ॐ ह्रीं **अद्वेषाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८२।।

**भवसागर के तीर हैं, शिवपुर के हैं राह।**
**'मिथ्या-तम-हर-सूर्य' हो, मैं वंदूँ हूँ ताह॥**
ॐ ह्रीं **निर्मोहाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८३।।

१. शुद्ध-शुद्ध - नकुड़ प्रति पाठ
२. थुतकर्ण = स्तुति करनेवाला





**जग-जन में यह दोष है, सुखी-दुखी बहु भेव।**
**ते 'सब दोष निवारियो', 'उत्तम' है स्वयमेव॥**
ॐ ह्रीं **निर्मदाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८४।।

**जन्म-मरण यह रोग है, तिसको कठिन इलाज।**
**'परमौषध इस रोग की', वंदूँ मेटन काज॥**
ॐ ह्रीं **अगदाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८५।।

**राग कहो ममता कहो, मोह-कर्म सों होय।**
**सो जिन 'मोह विनाशियो', नमूँ सिद्ध है सोय॥**
ॐ ह्रीं **निर्ममाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८६।।

**'तृष्णा' दुख को मूल है, सुखी भये तिस 'नाश'।**
**मन-वच-तन कर मैं नमूँ, है 'आनन्द-विलास'॥**
ॐ ह्रीं **वितृष्णाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८७।।

**अन्तर-बाह्य 'निरिच्छ' हैं, एकी रूप अनूप।**
**'निस्पृह' परमेश्वर नमूँ, निजानन्द शिवभूप॥**
ॐ ह्रीं **असंगाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८८।।

**क्षायिक समकित को धरैं, 'निर्भय' थिरता रूप।**
**निजानंद सों नहिं चिगें, वंदूँ मैं शिवभूप॥**
ॐ ह्रीं **निर्भयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८९।।

**स्वप्न प्रमादी जीव के, अल्प शक्ति सों होय।**
**निज बल 'अतुल' महा धरै, सिद्ध कहावे सोय॥**
ॐ ह्रीं **अस्वप्नाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९०।।

**दर्श-ज्ञान-सुख भोगतें, 'खेद न रंचक' होय।**
**सो 'अनन्त बल' के धनी, सिद्ध नमामी सोय॥**
ॐ ह्रीं **निःश्रमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९१।।

**युगपद् सब प्रापत भयो, जानत हैं सब भेव।**
**संशय बिन 'आश्चर्य नहिं', नमूँ सिद्ध स्वयमेव॥**
ॐ ह्रीं **वीत-विस्मयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९२।।

**सिद्ध सनातन काल सैं, जग में हैं परसिद्ध।**
**तथा 'जन्म फिर नहिं धरैं', नमूँ जोरि कर सिद्ध॥**
ॐ ह्रीं **अजन्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९३।।

१. अगदाय - जन्म-मरण आदि रोगरहित

**'भ्रम बिन' ज्ञान-प्रकाश में, भासै जीव-अजीव।**
**'संशय बिन निश्चल' सुखी, वंदूँ सिद्ध सदीव॥**

ॐ ह्रीं **निःस्वेदाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९४।।

**तुम पूरण परमातमा, सदा रहो इक सार।**
**'जरा न व्यापै' तुम विषैं, नमूँ सिद्ध 'अविकार'॥**

ॐ ह्रीं **निर्जराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९५।।

**तुम पूरण परमातमा, अंत कभी नहिं होय।**
**मरण रहित वंदूँ सदा, देहु 'अमर' पद सोय॥**

ॐ ह्रीं **अमराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९६।।

**निजानंद के भोग में, कभी 'न आरत' आय।**
**यातें तुम 'अरतीत' हो, वंदूँ सिद्ध सुहाय॥**

ॐ ह्रीं **अरत्यतीताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९७।।

**'होत नहीं सोचन कभी', ज्ञान धरैं प्रत्यक्ष।**
**नमूँ सिद्ध परमात्मा, पाऊँ ज्ञान 'अलक्ष'॥**

ॐ ह्रीं **निश्चिन्ताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९८।।

**जानत हैं सब ज्ञेय को, पर-ज्ञेयन तें भिन्न।**
**यातें 'निर्विषयी' कहो, लेश न भोगैं अन्य॥**

ॐ ह्रीं **निर्विषयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९९।।

**अहंकार आदिक 'त्रिषट्, तुम पद निवसैं नाहिं'।**
**सिद्ध भये परमात्मा, मैं वंदूँ हूँ ताहिं॥**

ॐ ह्रीं **त्रिषष्ठिजिते**[1] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १००।।

सिद्ध भगवान के ज्ञान-दर्शन-वीर्य भाव-सम्बन्धी अर्घ्य

**'जेते गुण-पर्याय हैं, द्रव्य अनन्त सुकाल।**
**तिनको तुम जानो प्रभू', वंदूँ मैं नमूँ भाल॥**

ॐ ह्रीं **सर्वज्ञाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०१।।

**'ज्ञान-आरसी तुम विषैं, झलकें ज्ञेय अनंत'।**
**सिद्ध भये तिनको नमें, तीनों काल सु संत॥**

ॐ ह्रीं **सर्वविदे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०२।।

**चक्षु-अचक्षु न भेद हैं, 'समदर्शी' भगवान।**
**नमूँ सिद्ध परमातमा, तीनों जोग प्रधान॥**

१. अरहन्त के ६३ प्रकृतियों का नाश होता है। कहा है - **चउ कर्म सु त्रेसठ प्रकृति नाश।**





ॐ ह्रीं **सर्वदर्शिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०३।।

**देखन कछु बाकी नहीं, तीनों काल मंझार।**
**'सर्वावलोकी' सिद्ध हैं, नमूँ त्रियोग संभार॥**

ॐ ह्रीं **सर्वावलोकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०४।।

**तुम सम 'प्राक्रम' और कै, जगवासी में नाह।**
**'निज-बल शिवपद साधियो', मैं वंदूँ हूँ ताह॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तविक्रमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०५।।

**निजसुख भोगत नहिं चिगे, 'वीर्य अनंत' धराय।**
**'तुम अनंत बल के धनी', वंदूँ मन-वच-काय॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तवीर्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०६।।

**सुखाभास जग जीव कै, पर-निमित्त से होय।**
**'निज-आश्रय पूरण सुखी', सिद्ध कहावें सोय॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तसुखाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०७।।

**निज-सुख में सुख होत है, पर-सुख में सुख नाह।**
**सो तुम 'निज-सुख के धनी', मैं वंदूँ हूँ ताह॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तसौख्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०८।।

**तीन लोक तिहुँ काल के, गुण-पर्यय कछु नाह।**
**जाको तुम जानो नहीं, 'ज्ञान-भानु' के माह॥**

ॐ ह्रीं **विश्वज्ञाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०९।।

**द्रव्य तथा गुण-पर्य को, देखै एकीबार।**
**'विश्व-दर्श' तुम नाम है, वंदूँ भक्ति विचार॥**

ॐ ह्रीं **विश्व-दर्शिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ११०।।

**'संपूरण अवलोक' तें, दर्शन धरो अपार।**
**नमूँ सिद्ध कर जोर के, करो जगत् से पार॥**

ॐ ह्रीं **अखिलार्थदर्शिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १११।।

**इन्द्रिय-ज्ञान परोक्ष है, क्रमवर्ती कहलाय।**
**'बिन-इन्द्रिय प्रत्यक्ष' है, धरो ज्ञान सुखदाय॥**

ॐ ह्रीं **न्यक्षदृशे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ११२।।

**विश्व माँहि सब अर्थ तुम, देखो एकीबार।**
**'विश्व-चक्षु' तुम नाम है, वंदूँ भक्ति विचार॥**

ॐ ह्रीं **विश्व-चक्षुषे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ११३।।

**तीन लोक के अर्थ जे, बाकी रहो न शेष।**
**'युगपत् तुम सब जानियो', गुण-पर्याय विशेष॥**
ॐ ह्रीं **अशेषविदे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।११४।।

सिद्ध भगवान के आनन्द-परम आदि विशेषण-सम्बन्धी अर्घ्य

**पराधीन अरु विघन बिन, है साँचा 'आनंद'।**
**सो शिवगति में तुम लियो, मैं वंदूँ सुखकंद॥**
ॐ ह्रीं **आनन्दाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।११५।।
**'सत्' प्रशंस-'यह नित्य है', या 'सद्भाव-सरूप'।**
**सो तुममें 'आनंद' है, वंदत हूँ शिवभूप॥**
ॐ ह्रीं **सदानन्दाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।११६।।
**'उदय महा सत्रूप' है, जामें असत् न होय।**
**अन्तराय अरु विघन बिन, सत्य उदै है सोय॥**
ॐ ह्रीं **सदोदयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।११७।।
**'नित्यानंद' महासुखी, हीनादिक नहिं होय।**
**नहिं गत्यंतर रूप हो, शिवगति में है सोय॥**
ॐ ह्रीं **नित्यानन्दाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।११८।।
**जासों परे न और सुख, अहमिन्द्रन में नाह।**
**सोइ 'श्रेष्ठ सुख' भोगते, मैं वंदूँ हूँ ताह॥**
ॐ ह्रीं **परानन्दाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।११९।।
**पूरण सुख की हद धरै, सो 'महान आनंद'।**
**सो तुम पायो शिव-धनी, वंदूँ पद-अरविंद[१]॥**
ॐ ह्रीं **महानन्दाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२०।।
**'उत्तम सुख' स्वाधीन है, 'परम' नाम कहलाय।**
**चारों गति में सो नहीं, तुम पायो सुखदाय॥**
ॐ ह्रीं **परमानन्दाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२१।।
**'जामें विघन न लेश है, उदय तेज विज्ञान'।**
**'जाको हम जानत नहीं', सुलभरूप विधि ठान॥**
ॐ ह्रीं **परोदयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२२।।
**'परम शक्ति परमातमा', पर-सहाय बिन आप।**
**स्वयं वीर्य आनंद के, नमत कटैं सब पाप॥**
ॐ ह्रीं **परमोजसे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२३।।



**'महातेज के पुँज' हैं, अविनाशी अविकार।**
**झलकत ज्ञानाकार सब, दर्पण-थल आधार॥**
ॐ ह्रीं **परं-तेजसे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२४।।
**'परम धाम' उत्कृष्ट पद, मोक्ष नाम कहलाय।**
**जासों फिर आवन नहीं, जन्म-मरण नहिं पाय॥**
ॐ ह्रीं **परं-धाम्ने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२५।।
**जग-गुरु सिद्ध परमातमा, 'जगत् सूर्य' शिव नाम।**
**'परम हंस' योगीश हैं, लियो मोक्ष अभिराम॥**
ॐ ह्रीं **परं-महसे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२६।।
**'दिव्य-ज्योत' स्वज्ञान में, तीन लोक प्रतिभास।**
**शंका बिन विश्वास कर, निज-पर कियो प्रकाश॥**
ॐ ह्रीं **प्रत्यग्-ज्योतिषे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२७।।
**'निज-विज्ञान सु ज्योत' में, संशय आदिक नाह।**
**सो तुम सहज प्रकाशियो, मैं वंदूँ हूँ ताह॥**
ॐ ह्रीं **परं-ज्योतिषे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२८।।
**'शुद्ध बुद्ध परमातमा', 'परम ब्रह्म' कहलाय।**
**सर्व लोक उत्कृष्ट पद, पायो वंदूँ पाय॥**
ॐ ह्रीं **परं-ब्रह्मणे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२९।।
**चार ज्ञान नहिं जानहैं[१], शुद्ध स्वरूप अनूप।**
**'पर को नाहिं प्रवेश' है, 'एकाकी' शिवरूप॥**
ॐ ह्रीं **परं-रहसे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१३०।।

सिद्धों के आत्म-इष्ट-श्रेष्ठ-विद्यादि विशेषण-सम्बन्धी अर्घ्य

**निज गुण-द्रव्य-पर्याय में, 'भिन्न-भिन्न स्वरूप'।**
**एक-क्षेत्र-अवगाह करि, राजत हैं 'चिद्रूप'॥**
ॐ ह्रीं **प्रत्यगात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१३१।।
**शुद्ध बुद्ध परमातमा, 'निज-विज्ञान-प्रकाश'।**
**'स्वै आतम के बोध' तें, कियो कर्म को नाश॥**
ॐ ह्रीं **प्रबुद्धात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१३२।।
**कर्म-मैल से लिप्त है, जगत्-आत्म दिन-रैन।**
**कर्म-नाश 'महा पद' लियो, वंदूँ हूँ सुख-दैन॥**

१. हे प्रभु! आपके केवलज्ञान में जैसी स्पष्टता है, वैसी अन्य चार ज्ञानों में नहीं है।

ॐ ह्रीं **महात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १३३।।

**'आतम' को गुण ज्ञान है, यही यथारथ होय।**
**'ज्ञानान्दैश्वर्यता', उदय भयो है सोय॥**

ॐ ह्रीं **आत्म-महोदयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १३४।।

**दर्श-ज्ञान-सुख-वीर्य को, पाय परम पद होय।**
**सो 'परमातम' तुम भये, नमूँ जोर कर-दोय॥**

ॐ ह्रीं **परमात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १३५।।

**मोहकर्म के नाश तें, शांत भये सुख-देन।**
**क्षोभ रहित 'प्रशांत' हो, 'संत' नमूँ सुख-लेन॥**

ॐ ह्रीं **प्रशान्तात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १३६।।

**'पूरण पद' तुम पाइयो, यातें परे न कोय।**
**तुम समान नहिं और है, वंदूँ हूँ पद-दोय॥**

ॐ ह्रीं **परात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १३७।।

**पुद्गलकृत तन छार कै, निज आतम में वास।**
**'स्व-प्रदेश-गृह' के विषैं, नित ही करत विलास॥**

ॐ ह्रीं **आत्म-निकेतनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १३८।।

**औरन को नित देत हैं, शिव-सुख भोगें आप।**
**'परम इष्ट' तुम हो सदा, निज सम करत मिलाप॥**

ॐ ह्रीं **परमेष्ठिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १३९।।

**मोक्ष-लक्ष्मी नाथ हो, भक्तन प्रति नित देत।**
**'महा-इष्ट' कहलात हो, वंदूँ शिवसुख हेत॥**

ॐ ह्रीं **महिष्ठात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १४०।।

**रागादिक मल नाश कै, 'श्रेष्ठ' भये जग माह।**
**सो उपासना करण को, तुम सम कोई नाह॥**

ॐ ह्रीं **श्रेष्ठात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १४१।।

**पर में ममत विनाश कै, 'स्व-आतम-थिर' धार।**
**पर-विकल्प-संकल्प बिन, तिष्ठो सुख-आधार॥**

ॐ ह्रीं **स्वात्म-निष्ठिताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १४२।।

**'स्व-आतम में मग्न' हैं, 'स्व-आतम लव-लीन'।**
**पर में भ्रमण करैं नहीं, 'संत' चरण सिर-दीन॥**

ॐ ह्रीं **ब्रह्म-निष्ठाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १४३।।



**'तीन लोक के नाथ' हैं, इन्द्रादिक कर पूज।**
**तुम सम और महानता, नहिं धारत है दूज॥**

ॐ ह्रीं **महा-निष्ठाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १४४।।

**तीन लोक परसिद्ध हो, 'सिद्ध' तुम्हारा नाम।**
**'सर्व-सिद्धता-ईश' हो, पूरो सबके काम॥**

ॐ ह्रीं **निरूढात्मने**[१] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १४५।।

**'स्व-आतम-थिरता' धरैं, नहीं चलाचल होय।**
**'निश्चल परम सुभाव' में, भये प्रकृति[२] को खोय॥**

ॐ ह्रीं **दृढात्म-दृशे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १४६।।

**क्षयोपशम नाना विधै, 'क्षायक एक' प्रकार।**
**सो तुममें, नहिं और में, वंदूँ भाव लगार॥**

ॐ ह्रीं **एक-विद्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १४७।।

**कर्म-पटल के नाश तें, निर्मल ज्ञान उदार।**
**तुम 'महान विद्या' धरो, वंदूँ योग संभार॥**

ॐ ह्रीं **महा-विद्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १४८।।

**'परम पूज्य परमेश पद, पूरण ब्रह्म' कहाय।**
**पायो सहज महान पद, वंदूँ तिनके पाय॥**

ॐ ह्रीं **महा-ब्रह्म-पदेश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १४९।।

**'पंच परम पद' पाइयो, 'ब्रह्म' नाम है एक।**
**पूजूँ मन-वच-काय कर, नाशैं विघन अनेक॥**

ॐ ह्रीं **पंच-ब्रह्मणे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १५०।।

**'निज विभूति सर्वस्व' तुम, पायो सहज सुभाव।**
**हीनाधिक बिन विलसते, वंदूँ ध्यान लगाव॥**

ॐ ह्रीं **सार्वाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १५१।।

**'पूरण पंडित ईश' हो, 'बुद्धि-धाम अभिराम'।**
**वंदूँ मन-वच-काय कर, पाऊँ मोक्ष सु धाम॥**

ॐ ह्रीं **सर्व-विद्येश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १५२।।

**मोह-कर्म चकचूर तें, 'स्वाभाविक शुभ चाल'।**
**शुद्ध परिणाम धरैं सदा, वंदूँ नित नमि भाल॥**

ॐ ह्रीं **स्वयंभुवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १५३।।

१. निरूढ़ - सम्यक् प्रकार से रूढ़ / प्रसिद्ध / प्रचलित २. प्रकृति - कर्म

सिद्धों के अनन्त-केवल-सर्व-विश्वादि विशेषण-सम्बन्धी अर्घ्य

**ज्ञान-दर्श-आवर्ण बिन, 'दिपैं ऽनंतानंत'।**
**'सकल ज्ञेय प्रतिभास' हैं, नमैं तुम्हैं नित 'संत'॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-धिये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १५४।।

**इक-इक गुण-प्रतिछेद को, पार न पायो जाय।**
**सो 'गुण-रास-अनंत' है, वंदूँ तिनके पाय॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १५५।।

**अहमिन्द्रन की शक्ति सों, करो अनंती रास।**
**सो तुम 'शक्ति अनंत' गुणी, करै अनंत प्रकास॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-शक्तये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १५६।।

**क्षायक-दर्शन-ज्योत में, निरावर्ण परकास।**
**सो 'अनंत दृग' तुम धरौ, नमैं चरण नित-दास॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-दृशे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १५७।।

**'जाकी शक्ति अपार' है, हेतु-अहेतु असिद्ध[१]।**
**'गणधरादि जानत नहीं', मैं वंदूँ नित सिद्ध॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तानन्त-धी-शक्तये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १५८।।

**'चेतन-शक्ति-अनंत' है, निरावर्ण जो होय।**
**सो तुम पायी सहज ही, कर्म-पुंज को खोय॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-चिदे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १५९।।

**जो सुख है निज-आश्रय, सो सुख पर में नाह।**
**'निजानन्द-रस-लीन' हैं, मैं वंदूँ हूँ ताह॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-मुदे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १६०।।

**जाकै कर्म लिपै न फिर, दिपै सदा निरधार।**
**'सदा प्रकाश' जु सहित है, वंदूँ योग संभार॥**

ॐ ह्रीं **सदा-प्रकाशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १६१।।

**निजानंद के माहि है, 'सर्व-अर्थ-परसिद्ध'।**
**सो तुम पायो सहज ही, नमत मिले नव निद्ध॥**

ॐ ह्रीं **सर्वार्थसिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १६२।।

**अति सूक्षम जे अर्थ हैं, काय-अकाय कहाय।**
**'साक्षात् सबको लखो', वंदूँ तिनके पाय॥**

१. जिसकी शक्ति अपार है, जिसे हेतुवाद या अहेतुवाद से सिद्ध नहीं किया जा सकता।





ॐ ह्रीं **साक्षात्कारिणे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १६३।।

**'सकल गुणितमय द्रव्य हो, शुद्ध सुभाव प्रकास'।**
**तुम समान नहिं दूसरो, वंदत पूरे आस॥**

ॐ ह्रीं **समग्र-धिये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १६४।।

**'कर्म-पुंज को छीन' कर, जरी जेवरी सार।**
**सो तुम धूलि उड़ाइयो, वंदूँ भगत विचार॥**

ॐ ह्रीं **कर्म-क्षीणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १६५।।

**'चहुँ गति जगत् कहात है, ताको करि विध्वंश'।**
**अमर अचल शिवपुर वसे, भर्म न राखो अंश॥**

ॐ ह्रीं **जगद्विध्वंसिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १६६।।

**इन्द्रिय-मन व्यापार में, जाको नहिं अधिकार।**
**सो 'अलक्ष-आतम' प्रभू, होउ सुमति-दातार॥**

ॐ ह्रीं **अलक्ष्यात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १६७।।

**नहीं 'चलाचल अचल' हैं, नहीं भ्रमण थिर-धार।**
**सो शिवपुर में वसत हैं, वंदूँ भक्ति विचार॥**

ॐ ह्रीं **अचल-स्थितये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १६८।।

**परकृत निमित बिगाड़ है, सोई दुविधा जान।**
**सो तुम में नहिं लेश है, 'निराबाध' परमान॥**

ॐ ह्रीं **निराबाधाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १६९।।

**जैसे हो तुम आदि में, सोई हो तुम अंत।**
**'एक भाँति निवसो सदा', वंदत है नित 'संत'॥**

ॐ ह्रीं **अप्रतर्क्यात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १७०।।

**'धर्मनाथ जगदीश' हो, सुर-मुनि माने आन।**
**मिथ्या मत नहिं चलत है, तुम आगे परमान॥**

ॐ ह्रीं **धर्म-चक्रिणे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १७१।।

**'ज्ञान-शक्ति उत्कृष्ट' है, सर्व धर्म तिस माह।**
**'श्रेष्ठ ज्ञान तुम पूज्य' है पर-निमित्त कछु नाह॥**

ॐ ह्रीं **विदांवराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १७२।।

**'निज अभाव सो मुक्त है', कहैं कुवादी लोग।**
**'भूतात्म से मुक्त हैं', सो तुम पायो जोग॥**

ॐ ह्रीं **भूतात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १७३।।

**'सहज सुभाव प्रकासयो', पर-निमित्त कछु नाह।**
**सो तुम पायो 'सुलभ' तें, 'स्व-सुभाव' के माह॥**

ॐ ह्रीं **सहज-ज्योतिषे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १७४।।

**विश्व नाम तिहुं लोक में, तिसमें करत प्रकास।**
**'विश्व-ज्योत' कहलात हैं, नमत मोह तुम नास॥**

ॐ ह्रीं **विश्व-ज्योतिषे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १७५।।

**परस आदि पन इन्द्रिय, द्वार-ज्ञान कछु नाह।**
**यातैं 'अति-इन्द्रिय' कहो, जिन-सिद्धांत के माह॥**

ॐ ह्रीं **अतीन्द्रियाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १७६।।

**एक मान 'असहाय' हो, शुद्ध-बुद्ध निर-अंस।**
**'केवल' तुमको धर्म है, नमः चरण नित 'संत'॥**

ॐ ह्रीं **केवलिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १७७।।

**लौकिकजन या लोक में, तुम सारू गुण नाह।**
**'केवल तुम ही में वसै', मैं वंदूँ हूँ ताह॥**

ॐ ह्रीं **केवलालोकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १७८।।

**'लोक-अनंत' कहो सही, तातैं नन्तानन्त।**
**है 'अलोक अवलोकियो', तुम्हैं नमः नित 'संत'॥**

ॐ ह्रीं **लोकालोकविलोकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १७९।।

**ज्ञान-द्वार निज शक्ति हो, फैले लोकालोक।**
**'भिन्न-भिन्न सब जानियो', नमूँ चरण दे धोक॥**

ॐ ह्रीं **विविक्ताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १८०।।

**बिन सहाय निज शक्ति हो, प्रगटो आपो-आप।**
**'स्वयं-बुद्ध' स्व-शुद्ध है, नमत नसैं सब पाप॥**

ॐ ह्रीं **केवलाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १८१।।

**सूक्षम सुद्ध सुभाव तें, 'मन-इन्द्रिय नहिं ज्ञात'।**
**'वचन-अगोचर' गुण धरैं, नमूँ चरन दिन-रात॥**

ॐ ह्रीं **अव्यक्ताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १८२।।

**कर्म-उदय दुख भोगवैं, सर्व जीव संसार।**
**'तिन सबको तुम ही शरण', देहो सुख्य अपार॥**

ॐ ह्रीं **सर्व-शरण्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १८३।।



**'चितवन में आवे नहीं', पार न पावे कोय।**
**'महा विभव' के हो धनी, नमूँ जोर कर दोय॥**

ॐ ह्रीं **अचिन्त्य-वैभवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १८४।।

**छहों काय के वास को, 'विश्व' कहै सब लोग।**
**तिनके 'थंभनहार' हो, राज-काज के जोग॥**

ॐ ह्रीं **विश्व-भृते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १८५।।

**घट-घट में राजो सदा, ज्ञान-द्वार सब ठौर।**
**'विश्वरूप जीवात्म' हो, तीन लोक सिरमौर॥**

ॐ ह्रीं **विश्व-रूपात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १८६।।

**घट-घट में नित व्याप हो, ज्यों घर दीपक-ज्योत।**
**'विश्वनाथ' तुम नाम है, पूजत शिवसुख होत॥**

ॐ ह्रीं **विश्वात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १८७।।

**इन्द्रादिक जे 'विश्वपति', तुम पद पूजैं आन।**
**यातैं 'मुखिया' हो सही, मैं पूजूँ धर ध्यान॥**

ॐ ह्रीं **विश्वतो-मुखाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १८८।।

**'ज्ञान-द्वार' सब जगत् में, व्याप रहे भगवान।**
**'विश्व-व्याप' मुनि कहत हैं, ज्यों नभ में शशि भान॥**

ॐ ह्रीं **विश्व-व्यापिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १८९।।

**निरावर्ण निरलेप हैं, 'तेजरूप' विख्यात।**
**'ज्ञानकला' पूरण धरैं, मैं वंदूँ दिन-रात॥**

ॐ ह्रीं **स्वयं-ज्योतिषे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १९०।।

**'चितवन में आवै नहीं', धारें सुगुण अपार।**
**मन-वच-काय नमूँ सदा, मिटै सकल संसार॥**

ॐ ह्रीं **अचिन्त्यात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १९१।।

**नय-प्रमाण को गमन नहीं, 'स्वयं ज्योति परकाश'।**
**अद्भुत गुण-पर्याय में, सुख सौं करे विलास॥**

ॐ ह्रीं **अमित-प्रभाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १९२।।

सिद्धों के महा-यज्ञ-पूज्य आदि विशेषण-सम्बन्धी अर्घ्य

**मती आदि क्रमवर्त बिन, 'केवल-लक्ष्मी-नाथ'।**
**'महाबोध' तुम नाम है, नमूँ पांय धर माथ॥**

ॐ ह्रीं **महाबोधये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १९३।।

**कर्मयोग तें जगत् में, जीव-शक्ति को नास।**
**'स्वयं वीर्य' अद्भुत धरैं, नमूँ चरण सुखरास॥**
ॐ ह्रीं **महावीर्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१९४।।

**क्षायिक-लब्धि महान है, ताको लाभ लहाय।**
**'महालाभ' यातैं कहैं, वंदूँ तिनके पाय॥**
ॐ ह्रीं **महालाभाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१९५।।

**ज्ञानावरणादिक पटल, छायो 'आतम-ज्योत'।**
**ताको नाश भये विमल, 'दीप्तरूप उद्योत'॥**
ॐ ह्रीं **महोदयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१९६।।

**ज्ञानानन्द स्व-लक्ष्मी, 'भोगे बाधा-हीन'।**
**'पंचम गति' में वास है, नमूँ योग-त्रय लीन॥**
ॐ ह्रीं **महोपभोग-सुगतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१९७।।

**पर-निमित्त जामें नहीं, 'स्व-आनंद अपार'।**
**सोई 'परमानंद' है, 'भोगे' निज आधार॥**
ॐ ह्रीं **महाभोगाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१९८।।

**दर्श-ज्ञान-सुख भोगते, नेक न बाधा होय।**
**'अतुल वीर्य' तुम धरत हो, मैं वंदूँ हूँ सोय॥**
ॐ ह्रीं **महाबलाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१९९।।

**शिवस्वरूप आनन्दमय, क्रीडा करत विलास।**
**'महादेव' कहलात हैं, वंदत रिपु-गण-नाश॥**
ॐ ह्रीं **यज्ञार्हाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२००।।

**महाभाग शिवगति लहो, ता सम भाग न और।**
**सोई 'भगवत्' हैं प्रभु, नमूँ पदाम्बुज ठौर॥**
ॐ ह्रीं **भगवते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२०१।।

**'तीन लोक के पूज्य' हैं, 'तीन लोक के स्वामि'।**
**'कर्म-शत्रु को छय' कियो, तातैं अरहंत नामि॥**
ॐ ह्रीं **अर्हते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२०२।।

**सुर-नर पूजत चरण-युग, द्रव्य-अर्घ युत भाव।**
**'महा-अर्घ' तुम नाम है, पूजत कर्म अभाव॥**
ॐ ह्रीं **महार्घाय**[१] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२०३।।

१. **महार्हाय** - संस्कृत प्रति पाठ / **महार्थाय** - महलका प्रति पाठ



**'शत इन्द्रन कर पूज्य' हो, अहमिंद्रन के ध्येय।**
**द्रव्य-भाव कर पूज्य हो, पूजक-पूज्य अभेय॥**
ॐ ह्रीं **मघवार्चिताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२०४।।

**छहों 'द्रव्य-गुण-पर्य' को, जानत भेद अनन्त।**
**'महापुरुष' त्रिभुवन धनी, पूजत हैं नित 'संत'॥**
ॐ ह्रीं **भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२०५।।

**तुमसों कछु छाना[१] नहीं, 'तीन लोक का भेद'।**
**दर्पण-तल सम भासहै, नमत कर्म-मल-छेद॥**
ॐ ह्रीं **भूतार्थ-यज्ञाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२०६।।

**'सकल ज्ञेय के ज्ञान' तैं, हो सबके सिरमौर।**
**'पुरुषोत्तम' तुम नाम है, तुम लग सबकी दौर॥**
ॐ ह्रीं **भूतार्थकृत-पुरुषाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२०७।।

**स्वयंबुद्ध शिवमग-चरित्त, स्वयंबुद्ध अविरुद्ध।**
**'शिवमगचारी नित जजैं', पावैं आतम शुद्ध॥**
ॐ ह्रीं **पूज्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२०८।।

**'सब देवन के देव' हो, 'तीन लोक के पूज्य'।**
**मिथ्या-तिमिर-निवारने, सूरज और न दूज॥**
ॐ ह्रीं **भट्टारकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२०९।।

**सुर-नर-मुनि के पूज्य हो, तुमसे श्रेष्ठ न कोय।**
**'तीन लोक के स्वामि' हो, पूजत शिवसुख होय॥**
ॐ ह्रीं **तत्र-भवते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२१०।।

**'महापूज्य' 'महमान्य' हो, स्वयंबुद्ध अविकार।**
**मन-वच-तन से ध्यावते, सुर-नर-भक्त विचार॥**
ॐ ह्रीं **अत्र-भवते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२११।।

**'महा ज्ञान केवल' कहै, सो दीखे तुम माह।**
**'महा नाम' सों पूजिये, संसारी-दुख नाह॥**
ॐ ह्रीं **महते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२१२।।

**पूज्यपना नहिं और में, इक तुम ही में जान।**
**'महा-अर्ह' तुम गुण प्रभु, पूजत हो कल्याण॥**
ॐ ह्रीं **महा-महार्हाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२१३।।

१. **छाना** - छिपा / अज्ञात

**अचल शिवालय के विषैं, 'अमित काल रहै राज'।**
**'चिरजीवी' कहलात हो, वंदूँ शिव-सुख काज॥**
ॐ ह्रीं **तत्रायुषे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२१४।।

**मरण रहित शिवपद लसै, काल अनंतानंत।**
**'दीर्घायु' तुम नाम है, वंदत नितप्रति 'संत'॥**
ॐ ह्रीं **दीर्घायुषे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२१५।।

**'सकल तत्त्व के अर्थ कह', निराबाध निरशंस।**
**धर्ममार्ग प्रगटाइयो, नमत मिटै दुख-अंश॥**
ॐ ह्रीं **अर्थ-वाचे**[1] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२१६।।

**मुनिजन नित प्रति ध्यावतें, पावें निज-कल्याण।**
**सज्जन-जन 'आराध्य' हो, मैं ध्याऊँ धर ध्यान॥**
ॐ ह्रीं **आराध्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२१७।।

**शिवसुख जाको ध्यावतें, पावें संत मुनीन्द्र।**
**'परमाराध्य' कहात हो, पायो नाम अतीन्द्र॥**
ॐ ह्रीं **परमाराध्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२१८।।

सिद्धों में उपचार से तीर्थंकरों के पंचकल्याणक-सम्बन्धी अर्घ्य

**'पंचकल्याण प्रसिद्ध' हैं, गर्भ आदि निर्वाण।**
**'देवन करि पूजित' भये, पायो शिवसुख थान॥**
ॐ ह्रीं **पंचकल्याण-पूजिताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२१९।।

**देखो लोकालोक को, हस्तरेख की सार।**
**इत्यादिक 'गुण तुम विषैं, दीषैं उदय अपार'॥**
ॐ ह्रीं **दृग्-विशुद्धि-गुणोदग्राय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२०।।

**क्षायक समकित को धरैं, 'सौधर्मादिक इन्द्र'।**
**तुम पूजन परभाव[2] तैं, अंतम होय जिनेन्द्र॥**
ॐ ह्रीं **वसुधरार्चितास्पदाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२१।।

**'निर्विकल्प सुख चिन्ह' है, वीतराग सों होय।**
**सो तुम पायो सहज ही, नमूँ जोर कर दोय॥**
ॐ ह्रीं **सुखदर्शिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२२।।

**स्वर्ग आदि सुख थान के, हो परकासन हार।**
**'दीप्तरूप बलवान' हैं, तुम मारग सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **दिव्यौजसे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२३।।

१. अर्च्यवाचे - संस्कृत पाठ २. परभाव = प्रभाव



सिद्धों में उपचार से तीर्थंकरों के गर्भकल्याणक-सम्बन्धी अर्घ्य

**गर्भकल्याणक के विषैं, तुम 'माता' सुखकार।**
**'षट् कुमारिका सेवती', पावें भवदधि पार॥**
ॐ ह्रीं **शची-सेवित-मातृकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२४।।

**अति उत्तमतम गर्भ है, भव-दुख जन्म-निवार।**
**'रत्न-राशि दिवलोक' तैं, वर्षे मूसलधार॥**
ॐ ह्रीं **रत्न-गर्भाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२५।।

**सुर-शोधन तें गर्भ में, दर्पण सम आकार।**
**'यों पवित्र तुम गर्भ' है, पावैं शिव-सुखसार॥**
ॐ ह्रीं **पूत-गर्भाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२६।।

**जाके 'गर्भागमन' तैं, पहले 'उत्सव' ठान।**
**दिव्य नार मंगल सहित, पूजत श्री भगवान॥**
ॐ ह्रीं **गर्भोत्सवोच्छृताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२७।।

**नित-नित आनंद 'उपचरैं', 'सुर-सूरी' हरषात।**
**'मंगल साज समाज' सब, उपजावै दिन-रात॥**
ॐ ह्रीं **दिव्योपचारोपचिताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२८।।

**केवलज्ञान स्व-लक्षमी, धरत महा विस्तार।**
**'चरण-कमल' सुर-मुनि जजैं, हम पूजत हितधार॥**
ॐ ह्रीं **पद्म-भुवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२९।।

**'तिहुँ विध विधिमल धोय' कर, उज्वल निर्मल होय।**
**शिव-आलय में वसत हैं, शुद्ध सिद्ध हैं सोय॥**
ॐ ह्रीं **निष्कलाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२३०।।

**असंख्यात परदेश में, अन्य प्रदेश न होय।**
**स्वयं स्वभाव 'स्वजात' हैं, मैं प्रणमामि सोय॥**
ॐ ह्रीं **स्वजाताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२३१।।

सिद्धों में उपचार से तीर्थंकरों के जन्मकल्याणक-सम्बन्धी अर्घ्य

**पूज-यज्ञ-आराधना, जो कुछ भगत परमान।**
**तुम ही 'सबके मूल' हो, नमत अमंगल हान॥**
ॐ ह्रीं **सर्वीय-जन्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२३२।।

**सूर्य-सुमेरु समान हो, या सुरतरु की ठौर।**
**'महा पुण्य की राश' हो, सिद्ध नमूँ कर जोर॥**
ॐ ह्रीं **पुण्यांगाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२३३।।

**ज्यों सूरज मध्याह्न में, दिपत अनंत प्रभाव।**
**त्यों तुम 'ज्ञानकला दिपै', मिथ्या-तिमिर अभाव॥**

ॐ ह्रीं **भास्वते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २३४॥

**चहुँ विध देवन में सदा, 'तुम सम देव न आन'।**
**निजानंद में केलि कर, पूजत हूँ धर ध्यान॥**

ॐ ह्रीं **उद्भूत-देवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २३५॥

**'विश्व-ज्ञात' युगपद् धरैं, ज्यूँ दर्पण आकार।**
**स्व-पर-परकासक सही, नमूँ भक्त उर धार॥**

ॐ ह्रीं **विश्व-विज्ञात-सभूते**[1] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २३६॥

**सत् सरूप सत् ज्ञान है, तुम ही पूज्य परधान।**
**पूजत हैं नित 'विश्व-जन, देव मान' परमान॥**

ॐ ह्रीं **विश्वदेवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २३७॥

**'सृष्टी को सुख-करन' हो, हरन दुक्ख भव-वास।**
**मोक्ष-लक्षमी देत हो, जन्म-जरा-मृतु नास॥**

ॐ ह्रीं **शची-सृष्ट-प्रतिच्छन्दाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २३८॥

**'इन्द्र सहस लोचन कियो, निरखत रूप अपार'।**
**मोक्ष लहो सो नेम तें, मैं पूजूँ मन धार॥**

ॐ ह्रीं **सहस्राक्ष-दृगुत्सवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २३९॥

**'संपूरण निज शक्ति' के, हैं परयाय अनन्त।**
**सो तुम विस्तीरण करो, नमैं चरण नित 'संत'॥**

ॐ ह्रीं **सर्व-शक्तये**[1] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २४०॥

**'ऐरावत पर रूढ़ हैं, देव नृत्यता माँड'।**
**पूजत हैं सो भक्ति सों, मेटि भवार्णव हाँड॥**

ॐ ह्रीं **नृत्यदैरावतासीनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २४१॥

**'सुर नर चारण मुनि जजहि, सुलभ गमन आकाश'।**
**'परिपूरण हर्षात' हैं, पूरै मन की आश॥**

ॐ ह्रीं **हर्षाकुलामर-खग-चारणर्षि-मतोत्सवाय** नमः, अर्घ्यं नि.॥ २४२॥

**'रक्षक हो षट् काय' के, शरणागत प्रतिपाल।**
**'सर्व-व्याप निज-ज्ञान' तैं, पूजत होय निहाल॥**

ॐ ह्रीं **व्योम-विष्णु-पदारक्षाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २४३॥



**महा उच्च आसन प्रभू, है 'सुमेर' विख्यात।**
**'जन्म-अभिषेक सुरेन्द्र' कर, पूजत मन उमगात॥**

ॐ ह्रीं **स्नान-पीठायिताद्रि-राजे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २४४॥

**जा करि तरये 'तीर्थ' सो, माने मुनि-गण-मान्य।**
**तुम सम को न श्रेष्ठ है, असत्यार्थ हैं आन्य॥**

ॐ ह्रीं **तीर्थेश-मन्य-दुग्धाब्धये**[1] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २४५॥

**'लोक-स्नान गिलानता, मेटै मैल शरीर।**
**आतम प्रक्षालित कियो', तुम ही ज्ञान सु नीर॥**

ॐ ह्रीं **स्नानाम्बु-स्नात-वासवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २४६॥

**तारण-तरण सुभाव है, 'तीन लोक विख्यात'।**
**ज्यों सुगन्ध चम्पाकली, 'गन्धमई' कहलात॥**

ॐ ह्रीं **गन्धाम्बु-पूत-त्रैलोक्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २४७॥

**सूक्ष्म तथा स्थूल में, 'ज्ञान करै परवेश'।**
**जाको तुम जानो नहीं, खाली रहो न देश॥**

ॐ ह्रीं **वज्र-सूचये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २४८॥

**औरन प्रति आनंद कर, 'निर्मल शुचि आचार'।**
**आप पवित्र भये प्रभू, कर्म-धूलि को टार॥**

ॐ ह्रीं **शुचि-श्रवसे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २४९॥

**कर्मों कर 'किरतार्थ' हो, कृत-फल उत्तम पाय।**
**'कर पर कर' राजत प्रभू, वंदूँ हूँ युग-पाय॥**

ॐ ह्रीं **कृतार्थित-शची-हस्ताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २५०॥

**'दरसत इन्द्र न अघात है, इष्ट मान उर माह'।**
**कर्म-नास शिवपुर वसें, मैं वंदूँ हूँ ताह॥**

ॐ ह्रीं **शक्रोत्थुष्ट-इष्ट-नायकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २५१॥

**'मघवा जाके नृत्य कर, ताके पितृ**[1] **महान'।**
**सो उनको मैं जजत हूँ, होय कर्म की हान॥**

ॐ ह्रीं **इन्द्र-नृत्य-निश्चित-मातृकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २५२॥

**'शची इन्द्र अरु काम ये, जिनके दासनुदास'।**
**निश्चय मन में नमन कर, नित वंदित पद जास॥**

ॐ ह्रीं **शची-विस्मापिताम्बिकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २५३॥

१. दुग्धाब्धये = क्षीरसमुद्र का दूध के समान जल

**'जिनके सनमुख नृत्य कर, इन्द्र हर्ष उपजाय'।**
**जन्म सुफल मानें सदा, हम पर होउ सहाय॥**
ॐ ह्रीं **शक्रारब्धानन्द-नृत्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २५४।।

**'धन-सुवर्ण तैं लोक में, पूरण इच्छा होय'।**
**चक्रवर्ति पद पाइये, तुम पूजत हैं सोय॥**
ॐ ह्रीं **रैद-पूर्ण-मनोरथाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २५५।।

**'तुम आज्ञा में हैं सदा', आप मनोरथ मान।**
**'इन्द्र सदा सेवन करैं', पाप-विनाशक जान॥**
ॐ ह्रीं **आज्ञार्थीन्द्र-कृतासेवनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २५६।।

**सब देवन में श्रेष्ठ हो, सब देवन सरताज।**
**सब 'देवन के इष्ट' हो, वंदत सुलभ सु काज॥**
ॐ ह्रीं **देवर्षीष्टाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २५७।।

सिद्धों में उपचार से तीर्थंकरों के दीक्षाकल्याणक-सम्बन्धी अर्घ्य

**तीन लोक में उच्च हो, तीन लोक परशंस।**
**सो 'शिवगति पायो' प्रभू, जजत कर्म-विध्वंस॥**
ॐ ह्रीं **शिवोद्यमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २५८।।

**जगत् पूज्य शिवनाथ हो, तुम ही द्रव्य-विशिष्ट।**
**हित-उपदेशक परमगुरु, मुनिजन माने इष्ट॥**
ॐ ह्रीं **जगत्पूज्यशिवनाथाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २५९।।

सिद्धों में उपचार से तीर्थंकरों के ज्ञानकल्याणक-सम्बन्धी अर्घ्य

**मति श्रुत अवधि आवर्ण को, नाश कियो स्वयमेव।**
**केवलज्ञान स्वतः लियो, आप 'स्वयंभू' देव॥**
ॐ ह्रीं **स्वयंभुवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २६०।।

**'समोसरण अबुध्य महा[१], और लहै नहिं कोय।**
**धनपति रचो उछाह' सों, मैं पूजूँ हूँ सोय॥**
ॐ ह्रीं **कुबेर-निर्मित-स्थानाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २६१।।

**जाको 'अन्त न हो कभी, ज्ञान लक्ष्मी-नाथ'।**
**सो शिवपुर के हैं धनी, नमूँ भाव धर माथ॥**
ॐ ह्रीं **अनन्त-श्रीयुजे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २६२।।

१. हे प्रभु! समवसरण की महिमा सामान्य बुद्धि से अगोचर है।



**'गणधरादि नित ध्यावते', पावैं शिवपुर वास।**
**'परम ध्येय' तुम नाम है, पूरैं मन की आस॥**
ॐ ह्रीं **योगीश्वरार्चिताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २६३।।

**'परम ब्रह्म के लाभ' को, तुम पायो है सार।**
**त्रिभुवन ज्ञाता हो सही, नय निश्चय-व्यवहार॥**
ॐ ह्रीं **ब्रह्मतत्त्वाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २६४।।

**सर्व तत्त्व के आदि में, 'ब्रह्म तत्त्व' परधान।**
**तिसके 'ज्ञाता' हो प्रभु, मैं वंदूँ धर ध्यान॥**
ॐ ह्रीं **ब्रह्म-विदे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २६५।।

**द्रव्य-भाव दो विध कहो, 'यज्ञ-जजन' की रीत।**
**सो सब तुम ही हेत हैं, रचत नशें अति भीत॥**
ॐ ह्रीं **यज्ञ-पतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २६६।।

**'महादेव' 'शिवनाथ' हो, 'तुमको पूजत लोक'।**
**मैं पूजूँ हूँ भाव से, मेटो मन के शोक॥**
ॐ ह्रीं **याज्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २६७।।

**कृत्य भए निज भाव में, 'सिद्ध भये सब काज'।**
**पायो निज पुरुषार्थ को, वंदूँ सिद्ध समाज॥**
ॐ ह्रीं **कृतवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २६८।।

**'यज्ञ-विधान के अंग' हो, मुख नामी परधान।**
**तुम बिन यज्ञ न हो कभी, पूजत हो कल्यान॥**
ॐ ह्रीं **यज्ञांगाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २६९।।

**मरण-रोग के हरण तें, अमर भये हो आप।**
**शरणागत को अमर कर, 'अमृत' हो निष्पाप॥**
ॐ ह्रीं **अमृताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २७०।।

**'पूजन-विधि-स्थान' हो, पूजत शिवसुख होय।**
**सुर-नर नित पूजन करैं, मिथ्यामति को खोय॥**
ॐ ह्रीं **यज्ञाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २७१।।

**जो हो सो सामान्य कर, धरत विशेष अनेक।**
**'वस्तु-सुभाव' यही कहो, वंदूँ सिद्ध प्रत्येक॥**
ॐ ह्रीं **स्तुत्याय**[१] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २७२।।

**इन्द्र सदा तुम थुति करैं, मन में भक्ति उपाय।**
**'सर्व शास्त्र में तुम थुती', गणधरादि कर गाय॥**

ॐ ह्रीं **स्तुतीश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २७३।।

**मगन रहो 'निजतत्त्व' में, द्रव्य-भाव विधि नास।**
**'जो है सो है' विविध बिन, नमूँ अचल अविनास॥**

ॐ ह्रीं **भावाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २७४।।

**तीन लोक सिर राजहैं, इन्द्रादिक कर पूज।**
**'धर्मनाथ प्रतिपाल जग', और नहीं है दूज॥**

ॐ ह्रीं **महा-महपतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २७५।।

**महा भाग सरधान तें, तुम अनुभव कर जीव।**
**सो पुनि सेवत पाप तज, 'शिवसुख तुम आधीन'॥**

ॐ ह्रीं **महायज्ञाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २७६।।

**यज्ञ-विधि उपदेश में, तुम अग्रेश्वर जान।**
**'यज्ञ रचावनहार' तुम, तुम ही हो यजमान॥**

ॐ ह्रीं **अग्र-याजकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २७७।।

**'तीन लोक के पूज्य' हो, भक्ति-भाव उर-थान।**
**धर्म-अर्थ अरु मोक्ष के, दाता तुम को जान॥**

ॐ ह्रीं **जगत्पूज्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २७८।।

**'दया-मोह परयाय तें, दूर भये स्वतंत्र'।**
**'ब्रह्म ज्ञान में लय सदा', जपूँ नाम तिस मंत्र॥**

ॐ ह्रीं **दया-यागाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २७९।।

**'तुम ही पूजन योग्य' हो, 'तुम ही हो आराध्य'।**
**महा साधु तुम हेतु तें, साधे हैं निज साध्य॥**

ॐ ह्रीं **पूज्यार्हाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २८०।।

**निज पुरुषार्थ के सधन को, 'तुमको अर्चत जक्त'[१]।**
**मनवंछित दातार हो, शिवसुख पावैं भक्त॥**

ॐ ह्रीं **जगदर्चिताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २८१।।

**ध्यावत हैं नित प्रति तुम्हें, देव चार परकार।**
**तुम 'देवन के देव' हो, नमूँ भक्ति उरधार॥**

ॐ ह्रीं **देवाधिदेवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २८२।।

**'इन्द्र समान न भक्त हैं, तुम समान नहिं देव।**
**ध्यावत हैं नित' भाव सों, मोक्ष लहैं हैं एव॥**

१. हे प्रभु! अपने मोक्ष-पुरुषार्थ को साधने के लिए जगत् आपकी अर्चना करते हैं।



ॐ ह्रीं **शक्रार्च्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २८३।।

**तुम 'देवन के देव' हो, सदा पूजने योग।**
**जे पूजत हैं भाव सों, भोगें शिवसुख-भोग॥**

ॐ ह्रीं **देव-देवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २८४।।

**'तीन लोक सरताज' हो, तुमसे बड़ा न कोय।**
**सुर-नर-पशु-खग ध्यावते, दुविधा मन की खोय॥**

ॐ ह्रीं **जगद्-गुरवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २८५।।

**जो हो सो हो तुम सही, नहीं समझ में आय।**
**'सुर-नर-मुनि सब ध्यावते', तुम वाणी को पाय॥**

ॐ ह्रीं **संहूत-देव-संघार्च्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २८६।।

**ज्ञानानंद स्वलक्षमी, ताके हो भरतार।**
**स्व-सुगंध-वासित रहो, 'कमल गंध' की सार॥**

ॐ ह्रीं **पद्म-यानाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २८७।।

**सब कुवाद-वादी हते, वज्र-शैल उनहार।**
**'विजय-ध्वजा फहरात' हैं, वंदूँ भक्ति विचार॥**

ॐ ह्रीं **जय-ध्वजिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २८८।।

सिद्धों में उपचार से तीर्थंकरों के अष्ट प्रातिहार्यादि सम्बन्धी अर्घ्य

**'दशों दिशा परकास है, तन की ज्योत अमंद'।**
**भविजन-कुमुद विकास हो, वंदूँ पूरण चंद॥**

ॐ ह्रीं **भामण्डलिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २८९।।

**'चमरनि कर भक्ति करें, देव चार परकार'।**
**यह प्रभूत तुम ही विषैं, वंदूँ पाप निवार॥**

ॐ ह्रीं **चतुःषष्ठि-चामराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २९०।।

**'देव-दुन्दुभी' शब्द कर, सदा करैं जयकार।**
**तथा आप परसिद्ध हो, ढोल शब्द उनहार॥**

ॐ ह्रीं **देव-दुन्दुभये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २९१।।

**तुम 'वाणी' सब मनन कर, समझत हैं इक सार।**
**अक्षरार्थ नहिं भ्रम पड़े, संशय-मोह निवार॥**

ॐ ह्रीं **वाचे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २९२।।

**धनपति रच तुम आसनं, महा प्रभूता जान।**
**तथा 'स्व-आसन पाइयो, अचल रहो शिवथान'॥**

ॐ ह्रीं **अस्पृष्टासनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २९३।।

**तीन लोक के नाथ हो, 'तीन छत्र विख्यात'।**
**भव्य जीव तुम छाँय में, सदा स्व-आनंद पात॥**
ॐ ह्रीं **छत्र-त्रय-राजे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २९४॥

**'पुष्प-वृष्टि' सुर करत हैं, तीनों काल मंझार।**
**तुम सुगन्ध दश दिश रमी, भविजन-भ्रमर निहार॥**
ॐ ह्रीं **पुष्प-वृष्टि-भाजे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २९५॥

**देव-रचित जु 'अशोक' है, वृक्ष महा रमणीक।**
**समोसरण शोभा प्रभु, शोक-निवारण ठीक॥**
ॐ ह्रीं **दिव्याऽशोकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २९६॥

**'मानस्तम्भ निहार के, कुमतिन मान गलाय'।**
**समोसरण प्रभुता कहै, नमूँ भगत उर लाय॥**
ॐ ह्रीं **मान-मर्दिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २९७॥

**'सुरदेवी संगीत कर, गावैं गुण शुभ मान'।**
**भक्ति भाव उर में जगो, वंदत श्री भगवान॥**
ॐ ह्रीं **संगीताऽर्हाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २९८॥

**'मंगल-सूचक चिह्न हैं, कहें अष्ट परकार'।**
**तुम समीप राजत सदा, नमूँ अमंगल टार॥**
ॐ ह्रीं **अष्ट-मंगलाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २९९॥

सिद्धों में उपचार से तीर्थ / तीर्थंकर विशेषण सम्बन्धी अर्घ्य

**भविजन तरिये 'तीर्थ' सो, तुम हो श्री भगवान।**
**कोई न भंगे आन जिन, 'तीर्थचक्र' सो जान॥**
ॐ ह्रीं **तीर्थंकराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३००॥

**'सम्यग्दर्शन धरत हो, निश्चय परमवगाढ़'।**
**संशय आदिक मेट के, नासो सकल विगाढ़॥**
ॐ ह्रीं **तीर्थ-सुदृशे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३०१॥

**'कर्ता हो शिवकाज के', ब्रह्मा जग की रीत।**
**वर्णाश्रम को थाप के, प्रगटायो शुभ नीत॥**
ॐ ह्रीं **तीर्थकर्त्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३०२॥

**'सत्य धर्म प्रतिपाल' के, पोषत हो संसार।**
**'यति-श्रावक' दो धर्म के, भये नाथ सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **धर्मतीर्थभर्त्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३०३॥





**'धर्मतीर्थ मुनिराज हैं, तिनके हो तुम स्वाम'।**
**'धर्मनाथ' तुम जान के, नित प्रति करूँ प्रणाम॥**
ॐ ह्रीं **धर्मतीर्थेशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३०४॥

**लोक-तीर्थ में गिनत हैं, 'धर्म-तीर्थ परधान'।**
**सो तुम राजत हो सदा, मैं वंदूँ धर ध्यान॥**
ॐ ह्रीं **धर्म-तीर्थकराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३०५॥

**तुम बिन धर्म न हो कभी, ढूँढो सकल जहान।**
**'दशलक्षण स्व-धर्म के, तीरथ हो परधान'॥**
ॐ ह्रीं **धर्म-तीर्थयुताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३०६॥

**धर्म-तीर्थ करतार हैं - श्रावक या मुनिराज।**
**दोनों विधि उत्तम कहो, 'स्वर्ग-मोक्ष के काज'॥**
ॐ ह्रीं **धर्म-तीर्थ-नायकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३०७॥

**'तुम से धर्म चले सदा', तुम्ही धर्म के मूल।**
**सुर-नर-मुनि पूजैं सदा, छिदे कर्म के शूल॥**
ॐ ह्रीं **तीर्थ-प्रवर्तकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३०८॥

**धर्मनाथ जग में प्रगट, तारण-तरण जहाज।**
**'तीन लोक अधिपति' कहो, वंदूँ सुख के काज॥**
ॐ ह्रीं **तीर्थ-वेधसे**[1] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३०९॥

**'श्रावक या मुनि धर्म के, हो दिखलावन हार'।**
**अन्य लिंग नहिं धर्म के, बुधजन लखो विचार॥**
ॐ ह्रीं **तीर्थ-विधायकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३१०॥

**'स्वर्ग-मोक्ष दातार' हो, तुम्हीं मार्ग सुखदान।**
**अन्य कुभेषिन में नहीं, धर्म 'यथारथ ज्ञान'॥**
ॐ ह्रीं **सत्य-तीर्थकराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३११॥

**'सेवन योग्य' सु जगत् में, तुम तीरथ है सार।**
**सुर-नर-मुनि सेवन करैं, मैं वंदूँ सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **तीर्थ-सेव्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३१२॥

**भवि समुद्र-भव से तिरैं, सो तुम 'तीर्थ' कहाय।**
**हो 'तारण तिहुँ लोक के', सेवत हूँ तुम पाय॥**
ॐ ह्रीं **तीर्थ-तारकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३१३॥

१. तीर्थवेधसे = तीर्थ के कर्ता

सिद्धों में उपचार से 'दिव्यध्वनि' सम्बन्धी अर्घ्य

**'सर्व अर्थ परकाश करि, निर-इच्छा तुम बैन'।**
**धर्म सुमार्ग प्रवर्तको, तुम राजत हो ऐन॥**

ॐ ह्रीं **सत्य-वाक्याधिपाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३१४।।

**'धर्म-मार्ग परगट करै, सो शासन' कहलाय।**
**सो उपदेशक आप हो, तिस संकेत कराय॥**

ॐ ह्रीं **सत्य-शासनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३१५।।

**'अतिशय कर सर्वज्ञ' हो, ज्ञानावरण विनाश।**
**नेमरूप[१] भवि सुनत ही, शिवसुख करत प्रकाश॥**

ॐ ह्रीं **अप्रतिशासनाय**[२] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३१६।।

**'कहे कथंचित् धर्म को, स्यात् वचन सुखकार'।**
**सो प्रमाण तें साधियो, नय निश्चय-व्यवहार॥**

ॐ ह्रीं **स्याद्वादिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३१७।।

**'निर-अक्षर वाणी खिरै', दिव्य मेघ की गर्ज।**
**अक्षरार्थ हो परिणवै, सुन भव्यन-मन-अर्ज॥**

ॐ ह्रीं **दिव्य-ध्वनये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३१८।।

**'नय-प्रमाण नहिं हतत हैं, तुम परकासे अर्थ'।**
**शिवसुख के साधन विषैं, नहीं गिने हैं व्यर्थ॥**

ॐ ह्रीं **अव्याहतार्थ-वाचे**[३] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३१९।।

**करै 'पवित्र सु आत्मा', अशुभ-कर्म-मल खोय।**
**पहुँचावै ऊँची सुगति, तुम दिखलायो सोय॥**

ॐ ह्रीं **पुण्य-वाचे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३२०।।

**'तत्त्वारथ तुम भासयो', सम्यक् विषे प्रधान।**
**मिथ्या जहर निवारणं, अमृत-खान समान॥**

ॐ ह्रीं **अर्थ-वाचे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३२१।।

**'दिव-अतिशय सों खिरत ही, अक्षरार्थमय होय'।**
**दिव्यध्वनि निश्चय करै, संशय-तम को खोय॥**

ॐ ह्रीं **अर्द्धमागधी-योक्तये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३२२।।

**'सब जीवन को इष्ट' है, मोक्ष निजानंद वास।**
**सो तुमने दिखलाइयो, संशय-मोह-विनास॥**

ॐ ह्रीं **इष्ट-वाचे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३२३।।

१. नियमरूप २. अप्रतिम शासन ३. अबाधित पदार्थ के वाचक





**नय-प्रमाण ही कहत हैं, द्रव्य-पर्याय सु भेद।**
**'अनेकांत साधै' सही, वस्तु-भेद-निरखेद॥**

ॐ ह्रीं **अनेकान्त-दिशे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३२४।।

**'दुर्नय कहत एकांत को, ताको अंत कराय'।**
**सम्यक् मति प्रगटाइयो, पूजूँ तिनके पाय॥**

ॐ ह्रीं **दुर्नयान्त-कृते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३२५।।

**'एक पक्ष मिथ्यात्व है, ताको तिमिर निवार'।**
**स्याद्वाद सम न्याय तें, भविजन तारे पार॥**

ॐ ह्रीं **एकान्त-ध्वान्त-भिदे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३२६।।

**'जो है सो निजभाव में, रहै सदा निर्बाध'।**
**मोक्ष-साध्य में सार है, सम्यक् विषे अगाध॥**

ॐ ह्रीं **स्वार्थ-वाचे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३२७।।

**निज-गुण निज-पर्याय में, सदा रहो निरभेद।**
**'शुद्ध-द्रव्य अव्यक्त हो, पूजूँ हूँ निःखेद'॥**

ॐ ह्रीं **अप्रयत्नोक्तये**[२] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३२८।।

**'स्यात्कार उद्योत कर', वस्तु-धर्म निरशंस।**
**तासु ध्वजा निर्विघ्न को, भाषो विधि-विध्वंस[१]॥**

ॐ ह्रीं **स्यात्कार-ध्वज-वाचे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३२९।।

**'परम्पराइ धर्म को, उपदेशो श्रुत-द्वार'।**
**भवि भवसागर तीर लह, पायो शिवसुख कार॥**

ॐ ह्रीं **ईहापेत-वाचे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३३०।।

**'द्रव्यदृष्टि नहिं पुरुषकृत', है अनादि-परमान।**
**सो तुम भाख्यो हो सही, यह पर्याय सुजान॥**

ॐ ह्रीं **अपौरुषेय-वाचे**[३] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३३१।।

**'नहीं चलाचल होंठ हों, जिस वाणी के होत'।**
**सो मैं वंदूँ है किया मोक्षमार्ग उद्योत॥**

ॐ ह्रीं **अचलौष्ठ-वाचे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३३२।।

**तुम सन्तान अनादि है, 'शाश्वत' नित्य-स्वरूप।**
**तुम को वंदूँ भाव सों, पाऊँ शिव-सुख-कूप॥**

ॐ ह्रीं **शाश्वताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३३३।।

१. अस्ति-नास्ति २. बिना प्रयत्न के खिरनेवाली ३. अनादि होने से अपौरुषेय

**हीनाधिक वा और-विध, 'नहिं विरुद्धता' जान।**
**'एकरूप सामान्य' है, सब ही सुख की खान॥**

ॐ ह्रीं **अविरुद्ध-वाचे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३३४।।

**नय-विवक्ष तैं सधत है, 'सप्त भंग' निरबाध।**
**सो तुम भाख्यो नमत हूँ, वस्तु रूप को साध॥**

ॐ ह्रीं **सप्तभंगि-वाचे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३३५।।

**'अक्षर बिन वाणी खिरै', सर्व अर्थ कर युक्त।**
**भविजन मति-सरधान तें, पावैं जग तें मुक्त॥**

ॐ ह्रीं **अवर्ण-गिरे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३३६।।

**क्षुद्र तथा अक्षुद्र मय, 'सब भाषा परकास'।**
**तुम मुख तैं खिर कै करे, भरम-तिमिर को नास॥**

ॐ ह्रीं **सर्व-भाषामय-गिरे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३३७।।

**'कहने योग्य' समर्थ सब, अर्थ करै परकास।**
**तुम 'वाणी मुख तैं खिरे', करै भरम-तम-नास॥**

ॐ ह्रीं **व्यक्त-वर्ण-गिरे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३३८।।

**तुम 'वाणी नहिं व्यर्थ है', भंग कभी नहिं होय।**
**लगातार मुख तैं खिरे, संशय-तम को खोय॥**

ॐ ह्रीं **अमोघ-वाचे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३३९।।

**'वस्तु अनंत पर्याय है, वचन-अगोचर जान'।**
**तुम दिखलायो सहज ही, हर कुमतन मतवान॥**

ॐ ह्रीं **अवाच्यानन्त-वाचे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३४०।।

**'वचन-अगोचर' गुण धरो, लहैं न गणधर पार।**
**तुम महिमा तुम ही विषैं, मुझ तारो भव-पार॥**

ॐ ह्रीं **अवाचे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३४१।।

**'तुम सम वचन न कहि सकै, असद्मती छद्मस्थ'।**
**धर्म-मार्ग प्रगटाइयो, मेटो कुमति समस्त॥**

ॐ ह्रीं **अद्वैत-गिरे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३४२।।

**'सत्य प्रिय तुम बैन हैं, हित-मित भविजन हेत'।**
**जो मुनिजन तुम ध्यान धर, पावें शिवपुर खेत॥**

ॐ ह्रीं **सूनृत-गिरे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३४३।।

**नहीं साँच नहिं झूठ है, 'अनुभय-वचन कहात'।**
**सो तीर्थंकर-ध्वनि कही, 'सत्यारथ सत् बात'॥**





ॐ ह्रीं **सत्यानुभय-गिरे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३४४।।

**मिथ्या अर्थ प्रकाश कर, कुगिरा ताको नाम।**
**सत्यारथ उद्योत कर, 'सुगिरा' तुम अभिराम॥**

ॐ ह्रीं **सुगिरे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३४५।।

**'योजन एक चहूँ दिशा, हो वाणी विस्तार'।**
**श्रवण-सुनत भविजन लहैं, आनंद हिये अपार॥**

ॐ ह्रीं **योजन-व्यापि-गिरे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३४६।।

**'निर्मल क्षीर समान है, गौर-श्वेत तुम बैन'।**
**पाप-मलिनता रहित है, सत्य-प्रकाशक एन॥**

ॐ ह्रीं **क्षीर-गौर-गिरे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३४७।।

**'तीर्थ-तत्त्व'[१] जो नहिं तजैं, तारण भविजन वान'।**
**यातैं तीर्थंकर प्रभू, नमत पाप-मल-हान॥**

ॐ ह्रीं **तीर्थ-तत्त्व-गिरे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३४८।।

**'उत्तम परयोजन कहो, आत्मतत्त्व को ज्ञान'।**
**सो तुम सत्यारथ कहो, मुनिजन उत्तम मान॥**

ॐ ह्रीं **तीर्थ-कृत्य-गिरे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३४९।।

**'भव्यनि को श्रवणनि सुखद, तुम वाणी सुख देन'।**
**मैं वंदूँ हूँ भाव सों, धर्म बतायो ऐन॥**

ॐ ह्रीं **भव्यैक-श्रव्य-गिरे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३५०।।

**संशय-विभ्रम-मोह को, नाश करो निर्मूल।**
**'सत्य-वचन-परिमाण' तुम, छेदत मिथ्या शूल॥**

ॐ ह्रीं **सद्-गवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३५१।।

**तुम वाणी में प्रगट हैं, सब 'सामान्य-विशेष'।**
**'नाना विध सुन तर्कमय', संशय रहै न शेष॥**

ॐ ह्रीं **चित्र-गवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३५२।।

**'परम' कहै उत्कृष्ट को, 'अर्थ' होय गंभीर।**
**सो तुम 'वाणी' में खिरै, वंदत भव-दधि-तीर॥**

ॐ ह्रीं **परमार्थ-गवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३५३।।

---

१. समयसार १२वीं गाथा की टीका में भी 'जइ जिणमयं पवज्जह' – इस उद्धृत गाथा में भी निश्चय से तत्त्व और व्यवहार से तीर्थ की बात समझाई है।

**मोह-क्षोभ 'परशांत' हो, तुम 'वाणी' उर धार।**
**भविजन को संतुष्ट कर, भव-आताप निवार॥**
ॐ ह्रीं **प्रशान्त-गवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३५४।।

**बारह सभा सु 'प्रश्न कर, समाधान करतार'।**
**मिथ्या-मत-विध्वंस कर, वंदूँ मन में धार॥**
ॐ ह्रीं **प्राश्निक-गवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३५५।।

**महापुरुष महदेव हो, सुर-नर 'पूजन-योग'।**
**'वाणी' सुन मिथ्यात तज, पावैं शिव-सुख-भोग॥**
ॐ ह्रीं **याज्य-श्रुतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३५६।।

**शिवमग-उपदेशै 'सुश्रुत', मन में अर्थ विचार।**
**साक्षात् उपदेश तुम, तारे भविजन पार॥**
ॐ ह्रीं **सु-श्रुतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३५७।।

**'तुम समान तिहुँ लोक में, नहीं अर्थ-परकास'।**
**भविजन संबोधो सदा, मिथ्या तम को नास॥**
ॐ ह्रीं **महा-श्रुतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३५८।।

**जो निज-आत्म-कल्याण में, 'वरते सो उपदेश।**
**धर्म नाम तिस जानियो', वंदूँ चरण हमेश॥**
ॐ ह्रीं **धर्म-श्रुतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३५९।।

**'जिनशासन के अधिपती', शिव-मारग बतलाय।**
**वा भविजन सन्तुष्ट कर, वंदूँ तिनके पाय॥**
ॐ ह्रीं **श्रुति-पतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३६०।।

**'धारण हो उपदेश के', केवलज्ञान प्रयुक्त।**
**शिवमारग दिखलात हो, तुमको वंदन युक्त॥**
ॐ ह्रीं **श्रुति-धृताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३६१।।

**'जैसो है तैसो कहो, परम्पराय सो रीत'।**
**सत्यारथ उपदेश तैं, धर्ममार्ग की नीत॥**
ॐ ह्रीं **ध्रुव-श्रुतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३६२।।

**'मोक्षमार्ग को देखियो, औरन को दिखलाय'।**
**तुम सम हितकारक नहीं, वंदूँ हूँ तिन पाय॥**
ॐ ह्रीं **निर्वाण-मार्ग-दिशे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३६३।।



**'स्वर्ग-मोक्ष-मारग कहो, यति-श्रावक को धर्म'।**
**तुमको वंदत सुख महा, लहै ब्रह्मपद पर्म॥**
ॐ ह्रीं **मार्ग-देशकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३६४।।

**'तत्त्व-अतत्त्व सु जानियो, तुम सब ही प्रत्यक्ष'।**
**निज-आतम सन्तुष्ट हो, देखो लक्ष-अलक्ष॥**
ॐ ह्रीं **सर्व-मार्ग-दिशे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३६५।।

**'सार तत्त्व वर्णन कियो, अयथार्थ मल-नाश'।**
**स्व-पर-परकासन महा, वंदूँ तिन को दास॥**
ॐ ह्रीं **सारस्वत-पथाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३६६।।

**'आप तीर्थ औरन प्रती, सर्व तीर्थ करतार'।**
**उत्तम शिवपुर पहुँचना, यही विशेषण सार॥**
ॐ ह्रीं **तीर्थ-परमोत्तम-तीर्थकृते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३६७।।

**'दृष्टा' लोकालोक के, रेखा हस्त-समान।**
**युगपत् सबको देखियो, कियो भर्म-तम-हान॥**
ॐ ह्रीं **देष्ट्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३६८।।

**'जिनवाणी के ईश हो', तासों रति दिन-रैन।**
**भोग-उपभोग करो सदा, वंदत हो सुख-चैन॥**
ॐ ह्रीं **वाग्मीश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३६९।।

**जो संसार-समुद्र से, पार करे सो धर्म।**
**तुम 'उपदेश्या धर्ममय', नमत मिटै भव-शर्म॥**
ॐ ह्रीं **धर्म-शासकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३७०।।

**'धर्मरूप उपदेश' है, भवि-जीवन हितकार।**
**मैं वंदूँ तिनको सदा, करो भवार्णव पार॥**
ॐ ह्रीं **धर्म-देशकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३७१।।

**'सब विद्या के ईश' हो, पूरण ज्ञान सु जान।**
**तिनको वंदूँ भाव से, पाऊँ ज्ञान महान॥**
ॐ ह्रीं **वागीश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३७२।।

**'सुमति-नार भरतार हैं', कुमत-कुसौत-विडार।**
**मैं पूजूँ हूँ भाव सों, पाऊँ स्वमति-सार॥**
ॐ ह्रीं **त्रयी-नाथाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३७३।।

**'धर्म-अर्थ अरु मोक्ष के, हो दाता भगवान'।**
**मैं नित प्रति पायनि परूँ, देहु परम कल्यान॥**
ॐ ह्रीं **त्रिभङ्गीशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३७४॥

**'गिरा कहैं जिनवचन को, तिसका अंत सुधर्म'।**
**मोक्ष करै भवि-जनन को, नासे मिथ्या भर्म॥**
ॐ ह्रीं **गिरां-पतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३७५॥

**जाकी सीमा 'मोक्ष' है, पूरण सुख-स्थान।**
**'शरणागत को सिद्ध' है, नमूँ सिद्ध धर ध्यान॥**
ॐ ह्रीं **सिद्धाज्ञाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३७६॥

**'नय-प्रमाण सों सिद्ध है, तुम वाणी-रवि सार'।**
**मिथ्या-तिमिर निवार कै, करैं भव्यजन पार॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-वाचे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३७७॥

**'निज पुरुषारथ साध के, सिद्ध भये सुखकार'।**
**मन-वच-तन कर मैं नमूँ, करो जगत् से पार॥**
ॐ ह्रीं **आज्ञा-सिद्धाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३७८॥

**'सिद्ध करै निज अर्थ को, तुम शासन हितकार'।**
**भविजन माने सरधहै, करै कर्म-रज-जार॥**
ॐ ह्रीं **सिद्धैक-शासनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३७९॥

**'तीन लोक में सिद्ध है, तुम प्रसिद्ध सिद्धांत'।**
**अनेकांत परकास कर, नाशै मिथ्या-ध्वांत॥**
ॐ ह्रीं **जगत्प्रसिद्ध-सिद्धान्ताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३८०॥

**'ओंकार इक मंत्र है, तीन लोक परसिद्ध'।**
**तुम साधक कहलात हो, जपत मिलै नव निद्ध॥**
ॐ ह्रीं **सिद्ध-मन्त्राय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३८१॥

**'सिद्ध यज्ञ को कहत हो', संशय-विभ्रम-नास।**
**मोक्षमार्ग में ले धरै, निजानंद परकास॥**
ॐ ह्रीं **सुसिद्ध-वाचे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३८२॥

**'मोहरूप मल सों धुली, वाणी कहो पवित्र'।**
**भव्य स्वच्छता धार के, लहै मोक्षपद तत्र॥**
ॐ ह्रीं **शुचि-वाचे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३८३॥



**कर्ण-विषयमय होत ही, करै आत्म-कल्यान।**
**'तुम वाणी शुचिता धरै', नमें 'संत' धर ध्यान॥**
ॐ ह्रीं **शुचि-श्रवसे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३८४॥

**'वचन-अगोचर पद धरो, कहते पंडित लोग'।**
**तुम महिमा तुम ही विषै, सदा वंदने योग॥**
ॐ ह्रीं **निरुक्तोक्तये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३८५॥

**सुर-नर मानै आन सब, तुम आज्ञा सिर-धार।**
**'मानो तंत्र-विधान कर', बाँधे एक लगार॥**
ॐ ह्रीं **तंत्र-कृते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३८६॥

**जा करि निश्चय कीजिए, वस्तु प्रमेय अपार।**
**'सो तुमसे परगट भयो, न्याय-शास्त्र रुचि धार'॥**
ॐ ह्रीं **न्याय-शास्त्र-कृते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३८७॥

**गुण अनन्त पर्याय युत, द्रव्य अनंतानंत।**
**'युगपत् जानो चेष्ट युत, धरो महा सुखवंत'॥**
ॐ ह्रीं **महिष्ठ-वाचे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३८८॥

**तुम पद पावै सो महा, तुम गुण पार लहाय।**
**'शिव-लक्ष्मी के नाथ' हैं, पूजूँ तिनके पाय॥**
ॐ ह्रीं **महा-नादाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३८९॥

**'तुम सम कविता' जगत् में, और न दूजी कोय।**
**गणधर से श्रुतकार ना, अर्थ लहैं हैं सोय[१]॥**
ॐ ह्रीं **कवीन्द्राय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३९०॥

**हित-कर्ता षट् काय के, 'महा इष्ट' तुम बैन।**
**तुमको वंदूँ भाव सों, मोक्ष महासुख दैन॥**
ॐ ह्रीं **महेष्टाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३९१॥

**'मोक्ष-दान-दातार' हो, तुम सम कौन महान।**
**तीन लोक तुमको जजैं, मन में आनंद ठान॥**
ॐ ह्रीं **महानन्द-दात्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३९२॥

**द्वादशांग श्रुत को रचैं, गणधर से 'कविराज'।**
**तुम आज्ञा सिर धार कै, नमूँ निजातम काज॥**
ॐ ह्रीं **कवीश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३९३॥

**'देव महा ध्वनि करत हैं', तुम सन्मुख धर भाव।**
**केवल अतिशय कहत हैं, मैं पूजूँ युत चाव॥**
ॐ ह्रीं **दुन्दुभी-स्वनाय**[1] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३९४।।

**इन्द्रादिक नित पूजते, भक्ति-पूर्व सिर नाय।**
**'त्रिभुवननाथ' कहात हो, हम पूजत तिन पाय॥**
ॐ ह्रीं **त्रिभुवन-नाथाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३९५।।

**'गणी''मुनीश''फनीशपति','कल्पेंद्रन के नाथ'।**
**'अहमिंद्रनि के नाथ' हो, तुमहिं नमूँ धरि माथ॥**[2]
ॐ ह्रीं **महा-नाथाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३९६।।

**'भिन्न-भिन्न देख्यो सकल', लोकालोक अनंत।**
**तुम सम दृष्टि न और की, तुम्हें नमें नित संत॥**
ॐ ह्रीं **पर-द्रष्टाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३९७।।

**'यति-जग के भरतार हो, मुनिगण में परधान'।**
**तुमको पूजैं भाव सों, होत सकल कल्यान॥**
ॐ ह्रीं **पतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३९८।।

**'श्रावक या मुनिराज हो, तुम आज्ञा सिर-धार'।**
**वरते वृष-पुरुषार्थ में, पूजत हूँ सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **स्वामिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३९९।।

**धर्म-कार्य 'कर्ता' सही, हो ब्रह्मा परमार्थ।**
**मालिक हो तिहुँ लोक के, पूजनीक सत्यार्थ॥**
ॐ ह्रीं **कर्त्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४००।।

**'तीन लोक के नाथ' हो, शरणागत प्रतिपाल।**
**'चार संघ के अधिपती', पूजूँ हूँ नम भाल॥**
ॐ ह्रीं **भर्त्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४०१।।

**'तुम सम और विभव नहिं, धरो चतुष्ट अनंत'।**
**क्यों न करो उद्धार अब, दास कहावै संत॥**
ॐ ह्रीं **अद्वितीय-विभवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४०२।।

**'जामें विघन न हो कभी, ऐसी श्रेष्ठ विभूत'।**
**पाई निज पुरुषार्थ करि, पूजत शुभ करतूत॥**
ॐ ह्रीं **प्रभवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४०३।।

१. **स्वन** = ध्वनि २. यह छन्द नकुड़, महलका, आदि प्रतियों में नहीं है, जयपुर प्रति में है।



**'तुम सम शक्ति न और की, शिवलक्ष्मी को पाय'।**
**भोगैं सुख स्वाधीन कर, वंदूँ तिनके पाय॥**
ॐ ह्रीं **ईश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४०४।।

**तुमसे अधिक न और में, पुरुषारथ कहूँ पाय।**
**हो 'अधीश' सब जगत् के, वंदूँ तिनके पाय॥**
ॐ ह्रीं **अधीश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४०५।।

**'अग्रेश्वर' चहुँ संघ के, शिवनायक सिरमौर।**
**पूजत हूँ नित भाव सों, शीश दऊ-कर जोर॥**
ॐ ह्रीं **अधीशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४०६।।

**सहज सुभाव प्रयत्न बिन, 'तीन लोक आधीस'।**
**शुद्ध सुभाव विराजते, वंदूँ पद धर सीस॥**
ॐ ह्रीं **सर्वाधीशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४०७।।

**क्षायक सुमति सुहावनी, बीजभूत तिस जान।**
**'तुमसैं शिवमारग चलै', मैं वंदूँ धर ध्यान॥**
ॐ ह्रीं **अधिशित्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४०८।।

**'स्वयंबुद्ध शिवनाथ हो, धर्म-तीर्थ-करतार'।**
**तुम सम सुमति न को धरै, मैं वंदूँ निरधार॥**
ॐ ह्रीं **ईशित्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४०९।।

**'पूरण शक्ति सुभाव धर', पूरण ब्रह्म-प्रकाश।**
**पूरण पद पायो प्रभू, पूजत पाप-विनाश॥**
ॐ ह्रीं **ईशानाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४१०।।

**तुमसे अधिक न और है, 'त्रिभुवन ईश' कहाय।**
**तीन लोक अत्यन्त सुख, पायो वंदूँ पाय॥**
ॐ ह्रीं **त्रिभुवन-अधिपतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४११।।

**तीन लोक पूजत चरण, 'ईश्वर' तुमको जान।**
**मैं पूजों हों भाव सों, सबसे बड़े महान॥**
ॐ ह्रीं **ईशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४१२।।

**सूरज सम परकाश कर, मिथ्या-तम-परिहार।**
**'भविजन-अंध-प्रबोध' को, पायो स्व-हितकार॥**
ॐ ह्रीं **इनाय**[1] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४१३।।

१. **इनाय** = सूर्य / स्वामी

**'क्रीड़ा करि शिवमार्ग में, पाय परम पद आप'।**
**'आज्ञा-भंग न हो कभी', वंदत नाशे पाप॥**
ॐ ह्रीं **इन्द्राय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४१४।।

**उत्तम हो तिहुँ लोक में, सबके हो सरताज।**
**'शरणागत' 'प्रतिपाल' हो, पूजूँ आतम काज॥**
ॐ ह्रीं **अधिपाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४१५।।

**'अधिक भूति के हो धनी, सर्व सुखी निरधार'।**
**सुर-नर तुम पद को लहैं, पूजत हूँ सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **अधिभुवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४१६।।

**तीन लोक कल्याण कर, धर्ममार्ग चित लाय।**
**'सब देवन के देव' हो, 'महादेव' सुखदाय॥**
ॐ ह्रीं **महेश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४१७।।

**'महा ईश' महाराज हो, महा प्रताप धराय।**
**महा जीव पूजें चरण, सब जन शरण सहाय॥**
ॐ ह्रीं **महेशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४१८।।

**परम कहो उत्कृष्ट को, धर्म-तीर्थ वरताय।**
**'परमेश्वर' यातैं भये, वंदूँ तिनके पाय॥**
ॐ ह्रीं **परम-शिवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४१९।।

**'तुम सम महान न है कोई', जग ईश्वर जगनाथ।**
**महा विभव ऐश्वर्य को, धरो नमूँ निज माथ॥**
ॐ ह्रीं **महेशानाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४२०।।

**चार प्रकार नमैं सदा, 'देव तुम्हैं सिर नाय'।**
**'सब देवन में श्रेष्ठ' हो, नमूँ युगल तुम पाय॥**
ॐ ह्रीं **अधिदेवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४२१।।

**'तुम समान नहिं देव' अरु, तुम 'देवन के देव'।**
**यों महान पदवी धरौ, तुम पूजत हूँ एव॥**
ॐ ह्रीं **महादेवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४२२।।

**शिव-मारग तुमसे सही, 'देव' पूजने योग।**
**तुम गुण हैं सहचारिणी, और कुदेव अयोग॥**
ॐ ह्रीं **देवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४२३।।



**'तीन लोक पूजत चरण', तुम आज्ञा सिर धार।**
**'त्रिभुवन-ईश्वर' हो सही, मैं पूजूँ निरधार॥**
ॐ ह्रीं **त्रिभुवनेश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४२४।।

**'विश्वपती तुमको नमें', निज कल्याण विचार।**
**'सर्व विश्व के तुम पती', मैं पूजूँ उर धार॥**
ॐ ह्रीं **विश्वेशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४२५।।

**'जगत् जीव कल्याण कर, लोकालोक अनंद'।**
**षट्कायक आह्लाद कर, जिम कुमोदनी चंद॥**
ॐ ह्रीं **विश्व-भूतेशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४२६।।

**इंद्रादिक जे 'विश्व-पति', तुमको पूजत आन।**
**यातें तुम विश्वेश हो, साँच नमूँ धर ध्यान॥**
ॐ ह्रीं **विश्वेशे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४२७।।

**विश्व बंध दृढ़ तोड़ के, 'विश्व-शिखर' ठहराय।**
**चरण-कमल-तल जगत् है, यूँ सब पूजत पाय॥**
ॐ ह्रीं **विश्वेश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४२८।।

**'शिव-मारग की रीति तुम, वरतायो शुभ योग'।**
**तिहूँ काल तिहुँ लोक में, और कुनीति अयोग॥**
ॐ ह्रीं **अधिराजे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४२९।।

**लोक-तिमिर-हर सूर्य हो, तारण लोक-जहाज।**
**'लोक-शिखर राजत प्रभू', मैं वंदूँ हित-काज॥**
ॐ ह्रीं **लोकेश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४३०।।

**'तीन लोक प्रतिपाल' हो, 'तीन लोक हितकार'।**
**'तीन लोक तारण-तरण', 'तीन लोक सरदार'॥**
ॐ ह्रीं **लोक-पतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४३१।।

**'लोक-पूज्य सुखकार' हो, पूजत हैं हित धार।**
**मैं पूजों नित भाव सों, करो भवार्णव पार॥**
ॐ ह्रीं **लोक-नाथाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४३२।।

**'पूजनीक जग में सही, तुम्हैं कहैं सब लोग'।**
**धर्म-मार्ग प्रगटित कियो, यातैं पूजन योग॥**
ॐ ह्रीं **जगत्पूज्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४३३।।

**'ऊरध-अधो-सु-मध्य है, तीन भाग यह लोक'।**
**तिनमें तुम 'उत्कृष्ट' हो, तुम्हें देत नित धोक॥**
ॐ ह्रीं **त्रैलोक्य-नाथाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४३४।।

**'तुम समान समरथ नहीं, तीन लोक में और'।**
**स्वयं शिवालय राजते, 'स्वामी हो सिरठौर'॥**
ॐ ह्रीं **लोकेशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४३५।।

**'जगत्-नाथ''जग-ईश' हो, 'जगपति' पूजें पाय।**
**मैं पूजूँ नित भाव युत, तारण-तरण सहाय॥**
ॐ ह्रीं **जगन्नाथाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४३६।।

**महाभूत इस जगत् में, धारत हो निरभंग।**
**'सब विभूति जग जीत कै', पायो सुख सरवंग॥**
ॐ ह्रीं **जगत्प्रभवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४३७।।

**मुनि-मन-करन 'पवित्र' हो, सब विभाव को नाश।**
**तुमको अंजुलि जोर कर, नमूँ होत अघ-नाश॥**
ॐ ह्रीं **पवित्राय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४३८।।

**मोक्षरूप 'परधान' हो, ब्रह्मज्ञान परवीन।**
**बंध रहित शिव-सुख सहित, नमैं 'संत' आधीन॥**
ॐ ह्रीं **पराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४३९।।

**जामें जन्म-मरण नहिं, 'लोकोत्तर' कियो वास।**
**'अचल सुथिर राजैं सदा', निजानंद परकास॥**
ॐ ह्रीं **परतराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४४०।।

**मोहादिक रिपु जीति के, विजयवंत कहलाय।**
**'जैत्र' नाम परसिद्ध है, वंदूँ तिनके पाय॥**
ॐ ह्रीं **जेत्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४४१।।

**'रक्षक' हो षट् काय के, 'कर्म-शत्रु क्षयकार'।**
**'विजय-लक्ष्मी-नाथ' हो, मैं पूजूँ सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **जिष्णवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४४२।।

**'करता' हो विधि कर्म के, 'हरता' पाप-विशेष।**
**पुण्य-पाप सु विभाग कर, भ्रम नहिं राखो शेष॥**
ॐ ह्रीं **कर्त्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४४३।।



**स्वानंद-ज्ञान विनाश बिन, अचल सुथिर है राज।**
**'अविनाशी अविकार' हो, वंदूँ स्व-हित-काज॥**
ॐ ह्रीं **अविनश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४४४।।

**इंद्रादिक पूजत चरन, महा भक्ति उर धार।**
**'तुम महान ऐश्वर्य को, धारत हो अविकार'॥**
ॐ ह्रीं **प्रभ-विष्णवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४४५।।

**'गुण-समूह गुरुता धरैं', 'महा भाग सुख-रूप'।**
**'तीन लोक कल्याण कर', पूजूँ हूँ 'शिव-भूप'॥**
ॐ ह्रीं **भ्रा-जिष्णवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४४६।।

**'महा विभव को धरत' हो, हित-कारण मितकार।**
**'धर्मनाथ' 'परमेश' हो, पूजत हूँ सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **प्रभु-विष्णवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४४७।।

**बिन कारण असहाय हो, 'स्वयं प्रभा अविरुद्ध'।**
**तुमको वंदूँ भाव सों, निज आतम कर शुद्ध॥**
ॐ ह्रीं **स्वयं-प्रभवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४४८।।

**'लोकवास को नाश कर, लोक-सम्बन्ध निवार'।**
**अचल विराजै शिवपुरी, पूजत हूँ उर धार॥**
ॐ ह्रीं **लोक-जिते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४४९।।

**'विश्व नाम संसार' है, जन्म-मरण से होय।**
**'सोई व्याधि विनासियो', जजूँ जोर कर-दोय॥**
ॐ ह्रीं **विश्व-जेत्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४५०।।

**'विषय-कषाय निवार के, जग-सम्बन्ध विनाश'।**
**जन्म-मरण बिन ध्रुव लसै, नमूँ ज्ञान-परकाश॥**
ॐ ह्रीं **विश्व-विजेत्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४५१।।

**'विश्व-वास तुम जीतियो', विश्व नमावै सीस।**
**पूजत हैं हम भक्ति सों, जयवन्तो जगदीस॥**
ॐ ह्रीं **विश्व-जिते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४५२।।

**इन्द्रादिक जिनको नमें, ते तुम सीस नवाय।**
**'विश्वजीत' तुम नाम है, शरणागत सुखदाय॥**
ॐ ह्रीं **विश्व-जित्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४५३।।

**तीन लोक की लक्ष्मी, तुम चरणांबुज ठौर।**
**यातैं 'सब जग जीति के', राजत हो जगमौर॥**
ॐ ह्रीं **जगज्जेत्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४५४॥

**'तीन लोक कल्याण कर', 'कर्म-शत्रु को जीत'।**
**'भव्यन प्रति आनंद कर', मेटत तिनकी भीत॥**
ॐ ह्रीं **जगज्जिष्णवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४५५॥

**जग-जीवन को अंध कर, फैलो मिथ्या घोर।**
**'धर्म-मार्ग प्रगटाय कर', पहुँचायो शिव-ठौर॥**
ॐ ह्रीं **जगन्नेत्राय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४५६॥

**'मोहादिक जिन जीतियो', सोई जग-जय नाम।**
**सो तुम पद पायो महा, तुम पद करूँ प्रणाम॥**
ॐ ह्रीं **जगज्जयिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४५७॥

**जो तुम धर्म न प्रगट कर, जिय आनंद न होय।**
**'अग्र' भये कल्याण कर, तुम पद प्रणमूँ सोय॥**
ॐ ह्रीं **अग्रण्ये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४५८॥

**'रक्षा कर षट् काय की, विषय-कषाय न लेश'।**
**त्रास हरो जमराज के, जयवन्तो गुण शेष॥**
ॐ ह्रीं **दयामने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४५९॥

**सत्य-असत्य लखन करै, सोई नेत्र कहाय।**
**पुद्गल नेत्र न नेत्र हो, 'साँचे नेत्र' सुखाय॥**
ॐ ह्रीं **दिव्य-नेत्राय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४६०॥

**सुर-नर-मुनि तुम अज्ञान[१] तैं, जामैं निज-कल्याण।**
**'ईश्वर है सब जगत् के', आनंद संपद खान॥**
ॐ ह्रीं **अधीश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४६१॥

**धर्माभास मनोक्त को, मूल नाश कर दीन।**
**'सत्य मार्ग बतलाइयो', कियो भव्य सुख-लीन॥**
ॐ ह्रीं **धर्म-नायकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४६२॥

**'ऋद्धन में परसिद्ध है', केवल-ऋद्ध महान।**
**सो तुम पायो सहज ही, योगीश्वर मुनि मान॥**
ॐ ह्रीं **ऋद्धीशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४६३॥

१. अज्ञान = छद्मस्थ अवस्था में बारहवें गुणस्थान तक औदयिक अज्ञान माना गया है।



**'जे प्राणी संसार में, तिन सबके हितकार'।**
**आनंद सों सब नमत हैं, पावैं भवदधि-पार॥**
ॐ ह्रीं **भूतनाथाय**[१] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४६४॥

**'प्राणिन के भरतार' हो, दुख-टारन सुखकार।**
**तुम आश्रय कर जीव सब, आनंद लहैं अपार॥**
ॐ ह्रीं **भूतभर्त्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४६५॥

**'सत्य धर्म के मार्ग' हो, ज्ञानमात्र निरसंश।**
**तुम ही आश्रय पाय के, रहै न अघ को अंश॥**
ॐ ह्रीं **गतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४६६॥

**'अतुल वीर्य स्वशक्त' हो, जीते कर्म जरार[२]।**
**तुम सम बल नहिं और है, हो असहाय[३] अबार॥**
ॐ ह्रीं **पात्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४६७॥

**'धर्ममूर्ति' 'धरमातमा', 'धर्मतीर्थ' वरताय।**
**'स्व-सुभाव' सो धर्म है, पायो सहज उपाय॥**
ॐ ह्रीं **वृषाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४६८॥

**हिंसा को वर्जित कियो, जे अपराध महान।**
**परिग्रह अर आरंभ के, 'त्यागी' श्री भगवान॥**
ॐ ह्रीं **वर्ज्जनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४६९॥

**सर्व सिद्ध तुम सुलभ कर, पायो स्वयं उपाय।**
**सांचे हौ वशकरण को, 'जग में मंत्र कराय'॥**
ॐ ह्रीं **मन्त्र-कृते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४७०॥

**जितने कछु 'शुभ चिह्न' हैं, दीप्त अनोख[४] स्वरूप।**
**'शुभ लक्षित सोहत अति', सहजे तुम शिवभूप॥**
ॐ ह्रीं **शुभ-लक्षणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४७१॥

**'लोक विषैं तुम मार्ग को, मानत हैं बुधिवंत'।**
**तर्क-हेतु-करुणा लिये, यातैं माने संत॥**
ॐ ह्रीं **लोकाध्यक्षाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४७२॥

**'काहू के वश में नहीं', 'काहू नमत न शीश'।**
**कठिन रीत धारैं प्रभू, नमूँ सदा जगदीश॥**
ॐ ह्रीं **दुराधर्षाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४७३॥

१. भूत = संसार के प्राणी २. जरार = क्रूर ३. असहाय = सबल ४. अनोख =अद्भुत

**दासन को प्रतिपाल कर, शरणागत हितकार।**
**'भवि दुखियन को पोष कर, दियो अखै पद सार'॥**

ॐ ह्रीं **भव्य-बन्धवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४७४।।

**'निराकरण कर कर्म को, सरल शीघ्र गति धार'।**
**शिव-थल जाय सुवास लह, धर्मद्रव्य सहकार॥**

ॐ ह्रीं **निरुत्सुकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४७५।।

**मुनि ध्यावैं पावत सुपद, निकट भव्य धर ध्यान।**
**पावें निज-कल्याण नित, 'ध्यान-योग तुम मान'॥**

ॐ ह्रीं **परम-ध्येय-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४७६।।

**'रक्षक' हो जग के सदा, धर्म-दान दातार।**
**'पोषक' हो सब जीव के, वंदूँ भाव लगार॥**

ॐ ह्रीं **जगद्धिताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४७७।।

**मोह प्रचंड बली जयो, 'अतुल वीर्य' भगवान।**
**शीघ्र गमन कर शिव गये, नमूँ हेत कल्याण॥**

ॐ ह्रीं **अजयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४७८।।

**'तीन लोक सिर मोड़ सब, पूजत हैं हरषाय'।**
**'परमेश्वर' हो जगत् के, वंदूँ हूँ नित पाय॥**

ॐ ह्रीं **त्रिजगत्परमेश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४७९।।

**लोक-शिखर पर अचल नित, राजत हैं तिहुँ काल।**
**'सर्वोत्तम आसन लियो', लोक-शिरोमणि भाल॥**

ॐ ह्रीं **विश्वासिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४८०।।

**'विश्व-भूत प्राणीन के, ईश्वर हैं भगवान'।**
**सबके सिर पर पग धरैं, सर्व आन तिन मान॥**

ॐ ह्रीं **विश्व-भूतेशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४८१।।

**'मोक्ष-संपदा' हो सही, 'नित अक्षय ऐश्वर्य'।**
**कौन मूढ़ कौड़ी लहै, सर्वोत्तम धन वर्ज॥**

ॐ ह्रीं **विभवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४८२।।

**'त्रिभुवन ईश्वर' हो तुम्हीं, और जीव हैं रंक।**
**तुमको तज चह और को, ऐसो को बुध बंक॥**

ॐ ह्रीं **त्रिभुवनेश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४८३।।

१. बंक = पागल / टेढ़ा



**'उत्तोत्तर[१] तिहुँ लोक में, दुर्लभ लब्ध कराय'।**
**तुम पद दुर्लभ कठिन है, महा भाग सों पाय॥**

ॐ ह्रीं **त्रिजग-दुर्लभाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४८४।।

**'बढ़वारी परिणाम से, अबुधय[२] पूरण पाय'।**
**भई अनन्त विशुद्धता, भये विशुद्ध अथाय॥**

ॐ ह्रीं **अभ्युदयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४८५।।

**'तीन लोक मंगल-करन, दुख-हारण सुखकार'।**
**हमको मंगल द्यो महा, पूजों बारम्बार॥**

ॐ ह्रीं **त्रिजगन्मंगलोदयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४८६।।

**आप धर्म के सामने, और धर्म लुप जाय।**
**'धर्मचक्र-आयुध' धरो, शत्रु-नाश तब पाय॥**

ॐ ह्रीं **धर्म-चक्रायुधाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४८७।।

**'सत्य शक्त तुम ही सही', 'सत्य पराक्रम जोर'।**
**है प्रसिद्ध इस जगत् में, कर्म-शत्रु सिर-तोर॥**

ॐ ह्रीं **सद्योर्ज्जताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४८८।।

**'मंगलमय मंगल-करण, तीन लोक विख्यात'।**
**सुमरण ध्यान सुकरत ही, सकल पाप नश जात॥**

ॐ ह्रीं **त्रैलोक्य-मंगलाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४८९।।

**'द्रव्य-भाव दउ वेद बिन', स्वात्म-रति सुख मान।**
**पर-आलिंगन रति-करन, निर-इच्छुक भगवान॥**

ॐ ह्रीं **अवेदाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४९०।।

**'घात रहित स्व-पर दया, निजानन्द रस-लीन'।**
**सुख सों अवगाहन करैं, 'संत' चरण आधीन॥**

ॐ ह्रीं **अप्रतिघाताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४९१।।

**'निजानन्द स्वदेश में, खंड-खंड नहिं होय'।**
**पूरण अविनाशी सुखी, पूजत हूँ भ्रम खोय॥**

ॐ ह्रीं **अच्छेद्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४९२।।

**सिद्ध समान सु शुभ नहीं, और नाम विख्यात।**
**कभूं न जग में जन्म फिर, सोई 'दृढ़' कहलात॥**

ॐ ह्रीं **दृढीयसे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४९३।।

१. उत्तोत्तर = उत्तरोत्तर २. अबुधय = अभ्युदय

**जन्म-मरण के कष्ट से, सर्व लोक भयवन्त।**
**ताको नाश 'अभय-करन', तुम्हैं नमें जिय-जंत॥**
ॐ ह्रीं **अभयंकराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥४९४॥

**ज्ञानानन्द स्व-लक्ष्मी, भोगत हो निरछेद।**
**'महा-भोग' यातें कहे, हैं स्वाधीन अखेद॥**
ॐ ह्रीं **महा-भोगाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥४९५॥

**'असाधारण' 'असमान' हो, 'सर्वोत्तम उत्कृष्ट'।**
**पर सों भिन्न अखिन्न हो, पायो पद अविनष्ट॥**
ॐ ह्रीं **नैरोपम्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥४९६॥

**'दश लक्षण शुभ धर्म के, राज-सम्पदा-भोग।**
**नायक हो निज-धर्म[१] के', पूजूँ नमें तिहुँ योग॥**
ॐ ह्रीं **सद्धर्म-साम्राज्य-नायकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥४९७॥

**अधिपति स्वामि स्वभाव निज, परकृत भाव विडार।**
**'तिहूँ वेद रति मान बिन', संपूरण सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **प्रव्यक्त-निर्वेदाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥४९८॥

## सिद्धों के निश्चयचारित्र-सूचक अर्घ्य

**'यथा योग पद पाइयो, तथा जोग संपूर्ण'।**
**नमूँ त्रियोग संभार के, करूँ पाप-मल चूर्ण॥**
ॐ ह्रीं **संपूर्ण-योगिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥४९९॥

**'सम इन्द्रिय-मन रोक के, आरोहण तिस भाव'।**
**श्रेणी उच्च चढाव में, तत्पर अंत सु पाव॥**
ॐ ह्रीं **शाम्यारोहण-तत्पराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५००॥

**'एकाश्रय' निज-धर्म में, पर सों भिन्न सदीव'।**
**'सहज स्वभाव विराजते', सिद्धराज सब जीव॥**
ॐ ह्रीं **सामायिकिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५०१॥

**'राग-द्वेष बिन सहज ही, राजत शुद्ध स्वभाव'।**
**'मन-विकल्प नहिं भाव में', पूजत हों धर चाव॥**
ॐ ह्रीं **सामायिकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५०२॥

**निजानंद स्व-लक्ष्मी, भोगत ग्लान न होय।**
**अतुल वीर्य प्रभाव तैं, 'परमादी नहिं सोय'॥**
ॐ ह्रीं **निष्प्रमादाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५०३॥



**'है अनादि संतान कर, कभी भयो नहिं आदि'।**
**नित्य शिवालय पूर्णता, बसै जगत् अघवादि[२]॥**
ॐ ह्रीं **अकृताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५०४॥

**'पर-पदार्थ निर-इच्छ है, स्व-पद में लवलीन'।**
**विघन-हरण मंगल-करण, तुम पद मस्तक दीन॥**
ॐ ह्रीं **यमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५०५॥

**'नित्य शौच-संतोषमय', पर-पदार्थ सों रोक।**
**'निश्चय सम्यक्भावमय', हैं 'प्रधान' दूँ धोक॥**
ॐ ह्रीं **प्रधान-नियमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५०६॥

**'ज्ञान-जोत स्व-धरत हो, निश्चल परम सुठाम'।**
**लोकालोक प्रकाश कर, मैं वंदूँ सुख-धाम॥**
ॐ ह्रीं **स्वभ्यस्त-परमासनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५०७॥

**'एक-स्थान सुथिर सदा, निश्चय-चारित-भूप'।**
**'शुद्ध-उपयोग' प्रभाव तें, कर्म-खिपावन-रूप॥**
ॐ ह्रीं **प्राणायाम-चरणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५०८॥

**'विषय-स्वाद सों हट रहैं, इन्द्रिय-मन थिर होय'।**
**'निज-आतम लव-लीन' हैं, 'शुद्ध' कहावै सोय॥**
ॐ ह्रीं **शुद्ध-प्रत्याहाराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५०९॥

**'इन्दिय-विषय न वश रहैं, स्व-आतम लव-लाय'।**
**वह 'जितेन्द्र स्वाधीन' है, वंदूँ तिनके पाय॥**
ॐ ह्रीं **जितेन्द्रियाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५१०॥

**'ध्यान विषैं सो धारणा, निज आतम थिर धार'।**
**'ताके अधिपति हो महा', भये भवार्णव पार॥**
ॐ ह्रीं **धारणाधीश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५११॥

**रागादिक मल नाश के, 'ध्यान स्वधर्म लहाय'।**
**'अचलरूप राजे सदा', वंदूँ मन-वच-काय॥**
ॐ ह्रीं **धर्म-ध्यान-निष्ठाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५१२॥

**निजानंद में मगन हैं, पर-पद राग-निवार।**
**'सम-दृग राजत हैं सदा', हमें करो भव-पार॥**
ॐ ह्रीं **समाधि-राजे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५१३॥

१. अघवादि = पापी जीव

**वीतराग निर्विकल्प हैं, ज्ञान-उदय निरशंस।**
**'समरस-भाव' परम सुखी, नमत मिटै दुख-अंश॥**

ॐ ह्रीं **समरसी-भावाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५१४।।

**'एकै रूप विराजते, नय-विकल्प नहिं ठौर'।**
**वचन-अगोचर शुद्धता, पाप विनाशो मोर[१]॥**

ॐ ह्रीं **एकीकरण-नायकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५१५।।

सिद्धों के उपचार से 'दिगम्बर साधु' सूचक अर्घ्य

**'परम दिगम्बर मुनि महा, समदृष्टि तिन नाथ'।**
**ध्यावैं पावैं परम पद, नमूँ जोर-जुग-हाथ॥**

ॐ ह्रीं **निर्ग्रन्थ-नायकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५१६।।

**जोग साध 'योगी' भये, तिनके 'इन्द्र' महान।**
**ध्यावत पावत परम पद, पूजत निज-कल्याण॥**

ॐ ह्रीं **योगीन्द्राय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५१७।।

**शिव-मारग सिद्धांत के, पार भये 'मुनि ईश'।**
**तारण-तरण जहाज हो, तुम्हैं नमूँ नित शीश॥**

ॐ ह्रीं **ऋषये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५१८।।

**निज-स्वरूप को साधकर, 'साधु' भये जग माह।**
**निज-पर हितकर गुण धरैं, तीन लोक नमुं ताह॥**

ॐ ह्रीं **साधवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५१९।।

**रागादिक रिपु जीत के, भये 'यती' शुभ नाम।**
**धर्म-धुरंधर परम गुरु, जुगपद् करूँ प्रणाम॥**

ॐ ह्रीं **यतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५२०।।

**पर-संपद् सों विमुख हो, स्व-पद रुच कर नेम।**
**'मुनि-मन-रंजन पद' महा, तुम धारत हो एम॥**

ॐ ह्रीं **मुनये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५२१।।

**'महाश्रेष्ठ मुनिराज' हो, स्व-पद पायो सार।**
**'महा परम निरग्रंथ' हो, पूजत हूँ मन धार॥**

ॐ ह्रीं **महर्षये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५२२।।

**'साधु-भार दुरगमन है[२], ताहि उठावनहार'।**
**शिव-मंदिर पहुँचात हो, महाबली सुखकार॥**

१. मोर = मेरे
२. दुरगमन = साधुचर्या पालन करना कठिन है।



ॐ ह्रीं **साधु-धौरेयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५२३।।

**'इन्द्रिय-मन-जित जे जती, तिनके हो तुम नाथ'।**
**परम्परा मरजाद धर, देहु हमें निज साथ॥**

ॐ ह्रीं **यतीनाथाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५२४।।

**'चार संघ मुनिराज के, ईश्वर हो परधान'।**
**पर-हित-कर सामर्थ्य हो, निजसम कर भगवान॥**

ॐ ह्रीं **मुनीश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५२५।।

**'गणधरादि सेवक जहाँ, तिन आज्ञा सिर-धार'।**
**समकित-ज्ञान स्व-लक्ष्मी, पावत हैं निरधार॥**

ॐ ह्रीं **महा-मुनये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५२६।।

**'महा मुनी सर्वस्व' हो, धर्म-मूर्त-सर्वांग।**
**तिनको वंदूँ भाव युत, पाऊँ मैं धर्मांग॥**

ॐ ह्रीं **महा-मौनिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५२७।।

**इष्टानिष्ट-विभाव बिन, समदृष्टी स्व-ध्यान।**
**मगन रहैं निजपद विषैं, 'ध्यान रूप भगवान'॥**

ॐ ह्रीं **महा-ध्यानिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५२८।।

**स्व-सुभाव नहिं त्याग है, नहीं ग्रहण पर माह।**
**'पाप-कलाप न आप में', 'परम शुद्ध' नमुँ ताह॥**

ॐ ह्रीं **महा-व्रतिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५२९।।

**क्रोध-प्रकृति विनाश के, धरै 'क्षमा निजभाव'।**
**समरस-स्वादि सु लहत हैं, वंदूँ शुद्ध स्वभाव॥**

ॐ ह्रीं **महा-क्षमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५३०।।

**मोह रूप सन्ताप बिन, 'शीतल महा स्वभाव'।**
**पूरण-सुख आकुल नहीं, वंदूँ मन-धर-चाव॥**

ॐ ह्रीं **महा-शीतलाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५३१।।

**मन-इन्द्रिय के क्षोभ बिन, 'महा शांत' सुखरूप।**
**स्व-पद-रमण-स्वभाव नित, वंदूँ मैं शिवभूप॥**

ॐ ह्रीं **महा-शान्ताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५३२।।

**'मन-इन्द्रिय को दमन कर, पायो ज्ञान अतीन्द्र'।**
**स्वाभाविक स्वशक्त कर, वंदूँ भये जितेन्द्र॥**

ॐ ह्रीं **महा-दमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५३३।।

**'पर-पदार्थ को लेश कह, व्यापैं निजपद माह'[१]।**
**'स्वच्छ स्वभाव विराजते', पूजत हूँ नित ताह॥**
ॐ ह्रीं **निर्लेपाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५३४।।

**'संशयादि दृष्टि नहीं, सम्यक् ज्ञान मंझार'।**
**सब पदार्थ प्रत्यक्ष लख, 'महा तुष्ट' सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **निर्भ्रम-स्वान्ताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५३५।।

**'शांतरूप निज शांत-गुण, सो तुम ही में पाय'।**
**निज मन शांत सुभाव धर, पूजत हूँ जुग-पाय॥**
ॐ ह्रीं **प्रशान्ताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५३६।।

**मुनि-श्रावक द्वै धर्म के, तुम 'अधिपति शिवनाथ'।**
**भविजन को आनंद कर, तुम्हैं नवाऊँ माथ॥**
ॐ ह्रीं **धर्माध्यक्षाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५३७।।

**'दया-नीति बरताइयो, सुखी कियो जग-जीव'।**
**कल्पित-राग-ग्रसत नहिं, जानत मार्ग सदीव॥**
ॐ ह्रीं **दया-ध्वजाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५३८।।

**'केवल ब्रह्म स्वरूप हो, अन्तर-बाह्य अदेह'।**
**ज्ञान-जोत-घन नमत हूँ, मन-वच-तन धर नेह॥**
ॐ ह्रीं **ब्रह्म-योनये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५३९।।

**'स्वयं बुद्ध' अविरुद्ध हो, स्वयं ज्ञान-परकास।**
**निज-पर भाव दिखात हो, दीपक सम प्रतिभास॥**
ॐ ह्रीं **स्वयंबुद्धाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५४०।।

**रागादिक मल नाशियो, 'महा पवित्र' सुखाय।**
**शुद्ध स्वभाव धरैं करैं, सुर-नर थुति न अघाय॥**
ॐ ह्रीं **पूतात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५४१।।

**'वीतराग-श्रद्धानता, संपूरण वैराग'।**
**द्वेष रहित शुभ गुण सहित, रहूँ सदा पग लाग॥**
ॐ ह्रीं **स्नातकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५४२।।

**'माया-मद आदिक हरै, भये शुद्ध सुख-खान'।**
**निर्मल भाव थकी जजूँ, होत पाप की हान॥**
ॐ ह्रीं **दान्ताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५४३।।

१. हे प्रभु! आपने परपदार्थों का लेश अर्थात् अल्प वर्णन किया है, विस्तार से नहीं।



**'अतुल वीर्य श्री ज्ञान में, सूर्य समान प्रकास'।**
**मोक्षनाथ स्व-धर्म जुत, स्व-ऐश्वर्य विलास॥**
ॐ ह्रीं **भदन्ताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५४४।।

**'मत्सर क्रोध न ईर्षा, पर में द्वेष-स्वभाव'।**
**सो तुम नाशो सहज ही, निंदित दुखित विभाव॥**
ॐ ह्रीं **वीत-मत्सराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५४५।।

**धर्म-भार सिर धार कर, समाधान परकाज।**
**'तुम सम श्रेष्ठ न धर्म' अरु, तारण-तरण जहाज॥**
ॐ ह्रीं **धर्म-वृषाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५४६।।

**'क्रोध-कर्म जड़ से नसो, भयो क्षोभ सब दूर'।**
**'महा शांत सुखरूप है', पूजत सब अघ चूर॥**
ॐ ह्रीं **अक्षोभाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५४७।।

**इष्ट-मिष्ट बादर-झरी, विद्युत-विधि कर खण्ड।**
**'जिष्णु महा कल्याण कर', शिवमग भाग प्रचण्ड॥**
ॐ ह्रीं **भूतात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५४८।।

**'अमृतमय तुझ जन्म है, लोक-तुष्टता कार'।**
**जन्म-कल्याणक इन्द्र कर, क्षीर-नीर कर धार॥**
ॐ ह्रीं **अमृतोद्भवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५४९।।

**इन्द्रिय-विषय सु विष-हरण, काम-पिशाच विडार।**
**'मूर्तीक शुभ मंत्र हो', देव जजैं हित धार॥**
ॐ ह्रीं **मन्त्र-मूर्तये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५५०।।

**'सौम्य-दशा' परगट-तनी, जाति-विरोधी जीव।**
**वैर-छांड समभाव-धर, सेवत चरण सदीव॥**
ॐ ह्रीं **सु-सौम्यात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५५१।।

**पराधीन इन्द्रिय बिना, राग-विरोध निवार।**
**हो 'स्वाधीन' न करण पर, स्वयंसिद्ध सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **स्वतन्त्राय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५५२।।

**'ब्रह्मरूप' नहिं बाह्य तन, 'संभव' ज्ञान-स्वरूप।**
**स्वयं-प्रकाश-विलास धर, राजत अमल-अनूप॥**
ॐ ह्रीं **ब्रह्म-सम्भवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५५३।।

**'आनंद-धार सु मगन है, सब विकल्प-दुख टार'।**
**'पर-आश्रित नहिं भाव हैं', पूजूँ आनंद धार॥**

ॐ ह्रीं **सु-प्रसन्नाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५५४।।

**'परिपूरण गुण सीम हैं, सर्व शक्ति-भण्डार'।**
**तुमसे सुगुण न शेष हैं, जो न होय सुखकार॥**

ॐ ह्रीं **गुणांभोधये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५५५।।

**'ग्रहण-त्याग को भाव तज, शुभ वा अशुभ अभेद'।**
**'व्याधिकार[१] है वस्तु में', तुम्हें नमूँ निरखेद॥**

ॐ ह्रीं **पुण्याऽपुण्य-निरोधकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५५६।।

**सूक्षम रूप अलक्ष है, गणधर आदि अगम्य।**
**आप 'गुप्त परमातमा', इन्द्रिय-द्वार अरम्य॥**

ॐ ह्रीं **सुगुप्तात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५५७।।

**'अन्तर-गूढ़ स्व-आत्मरस', ताको पान करात।**
**'पर-प्रवेश नहिं रंच है, केवल मग्न स्व-जात'॥**

ॐ ह्रीं **सुसंवृताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५५८।।

**स्व-कारक स्व-करण कर, स्व-पद स्व-आधार।**
**'सिद्ध कियो स्व-रस लियो', पूजत हूँ हित धार॥**

ॐ ह्रीं **सिद्धात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५५९।।

**'नित्य-उदै बिन-अस्त हो, पूरण-दुति-घन आप'।**
**'ग्रहै न राहू जास शशि', सोहो हर-सन्ताप॥**

ॐ ह्रीं **निरुपप्लवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५६०।।

**'लियो अपूरव लाभ को, अचल भये सुखधाम'।**
**पूज रचैं जे भाव सों, पूरण हो सब काम॥**

ॐ ह्रीं **महोदर्काय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५६१।।

**है प्रशंस तिहुँ लोक में, 'तुम पुरुषार्थ-उपाय'।**
**'पायो परम सुधाम' को, पूजों तिनके पाय॥**

ॐ ह्रीं **महोपायाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५६२।।

**'गणधरादि जे जगत-पितु', तथा सुरेन्द्र-सरीस।**
**तुमको पूजत भक्ति कर, चरण धरैं निज शीस॥**

ॐ ह्रीं **जगदेक-पितामहाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५६३।।

१. **व्याधिकार** = विरुद्ध अधिकार अर्थात् पुण्य-पाप भावों का आत्मा में अधिकार नहीं है।



**'तुम ही सों सुख भवि लहैं, तुम बिन दुख ही पाय'।**
**नेमरूप यह हेतु है, 'महा' नाम इम गाय॥**

ॐ ह्रीं **महा-कारुणिकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५६४।।

**'महा सुगुण की रास' हो, राजत हो गुण रूप।**
**लौकिक गुण-औगुण सही, सब ही द्वेष-स्वरूप॥**

ॐ ह्रीं **गुण्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५६५।।

**'जन्म-मरण आदिक महा, क्लेश ताहि निरवार'।**
**परम सुखी तुमको नमूँ, पाऊँ भव-दधि-पार॥**

ॐ ह्रीं **महा-क्लेशांकुशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५६६।।

**रागादिक नहिं भाव है, द्रव्य देह नहिं धार।**
**'दोउ मलिनता छांडि के, स्वच्छ भये निरधार'॥**

ॐ ह्रीं **शुचये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५६७।।

**आधि-व्याधि नहिं रोग हैं, नित प्रसन्न निजभाव।**
**'आकुलता बिन शांति-सुख, धारत सहज सुभाव'॥**

ॐ ह्रीं **अरिंजयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५६८।।

**'यथा योग पद थिर सदा, तथा योग निज-लीन'।**
**अविनाशी अविकार हैं, नमैं संत नित दीन॥**

ॐ ह्रीं **सदा-योगाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५६९।।

**'स्वामृत रस को पान कर, भोगत हैं निज-स्वाद'।**
**पर-निमित्त चाहैं नहीं, करैं न तिनको याद॥**

ॐ ह्रीं **सदा-भोगाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५७०।।

**'निर-उपाधि निज-धर्म में, सदा रहैं सुखकार'।**
**रत्नत्रय की मूरती, अनागार-आगार॥**

ॐ ह्रीं **सदा-धृतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५७१।।

**राग-द्वेष नहिं मूल है, है 'मध्यस्थ सुभाव'।**
**ज्ञाता-दृष्टा जगत् के, 'पर सों नहीं लगाव'॥**

ॐ ह्रीं **परमौदासित्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५७२।।

**'आदि-अन्त बिन वहत है, परम धार निरधार'।**
**अन्तर परत न एक छिन, स्व-सुख परमाधार॥**

ॐ ह्रीं **शाश्वताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५७३।।

**मूल देह आकृत रहै, हो नहिं अन्य प्रकार।**
**'सत्यासन' इम नाम है, पूजूँ भक्ति लगार॥**
ॐ ह्रीं **सत्यासने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५७४॥

**परमशांति सुखमय सदा, क्षोभ रहित तिस स्वाम।**
**'तीन लोक प्रति शांति कर', तुम पद करूँ प्रणाम॥**
ॐ ह्रीं **शांत-नायकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५७५॥

**काल अनंतानंत कर, रुल्यो जीव जग माह।**
**'आत्मज्ञान नहिं पाइयो, तुम पायो है ताह'॥**
ॐ ह्रीं **अपूर्व-वैद्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५७६॥

**'यथाख्यात-चारित्र' को, जानो मानो भेद।**
**'आत्मज्ञान' केवल थकी, पायो पद निरभेद॥**
ॐ ह्रीं **योगज्ञाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५७७॥

**धर्मरूप सर्वस्व हो, राजत शुद्ध स्वभाव।**
**'धर्म-मूर्ति' तुमको नमूँ, पाऊँ मोक्ष-उपाव॥**
ॐ ह्रीं **धर्म-मूर्तये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५७८॥

**स्व-आतम परदेश में, 'अन्य मिलाप न होय'।**
**आकृति है निजधर्म की, 'निज-विभाव को खोय'॥**
ॐ ह्रीं **अधर्म-दहे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५७९॥

**'स्वामी हो निज-आत्म के', अन्य सहाय न पाय।**
**'स्वयं सिद्ध परमातमा', हम पर होउ सहाय॥**
ॐ ह्रीं **ब्रह्मेशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५८०॥

**निज पुरुषारथ कर लियो, मोक्ष परम सुखकार।**
**'करना था सो कर चुके', तिष्ठो सुख आधार॥**
ॐ ह्रीं **कृत-कृत्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५८१॥

**'असाधारण गुण धरत' हो, इन्द्रादिक नहिं पाय।**
**लोकोत्तम बहुमान्य हो, वंदूँ हूँ युग पाय॥**
ॐ ह्रीं **गुणाकराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५८२॥

**'तुम गुण परम प्रकाश कर', तीन लोक विख्यात।**
**सूर्य समान प्रताप धर, निरावरण उघरात॥**
ॐ ह्रीं **गुणोच्छेदिने**[1] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५८३॥

१. हे प्रभु! आपने अवगुणों / आवरणों का उच्छेद कर दिया है।



**समय मात्र नहिं आदि है, 'वहै अनादि-अनंत'।**
**तुम प्रवाह इस जगत् में, तुम्हैं नमें नित सेत॥**
ॐ ह्रीं **निर्निमेषाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५८४॥

**'योग-द्वार बिन करम-रज, चढ़ै न निज-परदेश'।**
**ज्यों बिन-छिद्र न जल ग्रहै, नवका शुद्ध हमेश॥**
ॐ ह्रीं **निरास्रवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५८५॥

**'परम ब्रह्मपद' पाइयो, पूरण ज्ञान-प्रकास।**
**तीन लोक के जीव सब, पूजैं चरण-निवास॥**
ॐ ह्रीं **महा-ब्रह्मपतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५८६॥

**'द्रव्य-पर्यार्थ नय दोऊ, साधत वस्तु-सरूप'।**
**'गुण अनन्त अविरोध कर', कहत सरूप अनूप॥**
ॐ ह्रीं **सुनय-तत्त्वज्ञाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५८७॥

**'सूर्य समान प्रकाश कर, कर्म दुष्ट हनि सूर'।**
**शरण गही तुम चरण की, करो ज्ञान-दुति पूर॥**
ॐ ह्रीं **सूरये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५८८॥

**तुम सम और न जगत् में, सत्यारथ 'तत्त्वज्ञ'।**
**सम्यग्ज्ञान प्रभाव तें, हो अदोष 'सर्वज्ञ'॥**
ॐ ह्रीं **तत्त्वज्ञाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५८९॥

**'तीन लोक हितकार हो, शरणागत प्रतिपाल'।**
**'भव्यनि मन आनंद करि', वंदूँ दीनदयाल॥**
ॐ ह्रीं **मैत्रीमयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५९०॥

**'समता-सुख में मगन हैं', 'राग-द्वेष-संक्लेश-।**
**'ताको नाश सुखी भये', युग-युग जयो जिनेश॥**
ॐ ह्रीं **शमिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५९१॥

**'निरावरण निज ज्ञान में, संशय-विभ्रम नाह'।**
**सम्यग्ज्ञान प्रकाश तें, वस्तु प्रमाण दिखाह॥**
ॐ ह्रीं **प्रक्षीण-बन्धाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५९२॥

**'एक रूप परकाश कर, दुविध भाव विनशाय'।**
**पर-निमित्त लवलेश नहिं, वंदूँ तिनके पाय॥**
ॐ ह्रीं **निर्द्वन्द्वाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५९३॥

**मुनि विशेष 'स्नातक' कहे, 'परमातम परमेश'।**
**तुम ध्यावत निर्वाण पद, पावैं भविक हमेश॥**

ॐ ह्रीं **परमर्षये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५९४।।

**'पंच प्रकार शरीर बिन, दीप्त-रूप निजरूप'।**
**सुर-मुनि-मन रमणीय हैं, पूजत हूँ शिवभूप॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५९५।।

भरतक्षेत्र के भूतकालीन चौबीस तीर्थंकर सम्बन्धी अर्घ्य

**द्वय प्रकार बंधन रहित, वंदूँ 'मोक्ष-सरूप'।**
**भविजन बंध-विनाश कर, 'देहो मोक्ष अनूप'॥**

ॐ ह्रीं **निर्वाण-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५९६।।

**सुगुण रत्न की राश के, आप महा भण्डार।**
**'अगम अथाह विराजते', वंदूँ भाव विचार॥**

ॐ ह्रीं **सागर-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५९७।।

**'मुनिजन ध्यावैं भाव युत', महा मोक्षपद साध।**
**सिद्ध भये मैं नमत हूँ, 'चहुँ संघ के आराध'॥**

ॐ ह्रीं **महासाधु-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५९८।।

**'ज्ञान-जोत प्रतिभास में, रागादिक मल नाहिं'।**
**'विशद अनूपम लसत' हो, दीप-जोत शिव-राह॥**

ॐ ह्रीं **विमलाभ-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५९९।।

**'द्रव्य-भाव मल नाश कर, शुद्ध निरंजन देव'।**
**निज-आतम में रमत हो, आश्रय बिन स्वयमेव॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धाभ-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६००।।

**'शुद्ध अनंत चतुष्ट गुण, धरत तथा शिवनाथ'।**
**'श्रीधर' नाम कहात हो, हरिहर नावत माथ॥**

ॐ ह्रीं **श्रीधर-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६०१।।

**मरणादिक भय से सदा, रक्षित हैं भगवान।**
**'स्वयं-प्रकाश-विलास में', राजत सुख की खान॥**

ॐ ह्रीं **श्रीदत्त-जिनाय**[१] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६०२।।

**राग-द्वेष नहिं भाव में, 'शुद्ध निरंजन आप'।**
**ज्यों-के-त्यों तुम थिर रहो, तनक न व्यापै पाप॥**

१. जयसेन प्रतिष्ठा पाठ में ८वें क्रमांक पर '**सिद्धाभ-जिन**' तीर्थंकर का नाम है।



ॐ ह्रीं **अमलाभ-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६०३।।

**'भवसागर से पार' हो, 'पहुँचे शिव-पद-तीर'।**
**भाव सहित नित नमत हूँ, लहूँ न पुन भव-पीर॥**

ॐ ह्रीं **उद्धर-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६०४।।

**'अनिलदेव या अग्निदिश, ताके देव-विशेष'।**
**ध्यावत हैं तुम चरण-युग, इन्द्रादिक सुर शेष॥**

ॐ ह्रीं **अग्निदेव-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६०५।।

**विषय-कषाय न रंच है, निरावरण निरमोह।**
**'इन्द्रिय-मन को दमन कर', वंदूँ सुंदर सोह॥**

ॐ ह्रीं **संयम-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६०६।।

**'मोक्षरूप कल्याण कर', सुख-सागर के पार।**
**'महादेव स्व-शक्त धर', विद्या-तिय-भरतार॥**

ॐ ह्रीं **शिव-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६०७।।

**'पुष्प भेंट धर जजत सुर, निज-कर-अंजुल जोड़'।**
**कमलापति कर-कमल में, धरैं लक्ष्मी होड़॥**

ॐ ह्रीं **पुष्पांजलि-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६०८।।

**'पूरण ज्ञानानंदमय, अजर-अमर अमलान'।**
**अविनाशी ध्रुव निखिल पद, अविकारी सब मान॥**

ॐ ह्रीं **शिवगण-जिनाय**[२] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६०९।।

**रोग-शोक-भय आदि बिन, राजत नित आनंद।**
**'खेद रहित रति-अरति बिन, विकसित पूरणचंद'॥**

ॐ ह्रीं **उत्साह-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६१०।।

**जे गुण शक्ति अनंत हैं, 'ते सब ज्ञान मंझार'।**
**एक मिष्ट आकृति विविध, सोहत हैं अविकार॥**

ॐ ह्रीं **ज्ञानेश्वर-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६११।।

**परम पूज्य परधान हैं, परम शक्ति आधार।**
**परम पुरुष परमातमा, 'परमेश्वर' सुखकार॥**

ॐ ह्रीं **परमेश्वर-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६१२।।

**दोष-अकोश-अरोष हो, सम-सन्तोष अलोष।**
**पंच परम पद धारयत, भविजन को परिपोष॥**

ॐ ह्रीं **विमलेश्वर-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६१३।।

१. जयसेन प्रतिष्ठा पाठ में '**शिवगण**' नामक किसी तीर्थंकर का उल्लेख नहीं मिलता है।

**पंचकल्याणक युक्त हैं, समोसरण ले आद।**
**'इन्द्रादिक नित करत हैं, तुम गुण-गण-अनुवाद'॥**

ॐ ह्रीं **यशोधर-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६१४।।

**'कृष्ण नाम तीर्थेश' है, भावी काल कहाय।**
**सुमत-गोपियन संग रमत, निज-लीला-दर्शाय॥**

ॐ ह्रीं **कृष्ण-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६१५।।

**'सम्यग्ज्ञान सुमति धरो', मिथ्या-मोह-निवार।**
**पर-हितकर उपदेश है, निश्चय वा व्यवहार॥**

ॐ ह्रीं **ज्ञानमति-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६१६।।

**वीतराग-सर्वज्ञ हैं, उपदेशक हितकार।**
**सत्यारथ परमाण कर, अन्य 'सुमति-दातार'॥**

ॐ ह्रीं **शुद्धमति-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६१७।।

**मायाचार न शल्य है, 'शुद्ध सरल परिणाम'।**
**ज्ञानानंद स्व-लक्ष्मी, भोगत हैं अभिराम॥**

ॐ ह्रीं **श्रीभद्र-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६१८।।

**शील-स्वभाव सुजन्म लै, अन्त समय निरवान।**
**भविजन आनंदकार हैं, सर्व कलुषता हान॥**

ॐ ह्रीं **शान्तिजय-जिनाय**[1] नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६१९।।

भरतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकर सम्बन्धी अर्घ्य

**'धरम रूप अवतार' हो, लोक पाप को भार।**
**मृत-स्थल पहुंचाइयो, सुलभ कियो सुखकार॥**

ॐ ह्रीं **वृषभ-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६२०।।

**अंतर-बाहर शत्रु को, निमिष परै नहिं जोर।**
**'विजय-लक्ष्मी नाथ' हो, पूजूँ हूँ कर-जोर॥**

ॐ ह्रीं **अजित-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६२१।।

**'तीन लोक आनंद हो, श्रेष्ठ जन्म तुम होत'।**
**स्वर्ग-मोक्ष दातार हो, पावत नहीं कुमौत॥**

ॐ ह्रीं **सम्भव-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६२२।।

**'परम सुखी तुम आप हो, पर आनंद कराय'।**
**तुमको पूजत भाव सों, मोक्ष-लक्ष्मी पाय॥**

१. जयसेन प्रतिष्ठा पाठ के अनुसार २४वें '**अनन्तवीर्य**' तीर्थंकर का उल्लेख मिलता है।



ॐ ह्रीं **अभिनन्दन-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६२३।।

**'सब कुवादि एकांत को, नाश कियो छिन माह'।**
**भविजन मन संशय-हरण, और लोक में नाह॥**

ॐ ह्रीं **सुमति-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६२४।।

**'भविजन मधुकर कमल हो', धरत सुगंध अपार।**
**तीन लोक में विस्तरी, सुयश नाम को धार॥**

ॐ ह्रीं **पद्मप्रभ-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६२५।।

**'पारस लोहा हेम कर, तुम भवि बंध-निवार'।**
**'मोक्ष देहु' तुम श्रेष्ठ गुण, धारत हो हितकार॥**

ॐ ह्रीं **सुपार्श्व-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६२६।।

**तीन लोक आताप हर, 'मुनि-मन-मोदन चंद'।**
**'लोकप्रिय अवतार' हो, पाऊँ सुख तुम वंद॥**

ॐ ह्रीं **चन्द्रप्रभ-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६२७।।

**मन-मोहन सोहन महा, धारै रूप अनूप।**
**दर्शित उर आनंद हो, पायो स्व-रस-कूप॥**

ॐ ह्रीं **पुष्पदन्त-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६२८।।

**भव-दव-दाह निवार कर, 'शीतल भये जिनेश'।**
**मानो अमृत सींचयो, पूजत सदा सुरेश॥**

ॐ ह्रीं **शीतल-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६२९।।

**'तीर्थंकर श्रेयांस! हम, देहो श्री शुभ भाग'।**
**'श्री सु अनंत चतुष्ट हो', और सकल दुर भाग॥**

ॐ ह्रीं **श्रेयांस-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६३०।।

**'त्रस-नाड़ी या लोक में, तुम ही पूज्य प्रधान'।**
**तुमको पूजत भाव सों, पाऊँ सुख निरवान॥**

ॐ ह्रीं **वासुपूज्य-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६३१।।

**'द्रव्य-भाव मल रहित हैं', महा मुनिन के नाथ।**
**इन्द्रादिक पूजत सदा, नमूँ पदांबुज माथ॥**

ॐ ह्रीं **विमल-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६३२।।

**'जाको पार न पाइयो', गणधर और सुरेश।**
**थकित रहैं असमर्थ कर, प्रणमें 'संत' हमेश॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६३३।।

**'अनागार-आगार के, उद्धारक जिनराज'।**
**'धर्मनाथ' प्रणमूँ सदा, पाऊँ शिवसुख साज॥**

ॐ ह्रीं **धर्म-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६३४।।

**'शांति रूप' 'पर-शांति कर', कर्म-दाह-निरवार।**
**शांति हेत वंदूँ सदा, पाऊँ भवदधि-पार॥**

ॐ ह्रीं **शांति-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६३५।।

**'क्षुद्र-वीर्य सब जीव के, रक्षक हैं तीर्थेश'।**
**शरणागत प्रतिपाल कर, ध्यावैं सदा सुरेश॥**

ॐ ह्रीं **कुन्थु-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६३६।।

**पूजनीक सब जगत के, मंगलकारक देव।**
**पूजत हैं हम भाव सों, 'विनशै अघ स्वयमेव'॥**

ॐ ह्रीं **अर-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६३७।।

**'मोह-काम-भट जीतियो', जिन जीतो सब लोक।**
**लोकोत्तम जिनराज के, नमूँ चरण दे धोक॥**

ॐ ह्रीं **मल्लि-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६३८।।

**'पंच पाप को त्याग कर', भव्य जीव आनंद।**
**भये जासु उपदेश तें, पूजत हूँ पद-वृंद॥**

ॐ ह्रीं **मुनिसुव्रत-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६३९।।

**'सुर-नर-मुनि नित नमन कर', जान धर्म अवतार।**
**तिनको पूजूँ भाव युत, लहूँ भवार्णव-पार॥**

ॐ ह्रीं **नमि-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६४०।।

**'नेम-धर्म में नित रमें', धर्मधुरा भगवान।**
**धर्मचक्र जग में फिरे, पहुँचावे शिव-थान॥**

ॐ ह्रीं **नेमि-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६४१।।

**'शरणागत निज पास दे', पाप-फाँस दुख-रास।**
**तिसको छेदो मूल सों, 'देहु ऊँच गति-वास'॥**

ॐ ह्रीं **पार्श्व-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६४२।।

### वर्तमान अन्तिम तीर्थंकर के नामों पर आधारित अर्घ्य

**'वर्द्ध भाव' से उच्च पद, लोक-शिखर आरूढ़।**
**'केवल-लक्ष्मी वर्द्धता', भई सु अंतर-गूढ़॥**

ॐ ह्रीं **वर्द्धमान-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६४३।।





**'अतुल वीर्यतन धरत हैं', अतुल धीर्य मन बीच।**
**कामिन वश नहिं रंच भी, जैसे जग जिय नीच॥**

ॐ ह्रीं **महावीराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६४४।।

**'मोह-सुभट कूँ पटकियो, तीन लोक परशंस'।**
**'श्रेष्ठ पुरुष तुम जगत् में, कियो कर्म विध्वंस'॥**

ॐ ह्रीं **सुवीराय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६४५।।

**'मिथ्या-मोह निवार कर, महा सुमति-भंडार'।**
**'शुभ मारग दरशाइयो', शुभ अरु अशुभ विचार॥**

ॐ ह्रीं **सन्मतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६४६।।

### भरतक्षेत्र के भविष्यकालीन चौबीस तीर्थंकर सम्बन्धी अर्घ्य

**निज आश्रय निर्विघ्न नित, निज लक्ष्मी भण्डार।**
**'चरणाम्बुज' नित नमत हम, पुष्पांजलि शुभ धार॥**

ॐ ह्रीं **महापद्म-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६४७।।

**हो 'देवाधीदेव' तुम, नमत देव चउ भेद।**
**धरो अनन्त चतुष्ट पद, परमानन्द अभेद॥**

ॐ ह्रीं **सुर-देव**[१]**-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६४८।।

**निरावर्ण आभास है, ज्यों विन पटल दिनेन्द्र।**
**लोकालोक प्रकाश कर, 'सुंदर प्रभा जिनेन्द्र'॥**

ॐ ह्रीं **सुप्रभ-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६४९।।

**आतमीक निज गुण लिये, दीप्त-सरूप-अनूप।**
**'स्वयं जोत परकाशमय', वंदत हूँ शिवभूप॥**

ॐ ह्रीं **स्वयंप्रभ-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६५०।।

**स्व-शक्ति स्व-करण है, साधन बाह्य अनेक।**
**'मोह-सुभट क्षयकरन को, आयुध रास विवेक'॥**

ॐ ह्रीं **सर्वायुध**[२]**-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६५१।।

**जय जय ध्वनि सुर करत हैं, तथा 'विजय निधि देव'।**
**तुम पद जे नर नमत हैं, पावें सुख स्वयमेव॥**

ॐ ह्रीं **जयदेव-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६५२।।

**'तुम सम प्रभा न और में, धरो ज्ञान-परकाश'।**
**'नाथ प्रभा' जग में भये, नमत मोह-तम-नाश॥**

---

नामान्तर – १. सुरप्रभ  २. सर्वात्मभूत / सर्वप्रभ

ॐ ह्रीं **प्रभादेव**[१]**-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६५३।।

**'रक्षक हो षट्काय के, दया-सिंधु भगवान'।**
**शशि सम जिय आह्लाद कर, पूजनीक धर ध्यान॥**

ॐ ह्रीं **उदङ्क-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६५४।।

**'समाधान सबके करैं, द्वादश सभा मंझार'।**
**सर्व अर्थ परकाश कर, दिव्य-ध्वनि सुखकार॥**

ॐ ह्रीं **प्रश्नकीर्ति**[२]**-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६५५।।

**'काहू विधि बाधा नहीं','कभू नहीं व्यय होय।**
**उन्नति रूप विराजते, जयवन्तो जग सोय॥**

ॐ ह्रीं **जयकीर्ति-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६५६।।

**'केवलज्ञान-स्वभाव' में, लोक-त्रय इक भाग।**
**'पूरणता को पाइयो', छाँडि सकल अनुराग॥**

ॐ ह्रीं **पूर्णबुद्ध**[३]**-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६५७।।

**पर आलिंगन भाव तज, 'इच्छा-क्लेश-विडार'।**
**'निज संतोष सुखी सदा', पर-सम्बन्ध-निवार॥**

ॐ ह्रीं **निष्कषाय**[४]**-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६५८।।

**मोहादिक मल नाश कर,'अतिशय कर अमलान'।**
**'विमल जिनेश्वर' मैं नमूँ, तीन लोक परधान॥**

ॐ ह्रीं **विमलप्रभ-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६५९।।

**स्व-पद में नित रम रहै, कभी न आरत होय।**
**'अतुल वीर्य विधि जीतियो', नमूँ जोर कर-दोय॥**

ॐ ह्रीं **बहुलप्रभ-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६६०।।

**'द्रव्य-भाव मल कर्म हैं, ताको नाश करान'।**
**'शुद्ध निरंजन' हो रहे, ज्यों बिन-बादल भान॥**

ॐ ह्रीं **निर्मल-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६६१।।

**'तुम चित्राम अरूप है', सुर-नर-साधु अगम्य।**
**निराकार निर्लेप हैं, धारत भाव असम्य॥**

ॐ ह्रीं **चित्रगुप्त-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६६२।।

**'मग्न भये निज आत्म में', पर पद में नहिं वास।**
**लक्ष-अलक्ष विराजते, पूरो मन की आस॥**

ॐ ह्रीं **समाधिगुप्त**[१]**-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६६३।।

नामान्तर - १. देवसुत / प्रभोदय / उदयप्रभ २. प्रौष्ठिल ३. अरनाथ ४. निष्पाप / पुण्यमूर्ति



**'निज गुण आतम-ज्ञान है, पर-सहाय नहिं चाह'।**
**'स्वयं भाव परकाश' हो, नमत मिटै भव-दाह॥**

ॐ ह्रीं **स्वयंभू-जिनाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६६४।।

**'मन-मोहन-सोहन महा, मुनि-मन-रमन अनंद'।**
**महा तेज परताप हैं, पूरण जोत अमंद॥**

ॐ ह्रीं **कन्दर्प**[२]**-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६६५।।

**'विजय-लक्ष्मी नाथ' हैं, जीते कर्म-प्रधान।**
**तिनको पूजै सर्व जग, मैं पूजों धर ध्यान॥**

ॐ ह्रीं **जयनाथ-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६६६।।

**'गणधरादि योगीश जे, विमलाचारी सार'।**
**'तिनके स्वामी हो प्रभु'', राग-द्वेष मल-जार॥**

ॐ ह्रीं **विमलेश-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६६७।।

**'दिव्य अनक्षर ध्वनि खिरै', सर्व अर्थ गुण-धार।**
**भविजन-मन संशय-हरन, शुद्ध बोध आधार॥**

ॐ ह्रीं **दिव्यवाद**[३]**-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६६८।।

**'नहीं पार जा वीर्य को', स्वाभाविक निरधार।**
**सो सहजै गुण धरत हो, नमूँ लहूँ भव-पार॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तवीर्य-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६६९।।

तीर्थंकरों के विशेषणों सम्बन्धी अर्घ्य

**'पुरुषोत्तम परधान' हो, परम निजानंद धाम।**
**चक्रपती हरिबल नमें, मैं पूजूँ निष्काम॥**

ॐ ह्रीं **पुरुदेवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६७०।।

**'शुभ विधि सब आचरण हैं', सर्व जीव हितकार।**
**श्रेष्ठ बुद्ध अति शुद्ध हैं, नमूँ तजो भव-भार॥**

ॐ ह्रीं **सुविधये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६७१।।

**'हैं प्रमाण कर सिद्ध जे, ते हैं बुद्ध-प्रमान'।**
**सो विवसाय-सरूप हैं, संशय-तम को भान॥**

ॐ ह्रीं **प्रज्ञा-पारमिताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६७२।।

**समय प्रमाण निमित तनी,'कभी अंत नहीं होय'।**
**'अविनाशी थिर पद धरैं', मैं प्रणमूँ हूँ सोय॥**

ॐ ह्रीं **अव्ययाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६७३।।

नामान्तर - १. मनाधिगुप्त २. अनिवर्तक ३. दिव्यपाद / देवपाल

**'प्रतिपालक जगदीश हैं, सर्व मान-परमान'।**
**अधिक शिरोमणि लोकगुरु, पूजत निज कल्यान॥**
ॐ ह्रीं पुराण-पुरुषाय नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६७४।।

**'धर्म-सहायक हो प्रभू, धर्म-मार्ग की लीक'।**
**शुभ मर्जाद प्रतिबंध के, करन चलावन ठीक॥**
ॐ ह्रीं धर्म-सारथये नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६७५।।

**'शिव-मारग दिखलाय कर', भविजन कर उद्धार।**
**'धर्म-सुयश जग-विस्त्र[१] कर', बतलायो शुभ सार॥**
ॐ ह्रीं शिव-कीर्तये नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६७६।।

**'मोह-अंध-हन सूर्य हो, जगदीश्वर शिवनाथ'।**
**'मोक्षमार्ग-परकाश कर', नमूँ जोर जुग-हाथ॥**
ॐ ह्रीं विश्व-कर्मणे नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।। ६७७।।

**'मन-इन्द्रिय व्यापार बिन, भाव रूप विध्वंश'।**
**ज्ञान 'अतीन्द्रिय' धरत हो, नमत नशे अघ-वंश॥**
ॐ ह्रीं अनक्षाय नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६७८।।

**'पर-उपदेश परोक्ष बिन, साक्षात् प्रत्यक्ष'।**
**जानत लोकालोक सब, धारें ज्ञान अलक्ष॥**
ॐ ह्रीं अछद्मने नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६७९।।

**'व्यापक हो तिहुँ लोक में, ज्ञान-जोत सब ठोर'।**
**तुमको पूजत भाव सों, पाऊँ भवदधि-ओर॥**
ॐ ह्रीं विश्वभुवे नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६८०।।

**इन्द्रादिक कर पूज्य हैं, मुनिजन ध्यान धराय।**
**'तीन-लोक-नायक प्रभू', हम पर होउ सहाय॥**
ॐ ह्रीं विश्व-नायकाय नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६८१।।

**तुम देवन के देव हो, महादेव है नाम।**
**'बिन-ममत्व शुद्धात्मा', तुम पद करूँ प्रणाम॥**
ॐ ह्रीं दिगम्बराय नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६८२।।

**'सर्व-व्याप कुमती कहैं, करो भिन्न विसराम'।**
**'जग सों तजी समीपता', राजत हो शिवधाम॥**
ॐ ह्रीं निरातंकाय नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६८३।।

१. विस्तृत / विस्तारित / प्रकाशित २. आपका भावरूप मन-इन्द्रिय का उपयोग नष्ट हुआ है।
३. हे प्रभु! आपको छद्मस्थ अवस्था का नाश होकर केवलज्ञान प्राप्त हुआ है।



**हितकारी अति मिष्ट हैं, 'अर्थ सहित गंभीर'।**
**प्रिय वाणी कर पोषते, द्वादश सभा सु तीर॥**
ॐ ह्रीं निरारेकाय नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६८४।।

**'भव-सागर के पार हो', सुख-सागर गलतान[१]।**
**भव्य जीव पूजत चरन, पावैं पद निरवान॥**
ॐ ह्रीं भवान्तकाय नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६८५।।

**'नहीं चलाचल भाव है', पाप-कलाप न लेश।**
**'दृढ़ परिणति स्व-आत्मरति', पूजूँ श्री मुक्तेश॥**
ॐ ह्रीं दृढ-व्रताय नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६८६।।

**'असंख्यात नय-भेद हैं, यथायोग्य वच-द्वार।**
**तिन सबको जानो सुविध', महा निपुण मतिधार॥**
ॐ ह्रीं नयोत्तुङ्गाय नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६८७।।

**क्रोधादिक सु उपाधि हैं, 'आत्म-विभाव कराय।**
**तिनको त्यागि विशुद्ध पद', पायो पूजूँ पाय॥**
ॐ ह्रीं निष्कलङ्काय नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६८८।।

**ज्यों शशि-किरण उद्योत है, 'पूरण प्रभा प्रकाश।**
**कला-धार सोहैं' सु इम, पूजत अघ-तप[२]-नाश॥**
ॐ ह्रीं पूर्ण-कलाधराय नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६८९।।

**जन्म-मरण को आदि ले, 'विश्व-कलेश महान।**
**तिसके हंता हो प्रभू', भोगत सुख निर्वान॥**
ॐ ह्रीं सर्व-क्लेशापहाय नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६९०।।

**'ध्रुव-सरूप थिर हैं सदा','कभी अंत नहिं होय'।**
**'अव्याबाध विराजते', पर-सहाय को खोय॥**
ॐ ह्रीं अक्षय्याय नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६९१।।

**व्यय-उत्पाद सु भाव हैं, ताको गौण कराय।**
**'अचल अंत-क्षय' भाव में, तीन लोक सुखदाय॥**
ॐ ह्रीं क्षयान्ताय नमः, अर्घ्यं नि.स्वाहा।। ६९२।।

**'स्व-ज्ञानादि चतुष्ट पद, हृदय माहिं विकसाय'।**
**'सोहत हैं शुभ चिह्न करि', भवि आनंद कराय॥**
ॐ ह्रीं श्रीवत्स-लांछनाय नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६९३।।



अन्य मतों में प्रसिद्ध नामों के वास्तविक अर्थसूचक अर्घ्य

**'धर्म-रीति परगट कियो, युग की आद मंझार'।**
**भविजन पोषे सुख सहित, आदि-धर्म अवतार॥**
ॐ ह्रीं **ब्रह्मणे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६९४।।
**'चतुरानन परसिद्ध हैं', दर्श होय चहुँ ओर।**
**'चार अनुयोग बखानते', सब दुख नाशै मोर॥**
ॐ ह्रीं **चतुर्मुखाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६९५।।
**'जगत् जीव कल्याण कर', 'वृष मर्याद बखान'।**
**ब्रह्म विष्णु भगवान हो, महामुनी सब मान॥**
ॐ ह्रीं **धात्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६९६।।
**'प्रजापति प्रतिपाल कर', 'ब्रह्मा विधि-करतार'।**
**मन्मथ-इन्द्रिय वश-करन, वंदूँ सुख आधार॥**
ॐ ह्रीं **विधात्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६९७।।
**'तीन लोक की लक्ष्मी, तुम चरणांबुज वास'।**
**श्रीपति श्रीधर नाम शुभ, दिव्यासन सुखरास॥**
ॐ ह्रीं **कमलासनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६९८।।
**'बहुरि न जग में भ्रमण है', पंचम गति में वास।**
**'नित्य अमरता पाइयो', जरा-मृत्यु को नास॥**
ॐ ह्रीं **अजन्मिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६९९।।
**पाँच काय पुद्गलमई, तामें एक न होय।**
**'केवल आत्मप्रदेश ही, तिष्ठित हैं' दुख खोय॥**
ॐ ह्रीं **आत्म-भुवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७००।।
**'लोक-शिखर सुख सों रहैं', यही प्रभुता जान।**
**'धारत हैं तिहुँ लोक तें', अधिक प्रभा परधान॥**
ॐ ह्रीं **शृंगाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७०१।।
**'अधिक प्रताप प्रकाश है', मोह-तिमिर को नास।**
**'शिवमग दिखलावत सही', सूरज सम प्रतिभास॥**
ॐ ह्रीं **सुर-ज्येष्ठाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७०२।।
**'प्रजापाल हित धार उर', शुभ मारग बतलाय।**
**'सत्यारथ ब्रह्मा कहो', तुमको वंदूँ पाय॥**
ॐ ह्रीं **प्रजा-पतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७०३।।
**'गर्भ समय छह मास ही, प्रथम इन्द्र हर्षाय'।**





**रत्न-वृष्टि नित करत हैं, उत्तम गर्भ कहाय॥**
ॐ ह्रीं **हिरण्य-गर्भाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७०४।।
**तुम ही 'चार अनुयोग के, अंग कहे मुनिराय'।**
**तुम सों पूरण श्रुत सही, नातर भंग अकाज॥**
ॐ ह्रीं **वेदांगाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७०५।।
**तुम उपदेश थकी कहै, द्वादशांग गणराज।**
**'पूरण ज्ञात तुम्हीं धरो', प्रणमूँ मैं शिव-काज॥**
ॐ ह्रीं **वेदज्ञाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७०६।।
**'पार भये भव-सिंधु के', तथा सुवर्ण समान।**
**उत्तम निर्मल थुति धरैं, नमत कर्म-मल-हान॥**
ॐ ह्रीं **पारगाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७०७।।
**सुखाभास पर-निमित तें, पर-उपाधि तें होत।**
**'स्वतः सुभाव धरो सही', 'सत्यानंद' उदोत॥**
ॐ ह्रीं **सत्यानन्दाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७०८।।
**मोहादिक परबल महा, 'सोई सको न जीत'।[१]**
**औरन की गिनती कहाँ, तिष्टो सदा अभीत॥**
ॐ ह्रीं **अजयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७०९।।
**दिव्य-रत्न सम जोत हो, अमित अकंप अडोल।**
**'मनवांछित फलदाय हो', राजत अखय अमोल॥**
ॐ ह्रीं **मनवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७१०।।
**'देह धार जीवन-मुकत', परमातम भगवान।**
**सूर्य समान सुदीप्त धर, 'महा ऋषीश्वर' जान॥**
ॐ ह्रीं **जाताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ७११।।
**'स्व-भय आदिक से परे, पर-भय आदि निवार'।**
**पर-उपाधि बिन नित सुखी, वंदूँ भाव संभार॥**
ॐ ह्रीं **त्रातानन्दाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७१२।।
**'ईश्वर हो तिहुँ लोक के', 'परम पुरुष परधान'।**
**ज्ञानानंद स्वलक्ष्मी, भोगत नित अमलान॥**
ॐ ह्रीं **विष्णवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७१३।।
**'रत्नत्रय पुरुषार्थ कर, हो प्रसिद्ध जयवंत'।**

कर्मशत्रु को क्षय कियो, शीश नमें नित 'संत'॥

ॐ ह्रीं **त्रि-विक्रमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७१४ ।।

'सूरज हो शिव-राह के', 'कर्म-दलन बल-सूर'।
संशय-केतु न ग्रहण-ग्रस, महा सहज सुख-पूर॥

ॐ ह्रीं **सौरये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७१५ ।।

सुभग अनंत-चतुष्ट पद, सोई लक्ष्मी भोग।
'स्वामी हो शिव-नार के', नमूँ जोर तिहुँ योग॥

ॐ ह्रीं **श्री-पतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७१६ ।।

इन्द्रादिक पूजत जिन्हैं, पंचकल्याणक थाप।
'अद्भुत पराक्रम को धरैं', नमत नसैं भव पाप॥

ॐ ह्रीं **पुरुषोत्तमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७१७ ।।

निज-प्रदेश में वसत हैं, परमातम को वास।
'आप मोक्ष के नाथ हो', आपहि मोक्ष-निवास॥

ॐ ह्रीं **वैकुण्ठाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७१८ ।।

सर्व लोक-कल्याण कर, विष्णु नाम भगवान।
'श्री कहिये स्व-लक्ष्मी, ताके भरता जान'॥

ॐ ह्रीं **पुण्डरीकाक्षाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वा. ।। ७१९ ।।

'मुनि-मन-कुमुदनिमोदकर, भवसंतापविनाश'।
'पूरण-चन्द्र त्रिलोक में', पूरण-प्रभा प्रकाश॥

ॐ ह्रीं **हृषीकेशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७२० ।।

'दिनकर सम परकाश धर', हो देवन के देव।
'ब्रह्मा-विष्णु कहात हो', शशिसम दुति स्वयमेव॥

ॐ ह्रीं **हरये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७२१ ।।

'स्वयं विभव के हो धनी', स्वयं जोत परकास।
स्वयं ज्ञान-दृग-वीर्य-सुख, स्वयं सुभाव विलास॥

ॐ ह्रीं **स्वभुवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७२२ ।।

'धर्म-भार-धर धारणी, हो जिनेन्द्र भगवान'।
तुमको पूजूँ भाव सों, पाऊँ पद निर्वान॥

ॐ ह्रीं **विश्वम्भराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७२३ ।।

'असुर काम अरु हास्य - इन आदि कियो विध्वंश'।



महा श्रेष्ठ तुमको नमूँ, रहै न अघ को अंश॥

ॐ ह्रीं **असुर-ध्वंसिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७२४ ।।

सुधा-धार द्यो अमरपद, धर्म-फूल की बेल।
'शुभमति गोपियन-संग रमें', हमें राख निज गेल॥

ॐ ह्रीं **माधवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७२५ ।।

विषय कषाय स्ववश करो, 'बलिवश कियो जु राम'।
'महाबली परसिद्ध' हो, तुम पद करूँ प्रणाम॥

ॐ ह्रीं **बलि-बन्धनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७२६ ।।

'तीन लोक भगवान हैं', स्व-पर के हितकार।
सुर-नर-पशु पूजत सदा, भाव-भक्ति उर धार॥

ॐ ह्रीं **अधोक्षजाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७२७ ।।

'हित-मित-मिष्ट-प्रिय वचन, अमृतसम सुखदाय'।
धर्म-मोक्ष परगट करन, वंदूँ तिनके पाय॥

ॐ ह्रीं **मधु-द्वेषिणे** नमः, अर्घ्यं नि. स्वा. ।। ७२८ ।।

'निज-लीला में मगन है', साँचा कृष्ण सु नाम।
'तीन खण्ड तिहुँ लोक के, नाथ' करूँ परणाम॥

ॐ ह्रीं **केशवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७२९ ।।

सूखे तृण सम जगत् की, विभव जानकर वास।
धरै सरलता जोग में, करै पाप को नास॥

ॐ ह्रीं **विष्टर-श्रवसे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७३० ।।

'श्री कहिये आतम विभव, ता कर हो शुभ नीक'।
सोहत सुंदर वदन कर, सज्जन चित रमनीक॥

ॐ ह्रीं **श्रीवत्स-लांछनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७३१ ।।

'सर्वोत्तम अतिश्रेष्ठ हैं', जिन सन्मति थुति-योग।
धर्म मोक्ष-मारग कहैं, पूजत सज्जन लोग॥

ॐ ह्रीं **श्रीमते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७३२ ।।

'अविनाशी अविकार हैं', 'नहीं चिगे निज भाव'।
स्वयं निराश्रय रहत हैं, मैं पूजूँ धर चाव॥

ॐ ह्रीं **अच्युताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७३३ ।।

'नाशी लौकिक कामना, निर-इच्छक योगीश'।

**'नार-श्रृंगार न मन वसै', वंदूँ हूँ लोकीश॥**

ॐ ह्रीं **नरकान्तकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७३४।।

**'व्यापक लोकालोक में, विष्णुरूप भगवान'।**
**धर्मरूप तरु लहलहै, पूजत हूँ धर ध्यान॥**

ॐ ह्रीं **विश्वक्-सेनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७३५।।

**'धर्मचक्र-सन्मुख चलै, मिथ्या-मत-रिपु घात'।**
**तीन लोक नायक प्रभु, पूजत हूँ दिन-रात॥**

ॐ ह्रीं **चक्र-पाणये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७३६।।

**'सुभग-सरूप-श्रेष्ठ अति, जन्म धर्म अवतार'।**
**'तीन लोक की लक्ष्मी, है एकत्र' उदार॥**

ॐ ह्रीं **पद्म-नाभाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७३७।।

**'मुनिजन आदर-योग' हो,'लोक-सराहन-योग'।**
**सुर-नर-पशु आनंद कर, सुभग निजातम भोग॥**

ॐ ह्रीं **जनार्दनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७३८।।

**सब देवन के देव हो, महादेव विख्यात।**
**'ज्ञानामृत मुख से खिरै', पीवत भवि सुख पात॥**

ॐ ह्रीं **श्री-कण्ठाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७३९।।

**'पाप-पुंज का नाश कर, धर्म रीत प्रगटाय'।**
**'तीन लोक के अधिपती', हम पर दया कराय॥**

ॐ ह्रीं **श्री-शंकराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७४०।।

**'स्वयं व्याप निज-ज्ञान कर', स्वयं प्रकाश अनूप।**
**'स्वयं भाव परमातमा', वंदूँ स्वयं सरूप॥**

ॐ ह्रीं **शंभवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७४१।।

**सब देवन के देव हो, 'महादेव' है नाम।**
**'स्व-पर सुगंधित रूप' हो, तुम पद करूँ प्रणाम॥**

ॐ ह्रीं **कपालिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७४२।।

**'धर्मध्वजा जग फर-हरै', सब जग मानै आन।**
**सब जग शीश नमें चरण, सब जग को सुखदान॥**

ॐ ह्रीं **वृष-केतनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७४३।।

**'जन्म-जरा-मृतु जीत कै, निश्चल अव्यय रूप'।**
**सुख सों राजत नित्य ही, वंदूँ हूँ शिवभूप॥**





ॐ ह्रीं **मृत्युंजयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७४४।।

**'सब इन्द्रिय-मन जीत कर, कर दीनो तुम व्यर्थ'।**
**स्वयं ज्ञान-इन्द्रिय जगो, नमूँ सदा शिव अर्थ॥**

ॐ ह्रीं **विरूपाक्षाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७४५।।

**सुन्दर रूप मनोग है, मुनिजन-मन-वशकार।**
**असाधारण शुभ अणु लगै, केवलज्ञान मंझार॥**

ॐ ह्रीं **वाम-देवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७४६।।

**'सम्यग्दर्शन ज्ञान अरु, चारित एक-सरूप।**
**धर्म-मार्ग-दरसात हैं', लोकित रूप अरूप॥**

ॐ ह्रीं **त्रिलोचनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७४७।।

**'निजानंद स्व-लक्षमी, ताके हो भरतार'।**
**'शिव-कामिन नित भोगते', परम रूप सुखकार॥**

ॐ ह्रीं **उमा-पतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७४८।।

**जे अज्ञानी जीव हैं, तिन प्रति बोध करान।**
**'रक्षक हो षट्काय के', तुम सम कौन महान?॥**

ॐ ह्रीं **पशु-पतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७४९।।

**'रमण भाव निज शक्त सों, धरै तथा द्युति काम'।**
**कामदेव तुम नाम है, महाशक्ति बलिराम॥**

ॐ ह्रीं **स्मरारये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७५०।।

**'काम-दाह को दमकियो',ज्यों अग-दव जलधार।**
**स्व-आतम-आचरण नित, महाशील श्रियसार॥**

ॐ ह्रीं **त्रिपुरान्तकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७५१।।

**'स्व-सन्मति शुभ नार सों, मिले रले अरधांग'।**
**'ईश्वर हो परमातमा', तुम्हैं नमूँ सर्वांग॥**

ॐ ह्रीं **अर्द्ध-नारीश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७५२।।

**'नहीं चिगैं उपयोग सों', महा कठिन परिणाम।**
**'महा धीर्य-धारक' नमूँ तुमको आठों जाम॥**

ॐ ह्रीं **रुद्राय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७५३।।

**'गुण-पर्याय अनन्त युत, वस्तु स्वयं परदेश।**
**स्वयं काल स्व-क्षेत्र' हो, 'स्वयं सुभाव विशेष'॥**

ॐ ह्रीं **भवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७५४।।

**'सूक्षम गुप्त स्व-गुण धरें, महा शुद्धता धार'।**
**चार ज्ञान धर नहिं जने, मैं पूजूँ सुखकार॥**

ॐ ह्रीं **भर्गाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७५५।।

**'शिव-तिय संग सदा रमें', काल अनन्त न और।**
**'अविनाशी अविकार' हो, महादेव सिरमौर॥**

ॐ ह्रीं **सदा-शिवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७५६।।

**'जगत् कार्य तुम से सरैं', सब तुमरे आधीन।**
**सबके तुम सरदार हो, आप-धनी जग-दीन॥**

ॐ ह्रीं **जगत्कर्त्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७५७।।

**महा घोर अंधियार है, मिथ्या मोह कहाय।**
**जग में शिव-मग लुप्त था, तिसको तुम दरसाय॥**

ॐ ह्रीं **अन्धकारातये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७५८।।

**संतति पक्ष जु लीजिये, नहीं आद नहिं अंत।**
**सदाकाल जिम काल तुम, राजत हो जयवंत॥**

ॐ ह्रीं **अनादि-निधनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७५९।।

**तीन लोक आराध्य हो, महा यज्ञ को ठाम।**
**तुमको पूजत पाइये, महा मोक्ष सुख-धाम॥**

ॐ ह्रीं **हराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७६०।।

**महा सुगुण की रास हो, सेवत हैं तिहुँ लोक।**
**शरणागत प्रतिपाल कर, चरणाम्बुज दूँ धोक॥**

ॐ ह्रीं **महा-सेनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७६१।।

**गणधरादि सेवित चरण, महा गणपती नाम।**
**पार करो भव-सिंधु तैं, मंगल कर सुख-धाम॥**

ॐ ह्रीं **तारक-जिते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७६२।।

**चार संघ के नाथ हो, तुम आज्ञा सिर धार।**
**धर्ममार्ग प्रवर्त कर, वंदूँ पाप निवार॥**



ॐ ह्रीं **गण-नाथाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७६३।।

**मोह-सर्प के दमन को, गरुड़ समान कहाय।**
**सबके आदर कार हो, तुम गणपति सुखदाय॥**

ॐ ह्रीं **विनायकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७६४।।

**जे मोही अल्पज्ञ हैं, तिन सों हो प्रतिकूल।**
**धर्माधर्म विरोध कर, धरूँ शीश पग-धूल॥**

ॐ ह्रीं **विरोचनाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।।७६५।।

**जितने दुख संसार में, तिनको वार-न-पार।**
**इक तुम ही जानो सही, ताहि तजो दुख-भार॥**

ॐ ह्रीं **वियद्रत्नाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।।७६६।।

**सब विद्या के जीव हो, तुम वाणी परकाश।**
**सकल अविद्या मूल तें, इक छिन में हो नाश॥**

ॐ ह्रीं **द्वादशात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७६७।।

**पर-निमित्त सैं जीव के, रागादिक परिणाम।**
**तिनको त्याग सुभाव में, राजत हैं सुख- धाम॥**

ॐ ह्रीं **विभावसवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७६८।।

**अन्तर-बाहर प्रबल रिपु, जीत सके नहिं कोय।**
**निर्भय अचल सुथिर रहैं, कोटि शिवालय सोय॥**

ॐ ह्रीं **दुर्जयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७६९।।

**करि-सम गर्जन वचन हैं, भागे कुनय कुवाद।**
**प्रबल प्रचण्ड स्ववीर्य हैं, धरैं सुगुण इत्याद॥**

ॐ ह्रीं **वृहद्-भानवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७७०।।

**पाप-सघन-वन-दाह-दव, महादेव शिव नाम।**
**अतुल प्रभाव धरैं महा, तुम पद करूँ प्रणाम॥**

ॐ ह्रीं **चित्र-भानवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७७१।।

**तुम अजन्म बिन-मृत्यु हो, सदा रहो अविकार।**
**ज्यों के त्यों मणि-दीप सम, पूजत हूँ मनधार॥**

ॐ ह्रीं **तनू-न-पाते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७७२।।

**संस्कारादि स्वगुण सहित, तिनके हो आराध्य।**
**तुमको वंदूँ भाव सों, मिटै सकल दुख-व्याध्य॥**

ॐ ह्रीं **द्विज-राजाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७७३।।

**निज-अमृत स्व-ज्ञान हो, तामैं रुचि परतीत।**
**पर पद सो है अरुचता, पाई अक्षय जीत॥**

ॐ ह्रीं **सुधांशोचिषे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७७४।।

**जन्म-मरण को आदि ले, सकल रोग को नास।**
**दिव्य औषधी तुम धरो, अमर करन सुख-रास॥**

ॐ ह्रीं **औषधीश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७७५।।

**पूरण गुण परकाश कर, ज्यों शशिकर उद्योत।**
**मिथ्या-ताप निवारते, दर्शित आनंद होत॥**

ॐ ह्रीं **कला-निधये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७७६।।

**सूर्य प्रकाश धरैं सही, धर्म-मार्ग दिखलाय।**
**चार संघ नायक प्रभू, वंदूँ तिनके पाय॥**

ॐ ह्रीं **नक्षत्र-नाथाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७७७।।

**भव-तप-हर हो चन्द्रमा, शीतल-कारक पूर।**
**तुमको जो नर सेवते, पाप-कर्म हो दूर॥**

ॐ ह्रीं **शुभ्रांशवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७७८।।

**स्वर्गादिक की लक्षमी, ता सोभित कल्यान।**
**स्व-पद में आनंद है, तीन लोक भगवान॥**

ॐ ह्रीं **सोमाय** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।।७७९।।

**पर-पदार्थ को इष्ट लख, होत नहीं अभिमान।**
**हो अबंध इस कर्म तें, स्व-आनंद निधान॥**

ॐ ह्रीं **कुमुद-बांधवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७८०।।

**सब विभाव को त्याग कर, हैं सुधर्म में लीन।**
**तातें प्रभुता पाइयो, हैं नहिं बंधाधीन॥**

ॐ ह्रीं **धर्म-रतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७८१।।

**आकुलता नहिं लेश है, नहीं रहै चित-भंग।**
**सदा सुखी तिहुँ लोक में, चरण नमूँ सब अंग॥**

ॐ ह्रीं **अनिलाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७८२।।

**शुभ परिणति प्रगटाय के, दियो स्वर्ग को दान।**
**धर्म-ध्यान तुमसे चले, सुमिरत हो शुभ ध्यान॥**



ॐ ह्रीं **पुण्यजनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७८३।।

**भविजन करत पवित्र अति, पाप मैल प्रक्षाल।**
**ईश्वर हो परमातमा, नमूँ चरण निज भाल॥**

ॐ ह्रीं **पुण्य-जिनेश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७८४।।

**श्रावक या मुनिराज हो, धर्म आप सैं होय।**
**धर्मराज शुभ नीत कर, उन्मारग को खोय॥**

ॐ ह्रीं **धर्म-राजाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७८५।।

**स्वयं स्व-आतम रस लहै, ताही का है भोग।**
**अन्य कुपरिणति त्यागियो, नमूँ पदांबुज योग॥**

ॐ ह्रीं **भोगिराजाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७८६।।

**दर्शन-ज्ञान सुभाव धर, ताही के हो स्वामि।**
**ता मलीनता त्यागियो, भये शुद्ध परिणामि॥**

ॐ ह्रीं **प्रचेतसे** नमः, अर्घ्यं नि. स्वाहा।।७८७।।

**सत्य उचित शुभ न्याय में, है आनंद विशेष।**
**सब कुनीत को नाश कर, सर्व जीव सुख देष॥**

ॐ ह्रीं **भूतानन्दाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७८८।।

**पर-पदार्थ के संग से, दुखित होत सब जीव।**
**ताके भय से भय रहित, भोगैं मोक्ष सदीव॥**

ॐ ह्रीं **सिद्धिकान्त-जिनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७८९।।

**जाको कभी न नाश हो, सो पायो आनंद।**
**अचल रूप निज आत्ममय, भाव अभावी द्वंद॥**

ॐ ह्रीं **अक्षयानन्दाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७९०।।

**शिव-मारग परगट कियो, दोष रहित वरताय।**
**दिव्य-ध्वनि कर गर्ज सम, सर्व अर्थ दिखलाय॥**

ॐ ह्रीं **वृहतां-पतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७९१।।

(चौपई : दरश विशुद्धि धरै जो कोई .....)

**हितकारक अपूर्व उपदेश, तुम सम और नहिं देवें शेष।**
**सिद्ध-समूह जजूँ मन लाय, भव-भव में सुख-संपद पाय॥**

ॐ ह्रीं **अपूर्व-देवोपदेष्ट्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७९२।।

**कर्म विषैं संस्कार विधान, तीन लोक में विस्तर जान॥ सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **द्विजराज-समुद्भवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७९३।।

**धर्म-उपदेश देत सुखकार, महाबुद्ध तुम हो अवतार॥ सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **बुद्धाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७९४।।

**तीन लोक में हो शशि-सूर, निज-किरणावलि कर तमचूर॥ सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **दशबलाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७९५।।

**धर्म-मार्ग उद्योत करान, सब कुवाद की करहो हान॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **शाक्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७९६।।

**सर्व-शास्त्र मिथ्या वा साँच, तुम निजदृष्टि लियो है जाँच॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **षड्भिज्ञाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७९७।।

**पंचमगति बिन श्रेष्ठ न और, सो तुम पाय त्रिजग सिरमौर॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **तथागताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७९८।।

**श्रेष्ठ सुमति तुम ही है एक, शिव-मारग की जानो टेक॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **समन्तभद्राय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७९९।।

**वृष-मर्जाद भली विध थाप, भविजन मेटो भव-संताप॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **सुगताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८००।।

**श्रेष्ठ करै कल्याण स्व-ज्ञान, संपूरण संकल्प निशान॥ सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **श्रीघनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८०१।।

**निज ऐश्वर्य धरो संपूर्ण, पर-विभूति बिन हो अघ चूर्ण॥ सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **भूतकोटिदिशे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८०२।।

**श्रेष्ठ शुद्ध निजब्रह्म रमाय, मंगलमय पर-मंगलदाय॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **सिद्धार्थाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८०३।।

**श्री जिनराज कर्म-रिपु जीत, पूजनीक हैं सबके मीत॥ सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **मारजिते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८०४।।

**षट् पदार्थ नव तत्त्व कहाय, धर्म-अधर्म भलीविध गाय॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **शास्त्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८०५।।

**है शुभलक्षणमय परिणाम, पर-उपाधि को नहिं कछु काम॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **क्षणिकैक-सुलक्षणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८०६।।

**सत्य ज्ञानमय है तुम बोध, हेय-अहेय बतायो सोध॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **बोधि-सत्त्वाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८०७।।

**इष्टानिष्ट न राग न द्वेष, ज्ञाता-दृष्टा हो अविशेष॥सिद्ध.॥**



ॐ ह्रीं **निर्विकल्प-दर्शनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८०८।।

**दूजो तुम सम नहिं भगवान, धर्माधर्म रीति बतलान॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **अद्वय-वादिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८०९।।

**महा दुखी संसारी जान, तिनके पालक हो भगवान॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **महा-कृपालवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८१०।।

**जग विभूति निर-इच्छक होय, मान रहित आतम-रत सोय॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **नैरात्म्य-वादिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८११।।

**ज्यों शशि तपहर है अनिवार, अतिशय सहित शांति करतार॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **सन्तान-शासकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८१२।।

**हो निर्भेद अछेद अशेष, सब इकसार स्वयं परदेश॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **सामान्य-लक्षणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८१३।।

**मायाकृत सम पाँचों काय, निज सों भिन्न लखो मल भाय॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **पंच-स्कन्धमयात्मदृशे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८१४।।

**बीती बात देख संसार, भव-तन-भोग विरक्त उदार॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **भूतार्थ-भावना-सिद्धाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८१५।।

**धर्माधर्म जान सब ठीक, मोक्षपुरी दिखलायो लीक॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **चतुराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८१६।।

**वीतराग-सर्वज्ञ सुदेव, सत्यवाक् वक्ता स्वयमेव॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **सत्यवक्त्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८१७।।

**मन-वच-काय जोग परिहार, कर्मवर्गणा नाहिं लगार॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **निरास्रवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८१८।।

**चारऽनुयोग किया उपदेश, भव्य जीव सुख लहत हमेश॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **चतुर्भूमि-शासनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८१९।।

**काहू पद सों मेल न होय, अन्वय रूप कहावै सोय॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **अन्वयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८२०।।

**हो समाधि में नित लवलीन, बिन आश्रय नित ही स्वाधीन॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **योगाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८२१।।

**लोक-भाल हो तिलक अनूप, हो लोकोत्तम शेष सरूप॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **वैशेषिकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८२२।।

**अक्षाधीन हीन है शक्त, तिनको नाश करी निज व्यक्त॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **तुच्छभाव-भिदे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८२३।।

**जीवादिक पदार्थ षट् जान, तिनका भलीभाँत है ज्ञान॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **षड्-पदार्थ-दृशे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८२४।।

**विकलरूप नय सकल प्रमाण, वस्तु भेद जानो स्वज्ञान॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **नैयायिकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८२५।।

**सब पदार्थ दरसत तुम बैन, संशयहरन करन सुखचैन॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **षोडशार्थ-वादिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८२६।।

**वर्णन कर पंचास्ति-काय, भव्य जीव संशय विनशाय॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **पंचार्थ-वर्णकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८२७।।

**प्रतिबिंबवे आरसी माह, ज्ञानाध्यक्ष जानहो ताह॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **ज्ञानान्तराध्यक्ष-बोधाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८२८।।

**जामै ज्ञान-जीव हो एक, सो परकासो सुद्ध विवेक॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **समवाय-वशार्थ-भिदे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८२९।।

**भगतन के हो साध्य सु कर्म, अंतम पौरुष साधन शर्म॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **मुक्तैक-साध्य-कर्मान्ताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८३०।।

**बाकी रहो न गुण शुभ एक, ताको स्वाद न हो प्रत्येक॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **निर्विशेष-गुणामृताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८३१।।

**नय सुपक्ष कर सांख्य सु वाद, तुम निर्वाद पक्षकर वाद॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **सांख्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८३२।।

**सम्यग्दर्शन है तुम बैन, वस्तु परीक्षक भाखो ऐन॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **सम्यक्-समीक्षाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८३३।।

**धर्म-शास्त्र के हो करतार, आदि पुरुष धारो अवतार॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **कपिलाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८३४।।

**नय साधत नैयायक नाम, सो तुम पक्ष धरो अभिराम॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **पंचविंशति-तत्त्वविदे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८३५।।

**स्व-पर चतुष्क वस्तु को भेद, व्यक्ताव्यक्त कहैं निरखेद॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **व्यक्ताव्यक्त-ज्ञानिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८३६।।

**दर्शन-ज्ञान भेद उपयोग, चेतनतामय है शुभ योग॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **ज्ञान-चैतन्य-भेद-दृशे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८३७।।

**स्वसंवेदन शुद्ध धराय, अन्य जीव हैं मलिन कुभाय॥सिद्ध.॥**





ॐ ह्रीं **स्व-संविदित-ज्ञान-वादिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८३८।।

**द्वादश सभा करैं सतकार, आदर-योग वैन सुखकार॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **सत्कार्य-वादिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८३९।।

**आगम-अक्ष-अनक्ष प्रमान, तीन भेद कर तुम पहचान॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **त्रि-प्रमाणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८४०।।

**विसद सुद्ध मति हो साकार, तुमको जानत है सुविचार॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **अक्ष-प्रमाणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८४१।।

**नय-सापेक्ष कहैं शुभ-बैन, हैं असंश सत्यारथ ऐन॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **स्याद्वाद-दर्शये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८४२।।

**लोकालोक क्षेत्र के माय, आप ज्ञान में सब दरसाय॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **क्षेत्रज्ञाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८४३।।

**अन्तर-बाह्य लेश नहिं और, केवल आतम-जोत अथोर॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **आत्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८४४।।

**अन्तम पौरुष साध्यो सार, पुरुष नाम पायो सुखकार॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **पुरुषाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८४५।।

**चहुँ गति में नरदेह मँझार, मोक्ष होत तुम नर आकार॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **नराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८४६।।

**दर्श-ज्ञान चेतन की लार, निरावरण तुम हो अविकार॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **चेतनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८४७।।

**भाव न भेद वेद नरदेह, मोक्षरूप नाहीं संदेह॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **पुंसे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८४८।।

**सत्य यथारथ हो सब ठीक, स्वयंसिद्ध राजो सुभ नीक॥सिद्ध.॥**

ॐ ह्रीं **अकर्त्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८४९।।

(**दोहा :** समयसार जिनदेव है .....)

**जा कर तुमको जानिये, सो है अगम अलक्ष।**
**निर्गुण यातें कहत हैं, भव-भय तें हम रक्ष॥**

ॐ ह्रीं **निर्गुणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८५०।।

**पुद्गल में हैं अष्ट गुण[१], सो तुम में इक नाय।**
**सुद्ध अमूरत देव हो, स्व-प्रदेश चिदराय॥**

ॐ ह्रीं **अमूर्ताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८५१।।

**उमापती त्रिभुवन-धनी, राजत भू-भरतार।**

**निजानंद को आदि ले, महा तुष्ट निरधार॥**
ॐ ह्रीं **भोक्त्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८५२॥
**व्यापक लोकालोक में, ज्ञान-जोत के द्वार।**
**लोक-शिखर तिष्ठत अचल, करो भक्त उद्धार॥**
ॐ ह्रीं **सर्वगताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८५३॥
**योग प्रबंध निवारियो, राग-द्वेष निरवार।**
**देह रहित निष्कंप हो, भये अक्रिया सार॥**
ॐ ह्रीं **अक्रियाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८५४॥
**सर्वोत्तम अति उच्च गति, जहाँ रहो स्वयमेव।**
**देव-वास है मोक्ष-थल, हो देवन के देव॥**
ॐ ह्रीं **दिविष्ठ्ये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८५५॥
**भव-सागर के तीर हो, अचलरूप सुस्थान।**
**फिर नहिं जग में जन्म है, राजत हो सुख-थान॥**
ॐ ह्रीं **तटस्थाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८५६॥
**ज्यों के त्यों नित थिर रहो, अचलरूप अविनाश।**
**निजपदमय राजत सदा, स्वयं जोत परकाश॥**
ॐ ह्रीं **कूटस्थाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८५७॥
**तत्त्व-अतत्त्व प्रकाशयो, ज्ञाता हो सब भास।**
**ज्ञानमूर्ति हो ज्ञानघन, ज्ञान-जोत अविनास॥**
ॐ ह्रीं **ज्ञात्रे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८५८॥
**पर-निमित्त के योग तें, व्यापो नहीं विकार।**
**स्व-सरूप में थिर सदा, हो अबाध निरधार॥**
ॐ ह्रीं **निर्बन्धनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८५९॥
**चार्वाक वा सांख्य मत, झूठी पक्ष धरात।**
**अल्प मोक्ष नहिं होत है, राजत हैं विख्यात॥**
ॐ ह्रीं **निराभावाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८६०॥
**तारण-तरण जहाज हो, अतुल शक्ति के नाथ।**
**भव-वारिध से पार कर, राखो अपने साथ॥**
ॐ ह्रीं **अभवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८६१॥
**बंध-मोक्ष की कहन है, सो भी है व्यवहार।**
**तुम व्यवहारातीत हो, शुद्ध वस्तु निरधार॥**





ॐ ह्रीं **निर्मोक्षाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८६२॥
**चारों पुरुषारथ विषैं, मोक्ष पदारथ सार।**
**तुम साधो परधान हो, सब में सुख आधार॥**
ॐ ह्रीं **प्रधानाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८६३॥
**कर्म मैल प्रक्षाल कैं, असाधार्ण निष्पाप।**
**हो प्रछिन्न शिवथल विषैं, अन्तर हम अरु आप॥**
ॐ ह्रीं **बहु-धानकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८६४॥
**निज स्वभाव निज वस्तुता, निज सुभाव में लीन।**
**वंदूँ शुद्ध सुभावमय, अन्य कुभाव मलीन॥**
ॐ ह्रीं **प्रकृतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८६५॥
**निज स्वरूप परकाश है, निरावर्ण ज्यों सूर।**
**तुमको पूजत भाव सों, मोह कर्म हो चूर॥**
ॐ ह्रीं **ख्यातये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८६६॥
**जिन भावन तें मोक्ष हो, ते ही भाव रहात।**
**स्व-गुण स्व-पर्याय मैं, थिरता भाव धरात॥**
ॐ ह्रीं **आरूढ-प्रकृतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८६७॥
**सब कुभाव को जीतियो, शुद्ध भये निरमूल।**
**शुद्धातम कहलात हो, नमत नशें अघ शूल॥**
ॐ ह्रीं **प्रकृति-प्रियाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८६८॥
**निज-सन्मत के सन्मती, निज-बुध के बुधवान।**
**ज्ञाता हो शुभ ज्ञान के, पूजत मिथ्या हान॥**
ॐ ह्रीं **अधियज्ञाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८६९॥
**कर्म-प्रकृति को अंश बिन, उत्तर हो या मूल।**
**शुद्धरूप अति तेज घन, ज्यों रवि बिंब अधूल॥**
ॐ ह्रीं **अप्रकृतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८७०॥
**आदि पुरुष आदीश जिन, आदि-धर्म-अवतार।**
**आदि-मोक्ष-दातार हो, आदि-धर्म करतार[१]॥**
ॐ ह्रीं **विरम्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८७१॥
**नहिं विकार आवे कभी, रहो सदा सुखरूप।**
**रोग-शोक व्यापै नहीं, निवसैं सदा अनूप॥**

ॐ ह्रीं **अविकृतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८७२।।

**निज-पौरुष कर सूर्य-सम, हरो तिमिर-मिथ्यात।**
**तुम पुरुषारथ सफल हो, तीन लोक विख्यात॥**

ॐ ह्रीं **कृतिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८७३।।

**वस्तु-परीक्षक तुम बिना, और झूठ कर खेद।**
**अन्ध-कूप में आप सर, डारत हैं निरभेद॥**

ॐ ह्रीं **मीमांसकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८७४।।

**होनहार या हो-लई, या पइये इस काल।**
**अस्ति रूप सब वस्तु है, तुम जानो इक हाल॥**

ॐ ह्रीं **अस्ति-सर्वज्ञाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८७५।।

**जिनवाणी जिन-सरस्वती, तुम गुण सों परिपूर।**
**पूज-योग तुमको कहै, करै मोहमद चूर॥**

ॐ ह्रीं **श्रुति-पूताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८७६।।

**सत्य-सरूप आनंद हो, निज-पद-रमन सुचाव।**
**सदा विकासित हो रहो, वंदूँ सहज सुभाव॥**

ॐ ह्रीं **सदोत्सवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८७७।।

**मन-इन्द्रिय जानत नहीं, जाको शुद्ध-सरूप।**
**वचनातीत स्व-गुण सहित, अमल अकाय अरूप॥**

ॐ ह्रीं **परोक्ष-ज्ञानाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ८७८।।

**जे श्रुतज्ञान कला धरें, तिनके हो तुम इष्ट।**
**तुमको नित प्रति ध्यावतें, नासें सकल अनिष्ट॥**

ॐ ह्रीं **इष्ट-पाठकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ८७९।।

**निज-समरथ कर साधियो, निज पुरुषारथ सार।**
**सिद्ध भये सब काम तुम, 'सिद्ध' नाम सुखकार॥**

ॐ ह्रीं **सिद्ध-कर्मकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८८०।।

**पृथ्वी-अग्न अरु जल-पवन, जानत इनके भेद।**
**गुण-अनंत-पर्याय है, सो अविभाग-प्रछेद॥**

ॐ ह्रीं **चार्वाकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८८१।।

**स्व-संवेदन-ज्ञान में, दीखत हो प्रत्यक्ष।**
**रक्षक हो तिहुँ लोक के, हम सरनागत पक्ष॥**



ॐ ह्रीं **प्रत्यक्षैक-प्रमाणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ८८२।।

**विद्यमान शिव-लोक में, स्व-गुण-पर्य समेत।**
**कहै अभाव कुमत-मती, निज-पर धोका देत॥**

ॐ ह्रीं **अस्त-परलोकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८८३।।

**तुम आगम के मूल हो, अपर गुरू है नाम।**
**तुम वाणी अनुसार ही, भये शास्त्र अभिराम॥**

ॐ ह्रीं **गुरु-श्रुतये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८८४।।

**तीन लोक के नाथ हो, ज्यों सुर-गण में इन्द्र।**
**स्व-पद-रमन सुभाव धर, नमें तुम्हैं देवेन्द्र॥**

ॐ ह्रीं **पुरन्दराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८८५।।

**सब सुभाव अविरुद्ध हैं, स्व-पर घातक नाहिं।**
**सहचारी परिणाम हैं, निवसत है तुम माहिं॥**

ॐ ह्रीं **अविद्ध-कर्णाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८८६।।

**ब्रह्म-ज्ञान को वेद कर, भये शुद्ध अविकार।**
**पूरण-ज्ञानी हो नमूँ, लहो वेद को सार॥**

ॐ ह्रीं **वेदान्तिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८८७।।

**शब्द-ब्रह्म के ज्ञान तें, आतम-तत्त्व विचार।**
**शुक्ल-ध्यान में लय भए, हो अतर्क अविचार॥**

ॐ ह्रीं **शब्दाद्वैतिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८८८।।

**सूक्ष्म-तत्त्व-प्रकाश कर, सूक्ष्म-कर्म-सुछेद।**
**मोक्षमार्ग परगट कियो, कह्यो सु अन्तर भेद॥**

ॐ ह्रीं **स्फोट-वादिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८८९।।

**तीन शतक त्रेसठ कहैं, सब मानै पाखण्ड।**
**धर्म यथारथ तुम कहो, तिन सबके कर खण्ड॥**

ॐ ह्रीं **पाखण्ड-घ्नाय** नमः, अध्य निर्वपामीति स्वाहाँ।।८९०।।

**करणरूप करतार हो, कोइक नय के द्वार।**
**सुर-मुनि कर पूजत भये, माननीक सुखकार॥**

ॐ ह्रीं **नयौघ-युजे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८९१।।

**केवलज्ञान उपाय के, तदनन्तर हो मोक्ष।**
**साक्षात् बड़ भाग से, पूजूँ इहाँ परोक्ष॥**

ॐ ह्रीं **अन्त-कृते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ८९२।।

**सरनागत को पार कर, देत मोक्ष अभिराम।**
**'तारन-तरन' सु नाम है, तुम पद करूँ प्रणाम॥**

ॐ ह्रीं **पार-कृते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ८९३।।

**भव-समुद्र गंभीर है, कठन जास को पार।**
**निज पुरुषारथ कर तिरे, गहो किनारो सार॥**

ॐ ह्रीं **तीर-प्राप्ताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ८९४।।

**एक बार जो शरण गहै, ताको हित करतार।**
**यातें सब जग-जीव के, हो आनंद करतार॥**

ॐ ह्रीं **परहित-स्थिताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ८९५।।

**रत्नत्रय निज नेत्र सों, मोक्षपुरी पहुँचात।**
**महादेव हैं जगत्-पितु, तीन लोक विख्यात॥**

ॐ ह्रीं **त्रि-दण्डे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ८९६।।

**तीन लोक के नाथ हो, महा-ज्ञान-भण्डार।**
**सरलभाव बिन कपट हो, स्वच्छ शुद्ध अविकार॥**

ॐ ह्रीं **दण्डितारातये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ८९७।।

**निश्चय वा व्यवहार के, हो तुम जाननहार।**
**वस्तुरूप निज साधियो, पूजत हूँ हितकार॥**

ॐ ह्रीं **ज्ञान-कर्म-समुच्चयिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ८९८।।

**सुर-नर-पशु न अघावते, सभी ध्यावते आन।**
**तुमको नित ही ध्यावते, पावें सुख निरवान॥**

ॐ ह्रीं **संहत-ध्वनये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ८९९।।

सिद्धों के उपचार से मोक्षकल्याणक-सम्बन्धी अर्घ्य

**कर्म-मैल प्रक्षाल कर, तीनों जोग संभार।**
**पाप-सैल छिन-भिन्न कर, भये अयोग सु धार॥**

ॐ ह्रीं **उच्छिन्न-योगाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९००।।

**सूरज हो स्व-ज्ञान-घन, ग्रहण-उपद्रव नाहिं।**
**बे-खटके शिवपंथ सब, दीखत हैं जिन माहिं॥**

ॐ ह्रीं **सुप्तार्णवोपमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९०१।।

**जोग-योग-संकल्प सब, हरो देह को साथ।**
**रहो अकंपित थिर सदा, मैं नाऊँ निज-माथ॥**



ॐ ह्रीं **योग-स्नेहापहाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९०२।।

**योग सु थिरता को हरै, करै आगमन कर्म।**
**तुम तासों निर्लेप हो, नशो मोहमद शर्म॥**

ॐ ह्रीं **योग-किट्टि-निर्लेपनोद्यताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९०३।।

**निज आतम में स्वस्थ हैं, स्व-पद योग रमाय।**
**निरभय तुम निर-इच्छ हो, नमूँ जोर कर पाय॥**

ॐ ह्रीं **स्थित-स्थूल-वपुर्योगाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९०४।।

**महादेव गिरराज पर, जन्म समै जिम सूर।**
**योग-किरण विकसात है, शोक-तिमिर कर दूर॥**

ॐ ह्रीं **गिर्-मनोयोग-कार्श्यकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९०५।।

**सूक्ष्म निज परदेश तन, सूक्ष्म क्रिया परिणाम।**
**चितवत-मन नहिं वश चलै, राजत हो शिवधाम॥**

ॐ ह्रीं **सूक्ष्मीकृत-वपुःक्रियाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९०६।।

**सूक्ष्म तत्त्व परकाश है, शुभ प्रिय वचन न द्वार।**
**भविजन को आनंद कर, तीन जगत् गुरु सार॥**

ॐ ह्रीं **सूक्ष्म-वाक्-चित्त-योगस्थाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९०७।।

**कर्म रहित शुद्धात्मा, निश्चल क्रिया रहात।**
**स्व-प्रदेश में थिर सदा, कृतकृत्य सुख पात॥**

ॐ ह्रीं **निष्कर्माय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९०८।।

**विद्यमान प्रत्यक्ष हैं, चेतनराय प्रकाश।**
**कर्म-कालिमा सों रहित, पूजत हों अघ-नाश॥**

ॐ ह्रीं **भूताभिव्यक्त-चेतनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९०९।।

**गृहस्थाचरण सु भेद कर, धर्मरूप रस-रास।**
**एक तुम्हीं हो धर्म कर, पायो शिवपुर वास॥**

ॐ ह्रीं **एक-दण्डिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९१०।।

**सूर्य-प्रकाशन मोह-तम,-हरता हो शुभ-पन्थ।**
**पाप-क्रिया बिन राजते, महायती निर्ग्रन्थ॥**

ॐ ह्रीं **परम-हंसाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९११।।

**बंध रहित सर्वस्व कर, निर्मल हो निर्लेप।**
**शुद्ध सुवर्ण दिपै सदा, नहीं मोह-मल चेप॥**

ॐ ह्रीं **परम-संवराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९१२।।

**मेघ-पटल बिन सूर्य जिम, दीप्त अनन्त प्रताप।**
**निरावरण तुम शुद्ध हो, पूजत मिटहैं पाप॥**

ॐ ह्रीं **नैष्कर्म-सिद्धाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९१३।।

**कर्म अंश सब झर गिरे, रह्यो न एक लगार।**
**परम शुद्धता धार कै, तिष्ठो हो अविकार॥**

ॐ ह्रीं **परम-निर्जराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९१४।।

**तेज प्रचण्ड प्रभाव है, उदय रूप परताप।**
**अन्य कुदेव कुआगिया, झूठा धरत कलाप॥**

ॐ ह्रीं **प्रज्वलत्प्रभवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९१५।।

**भये निरर्थक कर्म सब, शक्ति भई है हीन।**
**तिनको जीते छिनक में, भये सुखी स्वाधीन॥**

ॐ ह्रीं **मोघ-कर्मणे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९१६।।

**कर्म प्रकृति को रोग सम, जानो हो क्षयकार।**
**निज-सरूप आनन्द में, कहो विगार-निहार॥**

ॐ ह्रीं **त्रुटत्-कर्म-पाशाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९१७।।

**हीन शक्ति परमाद को, आप कियो है अंत।**
**निज पुरुषार्थ सुवीर्य सों, सुखी भए सु अनंत॥**

ॐ ह्रीं **शैलेश्यलंकृताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९१८।।

**एक-सरूप रस-स्वाद में, निर-आकुलित रहाय।**
**विविध रूप-रस परिणमित, ताको त्याग कराय॥**

ॐ ह्रीं **एकाकार-रसास्वादाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९१९।।

**इन्द्रिय-मन के सब विषय, त्याग दियो इक लार।**
**निजानंद में मगन हैं, छांडो जग व्यापार॥**

ॐ ह्रीं **विश्वाकार-रसाकुलाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९२०।।

**पर-सम्बन्धी प्राण बिन, निज प्राणन आधार।**
**सदा रहै जीतव्यता, जरा-मृत्यु को टार॥**

ॐ ह्रीं **अजीविते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९२१।।

**निज-रस के सागर धनी, महा प्रिये स्वादिष्ट।**
**अमर रूप राजै सदा, सुर-मुनि के हो इष्ट॥**





ॐ ह्रीं **अमृताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९२२।।

**पूरण निज आनंद में, सदा जागते आप।**
**नहिं प्रमाद में लिप्त हैं, पूजत विनशे पाप॥**

ॐ ह्रीं **जाग्रते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९२३।।

**क्षीण ज्ञान ज्ञानावरण, करै जीव को नित्य।**
**सो आवरण विनासियो, रहो अस्वप्न सुवित्य॥**

ॐ ह्रीं **असुप्ताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९२४।।

**स्व-प्रमाण में थिर सदा, स्वयं चतुष्टय सत्य।**
**निराबाध निर्भय सुखी, त्यागत भाव असत्य॥**

ॐ ह्रीं **शून्यतामयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९२५।।

**श्रम कर नहिं आकुलित हो, सदा रहो निरखेद।**
**स्वस्थरूप राजो सदा, वेदो ज्ञान अभेद॥**

ॐ ह्रीं **प्रेयसे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९२६।।

**मन-वच-तन व्यापार था, तावत रहो शरीर।**
**ताको नाश अकंप हो, वंदूँ मन धर-धीर॥**

ॐ ह्रीं **अयोगिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९२७।।

**जितने शुभ लक्षण कहे, तुममें हैं एकत्र।**
**तुमको वंदूँ भाव सों, हरौ पाप सर्वत्र॥**

ॐ ह्रीं **चतुरशीति-लक्षणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९२८।।*

**तुम लक्षण सूक्ष्म महा, इन्द्रिय-विषय अतीत।**
**वचन अगोचर गुण धरो, निर्गुण कहत सुनीत॥**

ॐ ह्रीं **अगुणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९२९।।

**अगुरुलघु पर्याय के, भेद अनन्तानन्त।**
**गुण अनन्त-परिणाम कर, नित्य नमें पद 'संत'॥**

ॐ ह्रीं **निष्पीतानन्त-पर्यायाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९३०।।*

**राग-द्वेष के नाश तें, नहीं पूर्व-संस्कार।**
**निज सभाव में थिर रहैं, अन्य वासना टार॥**

ॐ ह्रीं **विद्या-संस्कार-नायकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९३१।।*

**गुण चतुष्ट में वृद्धता, भई अनंतानंत।**
**तुम सम और न जगत् में, सदा रहो जयवंत॥**

ॐ ह्रीं **वृद्धाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९३२।।

---

९१५. आगिया - जुगनू

**आर्ष-कथित उत्तम वचन, धर्म-मार्ग अरिहंत।**
**सो सब नाम कहो तुम्हीं, शिव-मारग कह संत॥**
ॐ ह्रीं **प्रवचनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९३३॥*

**महाबुद्धि के धाम हो, सूक्षम शुद्ध अवाच्य।**
**चार ज्ञान नहिं गम्य हो, वस्तुरूप को सांच्य॥**
ॐ ह्रीं **अणवे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९३४॥*

**सूक्षम तें सूक्षम विषैं, तुमको है परवेश।**
**आप सु सूक्षमरूप हो, राजत निज-परदेश॥**
ॐ ह्रीं **अणीयसे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९३५॥

**कर्म-प्रबन्ध सु घन-पटल, ताकी छांय निवार।**
**रवि-घन-जोत प्रगट भई, पूरणता विधि धार॥**
ॐ ह्रीं **अनणु-प्रियाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९३६॥

**निज-प्रदेश में थिर सदा, योग-निमित्त निवार।**
**अचल शिवालय के विषैं, तिष्ठैं सिद्ध अपार॥**
ॐ ह्रीं **स्थेयसे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९३७॥

**संतन मन प्रिय हो अती, सज्जन-वल्लभ जान।**
**मुनिजन-मन प्यारे सही, नमत होत कल्यान॥**
ॐ ह्रीं **प्रेष्ठाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९३८॥*

**काल अनंतानंत कर, हैं शिव-आलय वास।**
**अव्यय अविनाशी सुथिर, स्वयं जोत परकास॥**
ॐ ह्रीं **स्थिराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९३९॥

**स्व-आतम में वास है, रुलत नहीं संसार।**
**ज्यों के त्यों निश्चल सदा, वंदत भवदधि पार॥**
ॐ ह्रीं **निष्ठाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९४०॥

**सुभग सराहन योग हैं, उत्तम भाव धराय।**
**तीन लोक में सार हैं, मुनिजन वंदत पाय॥**
ॐ ह्रीं **श्रेष्ठाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९४१॥

**सबके अग्रेसर भये, सबके हो सिरताज।**
**तुमसे बड़ा न और है, सबके कर हो काज॥**
ॐ ह्रीं **ज्येष्ठाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९४२॥





**स्व-प्रदेश निष्कंप हैं, द्रव्य-भाव विधि नाश।**
**इष्टानिष्ट न मति धरैं, स्व-आनंद विलास॥**
ॐ ह्रीं **सुनिष्ठिताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९४३॥

**उचित क्षमादिक अर्थ सब, सत्य सुन्याय सुलब्ध।**
**तिन सबके स्वामी नमूँ, पूरण सुखी अनघ्य॥**
ॐ ह्रीं **भूतार्थ-शूराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९४४॥

**महा कठिन दुःशक्य है, यह संसार-निकास।**
**तुम पायो पुरुषार्थ कर, लहो स्वलब्धि-अवास॥**
ॐ ह्रीं **भूतार्थ-दूराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९४५॥

**परमारथ स्व-गुण कहै, मोक्ष-प्राप्ति में होय।**
**स्वारथ इन्द्रिय-जन्य है, सो तुम इनको खोय॥**
ॐ ह्रीं **परम-निर्गुणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९४६॥

**पर-निमित्त या भेद कर, जो उपचरित कहाय।**
**सो तुममें सब लय भये, मानों स्वप्न कराय॥**
ॐ ह्रीं **व्यवहार-सुषुप्तये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९४७॥*

**स्व-पद में नित रमन है, अप्रमाद अथकाय।**
**निजगुण सदा प्रकाश है, अतुल बली नमूँ पाय॥**
ॐ ह्रीं **अति-जागरूकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९४८॥

**सकल उपद्रव मिट गये, जे थे पर की साथ।**
**निर्भय सदा सुखी भये, वंदूँ मैं निज-माथ॥**
ॐ ह्रीं **अति-संस्थिताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९४९॥

**कहे हुये हो नेम सै, परमराध्य अनाद।**
**तुम महात्मा जगत् के, और कुदेव अवाद॥**
ॐ ह्रीं **उदितोदित-माहात्म्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९५०॥

**तत्त्वज्ञान अनुकूल सब, शब्द-प्रयोग विचार।**
**तिसके तुम अध्याय हो, अर्थ-प्रकाशन-हार॥**
ॐ ह्रीं **निरुपणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९५१॥

**ना काहू सों जन्म है, ना काहू सों नाश।**
**स्वयंसिद्ध बिन परनिमित्त, स्वयं सरूप प्रकाश॥**
ॐ ह्रीं **अकृत्रिमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९५२॥

१. कोहरे - पाले की तरह बिगाड करने वाले

**अप्रमाण अत्यन्त है, तुम सन्मति परकाश।**
**तेजरूप उत्सवमई, पाप-तिमिर को नाश॥**
ॐ ह्रीं **अमेय-महिम्ने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९५३॥

**रागादिक मल को धरैं, तनक नहीं अण्वांस।**
**महा विशुद्ध अत्यंत हैं, हरो पाप-अहि-डांस॥**
ॐ ह्रीं **अत्यन्त-शुद्धाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९५४॥

**सिद्ध स्वयं भरतार हो, शिव-कामिनि के संग।**
**रमण भाव स्व-भोग में, मानो स्वयं अनंग॥**
ॐ ह्रीं **सिद्धि-स्वयंवराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९५५॥

**विविध प्रकार न धरत हैं, हैं अजन्म अव्यक्त।**
**सूक्षम सिद्ध-समान हैं, स्वयं सुभाव सुव्यक्त॥**
ॐ ह्रीं **सिद्धानुजाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९५६॥*

**मोक्षरूप शुभ वास के, आप मार्ग निरखेद।**
**भविजन सुलभ गमन करें, जगत् वास को छेद॥**
ॐ ह्रीं **सिद्धि-पुरी-पन्थाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९५७॥

**गुण समूह अत्यन्त हैं, कोई न पावै पार।**
**थकित रहे श्रुतकेवली, निज-बल कथन अगार॥**
ॐ ह्रीं **सिद्धि-गुणातिथये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९५८॥

**इक अवगाह प्रदेश में, हो अवगाह अनंत।**
**पर-उपाधि निग्रह कियो, मुख्य प्रधान भनंत॥**
ॐ ह्रीं **निरुपाधये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९५९॥*

**स्वयंसिद्ध स्व-वस्तु हो, आगम-इन्द्रिय-ज्ञान।**
**फर्सादिक लक्षण नहीं, स्वयं स्वभाव-प्रमान॥**
ॐ ह्रीं **सिद्धालिंग्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९६०॥

**हो प्रछन्न इन्द्रिय-अगम, प्रगट न जाने कोय।**
**सकल अगुण को लय कियो, निज आतम से खोय॥**
ॐ ह्रीं **सिद्धोपगूहकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९६१॥

**निज-गुण कर निज पोषयो, सकल क्षुद्रता त्याग।**
**पूरण स्व-पद पाय करि, तिष्ठत हो बड़भाग॥**
ॐ ह्रीं **पुष्टाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९६२॥



**ब्रह्मचर्य पूरण धरैं, सुपद रमणता धार।**
**सहस अठारह भेद कर, शील सुभाव सुखार॥**
ॐ ह्रीं **अष्टादश-सहस्र-शीलास्त्राय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९६३॥

**महा पुण्य शिवपद-कमल, ताके दल विकसान।**
**मुनि-मन-भ्रमर-रमन सुथल, गंधानंद महान॥**
ॐ ह्रीं **पुण्य-संवलाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९६४॥*

**मति-श्रुत-अवधि त्रि-ज्ञान युत, स्वयंबुद्ध भगवान।**
**कृतयुग में मुनि-व्रत धरो, शिव-साधक परधान॥**
ॐ ह्रीं **व्रताग्र-युग्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९६५॥

**परम शुकल शुभ ध्यान में, तुम सेवन हितकार।**
**'संत' उपासक आप के, कर्म-बंध छुटकार॥**
ॐ ह्रीं **परम-शुक्ललेश्योपचार-कृते** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९६६॥

**खार-वार इस जलधि को, शीघ्र कियो तुम अंत।**
**गोखुरकार उलंघियो, धरो स्व-भुज बलवंत॥**
ॐ ह्रीं **क्षेपिष्ठाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९६७॥*

**एक समय में गमन कर, कियो शिवालय वास।**
**काल अनंत अचल रहै, मेटो जग-भ्रम-त्रास॥**
ॐ ह्रीं **अन्त-क्षण-सख्ये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९६८॥

**पंचक्षर लघु जास में, जितना लागे काल।**
**अंतम पाया शुकल का, ध्याय वसे जग-भाल॥**
ॐ ह्रीं **पंच-लघ्वक्षर-स्थितये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९६९॥

**प्रकृति-त्रयोदश[१] शेष हैं, जब तक मोक्ष न होय।**
**सर्व प्रकृति-थिति मेट कें, पहुँचे शिवपुर सोय॥**
ॐ ह्रीं **त्रयोदश-प्रकृति-शेषाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९७०॥

**तेरह विध चारित्र के, तुम हो पूरण शूर।**
**निज पुरुषारथ कर लियो, शिवपुर आनंद-पूर॥**
ॐ ह्रीं **त्रयोदश-चारित्र-पूर्णताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९७१॥

**निज-सुख में अन्तर नहीं, पर सों हान न होय।**
**स्वस्थ रूप परदेश जिन, तिन पूजत हूँ सोय॥**
ॐ ह्रीं **अवेदाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९७२॥*

**निज-पूजन में देत हो, शिव-संपद अधिकाय।**
**यातें पूजन-जोग हो, पूजूँ मन-वच-काय॥**
ॐ ह्रीं **याजकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९७३।।

**मोह महा परचण्ड बलि, सके न तुमको जीत।**
**नमूँ तुम्हैं जयवंत हो, धार सु उर में प्रीत॥**
ॐ ह्रीं **अजय्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९७४।।

**यग-विधान सैं जजत ही, आप निलय निधि रूप।**
**तुम समान नहिं और धन, हर दरिद्र दुख-कूप॥**
ॐ ह्रीं **याज्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९७५।।

**लोकोत्तर संपद-विभव, है सर्वस्व अघाय।**
**तुमसे अधिक न और है, सुख-विभूति शिवराय॥**
ॐ ह्रीं **नाग्न्य-परिग्रहाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९७६।।*

**तुमको आह्वानन-यजन, प्रासुक-विधि सैं योग।**
**त्रिजग अमोलक निधि सही, देत परम सुखभोग॥**
ॐ ह्रीं **अनग्नि-होत्रिणे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९७७।।

**एकदेश मुनिराज हैं, सर्वदेश जिनराज।**
**भव-तन-भोग विरक्तता, निर्ममत्व सुख साज॥**
ॐ ह्रीं **परम-निस्पृहाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९७८।।

**पर-दुख में दुख हो जहाँ, मोह-प्रकृति के द्वार।**
**दया कहै तिसको सुमति, सो तुम मोह-निवार॥**
ॐ ह्रीं **अत्यन्त-निर्दयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९७९।।

**स्वयंबुद्ध भगवान हो, सुर-मुनि-पूजन जोग।**
**बिन शिक्षा शिवमार्ग को, साधो हो धर योग॥**
ॐ ह्रीं **अशिष्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९८०।।

**तुम एकत्व-अन्यत्व हो, पर सों नहिं संबंध।**
**स्वयंसिद्ध अविरुद्ध हो, नाशो जगत प्रबंध॥**
ॐ ह्रीं **अशासकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९८१।।

**काहू को नहिं यजन कर, गुरु का नहिं उपदेश।**
**स्वयंबुद्ध स्व-शक्त हो, राजो शुद्ध हमेश॥**
ॐ ह्रीं **अदीक्षाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९८२।।



**तुम त्रिभुवन के पूज्य हो, यजो न काहू और।**
**स्व-हित में रत हो सदा, पर-निमित्त को छोर॥**
ॐ ह्रीं **अदीक्षिकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९८३।।

**अरहन्तादि उपासना, मोह-उदय सौं होय।**
**स्वयं ज्ञान में लय भये, मोह-कर्म को खोय॥**
ॐ ह्रीं **अदीक्षिताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९८४।।

**गौण रूप परिणाम हैं, मुख ध्रुवता-गुण धार।**
**अक्षय अविनश्वर स्वपद, स्वस्थ सुथिर अविकार॥**
ॐ ह्रीं **अक्षयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९८५।।

**सूक्षम शुद्ध-सुभाव हैं, लहै न गणधर पार।**
**इन्द्र तथा अहमिन्द्र सब, अभिलाषित उरधार॥**
ॐ ह्रीं **अगम्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९८६।।

**अचल शिवालय के विषैं, टंकोत्कीर्ण समान।**
**सदा विराजे सुख सहित, जगत्-भ्रमण को हान॥**
ॐ ह्रीं **अगमकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९८७।।

**रमण-योग छद्मस्थ के, नहीं अलिंग-अरूप।**
**पर-प्रवेश बिन शुद्धता, धारत सहज अनूप॥**
ॐ ह्रीं **अरम्याय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९८८।।

**पर-पदार्थ-इच्छक नहीं, इष्टानिष्ट निवार।**
**स्व-थिर रहें निज-आत्म में, वंदत हूँ हित-धार॥**
ॐ ह्रीं **अरमकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९८९।।

**जाको पार न पाइये, अवधि रहित अत्यंत।**
**सो तुम ज्ञान महान है, आशा राखें 'संत'॥**
ॐ ह्रीं **ज्ञान-निर्भराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९९०।।

**मुनिजन जिन सेवन करैं, पावैं निज-पद सार।**
**महा शुद्ध-उपयोग में, वरतत हैं सुखकार॥**
ॐ ह्रीं **महा-योगीश्वराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९९१।।

**भाव-शुद्धता देह में, द्रव्य-शुद्ध बिन देह।**
**कर्म-वर्गणा नहिं लिपै, पूजत हूँ धर नेह॥**
ॐ ह्रीं **द्रव्य-सिद्धाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९९२।।

**पंच प्रकार शरीर को, मूल कियो विध्वंस।**
**स्व-प्रदेश में राजते, पर-मिलाप नहिं अंस॥**
ॐ ह्रीं **अदेहाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९९३॥

**जाको फेर न जन्म है, फिर नाहीं संसार।**
**सो पंचम-गति शिवमई, पायो तुम निरधार॥**
ॐ ह्रीं **अपुनर्भवाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९९४॥

**सकल इन्द्रियाँ व्यर्थ कर, केवलज्ञान सहाय।**
**सब द्रव्यन को ज्ञान है, गुण-अनन्त-पर्याय॥**
ॐ ह्रीं **ज्ञानैक-विदे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९९५॥

**जीवमात्र निज-धन सहित, गुणसमूह मणिखान।**
**अन्य विभाव-विभव नहीं, महा शुद्धता जान॥**
ॐ ह्रीं **जीव-धनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९९६॥

**सिद्ध भये परसिद्ध तुम, निज पुरुषारथ साध।**
**महा शुद्ध निज-आत्म में, सदा रहो निरबाध॥**
ॐ ह्रीं **सिद्धाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९९७॥

**लोकशिखर पर थिर भये, ज्यों मन्दिर मणिकुम्भ।**
**निज-शरीर-अवगाह में, अचल सुथान अलुम्भ॥**
ॐ ह्रीं **लोकाग्र-गामुकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९९८॥

**सहज निरामय भेद बिन, निराबाध निस्संग।**
**एक रूप सामान्य हो, निज विशेष मय अंग॥**
ॐ ह्रीं **निर्द्वन्द्वाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९९९॥

**जे अविभाग-प्रछेद हैं, इक गुण के सु अनंत।**
**तुम में पूरण गुण सही, धरो अनंता भंत!॥**
ॐ ह्रीं **अनन्तानन्त-गुणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १०००॥

**पर-मिलाप नहिं लेश है, स्व-प्रदेशमय रूप।**
**क्षयोपशम-ज्ञानी तुम्हैं, जानत नाहिं सरूप॥**
ॐ ह्रीं **आत्म-रूपाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १००१॥

**क्षमा आत्म को भाव है, क्रोध कर्म सौं घात।**
**सो तुम कर्म खिपाइयो, क्षमा-सभाव धरात॥**
ॐ ह्रीं **महा-क्षमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १००२॥



**शील सुभाव सु आत्म को, क्षोभरहित सुखदाय।**
**निर-आकुलता धार हैं, वंदूँ तिनके पाय॥**
ॐ ह्रीं **महा-शीलाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १००३॥

**शशि-सुभाव ज्यों शांतधर, औरन शांत कराय।**
**आप शांत पर शांत कर, भव-दुःख दाह मिटाय॥**
ॐ ह्रीं **महा-शान्ताय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १००४॥

**तुम सम को बलवान है, जीतो मोह प्रचंड।**
**धरो अनन्त स्ववीर्य को, स्वपद सुधीर अखंड॥**
ॐ ह्रीं **अनन्तौजसे** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १००५॥

**लोकालोक विलोकियो, संशय बिन इक बार।**
**खेद रहित निश्चल सुखी, शुद्ध आरसी सार॥**
ॐ ह्रीं **लोकालोक-ज्ञायकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १००६॥

**निरावरण स्व-गुण सहित, निजानंद रस-भोग।**
**अव्यय अविनाशी सदा, अजर अमर शुभ योग॥**
ॐ ह्रीं **अजन्मिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १००७॥

**परम मुनीश्वर ध्यान धर, पावैं निजपद सार।**
**ज्यों रवि-बिंब प्रकाश कर, घट-पट सहज निहार॥**
ॐ ह्रीं **ध्येय-गुणाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १००८॥

**कवलाहारी कहत हैं, महामूढ मतिमंद।**
**असत् असाता पीर बिन, आप भये सुखकंद॥**
ॐ ह्रीं **असन्दिग्धाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १००९॥

**लोक-सीस छवि देत हो, धर्यो प्रकाश अनूप।**
**बुधजन आदर जोग हो, सहज अकम्प सरूप॥**
ॐ ह्रीं **त्रिलोक-मणये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १०१०॥

**महा गुणन की रास हो, लोकालोक प्रजंत।**
**सुर-मुनि पार न पावते, तुम्हैं नमैं नित 'संत'॥**
ॐ ह्रीं **अनन्त-गुण-प्राप्तये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १०११॥

**परम स्वगुण परिपूर्ण हो, मलिन-भाव नहिं लेश।**
**जगत् जीव आराध्य हो, हम तुम यही विशेष॥**
ॐ ह्रीं **परमात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १०१२॥

**केवल ऋद्धि महान है, अतिशय युत तप सार।**
**सो तुम पायो सहज ही, मुनिगण वंदनहार॥**

ॐ ह्रीं **महर्षये** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०१३।।

**भूत-भविष्यत् काल को, कभी न होवे अंत।**
**नित-प्रति शिवपद पाय कर, रहो अनंतानंत॥**

ॐ ह्रीं **अनन्त-सिद्धेभ्यो** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०१४।।

**निर्भय निर आकुलित हो, स्वयं स्वस्थ निरखेद।**
**काहू विध घबरात नहिं, स्व-आनन्द अभेद॥**

ॐ ह्रीं **अक्षोभाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०१५।।

**जे गुण-गुणी सुभेद कर, सोई जडमति जान।**
**निज-गुण-गुणी सु एकता, स्वयंबुद्ध भगवान॥**

ॐ ह्रीं **स्वयं-बुद्धाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०१६।।

**निरावरण निज ज्ञान में, सब स्पष्ट दिखलाय।**
**संशय बिन नहिं भरम है, सुथिर रहो सुख पाय॥**

ॐ ह्रीं **निर्भ्रमाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०१७।।

**राग-द्वेष के अंश में, मत्सर भाव कहात।**
**सो तुम नासो मूल ही, रहै कहाँ सो पात॥**

ॐ ह्रीं **वीत-मत्सराय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०१८।।

**अणुवत् लोकालोक है, जाके ज्ञान मँझार।**
**सो तुम ज्ञान अथाह है, वंदूँ मैं चित धार॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तानन्त-ज्ञानाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०१९।।

**हस्तरेख सम देखहो, लोकालोक सरूप।**
**सो अनन्त दर्शन धरो, नमत मिटै भ्रमकूप॥**

ॐ ह्रीं **अनन्तान्त-दर्शनाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०२०।।

**तीन लोक का पूज्यपन, प्रगट कहै दिखलाय।**
**तीन-लोक-सिर-वास है, लोकोत्तम सुखदाय॥**

ॐ ह्रीं **त्रिजगदग्र-वासिने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०२१।।

**निज-पद में लवलीन हैं, स्व-रस स्वाद अघाय।**
**पर सों यह रस गुप्त है, कोटि यतन नहिं पाय॥**

ॐ ह्रीं **सुगुप्तात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०२२।।





**कर्म-प्रकृति का मूल नहिं, द्रव्यरूप या भाव।**
**महा शुद्ध निर्मल दिपै, ज्यों रवि मेघ-अभाव॥**

ॐ ह्रीं **पूतात्मने** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०२३।।

**हीन अभाव न शक्त हैं, कर्मबंध के नाश।**
**उदय भये तुम गुण सकल, महा विभव की राश॥**

ॐ ह्रीं **महोदयाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०२४।।

**पापरूप दुख नाशयो, मोक्षरूप सुख-रास।**
**दासन प्रति मंगल-करण, सोय 'संत' हैं दास॥**

ॐ ह्रीं **मंगलात्मकाय** नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०२५।।

*(पूर्णार्घ्य)*

(**दोहा** : पावन हो गई आज ये धरती .....)

**कहैं कहाँ लों तुम सुगुण, अंश मात्र नहिं अंत।**
**मंगलीक तुम नाम ही, जान भजैं नित 'संत'॥**

ॐ ह्रीं **पूर्ण-स्वगुण-जिनाय** नमः, पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ।। अथ आरती ( जयमाल )।।

(**दोहा** : जिनवर दरबार तुम्हारा .....)

**होनहार तुम गुण कथन, जीभ-द्वार नहिं होय।**
**काष्ठ पाँव तैं अनिल-थल, नाप सकैं नहिं कोय॥ १॥**
**सूक्षम शुद्ध-सरूप का, कहना है व्यवहार।**
**सो व्यवहारातीत हो, यातें हम लाचार॥ २॥**
**पै जो कछु हम कहत हैं, शांति हेत भगवंत।**
**बार-बार थुति-करन में, नहिं पुनरुक्त भनंत॥ ३॥**

*(**पद्धरि** : मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ .....)*

**जय स्वयं शक्ति आधार योग, जय स्वयं स्वस्थ आनंद भोग।**
**जय स्वयं विकास अवास भास, जय स्वयं सिद्ध निजपद निवास॥ ४॥**
**जय स्वयंबुद्ध संकल्प टार, जय स्वयं शुद्ध रागादि-जार।**
**जय स्वयं सुगुण आधार भार, जय स्वयं सुखी अक्षय अपार॥ ५॥**
**जय स्वयं चतुष्ट विराजमान, जय स्वयं अनन्त सुगुण निधान।**
**जय स्वयं स्वस्थ स्व-थिर अयोग, जय स्वयं सरूप मनोग योग॥ ६॥**
**जय स्वयं स्वच्छ निज ज्ञानपूर, जय स्वयं वीर्य रिपु-वज्र-चूर।**
**जय महामुनिन आराध्य जान, जय निपुण-मती तत्त्वज्ञ मान॥ ७॥**

**जय संतन मन आनंदकार, जय सज्जन चित वल्लभ अपार।**
**जय सुर गुण-गावत हर्ष पाय, जय कवि यशकथन न कर अघाय॥ ८॥**
**शुभ महातीर्थ भवि-तरण हेत, तुम महाधर्म उद्धार देत।**
**तुम महामंत्र विष विघ्न जार, अघ रोग रसायन कह्यौ सार॥ ९॥**
**तुम महा शास्त्र को मूल ज्ञेय, तुम महा तत्त्व हो उपादेय।**
**तिहुँ लोक महा मंगल-सरूप, लोक-त्रय सर्वोत्तम अनूप॥ १०॥**
**तिहुँ लोक शरण अघ-हर महान, भवि देत परम पद सुख-निधान।**
**संसार महासागर अथाह, नित जन्म-मरण धारा-प्रवाह॥ ११॥**
**सो काल अनंत दियो बिताय, तामें झकोर दुखरूप खाय।**
**मो दुखी देख उर दया आन, हम पार करो कर ग्रहण पान॥ १२॥**
**तुम ही हो इस पुरुषार्थ जोग, अरु हम अशक्त कर विषय-रोग।**
**सुर-नर-पशु दास कहैं अनंत, इनमें से भी इक जान 'संत'॥ १३॥**

(**धत्ता-कवित्त** : जो मंगल चार जगत् में हैं .....)

**जय विघन-जलधि जल, हनन पवन-बल, सकल पाप-मल-जारन हो।**
**जय मोह-उपल हन वज्र असल दुख अनल-ताप जल-कारन हो॥**
**ज्यों पंगु चढ़ै गिर, गुंग भरे स्वर, अभुज सिन्धु तर, कष्ट भरैं।**
**त्यों तुम थुति काम, महा लज ठाम, सु अंत 'संत' परणाम करै॥**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणयुक्तसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

(**दोहा** : कर लो जिनवर का गुणगान .....)

**तीन लोक चूड़ामणी, सदा रहो जयवंत।**
**विघन-हरण मंगल-करन, तुम्हैं नमें नित 'संत'॥**

(**अडिल्ल** : जिनवाणी जिनवाणी ध्याना सभी .....)

**पूरण मंगलरूप महा यह पाठ है,**
**सरस स्वरुच सुखकार भक्ति को ठाठ है।**
**शब्द-अर्थ में चूक होय तो हो कहीं,**
**थुतिवाचक सब शब्द-अर्थ यामें सही॥ १॥**
**जिन-गुण-करणारम्भ हास्य को धाम है,**
**वायस का नहिं सिंधु उतीरण काम है।**
**पै भक्तन की रीत सनातन है यही,**
**क्षमा करो भगवंत शांति पूरण मही॥ २॥**

*( इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत् )*



*'ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा'*
*– इस शान्ति-मन्त्र की प्रतिदिन सामूहिक एक जाप करें।*

*।। इति अष्टम पूजा सम्पूर्णम् ।।*

*।। इति कविवर श्री संतलालजी कृत श्री सिद्धचक्र विधान सम्पूर्ण।।*

(शुभं सुखदायकं लिखतं पंडित किरपालदत्त नकुड ग्राम स्थिति।)

(**दोहा** : राजा-राणा-छत्रपति .....)

**माघ शुक्ल तिथि सप्तमी, दिन है बेपतवार।**
**पुस्तक लिख पूरी करी, सबको हो सुखकार।। १।।**
**संवत् विक्रम के कहे, इक नव चार अरु दोय।**
**सज्जनजन पूजा करैं, भव-भव आनंद होय।। २।।**

।। ॐ नमः।।

## धन्य धन्य वीतराग वाणी

धन्य धन्य वीतराग वाणी,
अमर तेरी जग में कहानी।
चिदानन्द की राजधानी,
अमर तेरी जग में कहानी।टेक॥
उत्पाद-व्यय अरु ध्रौव्य स्वरूप,
वस्तु बखानी सर्वज्ञ धूप।
स्याद्वाद तेरी निशानी,
अमर तेरी जग में कहानी॥१॥
नित्य-अनित्य अरु एक-अनेक,
वस्तु कथंचित् भेद-अभेद।
अनेकान्तरूपा बखानी,
अमर तेरी जग में कहानी॥२॥
भाव शुभाशुभ बन्धस्वरूप,
शुद्ध चिदानन्दमय मुक्तिरूप।
मारग दिखाती है वाणी,
अमर तेरी जग में कहानी॥३॥
चिदानन्द चैतन्य आनन्द धाम,
ज्ञानस्वभावी निजातम राम।
स्वाश्रय से मुक्ति बखानी,
अमर तेरी जग में कहानी॥४॥

**- पण्डित अभयकुमार जैन**
शास्त्री, जैनदर्शनाचार्य, एम.कॉम,
ए-4, बापूनगर जयपुर - 302025



## श्री सिद्धचक्र माहात्म्य

श्री सिद्धचक्र गुणगान करो मन आन भाव से प्राणी;
कर सिद्धों की अगवानी।टेक॥
सिद्धों का सुमरन करने से, उनके अनुशीलन चिन्तन से;
प्रगटै शुद्धात्मप्रकाश, महा सुखदानी ऽ ऽ ऽ ।
पाओगे शिव रजधानी॥श्री सिद्धचक्र.॥१॥
श्रीपाल तत्त्वश्रद्धानी थे, वे स्व-पर भेदविज्ञानी थे;
निज देह-नेह को त्याग, भक्ति उर आनी ऽ ऽ ऽ ।
हो गई पाप की हानी॥श्री सिद्धचक्र.॥२॥
मैना भी आतमज्ञानी थी, जिनशासन की श्रद्धानी थी;
अशुभभाव से बचने को, जिनवर की पूजन ठानी ऽ ऽ ऽ ।
पाओगे शिव रजधानी॥श्री सिद्धचक्र.॥३॥
भव-भोग छोड़ योगीश भये, श्रीपाल ध्यान धरि मोक्ष गये;
दूजे भव मैना पावे शिव रजधानी ऽ ऽ ऽ ।
केवल रह गई कहानी॥श्री सिद्धचक्र.॥४॥
प्रभु दर्शन-अर्चन-वन्दन से, मिटता है मोह-तिमिर मन से;
निज शुद्ध-स्वरूप समझने का, अवसर मिलता भवि प्राणी ऽ ऽ ऽ ।
पाते निज निधि विसरानी॥श्री सिद्धचक्र.॥५॥
भक्ति से उर हर्षाया है, उत्सव युत पाठ रचाया है;
जब हरष हिये न समाया, तो फिर नृत्य करन की ठानी ऽ ऽ ऽ ।
जिनवर भक्ति सुखदानी॥श्री सिद्धचक्र.॥६॥
सब सिद्धचक्र का जाप जपो, उनही का मन में ध्यान धरो;
नहिं रहे पाप की मन में नाम निशानी ऽ ऽ ऽ ।
बन जाओ शिवपथ गामी॥श्री सिद्धचक्र.॥७॥
जो भक्ति करे मन-वच-तन से, वह छूट जाय भवबंधन से;
भविजन भज लो भगवान, भगति उर आनी ऽ ऽ ऽ ।
बन जाओ शिवपथ गामी॥श्री सिद्धचक्र.॥७॥

**- पण्डित रतनचन्द भारिल्ल,** ए-4, बापूनगर जयपुर - 302025